श्री नाथ सिद्ध

तन्त्र-मन्त्र-टोटके

लेखक-महावीर नाथ सैनी

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा
गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) हरिद्वार
फोन : 01334-226583
Website : www.yogigorakshnath.org • E-mail : media@yogigorakshnath.org

ॐहंमेवःस्मि गोरक्ष मद्रूपं तन्नि बोधत। योग मार्ग प्रचाराय मायारूप मिद धृतम्।।

श्री नाथ सिद्ध तन्त्र-मन्त्र-टोटके
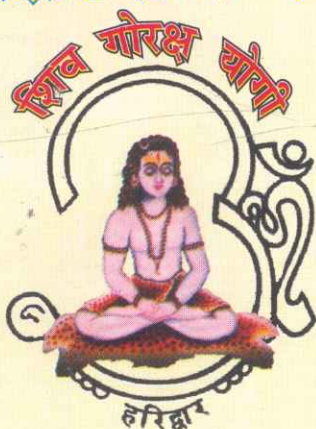
लेखक-महावीर नाथ सैनी

प्राप्ति स्थान :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) हरिद्वार

फोन : 01334-226583

Website : www.yogigorakshnath.org
E-mail : media@yogigorakshnath.org

प्रकाशक :

श्री बाबा मस्तनाथ मठ, मठ अस्थल बोहर

जिला रोहतक, हरियाणा

12 फरवरी सन् 2010 (माघ) महाशिव रात्री

द्वितीय संस्करण-2000 प्रति मूल्य : 150 रुपये

आर्शीवचन

प्रिय महावीरनाथ सैनी

॥ शुभ आर्शीवाद ॥

यह श्री नाथ सिद्ध तन्त्र-मन्त्र-टोटके पुस्तक को देखते हुये यह प्रतीत होता है कि नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के साधु-सन्त तथा भक्त अनुयायी को अपेक्षित मन्त्र तन्त्रों का समावेश है जो कि जिज्ञासु एवं उपासकों को अत्यन्त सरल तथा सुलभ उपासना एवं भक्ति करने में सहायक होगी।

इस पुस्तक के यथास्थित रचना को मन्त्र-तन्त्र साधना द्वारा अनुभूति लेकर प्रमाणित होगा कि यह एक उत्तम मंगलमय तथा मानव प्राणी मात्र के कल्याण एवं अपेक्षा पूर्ति की पूर्णतः होगी यह रचना के साधन द्वारा साधु-संतों को जनकल्याण कार्य करने में योगदान होगा। इस पुस्तक प्रकाशन द्वारा नाथ सिद्ध सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार एवं भक्ति साधना का लाभ श्री सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी की कृपा से सर्वत्र हितकारक होगा जो कि यह प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय एवं मंगलकारक है।

यह रचना देखते हुये प्रतीत होता है कि नाथ सिद्धों का, साधु-सन्तों का आर्शीवाद प्राप्त होते हुये भक्त महावीरनाथ ने यथा उचित प्रयास किया है जो बधाई के पात्र हैं। अतः सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी से प्रार्थना करते हैं कि आप इन सद्कार्यों को करते हुये यशोभागी बनों।

शुभकामनाओं सहित!

शुभेच्छुक :

योगी आनन्दनाथ जी
(महामन्त्री)
अखिल भारतवर्षीय अवधूत
भेष बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार
श्री गुरु गोरक्षनाथ मंदिर (अखाड़ा)
अपर रोड, हरिद्वार

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

आर्शीवचन

प्रिय महावीरनाथ सैनी

।। शुभ आर्शीवाद ।।

श्री श्री शम्भूजती महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश! आदेश!! आदेश!!!

"श्री नाथ" सिद्ध तंत्र-मंत्र-टोटके नामक यह पुस्तक का अवलोकन करते हुये अति प्रसन्नता हो रही है जो कि नाथ सम्प्रदाय के सभी योगेश्वरों एवं भक्त अनुयायी के कर्मकाण्ड उपासना एवं भक्ति हेतु महावीरनाथ सैनी ने जो प्रयास किया है वह यथास्थिति अनुसार मानव प्राणीमात्र के कल्याण एवं सुख प्राप्ति के लिये यथायोग्य उपयोगी होगा जिसमें विरक्त तथा ग्रहस्थ सभी जिज्ञासुओं की अपेक्षा पूर्ति एवं मनवांछित कर्म कार्य सफलता पूर्ति हेतु प्रकाशित किये हुये इस पुस्तक द्वारा नाथ सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार के लिये विशेष सहायक होगी।

इस पुस्तिका में जो मन्त्र-तन्त्र तथा उपयोगी टोटके आदि पक्षों को समावेश किया है जो अत्यन्त प्रशंसनीय, प्रभावी एवं प्राकृतिक हैं जो कि अनुभव एवं सिद्धान्त होने पर ईश्वरीय कृपा का प्रमाण होगा।

हमें अपेक्षा है कि यह पुस्तिका नाथ सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार में सहायक होते हुये, नाथ अनुयायी भक्तजनों की उपासना तथा अपेक्षायें सफल हो, ऐसी मंगलकामना के साथ आर्शीवाद देते हैं कि श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के कृपा-अनुकम्पा से यह इन सद्कार्य में यशोभागी हों। इति शुभम्!

शुभेच्छुक :

योगी विलासनाथ

योगी विलासनाथ पुजारी
(प्रचार-प्रसार)
अखिल भारतवर्षीय अवधूत
भेष बारह पंथ योगी महासभा
श्री गुरु गोरक्षनाथ मंदिर (अखाड़ा)
अपर रोड, हरिद्वार

समर्पण

अनन्त महिमामय श्री परम ईश्वरीय सत्ता एवं प्राकृतिक शक्ति को मैं सविनय नतमस्तक होता हूँ जिनकी प्रेरणा से मुझे श्रीनाथ सिद्धों के तंत्र-मंत्र-टोटके पुस्तक लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मेरे दादा गुरु महामंत्री योगी आनंद नाथ जी की कृपा अनुकम्पा से मुझे सहर्ष प्रोत्साहन मिला है मेरे सतगुरु योगी विलासनाथ जी की परम कृपा से मैं यह कार्य सफल कर सका।

अतः श्री सन्त शिरोमणि सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ जी आश्रम मठ अस्थल बोहर, तहसील-जिला रोहतक (हरियाणा) इस संस्थान का अत्यन्त ऋणी पात्र हूँ जिन्होंने यह पुस्तक प्रकाशन किया है। अतः मैं इस पुस्तक का मालकीय अधिकार, प्रचार, प्रसार, विक्रय तथा पुस्तक प्रकाशन के सभी अधिकार श्री सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम मठ अस्थल बोहर, तहसील-जिला रोहतक (हरियाणा) इस संस्थान को सविनय सेवा दान रूप में प्रदान एवं समर्पण करता हूँ।

इति शुभम्!

आपका चरणानुरागी :

जल बोर्ड कालोनी, क्वाटर नं० 30
टाईप-I, चौथी मंजिल,
मॉडल टाउन-III, दिल्ली
फोन : 011-27674270

प्रथम खण्ड

संस्कृत मन्त्र

क्रम	नाम	पेज नं०

द्वितीय खण्ड (साम्भरी मन्त्र)

तृतीय खण्ड

* दिव्य मन्त्रावली *

ॐ सिद्धि मन्त्र

श्री मन्त्र सिद्धि के अनुसार कुदरती आवाज से लिखे गये एक-एक शब्द कुदरती ब्रह्म से आया हुआ शब्द है। भारत के किसी शास्त्र में इनका ब्यौरा या किसी मन्त्र का मिल जाना सिद्ध नहीं किया जा सकता। चारों वेदों में इन मन्त्रों का कहीं भी वर्णन या शब्दों से बना मन्त्र नहीं मिल सकता।

यह मन्त्र कुदरती सिद्धि होने से छः (6) मास बाद, खुद भगवान शिव की कृपा दृष्टि से लिखे गये इनको शिव की कृपा से एवं मेरे सत्गुरु योगी विलासनाथ जी, गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) हरिद्वार इनकी कृपा अनुकम्पा से मैं लिखने वाला महावीरनाथ सैनी, जल बोर्ड कालोनी, क्वा. नं. 30, टाईप-1, चौथी मंजिल मॉडल टाउन-।।।, दिल्ली के हैं, जो कि सिर्फ लिख तो सकता है परन्तु इनका अनुवाद नहीं किया जा सकता है।

इन मन्त्रों के पावन शब्दों को ईश्वर प्रभु शिव के द्वारा प्रगट होना और इन मन्त्रों के अन्दर अद्‌भुत शक्ति होने के कारण नर नारियों को इनसे फायदा उठाने के लिए नियम सात्विक प्रवृत्ति धारण करनी होगी। इन मन्त्रों से सिद्धि प्राप्त हो जायेगी, जो नर-नारी इन मन्त्रों का मनन व जाप करेगा अगर वह सात्विक नियम से इन्हें ग्रहण करेगा उसको प्रभु की आलोकिक शक्ति का अनुभव जरुर होगा। मन्त्र एकाग्र होने लगेगा और मनुष्य समाधि की ओर अग्रसर होने लगेगा। इस मन्त्रावली में कोई भी मन्त्र जब तक सिद्ध नहीं होगा जब तक मनन न हो जाये और रात-दिन मनन करें जब इन मन्त्रों की शक्ति ध्यान करने से ध्यान लगने लगे तभी वह मन्त्र सत्य और शक्तिमान बन जायेगा।

जिस मन्त्र का आप मनन करें उसे जब तक मनन करें रात-दिन

करें, सोते-बैठते, जागते-चलते समय करें जिस मन्त्र को जो नर-नारी पसन्द करें और अन्त में ध्यान में बैठकर मनन करें, मनन करने से ध्यान अपने आप लगने लगेगा क्योंकि इन मन्त्रों के अन्दर अद्‌भुत शक्ति है। जब ध्यान मन्त्र करते समय खुद-व-खुद लगने लगे समझो वह मन्त्र सिद्ध हो गया है उसका प्रयोग मनुष्यों की भलाई के लिए कर सकते हैं अगर बुराई के लिए करोगे तो भगत को नुकसान पहुँच सकता है। इसलिए नर-नारियों से निवेदन है कि इन मन्त्रों को प्रभु के नजदीक पहुँचने और पुरुषार्थ के कार्य के लिए करें किसी को कोई तकलीफ हो उसे ठीक करने के लिए, मन्त्र से झाड़ने से ठीक हो जायेगा, जो साधना करते हैं प्रभु की शक्ति पाने के लिए उनके लिए बहुत जल्दी शक्ति मिलेगी और सिद्धियां प्राप्त होंगी।

अतः यह कहते हुये हर्ष होता है कि अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ, योगी महासभा, गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर हरिद्वार के महामन्त्री योगी आनन्दनाथ जी की कृपा आर्शीवाद से यह पुस्तक प्रकाशित करने की सद्‌हृदय प्रेरणा से तथा सत्‌गुरु योगी विलासनाथ जी के सद्‌हृदय कृपा से मेरा यह प्रयास सफल रहा।

मेरा नर-नारियों से निवेदन है कि मुझे यह शब्द मन्त्रावली प्रभु शिव के द्वारा प्रगट हुई है इसमें जो ठीक या गलत, लिखने में गलती हो क्षमा करना क्योंकि मुझे लिखने के अलावा कुछ नहीं आता, जो प्रभु मुझे आज्ञा देते हैं मैं सिर्फ उतना ही कार्य करता हूँ, अपनी तरफ से या संसार के किसी भी ग्रन्थ से इस मन्त्रावली में एक भी शब्द नहीं डाला गया है, जो इसमें गलती हो और आपको जो लगती हो वह स्वयं ठीक की जा सकती है, मैं खुद नहीं कर सकता, मुझे आज्ञा मिली है कि मैं इसे संसार के सामने रखूँ, बस मैं इतना ही कर सकता हूँ कि आपके सामने इस मन्त्रावली को उजागर कर सकूँ। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं जगत के काम आ सकूँ और जगत इसे ग्रहण कर सके।

महावीरनाथ सैनी
जल बोर्ड कालोनी, क्वा. नं. 30, टाईप-1,
चौथी मंजिल मॉडल टाउन-।।।, दिल्ली

प्रथम खण्ड

श्री गणेशाय नम:

श्री गणेशाय नम:
भुजगेन्द्र हारम् भुव: र्भुव: स्व: गजाननम सेवितम
जय गणेशाय: लक्ष्मी रमणो। चक्रोती चक्रोती दशम् दिशायें।
फिरयामो फिरयामी निद्धी सिद्धी पारवितम्
शिव पित्रगणे गणपति लक्ष्मणी यथासितम्
नमामी नमामी नम:
चन्द्र सूर्य फिरुसितम् गजाननम गजराज गिरजा निरुसितम्
गणेशाय: नम: नम:
इति सिद्धम्

श्री गणेशाय

श्री गणेशाय पारवरतितम् जग निर्माणी प्रथमा पूज्यं कारिणी
संसारविन्दम् करुणानिरगामी यसुन्धरा पूज्यकारादिनि
मनू पूर्वा अस्तीकारिणी कारिणी युगे युगे
सभ्य संस्कृति जाग्रति युग युगान्तरम्
सैहेदेन्द्रियम गणेश पीरानिरिष्यति पारवितम्
जय तितरांरयायाम वनस्पति यायाम्
अग्नि यायाम पृथ्वी यायाम सूर्य यायाम चन्द्र यायाम
जय गणेश फिरुसितम् घट घटान्तरम
जय घाट्रनिर्माणी शिवम् पारवरतितम् पार्वती प्रथम:
पुत्रदाति नमस्ते नमस्ते जय गणेशाय नम: नम:
इति सिद्धम्

श्री गणेशाय नमः

श्री गणेशायः गौरवर्ण क्रिमति क्रिमति प्रथमा पूर्णम्,
गणेशावी पूर्वाधिवियम् महानक्षत्रम महावक्षम गणेशाय नमनः।
इति सिद्धम्

ॐ श्री गणेशाय नमः नमः

पूर्वाअस्ती घनाननम् शुभ्रयामी नमः यशस्वी देव कर्णमाला धारणीम्
कल्प तरु धरती तरु माँ नमस्तेतु जगतम फिरयामी फिरयामी
श्री गणेशाय नमः नमः

सत्यम वर्णम प्राविक्तावियम्

गंगा जी पर लिखा गया

ॐ प्रणव सत्यम् शिवम् धरती गगन, पाताल स्वमेव जयते
शिव पार्वति अर्धांगिनि वियम् नर नारी पुरुषुत्तम आत्मा
पृथ्वी लोक सत्य लोकुं आरजिवणु संसारम् प्रम प्रमात्मामयी
भज हस्तलिखित शिव शक्ति शब्द मणीयम् सभ्य भ्रान्तियम् संसारम्
सत्यलोकं उच्चारण नित्यं नित्यं भजनं हरि
हस्तलिखितम् सत्य प्रचारक नमः सिद्धि संसारम्
स्वामी शिवत्व प्रावक्ता, सिद्धी शिव शक्ति पूर्णता विषय बुद्धी
हस्त लिखित सत्य प्रचारक नमः सिद्धी संसारम्
आजिर्णव संसारम् सत्यम् प्रवचन शिवम् अनुशरण
अनुपातिकम् सम्पूर्ण संसारम् प्रकासितम्
इति सिद्धम्

श्री सरस्वती बीज मन्त्र

ॐ क्रीं क्रीं किंली सरस्वतें अरणेणियम्
ब्री ब्री ब्रह्तारिणीयम शक्री कारमण सरस्वते वारिणीयम्
इति सिद्धम्

ॐ सरस्वते नमः

जग निर्माणी दुर्गे यशस्वनि, कर्म धारिणी शिव रूपेणिम,
चण्डीयायाम् भोलाष्टीयायाम् स्वः तदन्तरमपारम भुजगेन्द्र हारम्
नमः नमः नमः

जय सरस्वती मन्त्र

जय सरस्वती नमः
जगत धारिणी, मनौः मनौः बस्यन्ति,
नर नारिः धारिणी, मन विचारिणीः
युगे युगे कर्मणे,
किरोश्यान्ति मन भस्मी धारिणी,
कारिणी, पार्वति रूपान्त्रित
नर नारी मन् भस्मी किरोयामी सरस्वते नमः
संसार मनन भेदिनी, नर नारी,
मनन् भेदिनीः सरस्वतेः नमः
फलतः फलतः कार्यवन्ति,
निर्जीव वस्तुम फलामी फलामी,
मनन इति सिद्धिमः फलमः फलमः सरस्वते नमः
इति सिद्धम्

मोह वश करने का सरस्वती मन्त्र

ॐ भगवते भगवते सरस्वते नमः
मनन भेदन सरस्वते नमः
गौर्ण वर्ण पुष्प धारयन्ति नमः
फलतः फलतः करियन्ति नमः
सर्ववन्ति भवः भवः नमः
नमौः नमौः भवश्यन्ति नमः
नमौ नमौ करियन्ति नमः
जय जय सरस्वति भवान्ति नमः

सिद्धा भजयन्ति फलत: फलत: कार्येन्ति नम:
जय जय नमो: भव सागर तैरान्ति
जय जय सरस्वति नम:
इति सिद्धम्

गुरु मन्त्र

गुरु माकिंतिम विभागमन प्रस्तुतिवियम् नियमानुसरणम्
गुरु आदेश आदेश आदेश अलखा हाजण संसारम्
अलख निरंजन आदेश आदेश आदेश।
इति सिद्धम्

गुरु पाद पदम्

गुरुवा पादम निरिक्षयायाम्
धैर्य: अस्ती पदम धारणीम
गुरुवाणी गुरुवाणी गुरु मुखम बोलिये
गुरु सत्य नम: सत्य नम:
गुरुम् पादम् नमस्तेते नमस्तेते
गुरुम मुखम् बोलिए
गुरु वाणी गुरुवाणी
मुखारबिन्दम जानिये।
प्रथमा: गुरुनानक देव देवाय
नम: मानिये।
भीतरी वामी यशस्वी नमौ नारायणी
भुजगेन्द्र हारम् यतीन्द्र नमस्तेते:
गंगा जमना सरस्वती यथातिथि
ब्रह्म नारायणी जगत उत्पत्ति।

गुरु मन्त्र शिष्य को देने के लिए

ॐ सतगुरु आदेशं ब्रह्मचारिणी देवानापि
गुरु गुर्ण सन्देशां वायु श्रेणियम्

ॐ प्रकाश भव : जगत व्यात्यारिणी
मनु प्रकासियम ध्रुविकर्ण जगत
प्राणी विषय अद्‌भुतय प्रकासियम
मनु कारिणी जम धरातलम्
ॐ मधु किर्णी यथा शक्तिम भागीवितम विधा
अनुपम मायंभितंरिजम शाशक्तय भूर्णीवियेम
उजागरम् प्रवाह वाषिणी वियम् अद्‌भुतय संसारम
प्राशक्ति वियम सुन्दरम प्रायिणी जय यथा शक्तम :
माधुरिप पणम भाग्यावतिजम साशक्तम उत्तीर्णम प्राचीर्णय जगत
ॐ वाक्युरिणम मधुवेलो ओषधिकर्मडंलम पिरोणी जगतम
धरा वासुदेवय प्राचिर्णीजम साशक्तम आधिशक्ति उपम्
ॐ तपोंभूमि यणो नम :। ॐ चौंसठ योगिनी नमो नमाय :।
ॐ पुष्पारबिन्दुम् यणौ नम :। ॐ भैरुदेवाय नम :।
ॐ ध्वनिं प्रवाहं विप्राशक्ति नम :। ॐ शिव पार्वती चरणाम नम :।
ॐ गौर्ण धर्मणाय यथावस्तु नम :।
ॐ गोपीका शान्तनु भगम वासधुदेवम् नम :।
ॐ नमो शंकरम चारिणी नम :।
महापाक्यंजम वास्तु वियम् ब्रह्माण्डम धारिवितम्
सैहस्तर्म पुराणुवियम युग भांतिविषयं मनु कान्तिजम्
चतुर्थ युगम जन्मम् प्राशिर्णीजम प्रास्तु विषय युगम भण्डारम
प्रस्तुत महायोगी जन वाणी गुणगानम प्राजिवर्णी जम
धरातल : प्रवाह विश्लेषणम युगम भांतिविषय सैहस्तम्
पुराण विषय गौर्णजम प्राशक्तिजम जार्णप्राजम विष्युर्णम
धरा प्रज्वलितम शेष वणम गुर्णाकान्तिजम धर्मणेय साशक्तम
उपनिर्विजम भया व्यक्तिजम पुरुशक्तम निन्यानवे विषणु जन्म :
प्राशतिंजम युग सनकम प्राशितिजम जामुणम विस्थारजमं न्यूणनम।

श्री आसन बांधना

ॐ जय रघुनन्दन आसन पधारम
ब्रह्म विष्णु शिवम् जगत धारणम :

सूर्य अग्नि पृथ्वी आकाश
जलम् प्रकारम्
संसारम् उध्धारणम : धर्म पारम
संसारम् नर प्राणी जग धारणम :
कवच धारणीम भग वस्त्रा
धारण अग्नि प्रविष्ष्यति
भूव : भूव : स्व : यतीन्द्र देवा
सम्भणी वाणी प्रयाग्या
विश्वामित्रा शिष्यम्
संसारम् अवतारम धर्म पारम :
आगच्छन्ति आगच्छन्ति
कवच मणी उत्तीर्णम्
पधारम् धरती धारण
युग पुरुष गावत प्रति संख्यम् युग युगान्तरम्
आसन त्रिशुलम उत्तारणामो शीघ्रतम
नमो नमो : नम :
इति सिद्धम्

ध्यान योग में बैठकर समाधि अवस्था में सब कुछ दूर तक देखना

ॐ रमास्य रमास्य रमामि
जननी जन्म दाति कश्यन्ति कश्यन्ति
श्यामला श्यामला भ्रमान्ति
लक्ष्मणे लक्ष्मणे तारुण विघान्ति :
भ्राग्व भ्राग्व तपस्यन्ति : तपस्यन्ति
शिरौमणि शिरौमणि गुरुत्वा भस्यन्ति :
योगीराज योगीराज तपस्यन्ति
यदा यदा नमर्दे भास्क्रान्ति

मरधग मरधग वाजान्ति:
खकुंरी खकुंरी बाजत: निश्चिन्ति:
लक्ष्मे: लक्ष्मे: यमामी चलयन्ति:
गुरुत्वा गुरुत्वा भानु प्रियान्ति:
नजरान्ति: नजरान्ति: पवन चलयन्ति:
भ्रमेणी भ्रमेणी सरस्वते:,गच्छन्ति:
प्रलानी प्रलानी दमयन्ति:
शुभद्रा सीता रुकमणी नजरयान्ति,
भानू भान् प्रियान्ति:
संसार, व्यापन: करिश्यति:
धर्म धर्म यदाचितम्
कर्मेण, कर्मेण भारत भूमेण तपस्यन्ति:
इति सिद्धम्

समाधि अवस्था

समाधि अवस्थिति जाग्रति जाग्रति
मन प्राणायायाम् निरुसति मन भेदिनि संसारम्
वशुन्धरा गायत्री मन् ब्रह्मणी समाधि अविस्थिति
पूज्य कारादिनि मनुस्थिति मुनि विश्वामित्र दामिणी दामिणी
परशुराम त्रिशुलम् पूर्वा अस्ति ग्रामियम ग्रामियम युगे युगे।
त्रिशम्भरि जालन्धरि युगे युगे।
इति सिद्धम्

आसन बांधना

ॐ सौमयन्ति सौमयन्ति पारुणी भजयन्ति।
सर्वदा, सर्वदा, लक्ष्मणे रेखांकित डोर बंधानि
पुच्छंल तारा दिखें।
नाशष्य, अटस्ती, प्रलय प्रलय, चिहानि।
प्रमति प्रमति, यथास्ट, यथास्ट,
मिरयामि मिरयामि।

आसन बांधना

ॐ विष्णु भुततनात्वि चतुर्थ भुजा वाशिणी
दशम दिशा प्रणति पुज्य प्रति क्षणम संसारम
कलाक्षी कलयुगे भव: सागरम संसारम्
भवान्ति कलयुगे उच्चारणम्
त्रिलोकम तारागणम पुष्पागण संसारम्
काल भैरव प्रताक्तिवियम् विमण पृथ्वी विक्याणम्
विकाल भैरव जन्म मृत्यु विज्यारणम् पृथ्वी मापण संसारम
अधिपति विधायकम्
ॐ जागपरियाणी, यान्त्रणी, ब्रह्मा विष्णु शिवम यान्त्रणी
भ्रगोयामी भूर्व: भूव: स्व: भज जगत नारायणी नारायणी
अवतरित भारत भूमेणी भूमेणी।
इति सिद्धम्

किसी भी जगह एकान्त में बैठकर आत्मा को दूसरी जगह जाने का मन्त्र

ॐ श्यामला श्यामला गोवर्धन पर्वतेन
शुभ्रमाणी शुभ्रमाणी गच्छन्ति गच्छन्ति
सरस्वते सरस्वते भाग्य जाग्रति,
पूर्णनामी पूर्णनामी गच्छन्ति,
संसारभेदिनि यत्रिनामी सफलम् करयामि
भ्राया भ्राया लक्ष्मणे, रेखा कंगन निरिस्यति
बावन चक्रोती सहस्त्रबाहु गच्छन्ति रावणे रावणे
हनुमन्त जाग्रति जाग्रति फलत: फलत:
शिरौमणि दर्शन करयन्ति,
समुन्द्र समुन्द्रादि केवट करयोत,
जामवन्त फलामि फलामि,

रुद्र रुद्र भास्ककर नमामी नमामी भारतेन्दु
हरिश्चन्द्र नमस्ते नमस्ते
तारावति तारावति नमस्ते नमस्ते
जय रमणीधारि जाम्पमणी,
गौर्णवर्ण श्यामलाशरीरम् भवति भवति,
समुन्द्रपारम् करियन्ति करियन्ति
विष्णु चराचर जगत भ्रमेणियम्
शुभ्रो शुभ्रो नमामी नमामी
धर्म, धर्मस्य, धर्मात्मा नियामिन,
चलत: चलत: जगत: भोगन्ति भोगन्ति स्व: स्व: नमामी नमामी
जडचेतन, अग्नि, नापास्यान्ति,
धर्मराज युधिष्ठर जानिये।
पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण मानिये।
इति सिद्धम्

जब भी किसी कार्य को किया जाय धरती माता का मन्त्र करना है

धरती मात्रयामि यामि ग्रायत्रि फिरयामि
यथा, यथा, भूमे भुमेणीम संसार व्यापन, गर्भ धारिणी
संसार भारम ओढेयामि प्रकृति मात्र काकुलि मिरयामि, मिरयामि
भारयन्ति भारयन्ति श्यामला वस्त्रादि धारिणी पिताम्बर ओढेयामि
धरती माता धारिणी, उत्तपत्ति संहार करियन्ति
धर्म धर्मकी जय, जय माँ जय
इति सिद्धम्

समाधि अवस्था ध्यान अवस्था

लक्ष्मण पक्ष धारिणीम् राम नवम जगत धारिणीम्
शम्भु आदिनाथ प्रजायनि युगे युगे खकुंरी बाजत निश्चिन्ति
ब्रह्मणी गावत नाचत खकुंरी स्व्यमं आनन्दितम

कृष्णा अवतारम् भज जगत नारायणी नारायणी
मध्य कालीन युग पुरुष गुरु गोरक्षनाथ गुरु को नमस्कार
सूक्ष्म रूप जगतधारि काल रूप असुर संहारि
धरती गगन पाताल तीनों लोक गावते प्रति संख्यक युगे युगे
इति सिद्धम्

आसन पर बैठना

ॐ आसन प्राणवियम आत्मा मिखार बिन्दम्
भुवनेश्वर प्रतिज्ञयम् आसन मनौनितम
पिजेर्णियम् प्रभु आगमन
जय महात्रिगुणम् प्रमात्मम्

पृथ्वी तत्व त्यागना

ॐ पृथ्वी तत्व प्राणी अधम परित्याज्ञयम्
आस्थानियम् पुरुध्वतम निवासम् पृथ्वी नमण
त्याग्यम शरीरम् महानितिवतम्
प्रभु आदेशानुसरण

सौम ब्रत मन्त्र

शरीर की सारी क्रियाओं को सौम कहते हैं।

शरीर के अन्दर अग्नि चन्द्र सूर्य से सारे शरीर को चलाने का मन्त्र

ॐ चक्रम् चक्रम् चक्रोती सौम चक्रान्ति चक्रान्ति
बेनिम्न जगत फिरयामी
सूर्य चन्द्र देवाय: चतुर्भुज घुमायामि,
सैतियोंतितम् सफेद वस्त्रादि धारिणी,
सफेद अस्त्र मिरयामि, मिरयामि

गोलेम्बरम् पृथ्वी फिरयामी,
जीव मात्रे शनिचरि करियन्ति करियन्ति
कखंलमति कड़स्यति, भानु प्रियतम् भव: भव:
इति सिद्धम्

महेश्वरम्

ॐ चकाचौंध प्रणवी मुखारबिन्दम्
अजय अणु ब्रह्म विष्णु महेश्वरम्
कठरांगणी गायत्री नम्रदा भाग्यम तपस्यणी
हितम् हितम् प्रयाग्याावियम्।
इति सिद्धम्

ब्रह्मदेव

ॐ ब्रह्मयामी ब्रह्मयामी धारिणीम्।
पित्रगण नम: नम: तारेण देव: देव:।।
ॐ भूर्व भूव: स्व: तदन्तरम् पृथ्वी भारम फिरयामी।
जड चेतनं वनस्पते युगे युगे
ब्रह्म विष्णु शिवम जगत कल्याणम्।

ॐ ब्रह्मदेव

ॐ ब्रह्मयामी ब्रह्मयामी तेजस्वी यशस्वी
पित्रगण गणेषी शिवम नम: नम:
उपम अवतरितम भारत भुमेणी भूमेणी
शिव शक्ति मायाम् नमस्तुते नमस्तुते।

मन्त्र नारायण देव

भज जगनारायणी यतिन्द्रि
देवं संस्कृति भव: जगत:
इक्र: नमस्ती: भजयन्ति

युग युगान्तरम् सत्य युगम्
पूर्वा अस्ती भूः भूवः स्वः अस्तीः यन्तिः देवाः
घिनिष्यति पाठयन्ति यशुन्धरा
फिरातितरम् धरती, धारणी जगतम्
सभ्य संस्कृति स्थापना द्विव्य अस्त्री नमः नमः देवः।

शिव शंकर त्रिशूल बुलाने का मन्त्र

जय नारायणी जय नारायणी
भुजगेन्द्र नर भक्षयेणम
करियामि करियामि शिवम्
त्रिशूलम् धरतीम् उत्तारणमों
भेंजन नर भक्षणम् पारवितम्
सज गमन दण्डम दृदेयेतितम्
नर अधर्मी नर भक्षणम्
करियन्ति राक्षसे
मिश्यामि नाष्टम् करियन्ति
जय संसारम् सैहरियम्
धरती, भारम् उतरयामि,
समय समय पारम करियन्ति
भज भुजगेन्द्र शिवम् त्रिशुलम्
तारेण देव देव
इति सिद्धम्

ब्रह्म अस्त्र मन्त्र

यदि किसी जन समूह पर आपत्ति आ जाय, नर नर का भक्षण करने लगे तभी ब्रह्म अस्त्र का प्रयोग करना है

ॐ ब्रह्म अस्त्र अस्त्र भारम् उतारयन्ति पुकारम्
त्रिलोकिकम् नमः नमः आगच्छिन्ति तीव्र गतिम
ब्रह्म अस्त्राणि नमामी नमामी ब्रह्म अस्त्रम् गेरुआ रंगम्

धरती पुकारम् धरती भारम उतरयन्ति
ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म योगी ब्रह्म संसार व्यापन
यदा यदा सेवितम् पालेनेमिसागरम्
नम: नम: ब्रह्म अस्त्रादि भेदनं करियन्ति,
नम: नम: भव: सागर तैरान्ति
यजौंहि पालिनि पूर्वा अस्ती धर्मानि धर्मानि पच्छयन्ति पच्छयन्ति
नमामी नमामी
इति सिद्धम्

श्री शिव नारायण

ॐ जय शिव अग्निहोत्री नारायणी जगत निर्माणी
धरती गगन पाताल स्वमेव जयते सृष्टि कृतारम् भुजगेन्द्र हारम्
शिव रूपम नर नारायण जन्म धारण पृथ्वी भारम् युगे–युगे
सर्फनिलमणी धारण गंगा सिश पधारम! प्रियम् उध्धारणम्
दशम् दिशा अवज्ञा प्रणम् भेरू भरेवा काल भेरो
समसाण पधारणम रूपम् संसारम् युगे युगे
जय शिवम् धरती गगन पाताल आगच्छन्ति अगाच्छीति
प्रियम संस्कारम आगच्छन्ति संसारम भारम उतरयामी
धर्म पारम युग युगान्तम् जग संसारम यथास्थिति
करवणे करवणे
जय शिव पार्वती पर नारायणी
युग अवतारम् युग अवतारम् युग युगान्तरम् नम:।
इति सिद्धम्

महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ महारान्द्री जीवन मृत्युन्जय
काया निमीत्री भीतरी गामी
सत्य लोक परमेश्वरम्

प्राजाय: नम: जायनिस्त्रीयोगाम्
जन्म मृत्यु जीवनी प्रनामियान्
आपान माया सृष्टि यायाम्
भुजगेन्द्र दालि लामा:
भू: मूर्व स्व: जननी दाता
परमेश्वरम जन्म दादिना प्रास्व:
जतिन्द्र प्रास्व: यतीन्द्र प्रास्व:
मान प्रियाणी सभ्यम जाग्रति
फूलकायामि जडस्वी नम:
ब्रह्म विष्णु शिवम् प्रास्व।
घनिन्द्री पालनहारी स्व: नम:
प्रायाज्ञया बाहुभुजागिनि स्व नम:
यक्षिणी प्रलादिनि स्व: नम:
दान्दुरी भक्षिणी स्व: नम:
जन्म मृत्यु पालन हार स्व: नम:
शम्भू आदिनाथ प्रास्व: नम:
जानप्रियान्ति प्रा स्व: नम:
भारतेन्दु रवियामा: नम:
भानू प्रियान्तिम नम:
नम: देव: यशस्वी देव नम: इति सिद्धम्

गुरु मन्त्र

गुरु गोरक्षनाथ महाराज, गुरु मच्छेन्द्रनाथ

ॐ गुरु मच्छेन्द्र नाथ कार्याम।
गुरु गोरक्षनाथ शिष्यम्
पूराणाविक धारा नगरी जहाँ बहती गंगा जलम्
पूर्वजा उध्धारणम करियेणेम्
धारा गंगा जलम् युगे युगे।
उत्तर मे मनसा देवी

दक्षिण में चण्डी देवी माँ वासदियिनी
गुरु गोरक्ष जानी सारेम जगतम्
नाथो ने मानी
शिव के अवतारा ब्रह्म योग ज्ञान उतारा
जिसने योगी गोपी चन्द्र भ्रतहरी उतारा
जिसके बल से धरती कापी
जगत उजियारा
जिसके बल से घर घर ज्ञान पसांरा
सारे जगत की फेरी लगाई।
उतरी धरती पर गंगा माई।।
शिव के अवतारा खोली गांढ अधर्म की
धर्म घर घर पसांरा।
आओ आओ देव मेरी रक्षा करो
मेरी आत्मा में बसकर संसार का उध्धार करो
देव जय गुरु गोरक्षनाथ देव
इति सिद्धम्

शिव गुरु गोरक्षनाथ

ॐ सत्यगुरु आदेश गुरु गोरक्षनाथ ज्ञानी
गुरु गोरक्षनाथ सुध बणी ब्रह्ममम्
विध सिद्ध बणी शिव सत्यम् अवतरण
कंठभूमि कंठयाणि भाग्यम वान्तिकर्ण
ब्रह्मा विष्णु महेश वर्णासरण
गौरक्षनाथ भजंन संसारम्
नव नाथ भजं उभारम्
गुरु आदेश आदेश आदेश
नमः नमः नमः
इति सिद्धम्

शिव गुरु गोरक्षज्ञानी
(गुरु गोरक्षनाथ मन्त्र)

ॐ गुरु गोरक्षनाथ ज्ञानी
ज्ञानी नाथो ने मानी जय गोरक्ष ज्ञानी
गोरक्षा करो जगत की
हटाओ दुख मिटाओ सब दर्द
कारज जाने सबके जय गोरक्ष ज्ञानी
फल की इच्छा करत जो नर नारी
मन की इच्छा जानी जय गोरक्ष ज्ञानी
शिव के अवतारा
जिसने योग ब्रह्म उतारा
जग लगी धर्म में गांढ
खोली गोरक्षनाथ।। जय गोरक्ष ज्ञानी
आओ आओ देव रक्षा करो
प्राण नाथ देव उतारो अधर्म की गठरी।
जो घर घर में पसरी।।
देव तुम्हारा पार न जाने कोय।
शिव गोरक्ष जाने सब कोए।।
जय जय गोरक्ष ज्ञानी जो नाथो ने मानी
जय जय गुरु गोरक्ष नाथ देव
इति सिद्धम्

प्रचण्ड धूना मन्त्र

ॐ आदिनाथ प्रचण्ड धूना अग्नि प्रविष्ठितिथायाम्
भूलोकं मध्यलोक आकाश तरु तारणी वियम्
नवनाथी प्रमप्रागतम् प्राणी मात्रमियम् प्रमात्मामयी

उत्थानननम् वनस्पतियायाम् पृथ्वी सूर्य अग्नि चन्द्रयायाम्
ब्रहत् ब्रहत् संसारम्।

भगवा वस्त्र धारण करने का मन्त्र

ॐ भगवा वस्त्र प्रम धाम धारिणी,
वैह्त्तरनाडी प्रज्जलितम्
पवित्रता मनुष्य वृती वर्म
भयानक्तिवियम् शुभम् आवाक्तिवियम्
ब्रह्मा विष्णु महेश्वरम् सत्यम् वर्णम
भग वस्त्रा पवित्रता मान्य वृती धर्मम
अल्पआयु सिद्धाश्रम् संस्थापकनम् संसारम्।
इति सिद्धम्

लंगोट धारण करने का मन्त्र

ॐ ब्रह्मचारिणी उथापथिक्तिम् बाणावर्म धारिणीम्
ब्रह्माणियम् इन्द्राणियम् वशीभुतम् प्रमाणम्
भव: सागरम् तैरातिरम् पाक्यम वस्तुवियम्
महामाया संसारम् आयूरिणी वर्मम् घटान्तरम् ब्रह्मम्
रोक्ति प्रथा महायोगी जन भाक्रायान्ति सुमन
वशीभुतम् ब्रह्माण्डम् पूर्ण शरीरम् खगोलिकिकम्
पण पण धर्मम संसारम्
इति इर्धारण संसारम्
इति सिद्धम् प्रोहाष्यम्
इति सिद्धम्

चिमटा का मन्त्र

ॐ सागर मन्थन प्रयाणुयण
चिमटा बाजा भयानक्तम्
असुंर संहारे चिमटन शिव अंगारे

नीला धारा उत्पथिक्यतम्
विजाक्ति विष प्याला
कंठ नीला अम्बरम्
शिव शरीरम् नीला अम्बरम्
कैलाशपति चिमटा चलम्चल
व्यारे संहारे दैत्यं शिष कटटम्
कैलाश चिमटा उत्तारणमों
शिघ्रतम् सत्यम् सत्यम्
शिव नाथ पूज्यम पूज्यम्
इति सिद्धम्

रुद्राक्ष शुद्ध करने का सिद्ध करने का मंत्र

ॐ रोहणी रुद्राक्षी मनकरिन्द्री नमः
रुद्राक्षीयायाम् गंड संसारम् पारवितम्
फूल माला जडयायामी जयमीस्यामी
जमीस्यामी प्रलानी प्रलानी नमः
रुद्राक्षी बुटी सफलम् करीयामी
मूर मूरगामी यशस्वी स्वः
ज्या वूटी मोरी वाणी बुंटी
दामिनी दामिमि स्वः
रमणी रमणी नमः नमः
इति सिद्धम्

अधर्मी लोग धर्म जो दबाने लगे जब विष्णु चक्र का प्रयोग करें

ॐ विष्णु चक्र चक्रौति भार्गवन्ति, सैहस्त्रबाहु चक्रम् चक्रम् चक्रौती युद्धम नाष्यटष्य नाष्टष्य चल चक्र, चक्रयामि चक्रयामि,

काल चक्रम् भारम् उन्नतै करियन्ति करियन्ति
भास्यामि भास्यामि अड़तालिशियम् भुजगेन्द्र हारम्
सुदर्शन चक्रम् चलायामि चलायामि भुजा काष्टम्
फिरयामि फिरयामि भूर्व: भूव: स्व: जमुष्ठे जमुष्ठे
चलयामि रुद्र ब्रह्म अंगुलानि ब्रासमति ब्रासमति करियन्ति यमामी यमामी
इति सिद्धम्

ॐ पिरुवर्ण: माला: साक्षातम: शिव का आगमन प्रस्तुतम:

1.	शिव पार्वती नम:	19. यज्ञोपति वासुदेवाय नम:
2.	किक्याक्षुयम् नम:	20. परिभानु यज्ञमयाति नम:
3.	प्रजापतये नम:	21. सूर्याविज्ञयमार्तियम: नम:
4.	पशुपतियाह नम:	22. विष्णु वनस्पतियेय: नम:
5.	ज्योर्तिगमय: नम:	23. भार्णासुरम: यज्ञपतये नम:
6.	पर्तापारिणी यज्ञ नम:	24. शुक्षाणुयम भायाकायामण नम:
7.	पार्सनाथियाय नम:	25. निरतरमेणियम् नम:
8.	दिक्षीयणम: नम:	26. पिठासिणम यज्ञपतये नम:
9.	प्रलाप्तियमम् नम:	27. साक्षाभ्रमिण्डम: नम:
10.	दाह दक्षिणम: नम:	28. भूमि दशम मेघावन नम:
11.	पार्भिर्णीयक्षाणुयम: नम:	29. तुक्षाधारिन्यै नम:
12.	किकिक्षायणुयम: नम:	30. विभात्रिक्षणीनियम: नम:
13.	पार्धियक्षीणी यम: नम:	31. तुज्ञयवयात्रैयम: नम:
14.	दिशावाहिनी यज्ञायै नम:	32. न्याक्षाबिन्द्रम् नम:
15.	साक्षावर्धाणि नम:	33. अभ्याव्यात्रै नम:
16.	जय माता भुवनेश्वरियै: नम:	34. सिखितमयमम: नम:
17.	त्याज्ञा वरिन्द्रम: नम:	35. भू: सागरै: नम:
18.	पाठयाथाणियम् नम:	36. पर्वतारोहिण्यै: नम:

37. उपाहर्दिणीयै: नम:
38. पाख्यातिण्यै नम:
39. तुक्षाआर्भेणियम् नम:
40. उपाध्धानुयम: नम:
41. पृथ्वी पक्षाणुयै: नम:
42. नभ्ययज्ञैयतम: नम:
43. नवम दिशा वाहिनि नम:
44. भूर्व भुव: स्व: नम:
45. आन्तरिक्षाम् नम:
46. पूरिणी वरिन्तम: नम:
47. न्याक्षा ग्रह उपक्षम् नम:
48. ब्रह्म मुनियम् नम:
49. सप्तम रिषि गणा: नम:
50. यज्ञोपत्तये: याज्ञमिणीयम नम:
51. अश्वमेधाय नम:
52. कुरुक्षेत्राय भूमियणम नम:
53. पार्धियम दशम् यज्ञाय नम:
54. भुनिवर्म पार्दशियम् नम:
55. सुक्षाणुयप्यम महानवम् नम:
56. ध्याणु क्षणानु ग्रह नम:
57. पिप्पाक्षा अणुयम्: नम:
58. आधारविकम: भ्रमाणु नम:
59. सिद्धियज्ञाय नम:
60. पुराणु वर्भिणियाक्षालाये नम:
61. गंगा माता शिषण्यै: नम:
62. पच्च धातुयम् नम:
63. विक्षार ग्रह नम:
64. पच्च धारिण्यै नम:
65. आधिरिणी विक्षारूपम् नम:
66. प्रलाहदितम् नम:
67. वासुकी विजयम् नम:
68. श्री राम वनवासु नम:
69. सीता प्रभविधार्णी नम:
70. विक्षा वर्जिणी नम:
71. तपस्थली भुमि लाक्षम् नम:
72. अभिवन्तजयुर्णीयम् नम:
73. नवम विधा: गायत्र्यै नम:
74. भूषणा वरिन्द्रम् नम:
75. विक्षाणु हृणम् नम:
76. अपाक्षा भूमिक्षम् नम:
77. गुरुशालाय पिरुवर्ण नम:
78. अभिगुर्णम प्रतापका नम:
79. भिराण्डा पूरिजमनम:
80. निर्गुण्डा व्याभिरिणी यम नम:
81. न्याक्षायाम् नम:
82. अर्णाण्डम्: परिभमण नम:
83. जियापति विक्षारणम् नम:
84. पदम श्री उपायुयम् नम:
85. निमिक्षायणुयम् नम:
86. भारतीय सभ्यसंस्कृतं नम:
87. सप्तदेवाय नम:
88. नवम: पिठ शंकरम् नम:
89. नवम: भुजा भेदियम् नम:
90. सप्तम नदी पवित्रतायै: नम:
91. कैलास पर्वतायै: नम:
92. अक्षनायालायाम् नम:
93. पिरुभर्णम नम:
94. अभितारामणीं नम:
95. विभाव्यत्रियम् नम:
96. अर्जुन कुन्ती मात्रि: नम:
97. कौशल्या राम मात्रि: नम:
98. अयोध्या कुशलम् भूम्यै: नम:

99. यज्ञय सल्यप्रमम् नमः
100. अभिष्यम धार्णायम् नमः
101. अणुयम् नमः
102. जयामितिज्ञयम् नमः
103. उक्षारुयणम् नमः
104. पिपाक्षायणम् नमः
105. ज्योर्तिगम शिवलिगं नमः
106. पार्दर्शिर्यम् जगतं नमः
107. विधा हिर्णायुकमः नमः
108. आधिवर्णियम् नमः
109. आणक्षणम् नमः
110. याज्ञयतापताकायाम् नमः
111. तुक्षारणुयम् नमः
112. वन वनस्पत्तायम् नमः
113. अग्न्यैः नमः
114. वायु नमः
115. आकाशाय नमः
116. पृथिव्यैः नमः
117. जलं नमः
118. पूर्वि वाहिनिं नमः
119. पच्छिमी वाहिनीं नमः
120. उत्तरि वाहिनीं नमः
121. दक्षिणी वाहिनीं नमः
122. पण पाणीयम् नमः
123. शिक्षार्षुयम् नमः
124. आभ्यारणम् नमः
125. भाकंरमणीं नमः
126. व्याध्युवक्षणम् नमः
127. प्रभाति बेलां नमः
128. कुलम जयामतियम् नमः
129. उक्षार भारमणीयम् नमः
130. कृष्णा राधा मणीयम् नमः
131. नन्द गौशालाय नमः
132. चतुर्थ युगम् नमः
133. सत्यम वर्णम् मघमनुं नमः
134. तिकाक्षा भाणुयम् नमः
135. अभितार्वियम् नमः
136. माल्याव्याधियम् नमः
137. भावतिकिगाथाय नमः
138. सुक्षारुयणम् नमः
139. अभिभितियम् नमः
140. मार्गण्डा सुरभियम् नमः
141. आकालसुक्षणुं नमः
142. गौमातायैः नमः
143. भुगेन्द्रम् नमः
144. सहैस्त्र योनियम् नमः
145. भाकरा किर्याणुयम् नमः
146. भ्याभगतियम् नमः
147. मनु पायजिर्णीयम् नमः
148. गायत्रैः नमः
149. मध्याकाल शिक्षणम् नमः
150. अभिभार्णियम् नमः
151. आत्मा पिरूषिणम् नमः
152. महातिज्ञा नमः
153. किक्षारू यणम् नमः
154. भावतिज्ञा नमः
155. अणीयागम् नमः
156. महाधर्म पिरूपणम् नमः
157. ज्ञान वर्धकम पिरूषिणम् नमः
158. आकाश भेदिनि गंगा सरस्वतिभ्यो नमः
159. उपायधानुं नमः
160. काल भेदिनन्यैः नमः

161. उध्धारवक्षम् नमः
162. उपराक्ता वियम् नमः
163. भुपेन्द्रम् नमः
164. अध्याव्याधिकम् नमः
165. आधशक्ति प्रमेश्वर्यै: नमः
166. मघतिज्ञंयम् नमः
167. उक्षारूयणम् नमः
168. भिज्ञाणम् नमः
169. उध्याव्यक्षणम् नमः
170. परिविणम धरातलं नमः
171. मध्याकालीन मरुस्त्यम् नमः

नौ दुर्गे मन्त्र

ॐ नौनिन्द्री दुर्गे आयामी पूर्वा अस्ती:
कल्याणी कपाली मध्यागिनी दुर्गे:
कक्षाणी मृगन्यनी प्राणप्रियाणी
भद्रा काली याही वसुन्धरा जन्म
दादिनि घटा घोरिन्द्री
प्रकटव्याणी जगत प्रगटि ब्रह्मा विष्णु शिवम्
रूपेणी नन्दनि प्रियम अस्ती
जगत माही भूमेणी भूमेणी
संसारम् युगे
जन्मी जन्मदाही नमे तेतू नमोतेतू
पार्वती रूपेणी जगत धारि
नौ दुर्गे पार्वती रूपेणी
नमः नमः नमः
इति सिद्धम्

नवरात्रे पूजन देवियां मन्त्र

ॐ महापुराणुजम नवरात्रि विजय अधिष्ठात्रिविजम
गुर्णान्तमः परिषिकमः अवतारिजपः संसारम
अत्याधिकम प्रविष्झिमि संसारमः
इति सिद्धम्

लक्ष्मी प्रतिष्ठान संकल्प कराने के लिए मंत्र

ॐ ओम पूर्णा गामी यशस्वी देव
संकल्प निरमानी भाग्व वृती,
निर्माणी भज जगतम् प्रायधानी
जड चेतन वनस्पति प्रकृतिया याम्
ब्रह्म विष्णु शिवम् जाग्रति जाग्रति
निर्जीव वस्तुम जाग्रति जाग्रति,
लक्ष्मी रमणी
गणेशाय पारवितम ग्रह यामी
नौ दुर्गे भूर्व भूव: स्व:
नमामी नमामी युगे युगे
गावति नर नारायणी यजयन्ति परिवितम्
अचेतन चेतन मानायानी
मानायानी नम: नम: नम:
इति सिद्धम्

लक्ष्मी मन्त्र

ॐ जय लक्ष्मी रमणा,
जय लक्ष्मी विष्णु चराचरि, जगत धारिणी,
करियन्ति करियन्ति
करूणानिरमामी सेवितम् संसारम्
जगत फिरयामी फिरयामी, विष्णु चराचरि भेदिनि संसारम्
नर नारायण गावति प्रति दिनम्
भास्क्रान्ति भास्क्रान्ति नमामी नमामी
पाष्यन्ति पाष्यन्ति चलनेत्री चलनेत्री
आवागमन फिरुस्यामि फिरुस्यामि
लक्ष्मणी रमणा
इति सिद्धम्

धन लक्ष्मी वंशीकरणम्

ॐ विधार्णी मन धनम् चल चित्रणी
आगतुन्त्वा वधविरिणियम
लक्ष्मणी वंशीभुतम् प्रात: मनम मनन
धन लक्ष्मी नमन नमन
इति सिद्धम्

व्यापार वर्धक लक्ष्मी मन्त्र

ॐ इतरगामी धनम, लक्ष्मी दुरगामी
फलायायाम धाअष्टी
फिरोग्यामी जाययानि
मिनाक्षी लक्ष्मी
यथा सागरम् अस्ती अस्ती
पुरगामी लक्ष्मी नम: नम:

लक्ष्मी संकल्प कराने का मन्त्र

ॐ औ ःह्रौं: लक्ष्मी रमणीयम्
पूज्यम् क्रीमाणी पाठयन्ति शुभम्
परिष्ठियति परिष्ठियति
उमा गणपति उपमा सागरम
उमा शान्ति गणेश शान्ति
लक्ष्मी भज शान्ति ॐ नम: शान्ति
इति सिद्धम्

महालक्ष्मी कवच

ॐ प्रणम पक्षीयतातनम: मूर्धारिणीजम:
कलाषितम: कवच धार्णिम:

प्रभु विक्ताभाजण : सूर्य चन्द्र
परिकृर्मण : यथागतम : स्वयं :
लक्ष्मी पुज्यम : पृथ्वी तलम :
इति सिद्धम्

कुबेर देवा

भानू प्रियन्ति कुबेर अस्तु अस्तु
मानभानाहित धनम कर्मण
उत्तीर्णम सैहपरिजामिणी परिवारिक
उत्थानम् करिश्यति
कुबेर देवा पायनेत्री सहपठन्ति
मायावी धनम् संसारम्
पाच्छताातान्ति शुभ्रमणीयम्
करयिन्ति मनू सिद्धान्तिम
यूग यूगान्तरम ज्यते
धनम् प्रियम अस्ती
ब्रह्मयामी ब्रह्मयोगी आगच्छन्ति
विषवामित्र प्रियम् शिष्यम् पूकारम्
आगच्छन्ति आगच्छन्ति
प्रियम अस्ती धनम्
अस्तु अस्तु
इति सिद्धम्

श्री दुर्गा माँ शेरां वाली माँ

प्रणति पाक्षियम जगत : मुक्ति भातिक्तम :
विविध्यावि : पूजन : मिवातिकि : व्याप्तिवियम : पुष्पम् संसारम्
करुणामयी : जगत : महात्रिलोकिकियम : उत्पत्ति :
निर्धारण : महाकाल : निरूत्थानम :

जगत : माता : काकुलि : दुर्गा अष्ट मणी
पिरूशत : विख्याणम :
आत्यक्तिवियम : भुषणम नेमिनितावियम : पुरूष वाणी जप
माकतावियम : विष्णुभुतम : प्रमति वियम : विस्तारवियम संसारम :
महाकाल :भिर्गुणीजम : त्याक्षावियम : अभ्युत्यथानम : संसारम्
व्याक्तिवियम : भिर्गुणम : आस्थानिजम : संसारम :
महाव्याक्तिरिणी जप : भूषणा व्याभिकतमय पुरूक्तथानम : संसारम्

दुर्गा सप्तशती

दुर्गा अध्यागुणम प्रमेश्वरियम अभ्युत्याथनम
मनु प्रियाणु जप आधरिकम उपवणम परिकिर्याणुजम
धार्मिककम उत्त्थाननम पार्वणियम भुवनेश्वरम्
परिभरमणाय अध्याव्याक्तियम सुक्षाणु वियम
परिध्याक्तय सैहष्णु वियम प्रमाणम धरातलम
पक्षिक्षणीयम विध्यम परिमेषवणम ध्याक्यावतय
भुषणु वियम ध्याक्तय उपस्थनम मार्गाण्डा
दर्शियम उध्धार व्याक्षीया अणुमणय पार्धिवीयम

अथ सप्तश्लोकी दुर्गा

शिव उवाच–
शिव धूगरि वरिणियम
व्यध्यत्यू प्रेरर्णिथम मुत्तमम् प्रभु वरिणियम्
देव्युवाच–
शर्णु देवि प्राव्याक्षामि मनु प्रवाहविजय
गोर्ण धरातलम पूर्वकाशि जय
ॐ अक्षामियम प्रभु विषणु भ्रगु देवम्
प्रक्षामि र्शहद पूरिणी वियम धर्मणम्
प्ररि व्यक्षाणिवियम प्रभु धारिणीवियम

प्रकाश विण्रम धर्म विभुतिजय साक्षावियम
मनु भार्गिकम उपस्थनम प्रथावणम्

श्री दुर्गाष्टोत्तशतनामस्तोत्रम्

शिव पार्वति प्रव्यक्षामि धर्मणम्
प्रभु वासिकाजय नित्यम भर्मणम्
साक्षाविध्यम मनुकाशिझाम विधाननम भ्रगु वासर्थिणिम्
कक्षाणी पर्व धार्मिणम देवा विणीजय
प्रव्याक्षाणीजय धरातमल मनु विकासिणी जप
प्रख्याव्याधिर्णीयज अधिव्याधिकम उपस्थनम्
कक्षाणी ब्रह्मा व्रूाजिकियम मनु थारिणी जप
व्याझामनु वृत्ति विजय अध्याय कुलम प्रमेश्वरम
परिकिणीजय आधारितम भुवनेश्वरम्
परिवृध्याजय विन्यासम परिविणी वियम धर्मण

जय काली माँ का मन्त्र

जय माँ कालों की काल
काली माँ भक्षण करो
जय दुर्गे जय चण्डी माँ
काली बनके भक्षण करो माँ
गुरुत्वा गुरुत्वा रक्षायाम करियन्ति
लम्बे लम्बे केशान्त
संसार भारम् उताशन्ति
धर्म धर्म की जय
मेरी आत्मा की खीची डोरे
आपको सौ सौ बार पुकारू माँ
मेरे समस्त दुखो हरो माँ
सत्यम् सत्यम् दिन रात करू माँ

रक्षा करो माँ जय जय जय माँ
इति सिद्धम्

जय काली माता

क्री क्री किणनकि
काल कालिका विराजिति
भव: पालिनी पालिनि संसारम्
यूगता यूगता सम्भारिणी
जय जय काली माँ उच्चारिणी
इति सिद्धम्

मरघट वाली काली माँ का मन्त्र

शिवम् भूतादि भरमणे भक्षष्यणे।
जय काली माता मरघटेयम
भूतादि सम्प्रदाय मस्म दादी करवेणे
भूतनाथ जगते तारायण
जय भैरो शिवम् अवतारण
नमो नमो करियन्ति करियन्ति
मस्मदादी धूनादि भस्मदायिनी
कर्म दादिनी भूतैन स्वामिनी
सरीम् संसारियाणिम दुर्गे
इस्म तर कायाम भूतोदि उध्धारणयो
भूतादि उध्धारण करवेण
सर्ती सर्ती सत्य भक्षण भक्षण करयेणाम
माँ दुर्गे माँ काली भैरो बाबा
शिव नाथो के नाथ देव देव
इति सिद्धम्

श्री सरस्वती बीजमन्त्र

ॐ क्री क्री किली सरस्वते अरणेणियम्
ब्री ब्री ब्रहतारिणीयम सक्री कारमण सरस्वते वारिणियम्
इति सिद्धम्

काल शम्भरि

तरण भिरंगी काल तिरूणी तिताम्भ
भागोस्यामि पृथ्वी लोक भ्रमाणी
मनुष्या प्राण मिकम्भ आधुं प्राणी
पपजकं जगत बाहुँभुजावलि
ब्रह्म उच्चारिणी स्वमं लोक निर्माणम्
त्रिलोकी प्रजन्म मृत्यु संहारमी
प्रभ हसमं पापण मणी याकम
परम्भुकम्भ चारिणी चारिणी
इति सिद्धम्

महात्रिपुरारी सुन्दरी मन्त्र

महाशिव पुराधिनि अक्षणागणम:
त्रिपुरा सुन्दरी विज्ञयण वृता वरेणियम:
प्रभु वांशुकादिनि: विव्यज्ञयक्ता: विविताम्भरीयम:
प्रशुणीयकम: यादिक्षी पूर्णम: महाकल्याणम: विवाक्षणीजय:
पुरूहक्कितिनि: विसाख्यम पणीयणम: मुक्तिदात्री विवय:
परिभाति विज्ञयाणुयम परिलता: भाष्ययामी त्रिपुराधि:
पच्छिमी कमाणियम: परिलिभान्ति यक्षीणी प्रलापतियम:
क्षणाहजिणीविविभाग्यम निर्माणम: काया: प्रधनीनियायाकम:
याथुयकिर्णी: प्रमवति: ब्रह्म विषणु परिपत्तियम सांख्यार्णम:
ईति हरिन्द्रम: महात्रिपुरासुन्दरी: निधिवक्षम प्रमात्मा

प्रसतुतावियम आगच्छन्ति विकरणम : शिव पार्वति संस्कारम्
मषोनि विध्यम जगत महात्रिपुर सुन्दरी :
आगमन परिचायकिकम : उपतर्ण संसारम्
इति सिद्धम्

जय ललिता देवी वशीकरण

हिंग सहतुत की कोपल पका ले जब पानी सूख जाय तब उसको सिद्ध कर लें।

सिद्ध करने की विधि—घी का चिराग जलाओ और सामान को चिराग के नीचे रख दो। 108 मन्त्र के द्वारा चिराग में घी छोड़ना हैं जब तक जलता रहेगा जब तक घी पूरा न हो जाय।

जय ललिता देवी वशीकरण मन्त्र

प्रायुणिजम जयललिता पार्धिविर्णियम् वंशीताभुतम प्राणी
जय ललिता नमन नमन
जय ललिता प्राकृतियम धार्णुक्तम् विधि वंशीताभुतम प्राणीयम
पुरुषुकुतम् अध्याविजय संसारम्
प्राणी मनन प्रतिज्ञयम महाभार्णुजम अभिवात्रि देवी
मनसामई व्याधाई ललिता पन्थ कृति मई नमन नमन
परिचार्या रमण विषणु भातिज्ञयम जय ललिता विविरणाविजय
वशीभुतम प्रारम्भकम् वास्तुवियम प्राणी मात्रि जय
प्रवाह भेदिनि वायु कमन्द परिरिक्षावियम
जय ललिता मईयम प्राकृत्यम् जगत व्याव्याध्यम्

उड़न तस्करी परि उडडन मन्त्र

पीर पैगम्बर ईजहाँ उल्ला कस्ती फरस्ती बिसमिल्लाह
बनशरीफम् याकुताई कममभिताई
फानुष पिपकार वासुन्धुल्लाई

किसमिल्लाई अतुर परस्ती
निकम्मा ईदर पराई जिन्द मन्छपरि
हिदाई हिदाई निफुसुल्लाई
भरमाई भरमाई
समझणभिशमल्लाई ईमरान
कारिश्तानि तश्तरी भिकाईनामा
कबुल ताईनामा
फिरसती फिरसती
जमाही जमाही
तामसी तामसी

चौसठ योगिनी मन्त्र

शिवम् अन्त्रमुखी चतुर्थमुखम विराजे
भेदना भेदी बज्र बन्दिना चौसठ योगिनि दृष्टान्चेय
ब्रीशिणी हिलेरियम ब्रहती ब्रहती चाणुकिकम्
उजागर्म चोसठ मुखम् दर्पणी मुखारबिन्दम्
सर्वव्यापी बिन्दम् प्रभावारिणीयम् संसारम् प्रताप्तिथम्
सैहदेन्द्रियम् संसारम् उद्दघटितम् ब्रह्मनन्दम् संसारम् भारम्
चोसठ योगिनी:
कंठतरोतारायणी फंस हषणी मर्दीआजणी
मुधस्थिति, मर्णीकान्ता, उन्तवतलता, सैहष्णी, मधुलता,
यजंणी, मिनाक्षी, दिन्दराणी माख्याणी, प्रभा, यतिन्द्री देवराणी
पिन्चाचणी मृघावन्दिनि, यशकिर्णी, यशुन्धरा प्रविणी काठमिनिणी
शोभाग्यावती भुजवन्द्री दायत्रि भुषणवतीकायत्रि
उद्दधानि पिशायिनी प्रभा अग्गिंन्द्री प्रताप्तियम् मृदीकारक्षीणी
महाविधातायनि, सन्ध्या वन्दिनि उद्दधत वविका उत्थाननम्
कक्षाणी ब्रह्माण्डनी कोशल पुन्यभेदी रमणी, प्रसत्यकी, भिक्षुणी

यतादिनि, प्रतान्तुयानि, करमदायनि, सत्यम वशंणी पुन्थल वर्णी
सन्तवतर्णी मणीयाकणी उध्धतावंशीवर्ण तारामीनाक्षी
सत्य हरमोक्षी समसाण, दर्दीयति, पून्यकर्मक्षणी, प्राभुदिली,
प्रसंज्ञावणी, प्रमहषंणी वाटिका, प्रजातिणी मीनाक्षी मुद्रा
पच्छायिणिमुर्धा, कादम्बनि, मधुबैरागिनि, नेकितद्दाणी,
मनप्रियादिणी मोतीमुराणी घटिका चुण्डामणी
महत्वाकक्षाणी, वियजवाशिणी मेधवर्ताणी
पाशचिकनणी घटाधेरिन्द्री मधुबाला शिरोमणि,
पान्चवी, कलाक्षी भद्रवती कलाक्षी प्रमभ्रत्राणी
प्रनालवी रुद्राक्षी कनकना बैलीक्षणी
इति सिद्धम्

गोपनिय मन्त्र

बीज बाणव उठ बैठ प्रजापरियणम्
अग्निवासमन् भ्रान्तु भांकरायन्ति
भव भवर प्राण उग्गवन अग्नि जलति जलम
शरिरम शिषण अग्नि तरोतिरम्
निकम्भ मनुष्या वृती सद् समाप्तम
धुन्ध प्रकासितम् मन भिरन्तरम्
अग्नि उठ जाग मन प्रभु आदेशानुसरण
प्रभ सत्यम् आशिंक शरण मनौवृती सिद्धारम्
इति सिद्धम्

नाग कन्या मन्त्र

शिशम्बरि नागिनि
वशुन्धरा ब्रह्मणी नागिनि
तक्षसिला, परिवततित, नागिनी यक्षीणी
जलम थलम नागिनी, कन्या बाषिणी

नाराजिनि प्रलनि मधु सुदन नागिनी कन्या,
यक्ष दक्ष प्रास्वामिनि नागिनि
वशुन्धरा प्रलानि प्रलानि
महाप्रलानि नागिनि
मभराजानी कन्या वशुन्धरा
फलामी फलामी,
आगमन शिघ्रतम् नागोराजिनी मनीनि कन्या,
बैह्त्तरम् स्थांन्तरम विराजे
मानसरोंवी यूगे यूगे
इति सिद्धम्

श्री गंगा जी का मन्त्र

श्री गंगा माता शंकरचारिणी
भव: जगति उच्चारिणी
पूष्पम् अर्पितम वैभवतारिणी
भया जगत शान्ति विचरणी
शिव शंकरम् जटाजूट जटाजूट विराजिणी,
सभ्य जगत पूर्वजा उध्धारिणी,
जय गंगा माई
इति सिद्धम्

जय मरघट वाली माँ

बज्रारागणि समसाण स्वामिणी
उन्डम तारिणी बज्र भुजा भेदिनि चतुर्थम
भया जगत अग्रोहोणी होजण
समसाण भैरवी काली काल कला

उद्धमति धाणकम् विजाक्ति पणम पणम
जय मरघट वासिणी मद्धागनि अर्पणम्
इति सिद्धम्

गंगाजल पर करना है

मनुष्यों में शान्ति स्थापित करने के लिए

भू: आणी अणम: नम:
तप्यक्षम: भार्णाक्षूरम: नम:
पार्णियणम: भुक्ताजम: मानशिवम नम:
अभ्युत्याथानम: प्रजन्म: प्रयापतम: नम:
अभिनम: भूमिणम: व्रूास्थानियम: शान्ति:
स्थापनम: संसारम:
कृत्यागावर्म: अभिषिर्णुवर्ण: महाध्यावियम:
पुष्पणम: माध्याणम: प्रास्तुवियम: नम: नम:
जय शिवम: नम: नम:
इति सिद्धम्

श्री गंगा माता आसन पर बैठने के लिए मन्त्र

जल मग्न माँ गंगे
धुरन्दर रास्ता दूर करो माँ माँ गंगे
कल्प तरु धरती तरू
उत्तरी माँ गंगे
शिव रूपिणी जगत धारिणी माँ गंगे
संसार को मुक्ति दिलाने वाली माँ गंगे
माँ गंगे आओ आओ
अपना दिया हुआ वचन पूरा करो माँ गंगे
जय, जय जय, माँ गंगे

भगवा वस्त्र धारण करने का मन्त्र

भगवा वस्त्र प्रम धाम धारिणी
वैहत्तरनाडी प्रज्जलितम्
पवित्रता मनुष्य वृती वर्म,
भयानक्तिवियम शुभम् आवक्तिवियम्
ब्रह्म विष्णु महेश्वरम् सत्यम् वर्णम्
भग वस्त्रा पवित्रता मान्य वृती धर्मम्
अल्पआयु सिद्धाश्रम् संसीपकनम् संसारम्
इति सिद्धम्

जय भैरो बाबा मन्त्र

जय भैरो षाष्टायाम
करियन्ति करियन्ति भूतादि
शमशानादि पछन्ति
भक्षादि भक्षादि करियन्ति
धर्मस्य धर्मस्य कदाचित
भवति भव : भव :
नमस्ते नमस्ते शिवम् अवतारण
कार्मशीयामी मार्क शीयामी कर्मणे
भवति सागर तारमणे
धुप द्वीप चढावते
ग्रह ग्रह प्रवेशन्ति
देव देव नम :
इति सिद्धम्

भूतनाथ काल भैरव मन्त्र

भारायण भारायण तारमणे
भुतनाथ काल भैरव
करियन्ति करियन्ति
भुजगेन्द्र हारम पारवितम् काल निरमामी
काल निद्रुक्षाणियम् चौसठ भवन सोलह कला बाजुनि
सैहिष्णुयाणि काल भिरूयायी भक्षणये
जामोनितर जामोनितर वावन भेदिनि,
काल चक्र जामिनि जामिनि,
नमस्ते नमस्ते काल भैरव शिवम् अवतारण नमः नमः
इति सिद्धम्

क्रोध भैरवाय नमः भैरवी नमः

आरक्षीयाणी भस्वमि,
भूतादि भैरवी ब्रह्मा विष्णु रुद्र
कलाक्षी निर्माणी भैरवी जगत उध्धारणम्
कलह कलह वस्तु निर्माणी,
भुतादि भैरवी जगत निर्माणी
कुसुमलता निमर्मता कुलकर्णी
भैरवी याक्ष नमः भैरवी नमः
इति सिद्धम्

देवाताय भूतगण क्रोध भैरव गोपनीय मन्त्र

सैहस्त्रयामि सैहस्त्रयामि, सर्वयामि सर्वयामि
फट् फट् कलाक्षी अमरावति जोगिनि जोगिनि
भिरूयामी जननी जाग्रति, नमः नमः नमः
इति सिद्धम्

क्रोध भैरव मृत संजीवनी मन्त्र

भानू सूर्य हूँ हूँ नम:

जन्म दादिनि पूर्वा अस्ती नम:

काल क्रोधितम् भैरव नम:

यशास्वनी नम: जन्म निधार नम:

इति सिद्धम्

बज्र क्रोधं भैरव नम:

क्रान्तिभुषणम् बज्रक्रोधितम् भैरव नम:

त्रिलोक मणी यशुन्धरा धारणीकिकम् देवधिपति

बज्र पतितम् अंग अष्ट देवी देव, धारणीयम नम:

वज्र पाणिनी, पृथ्वी संसारम् संहारम्

काल भैरव बज्र क्रोधितम् नम:

सत्यपातक आभुषणम् नम:

सत्य प्रकासितम् आत्मा प्रशादितम नम:

जय बज्र काल, क्रोधितम, भैरव नम:।

इति सिद्धम्

क्रोध भैरव मन्त्र

क्रोध भैरव जुं जुं जागरणु

क्रोध भैरवाय: सैहस्त्र भुजाएं आरिक्षिणियम:

विस्तारम् मणी अंक अष्ठ अंकतिकम्

ब्रह्मा विष्णु महेश्वरम् एकम दिशम वाहनम्

परिफुल्लितम् जगत: क्रौध भैरवाय नमन:

बेताल मन्त्र

वसुन्धरा गगन यूबी
तथास्तुगामी नर्मदा यामी।
धातू निरिस्त्री ब्रह्म ज्ञानी प्राअस्तूयामी
जाग प्रियानी वैताली सुगन
प्रस्थानम् प्रथानम करिष्यति
युगे युगे आगच्छन्ति
भू लोक आयामी आयामी
सम् प्राणी तातुरी बाल प्रयाणी
जाग्रति नमामी
जम्मा निर्माणी
निर्जीव वस्तु फलामी फलामी
भूत भविष्य वर्तमान भविष्यति भविष्यति
भारामणी नम: नम:
भूलोकायामी जानप्रास्व: अस्ती नम:
इति सिद्धम्

श्री हनुमान जी का मन्त्र

जय जय हनुमते नम:
पर्वते: फान्दते: राक्षसे: विध्यंस करियन्ति:
सारे: सारे: गौरक्षा: करियन्ति:
फलत: फलत: यम् यमादि:
रोकयामि करमणे कर्मणे
हनुमन्त जागो:
यदायदाहि धर्मस्य: धर्मस्य:
भारत धरतीम् भारम् उतरयामी
हनुमन्त फलम: देव: देव:

राक्षसे: नाष्यदि नाष्यदि करियन्ति
पवन बाणादि पारयामि
पदम: पदम: चलयन्ति:
भव: भव: सागर उतरयन्ति
जय जय देव हनुमन्त देव
इति सिद्धम्

जय हनुमान जी

जय हनुमान अंजणी पुत्रम्
पन्ठ पाणि पणम् जय हनुमन्ता बलम्
शिघ्रतम् अनुयायी गमन
प्रभु अनुशरणम् संसारम्
शिव लोक अवरणुनिजम्
आगमन दुष्टबला नष्टम्
जय हनुमते नम: नम: शिवम अवतरण
इति सिद्धम्

श्री हनुमान जी का मन्त्र

श्री जय हनुमन्त रणधीर अधिकारीणम
प्रस्तुतम युगम वाणी झरमणम
जय हनुमन्त जय जय रमण

गुरु विश्वामित्र

जय विश्वामित्र तपस्यणी
भूमियम आगच्छन्ति
सदाचारी महाविद्या जन्म पधारम्
दीर्घ आयु सशरीरथ पधारम्
काया कल्पी युग युगान्तरम्

केशयाणी कारिणी गलेसर्फमाला
जोऊँ जनेऊ बेअ गेरुआ धारणम्
शिष्यम् पुकारम् जगत उध्धारण
महाविद्या अर्पणायायाम
सफलम् संसारम् धर्म पारम्
शिवम् धरती धारण अवतारण
गुरुमाणी तुम्मणी आत्मा माणी
सत्य प्रचारक नमः सिद्धि संसारम्
विश्वामित्र मुनि शिष्यम्
पधारबिन्दम् अंक शंखम्
अवतारण यूगे यूगे
जय संसारम् गुरु मुनि
आत्मा प्रसारण
युग युगान्तरण जय गुरु देव नमः

शान्ति स्थापना के लिए मन्त्र

णमौ तरायण णमौ
घनानन उच्चारण णमौः अहिस्तारायण नमः
निस्तारण करयाणायम नमः
अहिस्तारण अहिस्तारण भारयण नमः
करियाणम् शिवम् भैरो शिष्टाचारयाणम् नमः
करियाणम् दुखम् भक्षणम् उत्तरायाणम् नमः
रहियेणम् कर्मेण सफलम करियेणम्
फलम् देवायम् कार्येणम्
करयाणम् भाया, शिवम् समभ्रान्ति नमः
शिवम् तारेण देव देव नमौः नमः शिवायः
इति सिद्धम्

सर्व शक्तिमान मन्त्र

सर्वनामी सर्वनामी जन्म मरण
कर्म विधाताय: नम:
सूर्य अग्नि:, पृथ्वी जल नम:
उतारों पृथ्वी भारम: नम:
जागों ब्रह्म विष्णु शिवम् नम:
जगत उध्धारणम् नम:
पुकारम् भगतम् शिष्टाश्णम् नम:
सृष्टि उत्पत्ति, करियाणम् नम:
समय समय पारम् उत्तारणम् नम:
प्रकृति दाता नम:
पापियों का नाश करो प्रभु नम: नम: नम:
इति सिद्धम्

बुध्दि बढाना याददास्त बढाना मन्त्र

जय सरस्वती घीआनि नम:
मुखारविन्दम् जाणप्रायाणी नम: सरस्वते:
पुष्क्रान्ति बुध्दिगामी नम:
यथा यथा निर्माणी नम:
जय सरस्वती: दुरगामी नम:
इति सिद्धम्

तारायणी मन्त्र बुध्दि

ओंरूणियम् तारपतिमणियम्
पार्वति संस्कारम् उडनपरि संसारम्
मात्र तारायणी संसारम् पूष्प अपर्णायायाम्
मधुर संगीतम् ब्रहत ब्रहत आक्षीयणम्

मधुबैला गुंज गुंज संसारम् फलम् फलम्
पार्वति पुष्प अपर्णायायाम् युगे युगे
इति सिद्धम्

अग्नि देव मन्त्र

करियामि करियामि अग्नि पाष्यन्ति
यशुमति यशुमति जल अग्नि पारस्वामि अग्नि,
पारयामि पारयामि, जलसति अग्नि मात्रे
निर्माणी अग्नि प्रविष्ठानि,
सूर्य अग्नि चन्द्र अग्नि जासवन्ति
फिरयामी फिरयामी जलसति मिरयामी
भास्करन देवाय नम:
अग्नि जलसति नम:
फिरूस्यामि फिरूस्यामि नम:
काल भेदिनि नम: अग्नि मात्रे नम:
देव यणुयम् नम: देव,
भिशाम्बर देव नम: नम:
इति सिद्धम्

जल मन्त्र

जल देव भिरूयामि
पृथ्वी जल नम: पारवर्तित
जलाष्य जल निरूयामि निरूयामि नम:
समुन्द्रादि पारवितम् जलम धारूणी नम:
गंगे शिवम् रूपेणी जलम उध्धारणम नम:
संसार जल प्रयाणी नम:
भारमणी जल नारमणी जलम् फिरयामी
जगतम् उत्तथाननम् नम:

सारेम् जगतम् जलम् धरती नम:
पारवर्तितम नम:
जलम् भाव भाव नम:
संसारम् पिरलानि पिरलानि नम:
करूणा वरितम् नम:
जल मारयामि नम:
इति सिद्धम्

गंगाजी यमुनाजी मन्त्र

भारमणी गंगोत्री यमनोत्री नमाय: नम:
चरण पधारविन्दम् विराजे:
प्रभु यशास्वी जडस्वी नम:
पूर्वी अस्ती यशस्वी नम:
जगतम् मुखारविन्दम् नम: नम:

जल तत्व

प्रासत्यथ्य–परिमुर्णाविजम् आव्यागतियम: प्रासत्यथ्य ज्यातेज्यां:
प्राकिर्णीयर्म–शकुन्तलम् महाभावियम् सफलामात्रिजम्
प्राकिर्णीविजम् भिपाक्षाणुयम: प्रामार्तिमम् अभ्याक्तानुजम्
युगला भातिकिकम्–पिरूपक्षाविजम् मान्याभिक्ताजम् सास्वतम्
प्रमणम् शरिरम् विचरणम् त्वाक्याक्षम्
भ्रमेणियम् पाँचवी क्रियाणजम्
प्राषमिणिजम्–आषुकुलम् भ्रामातिवियम: आधारशियम्
मुखणम् ज्योतिजम् निर्भिक्तावियम्
दुषणम् प्रायातिवियम:
मुक्ताहवीजम–प्रामर्णिथम: आपाराधियम् साशक्तिवियम्
मार्धाविव्युणम् मुक्तिभिषम् शरीरम् प्राथकम:
जल तत्व की विभुति होने पर जल तत्व शरीर से अलग और वश में

हो जाता है।

श्री सूर्य नारायण देव मन्त्र

रूषरयादि रूषरयादि रवियम् भ्रमेणी
शास्वत फिरूयामी त्रायामि त्रायामि करियन्ती
रवियामा रवियामा कउस्वामि कउस्वामी,
नर नरमणी भास्यामि
तेजस्वी तेजस्वी वनस्पति वनस्पति,
सैहियेरियम्
भ्रायम् भ्रायम् जड चेतन फिरयामि फिरयामि
धरती, गगन, फिरूयामि फिरूयामि,
जमातितरम्
फूलशीतिम् यादि यादि फिरूयामि
जल समुन्द्रादि बिकाम्बन,
यशस्वी यशस्वी कौडेबिन्दम्
सूर्य नारायणी नारायणी,
जगत नारायणी बसमति
ब्रह्मा विष्णु शिवम् चराचर जगतम फिरूयामि,
जैमिनिसागरम् जाग्रति जाग्रति चमामि चमामि,
सूर्य अस्ती ब्रह्म लोक म्यानि म्यानि, नम्नकान्ति,
यूगे यूगे
यथा यथा हि प्रबन्तिम् प्रबन्तिम्
जामोनिसितम् कउस्वी कउस्वी
बेनम्न भास्यन्ति भास्यन्ति
नम: नम: सूर्य अस्ती
इति सिद्धम्

सूर्य नारायण देव
बीज गुणनात्मकम मन्त्र

सूर्या हिर्णायुकम पिरिथाकारिणी जम:
विविध्यम: जगत पाक्तियम संसारम:
पिरानिरिष्यित पूर्वम: अंध्यायायाम:
पुरूस्तुतावियम: संसारम:
सूर्य अस्तीम: नम: नम:
इति ध्यानिमन्

श्री चन्द्रमा देव देव

चन्द्र माणियम् धाअष्टि,
ब्रह्मयामि तेजस्वी नमामि
भारस्याहिम् क्रियात्मिकिम् करियन्ति,
भानू प्रियतारिन्ति, रिन्तिन,
यथानि यथानि कास्यमियम् करियन्ति
भास्करमति भास्करमति, चन्द्र देवा भास्यमन्ति
यथासिद्धम् फिरूस्यामि पास्यन्ति,
क्रियामि, क्रियामि, यशास्वी, जडस्वी, सास्वति,
घेरूनतिम् त्रिकाल भजमन्ति, यमामी यमामी
चन्द्र देवरिषी, नारायणी भजयन्ति,
युगे युगे, संसार भास्यन्ति,
जय देव चन्द्र देव देव
इति सिद्धम्

श्री चन्द्र देव: मन्त्र

चन्द्र पिरूभा व्याकिणि वृद्धीवाकिकम:
अधिषनायकिकम: उपवर्माणानम: वितावुकिजम:

पिरिभा : उद्धयका : वाकरिजम् मन शिवम् चन्द्रम :
माक्ति : भाजणवति : चन्द्राषम : व्यव्यस्थिति नायकिकम
भज : चन्द्र नारायणी जय :
विपराधिमन : संसारम्
जय चन्द्र भजम : संसारम्
इति सिद्धम्

श्री मंगल ग्रह

मांगलेस्त्री त्रिकाल भिरूयामि,
पारयामि जसडवति, पारयन्ति,
भारमति मांगलिक भ्रमयामि,
युगे युगे जन्म मृत्युयामि,
भ्रासमभ्रान्ति फलती फलती
अनिन्द्री प्रविष्ठान्ति, पविन्ती जामोयामि,
फुलकायानामी, रानामानाष्ति,
नर्मदा मंगलयामी
चन्द्र फिरूश्यति, च्यानि च्यानि,
मंगल मात्रे
जल वनस्पति अपर्णायायाम्
जाग्रति जाग्रति
इति सिद्धम्

श्री मंगल ग्रह

श्री :
मंगलामयी पिरूणाजम : याक्यतिर्णीजम :
अध्यात्मिकम : जगत : निरूत्थानम : प्रषिशिकम :
आक्तिर्णम : मडलम : व्याक्तिवियम : स्थाननम :
पृथ्वी क्षणीयम : प्रयायुक्तिजम : महाभावन :

गुणतावियम : अभिभुतितम : संसारम्
जय मगलमायी जम :
इति सिद्धम्

श्री बुद्ध ग्रह मन्त्र

बुद्धश्यान्ति ब्रह्मयामि,
तेजस्वी यथा यथा सितम
अग्निहोत्री बुद्धग्रह अस्ती, पिताम्बरम्
तेजस्वी वनस्पतियायाम्
जमुष्डस्वति, भारयन्ति
शिरौमणी बुद्धयामि बुद्धयामि हाष्ययामी,
जडस्वी पिताम्बरम् जाम्बनिम्न, तारिणी
चन्द्र सूर्य फिरूस्यति
जामनियागिरि बुद्धयामि,
फारस्वामि, कडस्वी, नम : यामि नम : यामि :
जडस्वी बुद्धयामि
इति सिद्धम्

बृहस्पति ग्रह मन्त्र

ब्रहत ब्रहत बृहस्पति ग्रहयामि,
जागिरान्धि कारिणी पुस्करान्ति
शुभ्रमणीयम् ग्रह स्वामि
जानशरियायाम् फौलायायामि,
धीश्यान्ति ब्रह्मयामि शुभ्रचारिणी,
यथा यथा कर्मचारिणी,
फलायामि जन्त्रायामि स्वामिन ग्रह,
घोडेस्यान्ति परिमानन्दम् फिरूयामि, फिरूयामि
भाग्य वनस्पतियायाम्

श्यान्ति ग्रहयामि, नमायामि नमायामि
भौलाअस्टी निरूस्यति, कर्मणे कर्मणे
यथासितम बृहस्पति देवाय नम:
बृहस्पति गुरुयामि नम:
इति सिद्धम्

शुक्र ग्रह मन्त्र

शुक्रान्तिम् शुक्रान्तिम् शिरौमणी
द्वारागनिश्यति, शुक्रयामि,
ग्रह योगी ब्रह्म योगी, जडस्वी फुलाक्रान्ति, जामनिष्यक्रान्ति:,
भारयन्ति युगे युगे
जालायामि जालायामि फुस्यहाष्य क्रान्ति
शुक्रयाणामिन भद्र भद्र ज्याम्यान्ति
धर्मयामि धर्मयामि जाग्रति जाग्रति
यथा सितम् प्रविष्ठानि
शुक्रयाणम् शुक्रयाणम्
भ्रान्ति भ्रान्ति यशस्वी यशस्वी
देव निन्दराणी जडस्वी जडस्वी जाग्रति
योगनिरमा जागनिरमीणि, जाग्रति जाग्रति,
निरमामि भजयन्ति
शिरौमणी शिरौमणी भजयन्ति
गावति गावति प्रतिदिनम् नम: नम:
इति सिद्धम्

गुरु बृहस्पति देव

गुरु बृहस्पति वायाय: नम: गुरु वारिणी नम:
अध्यात्मिकम: पिरूहाक्तियम: आरस्थाननम:
आधिरश्यिजम: वियाक्यारणम: कक्षाणी भिरूतम:

महाकल्याणम : वीराक्तिजम : ग्रह आविषयजम गुरुम
पाक्तिंविजय : संसारम :
जय गुरु बृहस्पतिवाय : नम :
जय देवाय : नम :
इति सिद्धम्

शनि ग्रह मन्त्र

शनि ब्रह्मयामि कोलिकाकरम्
शुभ्रमणियम् करिश्यान्ति करिश्यान्ति
शनिचर आदि कालम् वस्त्रादि फिरूसितम्
काल वस्त्रादि धारूणी
काल चक्र चारूणी चारूणी,
फलम् फलम् यथा सितम्
ब्रह्म नेमिसागरम् उत्पत्ति करिष्यति,
शनि चारमामी पाष्यन्ति, करूणाबिन्दम् जामोंसितम्
जगत निग्रह जाग्रति जाग्रति
शणि आषणीयम् भार्ग्वन्ति भारग्वन्ति
सैहस्त्रबाहु किरोश्यान्ति
भज जगत नारायणी भास्यन्ति,
जयहिनियमिन पास्यन्ति पास्यन्ति
इति सिद्धम्

श्री शनिदेव मन्त्र

शनि ब्रह्मयामि : याज्ञुरितम : प्रवाहजियम :
वास्तुवियम : संसारम : व्याज्ञयरितम : महाभावन :
यज्ञुतरीजम : आस्थानि युगम : परिजयन्तिम : संसारम :
शनि : भज : जगत् पृथ्वी लोकयात्यानि शिखिकायनि

शनि यातुक्तरिजम : परिभा जगतम :
महापुन्यम : पृथ्वी लोकम : मनुष्यम : भ्रमाणिजय :
सहशक्तियम : संसारम :
इति सिद्धम्

राहु ग्रह मन्त्र

राहु सरासनि, गुणानिरान्तिन, चन्द्र फिरूयामी
जालाभिरिन्ती जालकष्टाशिरिन्तीरिन
काष्टफाटिक भिरियान्तिन भौरस्व : अस्ती
भ्रमयामि राहुकुमारबिन्दम् भालों प्रियान्तिम्
जामोनिस्त्राणी भोग्य जाग्रति निरूयापाणी
भज जगतम् फिरूसति जानवोनिफिरूतितरम्
फिराकष्तीयायाम् नष्डभ्रान्ति जाग्रति
यातयामिनि भारे भारे
उतराणी राहु शिप्रप्राणी फिरूशानेकिम्
जाकिराषनिक मरणप्रान्ति मरणप्रान्ति, जाग्रति जाग्रति
जुनेजवष्टि मानवि निरिष्यिति,
राहु मिष्त्राणी मित्राणी राहु क्रियान्तिन्
राहु निष्तेत्री, नम : नम : प्रविष्ठान्ति
इति सिद्धम्

श्री राहु

ॐ पल्लियाकुतम : महापार्धियम : युक्यणम : राहुयजन :
महाहाक्तिावियम : पिर्जिर्णीयम : परिसख्यम :
यतातिरिणम : आप्यतुवियम : भास्याकारिजम :
माणुयमण : प्रायापकिंतम : उपधािवियम :
व्याभ्युणम : प्रयाकातियम : आप्याक्षणुजम : संसारम :
इति सिद्धम्

केतु ग्रह

ॐ केत्वेतन्तु भासयामि, जेनेवाजिनिम्
भौस्वामि गारेयेन्तिम जामोमिम
जसमुतियामि भास्क्रान्ति जडस्वी धुम्रयाणि चन्द्रम्
भारयन्ति तेजस्वी वनस्पतियायाम् करूणा निरमामि
समुद्रादि मथंन नारायण देवाय तदन्थ राहू केतू राक्षसे
राक्षसे बन्स्थ आयामि ओरेस्ट अमृतप्याला
तदन्स्थ नारायणी आयामि देवताओं उध्धारणम्
करिष्यति तदन्तरम् राहु केतू सिरसाम करिष्यति
तदन्स्थ राहु केतू चन्द्र सूर्य भारयामी भारयामि
जय केतू बारगी जीवों उध्धारणम् करियेणम्
अपर्णा भजते भजते यूगे यूगे
इति सिद्धम्

सूर्या

ॐ सुर्या हिर्णायुकम : प्रम : भाकिंतम :
उध्धारकम : जगत प्राणम :
जय : सुर्या देवम : नमन : नमन :

ॐ चन्द्र

चन्द्र भुषणा यज्ञयम :
मुक्ति भाजिणीजम :
त्याक्षावियम : संसारमं :
सत्यमं मंगलम : जगतम :
प्रमात्मम : आभुषणम :
जय चन्द्र देवम :

ॐ शनि

शनि मंगला भिरूपति विज्ञाणम:
पावर्तियम: जगतम: पिरूणावणम:
आभरिवितम: अणु अंगम:
प्रमात्मियम: सन्तम:
पिरूख्यतम: नमन नमन:
जय शनि देवम:

भगवान महावीर स्वामी जी का मंत्र

ॐ णमौं, महावीराय: नमों,
णमों अहिराणों नमोंणियणम्
णमों निस्तारियणम् नणाय: नम:
जय निर्माणियम् नणाय: नम: संसार बिन्दम नम:
जय महावीराय: नम: मुखारबिन्दम्
जगदीशाम्बरण, नमाय: णमों,
पिताम्बरम् विषणु धरतीम्
धारिणीम यूगें यूगें
जय हरिहराय: णमों
जय महावीरायाय: नम:
इति सिद्धम्

महात्मा बुद्ध

ॐ पैराणिकम बुद्धा
कपितवस्तुयायाम
भारतेन्दु पारवर्तितम् जाग्रति
विषणु धारणिम बुद्धा
प्रचालिलितितम संसारम यूगें यूगें

बुद्धा जन्म मृत्यू पारवितम्
जगत उध्धारणम् बुद्धा
फुलकाया बुद्धा फलामि फलामी,
संसार पारवितम् बुद्धा,
नमस्तेतूं नमस्तेतूं बुद्धा
इति सिद्धम्

प्रभु ईसामसीह मन्त्र

ॐ धाँन्धुन्दनि धारमिनियम्
ईसा मसीह गौरेबिन्दीन
पराई निसिम गोंलीसिटी
मार्क्सवारिनि, तेरूमिनानि
ईतरनेंष्टी भीतरिगामी
टूर्थ मार्मिक गोलेंसिटि टरिमेन्ट
कोपरिमेंन्ट साहपारमैरिड सफीरम
पिंपनिंग थोमसन्स गोड टराऊथ दि पैरामिनिया,
जापारि गोड थ्रिप्सु फुपीनिसिंग गोड गोड मूरिया
पांपपिकिंग गोड फादर मोंरनिंग मोंरनिंग
यशट्रडेयं गुड सुनपरि गोंरस्टी थैन्किंग
ओरिनां ओरिनां जाफनिदर अमेरिका
गोड निमामी गोड फादर गौड फादर
इति सिद्धम्

श्री गुरु नानक देव:

गुरुवाणी निरमायाणिनि:
प्रथम: शिष्यम: पदम: भुषणा याधिन्न:।
प्रथमा: गुरु नानकदेव: यशस्वी यशस्वी:
भू: अज्ञयम: जगत: निवारणम:

प्रथमा पुज्याकारिणी : देव : सन्तु आगम :

भू :नेश्वरम : प्रत्यंगी आसमानि अगम्भ : बुद्धी :

यातुका ब्रम्हमंम :

परिकिर्ति : जगत : उत्थानियम : प्रषुरण : व्याख्याणम :

मनुष्य : वृति चिकित्यषकम : उपधरम :

ज्ञाति विकम : जगत : पुरुषाहाष्याम :

व्यानितिकम : उपहारम : जगत : व्याषणावियम :

परोपकारिविजम पूष्यम : पृथ्वी : पृथमा विविकणम :

उपाधिवियम : उपघषणम : गुरु नानक देवा :

उत्तर पूर्वि दिशा अकुंरणम : प्रयापितियम :

उजागर : नितिज्ञ्यम : विधि वायविकम : उपम :

महाभुतानि कुल सुन्दरी कवच मन्त्र

ॐ महामंगलमयी जंगलमयी

समसानादि आसन प्राणीयायाम्

भुतिनि स्वामिनि नजरयान्ति भैरव क्रोंधी

नमस्तेतू नमस्तेतू

चतुर्थी दिशा वाहिनी भारयन्ति भारयन्ति

नम : नम : उन्मत भैरव नम : नम :

इति सिद्धम्

महाभूत कुल सुन्दरी महामन्त्र

ॐमहाभुतिनि सुन्दरी भजनहारि सुन्दरी

नृपण माया भुतिनि,

मायावी समसाणी स्वामिनि,

यन्त्रयाणी हूँ हाणि प्राणी महासुन्दरी कक्षाणी

काख्याणी बाल्याकल्याणी भद्रा ज्यवाणी

प्रलय मिसांक्षी भूतनृप्यणी सम्मणी नाम्नजली

परित्याग्नि रोंमरोभानि पूर्णमामी
हूँ हूँ भिक्षुणी यम यमादि रुद्र नारायण
प्रलयकारि निर्माषिणी सद् सदु प्रल्यकुमारी
जय निर्माणी नम: नम: यशस्वनि
धारावाहनि प्रल्यवाहिनि
जयकारि जयकारि महासुन्दरी
देवरागणी नम:
इति सिद्धम्

भूत भूतानि सुन्दरी मन्त्र

ॐ कनपरिजाणी सुन्दरी
जाणनिद्रिक्षाणी भद्रा यक्षुणी परिजातण मुखारबिन्दम्
काल प्राणीयायाम
भुतनगरि यायाम स्वामिनि
जाणपरियाणी ग्रहणी ग्रहणी
योगिनि योगिनि नम:
इति सिद्धम्

योगिन्द्री वंशीकरण

ॐ नर फलतितरम फल ग्रामी तुडास्वनि,
योगिनि मल चारिणी फट् हट् योगिनि
जानवरितम गावित्री आगच्छन्ति
फलामि फलामि यशस्वनि
शभ्रयान्ति घानिरिष्यति पिरूतितरम चलायामी
चलायामी निर्जिव वस्तु चलायामी चलाया
गामी यशास्वनि नम: नम:

भूत प्रेत बुलवाने का मन्त्र

ॐ भूत रात्रि भुतिनि, डायन, आगच्छन्ति

मुखारियामिणी स्व: फट

बक: फट: इतरगामी फट बक फट्

बक फट् चल हट् बक फट्

इति सिद्धम्

हांडी बांधने का मन्त्र

ॐ पालनी कारिकम्

कांककरम फट् फट्

रियामी रियामी

हांडियायाम घंडियायाम् चल चक्रम

जल, अग्नि, फटानी फटानी समुन्द्र

गाष्यामि फुलोरामी

स्व: फट् स्व: फट्

इति सिद्धम्

बली देकर भेजी गई हवा को उतारने का मन्त्र

ॐ आरिक्षीणम् भद्रकाली महायक्षुणी

भद्राकाली दात्री

कल्याणी कर्मजातिनि काल भैरव विधाताय नम:

तपस्यणी धरती धारिणिम कलाक्षी तारा नम: नम:

समसाणी स्वामिनि पारसमणी नम:।

इति सिद्धम्

वापिस भेजने का मन्त्र

(हांडी में चार बत्ती तेल की जलानी है मन्त्र चलता रहेगा)

ॐ पालनिद्राणी मीनाक्षी यक्षुणी चतुर्थ वाहनि
समसाण वाषिणि चलनेत्री गमन
उडजाड धरती पाताल अम्बर भेदिनि
राक्षसे विधंन्स त्राही त्राही मारतिरिन्ति
जय विषणु मोहनी दाये चक्र चल चक्र
चल गमन चक्र घुमायानि घुमायानि नमः सैहदेन्द्रि नमः
इति सिद्धम्

चौकी बांधने का मन्त्र

ॐ मरघट मैनिनि
यशस्वनि भुतिनि स्वामिनि
जडस्वी पारगामी
यशुन्धरा पीरम्भरा जायति
दुरगामी पवन नमामी
जायेत्रि पूवानि
पाठयन्ति समसाण चलायामी
पवन बाणादि घो
घोरे घोरे फट् फट् जामि फट् फट् रानी
इति सिद्धम्

पापी भगत के लिए जो समसाण की सिद्धी करके पाप करता है, दण्ड देने के लिए

भुतादि शमसाण स्वामिनि
सिद्धी नर प्राणी नष्टम् करिष्यति
भोग नापा शक्ति ठाटांग नापाष्यति

तोड तोड फट् मोड नाड़ी मर्दन
प्राणी मृत्यू जजांलि
धीरिष्यति 2–पापी कर्मम्
जड फट् टन टन
जाणी मारणवति तोड तोड फोड नली
भगतन की
पापी कर्मम की
इति सिद्धम्
ॐ तत्व अणम् परिस्थिति शुन्यम्
सिद्धी पतझडम् शिव ओदशानुसरणम्

वश में करने का मन्त्र

(भगवान या सांसारिक सभ्यता के विरूद्ध चलने वाले के लिए)
ॐ भास्करमति यक्षीणी सुधा सागरम्
ब्रहत ब्रहत यक्षुणी
ब्रम्ह शान्तिनि यशोंमति नैना देवी
काकुली कर्मजातिनि यशस्वी
भ्राया जाणपरिजातण ज्यावाणी
वशीतां कंठा रानी भव: भव:
आगच्छन्ति प्रास्व: अस्ती नमामी
इति सिद्धम्

जिस आदमी पर हवा हो उसके ऊपर बच्चे मन्त्र करना है

(ताबीज मन्त्र)
ॐ शैलेन्द्री काल भैरव नम:

हस्तान्तरण भुजगेन्द्र हारम नमः
पूर्वगामी जालेन्द्री यशस्वी नमः
प्रभ आत्मा निद्राणी नमः
फलायामी फलायामी नमः
इति सिद्धम्

यदि जीव जीवों पर आपत्ति में डाल दें तब यह मन्त्र करना है

ॐ जाणपरियाणी जगत फिरूशति
नक्षतरे नक्षतरे जड जड फट् फट् स्वः
नौ नक्षतरे अधर्मी प्राणीयायाम्
नष्टम नष्टम करिष्यति
धरती मात्रे फत्फट स्वः
प्राणी कर्मम अधर्मी नर नर फट फट स्वः
पंचम जयाफलम धुनि प्रविष्यामि
प्राणी अधर्मी नष्टम नष्टम करिश्यति करिश्यति
मदांन्दिनि काल रात्री मिरूयामी
ग्रहस्थीम् काल काल रात्रे
थथामि थथामि वः फट फट स्वः
धरती धरतीम नीलाम्बर फटतः
स्वः स्वः अधर्मी जीवन फटतः फटतः स्वः
इति सिद्धम्

कार्य को दूर से करने का मन्त्र

ॐ चैनिन्द्री माधुरी यक्षीणी
पायनेत्री यक्षीणी
पूर्वगामी धान्धुनी

मानीकिर्ती यक्षीणी लादीमानी
कास्मधुयानी प्रलानी यशस्वी
भ्राया जाणयाणी मधुसुदन
गच्छामी गच्छामी
तुतबराणी योगीन्द्री योगिन्द्री योगिन्द्री नम:
जय काल भैरों विधाताय: नम:
इति सिद्धम्

जब भी कोई बहुत बड़ी बला किसी आदमी के ऊपर हो तो इस कवच को कर बैठना है

कवच बाण
ॐ शैहस्त्रबाहु सैहस्त्रबाहु शुभ्रोंबानी
यथानि यथानि वैहत्तर नाडी
घेंरवेंरिन्तीन जडस्वी पावन
मीनारक्षी भैरवी कालवी भस्मदिनि
समसाण स्वामिनि यशस्वी यशस्वी
देव काली काल भैरवी, समष्टि समष्टि
फट् फट् रानी स्वामिनि प्रजायनी मतिरानी
भोगणी जाग्रणी भारतणवति भिक्षुणी
मुझे अपना कवच नजराना पहनाओ
इति सिद्धम्

नजर झाड़ने के लिए मन्त्र

ॐ कुर्णुभुष्डम: यक्षीणी
मात्रियामि: प्रान्तम: भाव गति शरिरम:
मुक्तेश्वरम: भंवरम् उत्तारणमौ:
नम: नम:

पानी 5 बार उतारकर अग्नि में प्रवाहित करना है

भावार्थ—कानों में आभूषण युक्त पक्षीणी मात्र स्वरूपा शान्त शरीर को भाव एवं गति देकर मुक्ति प्रंदान करने वाली संसार से पार उतारने वाली देवी को बारम्बार नमस्कार है।

साबर मन्त्र

सवा लाख से सिद्ध किये जायेंगे या फिर शिव गोरक्ष योगी को सवा लाख जाप करें वह मनुष्य इन मन्त्रों को चला सकता है।

नयना अस्ती फिरिंगारियम्

यस्तु महाकालम् प्रम वीरागंनम्

दिव्य मन्त्र

ॐ पघार्णियम् वितानुभावन

तत्व क्षमम् प्राणायुविजम

चन्द्र भाष्याम्

ॐ नमः सूर्या अस्ती ओंमकारवियम्

प्रमेश्वरम उपम् मणी यणम जय सुर्याभ्याम्

ॐ शिवा श्री सति आगमन

परिज्योति अगम्भ बुद्धि प्राप्तम

महाभानुता शिवा शति नमन नमन

ॐ तपि भूमि मनु विष्याक्षम्

भरूणा व्यतिज्ञ्यम् महानिति प्रयोज्ञ्यम्

विश्वथा भ्रमेणियम् शिव अनुस्थनम्

ॐ श्री गंगा प्रसति वित्तारनणम्

प्रभु शिवा शरणम् प्रभातम्

मनु विकर्णीयम् शिव विराजतम्

जय गंगा शिवजी प्रियम्

वश में करना

ॐ पाँच तत्व भिर्खारिणी माया

तजो यजो भूखण्डवी

पाँचों तत्व वंशीभुतम् पृथ्वी आकाश अग्नि वायू जल

प्राणी प्रत्युगायम् आसन प्रभु आत्मम् शिवम धारणम्

हर समय साथ रखने के लिए

जय लालिता देवी वंशीकरण

1. हिंग सहतुत की कोपल पका लें जब जानी सूख जाये तब उसको सिद्ध कर लें।

सिद्ध करने की विधि—घी का चिराग जलाओ और सामान को चिराग के नीचे रख दो। 108 मन्त्र के द्वारा चिराग में घी छोड़ना है। जब तक जलता रहेगा जब तक घी पूरा न हो जाये।

मन्त्र

प्राण्युणिजम् जय ललिता पार्धिविर्णियम् वंशीताभुतमप्राणी

जय ललिता, नमन नमन

जय ललिता प्राकृतियम धार्णुक्तम् विधि वंशीता भुतम प्राणीयम्

पुरुषकुतम अध्याविजम संसारम्

प्राणी मनन प्रतिज्ञ्यम् महाभार्णुजम अभिवात्रि देवी

मनसामई व्याघाई ललिता पन्च कृति मई नमन नमन

परिचार्या रमण विषणु भातिज्ञ्यम् जय ललिता विविरणाविजम्

वशीभुतम प्रारम्भकम् वास्तुवियम प्राणी मात्रि जम्

प्रवाह भेदिनि वायु कमन्द परिरिक्षावियम्

जयललिता मईयम प्राकृत्यम जगत व्याव्याध्यम्

अहिरावण का मन्त्र

जो मनुष्य इज्जत मान न करता हो

प्रयोग विधि–सांड का गोबर सुखाकर सुखी खास मिलाकर फूंक कर भभुति बना लो फिर सिद्ध करो।

मन्त्र–

अहिरावण प्रज्वलितम् विकिराजवियम प्रमुखम् सिध्यार्थम्
परूक्रिया विजम प्रफुल्लीतम विकिर्णम जयवितम सर्वोपरि संसारम्
माला जपम् सिध्यार्मि मुनि रकम् विद्यार्थम् नित्या नित्या भंजनम्
जय अहिंरावण विजयाकम नमन नमन
अहिंरावण विद्या अनुपम भागिवितम् पृथ्वीशणम्
देवी काली अनुपमम आत्मा प्रशारणम् प्राकृतिक वायुशमम्
मनु विकितम् भ्रामणम पारयुजम निर्मिक्तम सैहवारिजम
अहिंरावण विजयकम भानु कर्णम नमन नमन

श्री एकादशी प्रम मणीयम

श्री ईकादशि प्रम गति पूर्विध्यम:

आषिविश्वश प्राविर्णुयम

विज्ञार्णीयम परवंतम धारिणीम्

पुरुष मृदयकि पुष्पाह धरिणी

सत्ययुगम मार्गण्डिी वशुन्धर्म परिविणियम

आधारविकम मनुष्य कृति चित्रकारिणम

प्रवाहशणम विषणु भावगणम विस्थारम

श्री गणेषाय नमन इकादशि पर्वम वेद वरूणी जम

गोक्ष दादिर्णी जन्म भव सागरस तैरातिरम

मनौकामिनि धर्म उपजयेता विजयम समभावन

इकादशि उपवनम गणितम परिभक्षणम
वतानुकुलम प्रमेश्वरम परितिर्किजम उपवणम संसारम
भयावकम ध्यावणम पुरूषथनम जगतम
जय भांकुरी यमण तारायणी जय
जय इकादशि नमन नमन:

जय अमावस्या

जय पित्रावरिणी जय सास्वतम प्रभात्मम परिषिकिजय उध्धार अमावस्या वकयम
महाभाविजय सत्ययुगम प्रामिणय ध्यारूवितम
अजीर्ण भाख्ज्ञवन पिडाक्षणी जय तत्व गतम
धार्णुक्षय प्राप्राणीवियम अमावस्या पर्थाकारिजम
विन्याक्षम प्रमात्मम पिरिणी वर्ण ध्याज्ञु वितम
ध्यन्याक्तम सैहष्णी विजय पूर्वाध्यम जगतम
विधि व्याक्यातिर्य मनौ कामिनि जय सहशक्तम
प्राणी वियम धुर्विकर्ण महाभागम प्रिया व्यारूणी जय
जगव्याकम महानकम परिधी व्यागतम
सत्य युगम मनौ वितम पित्रा गणीं जय
विस्तार विपम जगतम
प्राणी उध्धारम मान प्रतिस्य वियम
उपहारम विज्ञ्यंम धन्यम प्रत्यापारिजम
विन्याक्षणम पृथ्वी जन्मम शिव लांकं उत्तारणम
सत्ययुगम जन्म भातुकम विधि प्रणात्मम सास्वतम्
जय अमावस्या पृथ्वी कर्णनम

श्री यन्त्र

ॐ यमुना गंगा नवग्रह अस्तीयायाम्

श्री यन्त्र प्रभुशरण
शिव महात्यागम ब्रम्हा विषणु महेश्वरम्
यन्त्र सिद्धम आगन्छित
नमः वस्तु श्री यन्त्र प्रभु
नारायण नमो नमः

71 बार जाप हल्दी चावल से आमन्त्रित करना जब यन्त्र बन जाय तब हल्दी की चार गांठ चारों कोनों पर बांधनी है बीच में गुलाब का फूल 10 हल्दी के टीके दशों दिशाओं में लगाने है, गंगाजल भी साथ में रखना है।

लाठी चलाने का मन्त्र

ॐ धीनू परास्ती समसाण स्वामिनि
उठ जागति फट् फट् लठिरिया चलयामि
दुष्टबला स्वामिनि आगच्छन्ति पूर्वा अस्ती
नेत्रगामीयायाम् फट् लाठी फट् फट्
लाठी चल लाठी चल
फट् लाठी फटफट्

लाठी लगने के बाद लाठी हटाने का मन्त्र

लाठी हट स्वः
फट् हट् फट हट स्वः
स्वामिनि हट हट जागति
इति सिद्धम्

किसी भी समय पेड़ से फल मंगा सकने का मन्त्र

ॐ फलम् फलम् आगच्छन्ति
भीष्मबाणादि तुष्टरान्ति

रितुराज फिरयामी जडस्वी वनस्पतियायाम् जगत
निर्मामी आगच्छन्ति
फलम फलम भिगोन्ती सम्रभ्रान्ति सब्रभ्रांति वय:
ॐ ज्याभितरी गामी फलम जागति
बैठ बाणादि जड चेतन वनस्पतियायाम्
नम: शान्तियामि जडस्वी जडस्वी योगन्ति
डाली लुडीयानी निर्माणी निर्माणी जागति जागति
इति सिद्धम्

घर या खेत को किलने का मन्त्र

ॐ ब्रज धातु ब्रज पृथ्वी महासमुन्द्रम
काल भैरव आगमन
वस्तु अग्रणीयायाम अकुंरण अशुरंण चतुर्थ दिशा वाहिनी
दशमृ दिशा बंन्ध परिपूर्णम पृथ्वी लोकम्
समसाण भयानक्ता भुतनगरि किल भेंदिनि पाताल
भैरवी कील बैताल अफसराये किल समसाण पृथ्वी किल
काल भैरव शिव सत्यम् आदेसुरण
धरती आकाश पाताल भेंद भेदिवक्तम कील
पाताल भैरवी किल, महापृथ्वी तलम
जय भैरव नमस्तेते नमस्तेते
इति सिद्धम्

मायावी धन निकालने के लिए मन्त्र

इक्यावन बार जप करना है

ॐ लक्षमें लक्षमें रमणा नम:
शौरभौम करियन्ति
यूगे यूगे लक्ष्मे भास्यन्ति

फलत: फलत: शौरभौमणि
पार्वते: गुणगान गावति पुष्पम पुष्पम अर्पितम्
गुरुत्वा आसन गुरुत्वा आसन भवति
श्रेष्ठतम श्रेष्ठतम जयामिनि
धरती गगन पारविष्त
गजाननम सेवितम भ्रमेणी भ्रमेणी भास्यन्ति
ब्रम्ह विषणु शिव पार्वते: नमस्ते नमस्ते
गच्छामि गच्छामि शोरेमणि
सरस्वते सरस्वते अच्छन्ति
सर्फमणी सर्फमणी जाग्रति
जाम्पनिरूसितम पाष्यन्ति
विषणु मोहनि जगत लक्ष्मणी
यशस्वी यशस्वी पारश्यानि
जामिया जामिया पिरूसिटियम
भूर्व: भुव: भ्रमयामि भास्यन्ति
इति सिद्धम्

अगर कोई किसी की जायदाद हडप कर ले

उसके लिए 72 बार तेल पर करना है

ॐ शनि कांकुली पाणीयायाम्
पालनहरि आरिक्षणी
नेम्बेंदिविरान्दिन यदू यदू
जाणनिरान्द्रि
पाषाण यूगे यूगे धर्मयन्त्री
फाअष्टष्यति नजर याणी धुम्रयाणी
धनम् प्रजायायाम् घनिष्टयति
पादानिदर पादानिदर नमस्तेते नमस्तेते
आदरणीयम् फलायामी फलायामी

इति सिद्धम्

खेती की उपज बढ़ाने का मन्त्र

ॐ आरिक्षीणियम् वनस्पतियायाम् नमः

बहुतेन्द्रीयम् ब्रहत् ब्रहत् आनन्दीतम् नमः

पारवितम नमामी नमः

सूर्य चन्द्र नमायामि नमः

फुलजामिणी वनस्पतियायाम् नमः

आत्मानियामानि सद् सदु नमः

ब्रम्ह विषणु शिवम् नमः

पवित्र पावन जलम नमः

पवन आदि रघुनन्दम नमः

इति सिद्धम्

जय धन तैरसवि नमः

ॐ पूर्णावर्ण धन तैरसविनमः

परियावाणी परितनम् थिकाक्षीयणम्

प्रलिभानि जय मतम प्रस्तुविविकार्णीजम

प्रथाकारि जय संस्थनम निर्माणम धनतैरासविजम

चन्द्र भाष्याकम उत्पादनम परिषिकितम जप मतम्

अभिप्राणी या जय वास्तुवियम ग्रणनम व्याध्युविकम

अहाश्रेणीयम प्रभाकारिजय व्यात्युकम महेश्वररियाजय

विधि वक्तम पूज्यम भजंनहारिकम पुष्पाहारिजम

वतानुकुलम जगतम प्रवाहशणम ज्ञानिताजय

सारवत प्रेमेणियम साहवक्तय जगतम्

भाव भणम जगतम उत्तथान नम प्राणीयम।

किसी भी घर में ऊपर का किया हुआ काटने का लिए

पैगम्बर पीर अनाहहुल्लाह
जहाँ ताबिज करम विसामिल्लाह
ताजसरपरि हिदायततुल्लाह
कसमितिल्लाह फसतिनतालिब
जहाँपनाही दशमुल्लाह हिदाई
फतेह सनमगरि निमाही निमाही
तामसी तामसी

देश में अकाल भुखमरी लोगों पर आपत्ति आ जाय, सवा लाख जाप मन्त्र

फिरयामी फिरयामी नाशवन्ति
सहत्रों भुजा भेदि अहिस्तारम्
किरोश्यामि किरौश्यामि संसारम्
भुजगेन्द्रम हारम धर्नुधारि भीष्म पारयन्ति
संसारम् धारम् निष्यिन्ति निष्यन्ति पारम् भुजगेन्द्र
धारणों पिताम्बर कमेर्णे कर्मणे पीला पिताम्बर धारिणिम
पुष्प अर्पितम पावन धुन्दरू निष्यसितम्
काल पवनादि धरती, धरती धर्मात्मा, धारिणी
कष्यन्ति कष्यन्ति प्रियताम्बर जगत सुसकेंश्वर
जननी जगत उत्तपत्ति करियन्ति
श्यामयानि श्यामयानि करियन्ति
रुद्रतारामणी चक्रोंती चक्रोंती कयामत कयामत फिरयामी

जामौंनितर जामोंनितर जामयन्ति
रम्भा रम्भा चारभुजगेन्द्र चारायानि चारायानि
चर्तुभुज संसारम उद्वित भव: सागर
मन्थन रियामि रियामी
सेंवति सेंवति पुल अकिंत किन्ध, फिरू चक्र धारिणि,
करयन्ति करियन्ति राक्षसे भक्षण आदि करवते करवते।
शिषुपाल मारणवति स्व: स्व: नमामी, करियन्ति करियन्ति
जागरति भव: भव: सागरम तैरातिरम समुन्द्रादि समुन्द्रादि
पृथ्वी वरूणमयी वरूणमयी भास्यन्ति श्यामयानि श्यामयानि
कष्टम जिवात्मा निवारण
सत्य लोक, भूलोक, पाताल लोक, ब्रम्हलोक नमस्ते नमस्ते
भू: भूव: जतिन्द्र देवा, निवाश्यामि निवाश्यामि
स्व: भव: स्व: भव:
इति सिद्धम्

जब भी मुसीबत आ जाये किसी प्रकृति की चीज की आवश्यकता हो तुरन्त भगवान का मन्त्र

ॐ मृगनृप्यणी भुजँगी माया
समाया संसारविन्दम्
नर नारि जातुनि, संसार प्रकृति वस्तुयायाम्
अस्तु अस्तु गच्छामी गच्छामी
तुम्हणी बुलावति शिव पार्वति संस्कारम्
संसारम् उध्धारणम् करवते
यूगे यूगे परिवितम्
जय खकुंरी बाजत गच्छामी गच्छामी

यतादितिदिद्रेन्द्रम देव
इति सिद्धम्

शारीरिक बीमारी के लिए मन्त्र

ॐ भारयन्ति भारयन्ति शिरोमणी
काष्यमिणी सब्रभ्रान्ती नमः
भाग्य जाग्रति यशास्वी
कालनिरूपणी भजयन्ति
करूण मिखारबिन्दम
सर्वमायी सर्वमायी जालेस्टी
पूर्नी निर्वाह सितम
जय नरमणी भक्षेयणेयम्
पारस निरमागी सेवितम
नर्मदा नमामी विधनेश्वर
पारदर्शी वितम
इति सिद्धम्

किसी आदमी, बच्चे पर शारीरिक ज्यादा बीमारी हो तो ये मन्त्र करना है

शारीरिक मन्त्र
ॐ भ्रमयामी जडस्वी चेत्नवः कन्नव करिष्यति
पुष्प धारिणी भवः भवः कारिणी
यथा यािा सर्वयामी भुजगेन्द्र पारवितम
षादविनि पुष्प अपर्णायायाम
भिरूस्यामी भिरूस्यामी जडस्वी येशास्वी
पारयामी पारयामी
सूर्य चन्द्र गणपति सुमरू ज्ञान देव

इति सिद्धम् स्तस्वता भिम्बरिणी
स्व: स्व: कारिणी कारिणी
षष्ट नम: धारूणी धारूणी चेतन्य
जाग्रति जाग्रति म्फलम् फलम् देव देव
इति सिद्धम्

जीवात्मा जाग उठना

नर–नारि, बच्चा मरने की हालत में हो तो इस मन्त्र को 1700 बार करना है जीवात्मा जाग उठेगी

ॐ नरमणी नरमणी भवति:
सुधा सागर नमस्ते नमस्ते
भास्यन्ति भास्यन्ति यूगे यूगे:
ब्रम्ह विषणु महेश अष्टदेव
यशस्वी यशस्वी काल निरूसितम्
भुगेन्द्र भुमेन्द्र आगाच्छन्ति
भुमि भुमेण काल निरूसति
सैहत्र सैहस्त्र भाकायायाम्
निरूसते निरूसते
भ्रमणे भ्रमणे आनन्दीतम्
सर्वदा सर्वदा पाष्यन्ति
जममसुनिंतर चराचर जगत
फिरयामि फिरयामि
सैहत्रबाहुं यमादि यमादि,
तैरासति तैरासति सफलम् भाग्य जाग्रति
फलामि फलामि
सिद्धयोंगिनि फिरूसितम् फिरूसितम्
जाग्ररति जाग्ररति नमामि नमाति

जय निरमामी निरमामी
भव: सागर पारम भुजगेन्द्र हारम्
इति सिद्धम्

जिस आदमी में बच्चा पैदा करने की क्षमता न हो उसके लिए यह मन्त्र करने से पूर्ण हो जायेगा

19 बार करने के बाद पीले धागे में 19 गांठ लगायें

ॐ चन्द्र इति सिद्धम्
पारसमणी किद्धम
फूलयामिणि फुलयामिणि विघन्स
त्रैरतारामणी पारयामि पारयामी
ज्लाष्य जलाष्य पारयन्ति पारयन्ति
गच्छामि गच्छामी
रूद्र नरेन्द्र देव फिरूस्यामि
गाष्यन्ति गाष्यन्ति
पारसमणी नियतामिणी
दामिणी भास्यन्ति
पीला वस्त्रादि धारिणिम
फलामि फलामि
इति सिद्धम्

जिस नारी के बच्चे नहीं होते हो 71 बार पुष्प पर करना है

ॐ सूर्य अस्ती अस्ती चक्रौती चक्रौती।
श्यामला शरीरम् आगच्छन्ति।।

नील धारूणी पर्वते: बस्यन्ति।
शरीरम जगत धारिणिम्।।
काया, निरमामी, लावणमति।
सुभ्ररा रूकमेण सीता, जगत धारिणी।।
यशस्वी यशस्वी जन्म जादिनि,
संसार हारम भुजगेन्द्र हारम,
कश्यन्ति कश्यन्ति कश्यन्ति
रमणा, रमणीक, पाष्यन्ति
यदामि, यदामि, पुष्पम, चमामी चमामी,
जड चैतन पवन मिरयामि मिरयामी,
जडस्वी जडस्वी पास्यन्ति।
इति सिद्धम्

बच्चा सही और जल्दी पैदा होने का मन्त्र

ॐ परमेश्वरी गुरुज्यवाणी
फलामी फलामी यूगे यूगे
जन्मी जन्मदात्रि
मन्त्रि मन्त्रि नम: नम:
इति सिद्धम्

पति पत्नी माता पिता भाई बहन को आपस में मिलाने का मन्त्र

ॐ भुजगेन्द्र हारम् यन्त्री यन्त्री पारम,
यादि यादि कन्शरि मानवी,
ब्रहम मिम्बबारिणी फलोयामी फलोयामी
भाकरांयानि मिलत: मिलत:

ब्रहतविरिणी माता नैनरन्ती

पारयामी पारयामी

इति सिद्धम्

बच्चों को स्वस्थ रखने के लिए मन्त्र

ॐ भूर्व अस्ती जगावनि

भूव : त्रिदेंव मन भावनि

जग ख्याति नामि जय भगवति जस्वनिम : सरू

भोजन करने से पहले का मन्त्र

ॐ त्रिपित्ता वेषणम् भोजनम : पुरस्तुतम :

पिरूयाणीजम : भोग्यमं प्रहलादितम :

तुक्षणा अतिजति भुर्गाणुजप :

तथाकथिकम : भुाजणानुजप

पुरूण हाष्यम : प्रम सत्यगतम :

इति सिद्धम्

सोने से पहले का मन्त्र

ॐ सत्यवादिविषतम : प्रणामणीक्तम :

नितिज्ञ्यंतम : पुरूषुहानिजम :

पित्राणी : पूर्ववर्धाणुजम :

परिमाणी : प्रमात्मन : शान्ति भ्रिगाणुजप :

अतिहर्तियम : समस्तम : पूज्यकारिणी देवम :

इति सिद्धम्

चलते कार्य करते समय का मन्त्र

ॐ कार्यश्रेत्रतम : पिठासिनम : भूमि :

माक्ताणिनिजप : पिरूभ्रमेणियम :

पद्रक्तम : धारणागतम : पृथ्वी :
पूर्वुजप निर्धारितम : पद्रियक्ताजम :
भूषणा प्रमानन्दम :
इति सिद्धम्

कोई भी वस्तु दान देते–लेते समय

तथास्तु दानविजय : नुकिर्णम :
प्रभु आणिनिविकम : प्रदायुजप संसारम :
महाकालियम : तुक्षणाजय भाग्यवृर्तियम :
पुरुणि वर्णिथम संसारम : इति सिद्धीकम संसारम्
इति सिद्धम्

जो मनुष्य वस्त्र दान करें वस्त्र दान संकल्प

ॐ उच्चारणम् भगवा वस्त्राण
दान प्रम अवगतम् शान्ति प्रमानुजम
पृथ्वी शान्ति अग्नि शान्ति, सूर्य शान्ति,
चन्द्र शान्ति, शान्ति महामाया संसारम्
दानि शान्ति पित्रगण शान्ति
मन शान्ति शीतलम् ग्रह शान्ति प्रम सत्यम्
शान्ति शान्ति वस्त्रा दानम् प्रविष्यिति
इति सिद्धम्

पीलिया रोग मन्त्र

ॐ पीलानयनी अमुष्डवी
ब्रम्हरानी यायाम
स्व : अस्तीं ब्रम्हज्ञानी

अस्तुगामी भुरिन्द्र यशस्वी
कुडलिनि प्रा: स्व: जाग्रति,
नम: नम:
इति सिद्धम्

जोड़ों का दर्द मन्त्र

तिलों का तेल
ॐ शुभ्रबाणी शुभ्रबाणी,
यशस्वी पावन निर्माणी
बैठपठि बैठपठि जामिनि जड़
स्थादिरिन्तीन मनालामि
घी सिरिन्तीन पावन
पच्छतितितान्दरम् नम: नारायणी
इति सिद्धम्

पसलियों में दर्द का मन्त्र

तिलों के तेल
ॐ जडस्वी पावन निर्माणी,
योगिन्द्री योग्यं निर्मामी काया नाडम्रान्ति,
योगिन्द्री फुलशतिम ब्रम्हयामी
कुन्डालिनि जाग्रति जाग्रति
इति सिद्धम्

पेट के कीड़े झाड़ने का मन्त्र

नीम के जल में
ॐ किटाणुयम् जड़चेतन मधुयायामी,
जालपिरूयामी जालपिरूसति, ब्रम्हयामी नम:

कुष्ट रोगाणी फुलयायामी जलशती नमः
नष्डनिन्द्री नर नारायणी पालनिहानी नमः
सैहदेन्द्रियायाम् रघुनन्दम् नमः
नमः नमः नमः
इति सिद्धम्

पेट में से सूई निकालने का मन्त्र

ॐ सुरिया भोंगी जगत प्रथारकम्
मुनिका अस्तु अस्ती पिन्जरम्
जीव पूर्णनम भाज्ञुवितम्
जय देवी हणम्

कुत्ता काटने के बाद जहर उतारने का मन्त्र

ॐ झारनिमि, कुतेतन्तु
निर्जिव फलातुगामी
जामनादर ग्रीयामी शुभ्रों मानायानि,
काटः काटः स्वः हट हटः स्वः फलामी फलामी
जामनि जानिविदर
भालो भालो भिशंम्बरी
यशस्वनि नमः नमः
इति सिद्धम्

मोहम्मद साहब

पैगामें जहाँनिसार हकिक नवाबि,
गुजरा हुआ द्वीप अल्लाह पनाह
ताज हकुमतें दुनिया ताबिर शानें सोंकत
मजार मक्का मदिना जाफरनामा कबुल करियें।

तुम्हारा परिन्दा खिंदमत हाजिर मोहम्मद अल्लाह
मक्का मदिना कबुल फरमाइयें,
मैं परिन्दा जहाँ का आपकी खिदमत में हाजिर हूँ।
मेरी खामोसी भरी आवाज सुनियें
जो अल्लाह का बन्दा, लोगों की परवरिस शानें
शोकत की भीख मांगता है कबुल फरमाईयें
मक्का मदिना की कलम से ताबिज धरती के नुमाईन्दों
जो दर्द के कागार पर खड़े हैं
एक एक लब्ज अपनी बनी कलम से परवानों के लिए ताबिज दीजिए
मैं अल्लाह का बन्दा, इस जमी पर
नुमाईन्दों के लिए आपने भेजा है।
अल्लाह हों इल्लाही, फारसी हिन्दु मुसलिम,
सिख, ईसाई सबक़ा ताबेदार हूँ।
अल्लाह अल्लाह ईश्वर का नाम है।
इति सिद्धम्

फरमान जारी करना

मकरूर इल्लाहि इकरारनामा
दारिका बाजुनि तबका फरमान
तेंईब्बा ईद्र हजरति
तेईब्बा र्दद हजरति
तेईब्बा ईद हजरति

जींद फरीस्ता

कलाम जहाँबाजी
हरमनिस्ती करम उल्लाहन

इतकासमिनानी सुमरमुल्लाह
फरीस्ता जहाँ नवाडी बिसमिल्लाह
फानुष बिसमिल्लाह जहाँनिसार
करम मुल्ला फरिस्ते काबिज
निसतरि ईल्लाह

खुदा का फरिस्ता

याकुब तालानामा लियाकत अली

9.30 बजे रात से 12 बजे तक सफेद पत्थर के मोती की माला 71 दाने 5 बार करना है रटने के बाद 71 तेल के चिराग जलाकर 90 लोंग डालनी है 7 बार इत्र छिड़कना है प्रत्येक बार फरमान जारी करना है

इमाम अश्कन, इमाम अश्कन इमाम अश्कन
तगमिनार तगमिनार तगमिनार
हाजिर करो हाजिर करो हाजिर करो
यकबरि जमनिसादर परवाना
फरकतति असकर मोहम्मद
मुकमुल्ला फरीम जहाँपनाह
मकरीर तज्जबुन याकरान्
बलबली हगमं यजाकाबिज
बैपनाही दसमुल्लाह तफसरीन
तारिख निमाही इमामी हिदकाइरोनरान
फरीस्ते फरीस्ते फरीस्ते
कब्ज हाजिम कब्ज हाजिम
कब्ज हाजिम

मसकान इबादत

दसतुली जहाँबाजी फरीकन मसकरी

ऊफान वाहदेइत्येगन बिसमिल्लाई उमिन्द्रि फरीस्ते
जिस्म परखती बिसमिल्लाह जामा सरीफ याकुताई
याकुताई फरमान अरजपरखतम्
मुकलाईयान मुकलाईयान
57 बार करनी है इबादत

मोकल

5 बार या 7 बार याद करना है

फरमान जारि करना है जब फरमान लेकर वापिस आ जाए काम पूरा कर दें तभी वापिस जाने के लिए कहों। दशतुर ईल्लाही 2, 3, तीन बार

मकरीन सिद्धीकि

मालुमातियामान

दशतुरईदिका

मकतीरयान ईद हजरति

फासमून ईदलकाह

मरिम मिशदाई

फरमान जारी करो

चरमरजाई चरमरजाई चरमरजाई

वैहरूनि जंग मिददरिकिन

अखलन मिर्जा याकत अली

फतही हजरत मक्काई मदुरिती अश्कन

पीरूपीर पराई ईस्लामी जामा

कबुलियत फरकन अली जहाँबाजी

फरखनी अश्कन

आयतन कर्सी

सवा महीने के बार 2 इसी तरह से बढ़ाते रहो सिद्धी प्राप्त हो जायेगी।

काफरान रकबी उदनिरिकत हुकम परासतन
ईर्लिहिका दम्भ आईकान मफसुरीयान
ईजाखा मकतुरीयान दहसति नकबा
यादुबरान नमकिनयत बैहरूपिया
याकरान मंसुरि मिजाखा बरतरिजान
मुकबल यतिजान बैवजाँहनियत फकरिनताई
मनफफा अगराईयान तज्जबुन माकरान
मधयई मसकरन मालुमालियत मुस्कन
यादराई इमानियत सददफराई फलकियत
मालुमतन भर्मरजाई थर्मरजाई भमरजाई
आयतनकुर्सी जहाँ बैठकर करना है आसन बांधना
कुरियान बेजहाँ तजअम्भरियान मरकाईरान
ईदुहकतिरन मकतनियान मार्कारिन तागाजाईन
मककुरी ईसान करमभग्गई तजीमिनान
मिकरारनामा फरसरकाई ईदाह हर्मरजाई दस्तुर्वारिन
कस्तुरियामान रहमानि जज्बा मक्काई

सर्व शान्ति सुखकारी मन्त्र

नृप नृप कारिणी धान्धुनि माया गंगोत्री
यथा निरूष्यते निरूस्ते प्राणायायाम्
अग्निहोत्री शिवम् रूपेणी पाच्छान्ति शानिरिन्ति
भुजगेन्द्रहारम् संसारम् यथास्थिति करवणे करवणे
पूर्वाअस्ती नमामि नमामि युगे यूगे गायत्रि नमः

द्वितीय खण्ड

साम्भरी मन्त्र

श्री गणेश मन्त्र

जगत में प्रथम काम कर्म गणेश जी का होवें
जगत बाँट बाँट कर खावें
लक्ष्मी जी भी हाथ बटवावें
नर नारी धन बाँट बाँट कर खावें
घर जाकर जाकर गणेश जी यन्त्र बटवावें
जगत को दे वरदान गणेश जी
जाओ जगत के नर नारियों लक्ष्मी को मनवाओ
सभी नर नारी पूजा करने चली बीच में मिल गई लक्ष्मी माई
कहने लगी मेरे भगतों में आई तुम्हारे घर में
गणेश जी यन्त्र दिया नर नारियों
लक्ष्मी ने दिया आशीर्वाद
पूर्ण हो आस नर नारी हो।
धन्यवाद

सरस्वती यन्त्र

शब्द का बीज धरती पर उगता रहे
सरस्वती की अनुपम कृपा बनी रहे
शब्द बिना संसार शुन्य का डेरा
सरस्वती का बीज बनकर संसार पसारा
नर नारी में बसी सरस्वती माता
जो शक्ति बनकर अंकुर करती शब्द धाता

जो नर नारी सरस्वती यन्त्र बनाता
वह नर नारी बुद्धि का दीप जलाता
जग को रोशन करता पुण्य को धरती पर लाता
जय जय सरस्वती माता
इति सिद्धम्

सतगुरु प्राप्ति के लिए

सतगुरु मूल मोक्ष है सतगुरु शिव खीर
पूजे जो सतगुरु को बहे पवन नीर
शिव लोक में जाय वह धर्मवीर
सतगुरु प्रेम ज्योत है कर्मों का सत्य भेद
ज्योत जगे सतगुरु में शिव लोक में न कोई भेद
सत्य के कारण मोती मिले सत्य से मिले प्रकाश
सतगुरु में जिसकी लग्न है ज्योत जले हो जाय प्रकाश
सतगुरु हो प्राप्त ज्योत एकम जले हो जाप प्रकाश
शिव नाम ज्योत है जो जले दिन रात
सत्य को जो समझे हो जाय बेडा पार
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

सतगुरु जी के प्रति प्रेम भक्ति लगाने के लिए

सतगुरु सत्य का नाम है
शिव रूप ज्योति है
सतगुरु की ज्योत धर्म में शिव में मिल जावे
सतगुरु बिना प्रेम के नर भाग्य न जग जावे
सतगुरु प्रेम बिना शिव धाम पहुँच न पावे

सतगुरु शिव का रूप धरा के जग में आवे
जो करे शिष्य सतगुरु का फल सम्पूर्ण पावे
ज्योत मिले शिव में सत्य का मार्ग बतावे
सतगुरु को प्रेम करो यह शिव लोक बतावे
जय जय सतगुरु देव
जय जय शिव देव
इति सिद्धम्

सतगुरु कृपा होने के लिए

सतगुरु करे कृपा जग में शिष्य धर्म का होय
ज्योत जगे शिष्य के अन्दर
सतगुरु के अन्दर एकम हो जाये
सतगुरु करे कृपा शिष्य सिद्धवान हो जाय
सतगुरु नाम है धर्म का ज्योत धर्म की लग जाय
सतगुरु करे कृपा शिव लोक में जाय
सतगुरु की ज्योत पूर्णमासी का दिन आया
सत लोक से वाणी आई पृथ्वी लोक पर गाया
सतगुरु करे कृपा यह शिव जी ने बतलाया
जय जय शिव देव
इति सिद्धम्

ईष्ट प्राप्ति के लिए

ईष्ट की नदी नीर प्रवाह चले
जग चले और ज्योत जले
प्रवाह चले ईष्ट का कुटुम्भ में ज्योत जले
ईष्ट का नाम प्रथम ले द्वितीया गणेश ज्योत जले
ईष्ट जग जोत है हर घर में जले
ईष्ट का पूजन करो यह शिव की वाणी

ईष्ट धर्म की ज्योत है जग ने पहचानी
हर कुटुम्भ सुखी रहे ईष्ट देव मानी
जय जय इष्ट देव
जय जय शिव लोक
इति सिद्धम्

मोक्ष प्राप्ति के लिए

मोक्ष अन्तिम लक्ष्य शिव धाम मिल जाये
नर का हो कल्याण फिर जगत में न आवे
मोक्ष नाम उस ज्योत का जिसे नर ढूंढ न पावे
जो मोक्ष द्वार ढूंढ सके वह धर्म ज्योत बन जाये
शिव नाम परम ज्योत है जिसमें मोक्ष द्वार छिप जावे
शिव नाम में अनेक ज्योत है जिसके भाग्य में हो मिल जावे
परम पुरुष बन कर परम पिता में मिल जावे
परम पुरुष बन कर धर्म ज्योत में मिल जावे
मोक्ष द्वार खुले शिव शिव कहलावे
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

गुरु मन्त्र

गुरु गोरक्षनाथ महाराज, गुरु मच्छेन्द्रनाथ

ॐ गुरु मच्छेन्द्र नाथ कार्याम।
गुरु गोरक्षनाथ शिष्यम्
पूराणाविक धारा नगरी जहाँ रहती गंगा जलम्
पूर्वजा उध्धारणम करियेणेम्
धारा गंगा जलम् युगे युगे।
उत्तर मे मनसा देवी

दक्षिण में चण्डी देवी माँ वासदियिनी
गुरु गोरक्ष जानी सारेम जगतम्
नाथो ने मानी
शिव के अवतारा ब्रह्म योग ज्ञान उतारा
जिसने योगी गोपी चन्द्र भ्रतहरी उतारा
जिसके बल से धरती कापी
जगत उजियारा
जिसके बल से घर घर ज्ञान पसांरा
सारे जगत की फेरी लगाई।
उतरी धरती पर गंगा माई।।
शिव के अवतारा खोली गांढ अधर्म की
धर्म घर घर पसांरा।
आओ आओ देव मेरी रक्षा करो
मेरी आत्मा में बसकर संसार का उध्धार करो
देव जय गुरु गोरक्षनाथ देव
इति सिद्धम्

शिव गुरु गोरक्षनाथ

ॐ सत्यगुरु आदेश गुरु गोरक्षनाथ ज्ञानी
गुरु गोरक्षनाथ सुध बणी ब्रह्मंमम्
विध सिद्ध बणी शिव सत्यम् अवतरण
कंठभूमि कंठयाणि भाग्यम वान्तिकर्ण
ब्रह्मा विष्णु महेश वर्णासरण
गोरक्षनाथ भजंन संसारम्
नव नाथ भजं उभारम्
गुरु आदेश आदेश आदेश
नम: नम: नम:
इति सिद्धम्

शिव गुरु गोरक्षज्ञानी गुरु गोरक्षनाथ मन्त्र (शाबरी)

ॐ गुरु गोरक्षनाथ ज्ञानी
ज्ञानी नाथो ने मानी जय गोरक्ष ज्ञानी
गोरक्षा करो जगत की
हटाओ दुख मिटाओ सब दर्द
कारज जाने सबके जय गोरक्ष ज्ञानी
फल की इच्छा करत जो नर नारी
मन की इच्छा जानी जय गोरक्ष ज्ञानी
शिव के अवतारा
जिमें योग ब्रह्म उतारा
जग लगी धर्म में गांढ
खोली गोरक्षनाथ।। जय गोरक्ष ज्ञानी
आओ आओ देव रक्षा करो
पाण नाथ देव उतारो अधर्म की गठरी।
जो घर घर में पसरी।।
देव तुम्हारा पार न जाने कोय।
शिव गोरक्ष जाने सब कोए।।
जय जय गोरक्ष ज्ञानी जो नाथो ने मानी
जय जय गुरु गोरक्ष नाथ देव
इति सिद्धम्

प्रचण्ड धूना मन्त्र

ॐ आदिनाथ प्रचण्ड धूना अग्नि प्रविष्ठेतियायाम्
भूलोकं मध्यलोक आकाश तरु तारणी वियम्
नवनाथी प्रमप्रागतम् प्राणी मात्रमियम् प्रमात्मामयी

उत्थाननम् वनस्पतियायाम् पृथ्वी सूर्य अग्नि चन्द्रयायाम्
ब्रहत् ब्रहत् संसारम्।

भगवा वस्त्र धारण करने का मन्त्र

ॐ भगवा वस्त्र प्रग धाम धारिणी,
वैह्त्तरनाडी प्रज्जलितम्
पवित्रता मनुष्य वृती वर्म
मयानवितवियम् शुभम् आवन्तिवियम्
ब्रह्मा विष्णु महेश्वरम् सत्यम् वर्णम
भग वस्त्रा पवित्रता मान्य वृती धर्मम
अल्पआयु सिद्धाश्रम् संस्थापकनम् संसारम्।
इति सिद्धम्

लंगोट धारण करने का मन्त्र

ॐ ब्रह्मचारिणी उथापथिक्तिम् बाणावर्म धारिणीम्
ब्रह्माणियम् इन्द्राणियम् वशीभुतम् प्रमाणम्
भव: सागरम् तैरातिरम् पाक्यम वस्तुवियम्
महामाया संसारम् आयूरिणी वर्मम् घटान्तरम् ब्रह्मम्
रोक्ति प्रथा महायोगी जन भाक्रायान्ति सुमन
वशीभुतम् ब्रह्माण्डम् पूर्ण शरीरम् खगोलिकिकम्
पण पण धर्मम संसारम्
इति इर्धारण संसारम्
इति सिद्धम् प्रोहाष्यम्
इति सिद्धम्

चिमटा का मन्त्र

ॐ सागर मन्थन प्रयाणुयण
चिमटा बाजा भयानक्तम्

असुर संहारे चिमटन शिव अंगारे
नीला धारा उत्पथिक्यतम्
विजाक्ति विष प्याला
कंठ नीला अम्बरम्
शिव शरीरम् नीला अम्बरम्
कैलाशपति चिमटा चलम्चल
व्यारे संहारे दैत्यं शिष कटटम्
कैलाश चिमटा उत्तारणमों
शिघ्रतम् सत्यम् सत्यम्
शिव नाथ पूज्यम पूज्यम्
इति सिद्धम्

रुद्राक्ष शुद्ध करने का सिद्ध करने का मन्त्र

ॐ रोहणी रुद्राक्षी मनकरिन्द्री नमः
रुद्राक्षीयायाम् गंड संसारम् पारवितम्
फूल माला जडयायामी जयमीस्यामी
जमीस्यामी प्रलानी प्रलानी नमः
रुद्राक्षी बुटी सफलम् करीयामी
मूर मूरगामी यशस्वी स्वः
ज्या वूटी मोरी वाणी बुंटी
दामिनी दामिमि स्वः
रमणी रमणी नमः नमः
इति सिद्धम्

सत्यम वर्णम प्राविक्ताावियम्

गंगा जी पर लिखा गया

ॐ प्रणव सत्यम् शिवम् धरती गगन, पाताल स्वमेव जयते
शिव पार्वति अर्धागिनि वियम् नर नारी पुरुषुत्तम आत्मा

पृथ्वी लोक सत्य लोकुं आरजिवणु संसारम् प्रम प्रमात्मामयी
भज हस्तलिखित शिव शक्ति शब्द मणीयम् सभ्य भ्रान्तियम् संसारम्
सत्यलोकं उच्चारण नित्यं नित्यं भजनं हरि
हस्तलिखितम् सत्य प्रचारक नमः सिद्धि संसारम्
स्वामी शिवत्व प्रावक्ता, सिद्धी शिव शक्ति पूर्णता विषय बुद्धी
हस्त लिखित सत्य प्रचारक नमः सिद्धी संसारम्
आजिर्णव संसारम् सत्यम् प्रवचन शिवम् अनुशरण
अनुपातिकम् सम्पूर्ण संसारम् प्रकासितम्
इति सिद्धम्

स्मरण शक्ति मन्त्र

स्मरण शक्ति स्वरूप सरस्वती बनावे
जो जय बोले धर्म की याद उसी की आवे
बुद्धि बढ़े अहंकार हटे और जोत घी की लगावे
सरस्वती की पूजा करे पूर्ण आस लगावें
जो सरस्वती माता को पूजे गाय को भोजन करावे
वह सुपुत्र बुद्धि बढ़े सुखी जीवन बितावे
सरस्वती माता कंठ बुद्धि देवी जो मनावे
वही फल पावे स्मरण शक्ति देवे बुद्धि की शक्ति बढ़ावे

इस मन्त्र को याद करके मनन करने से सरस्वती माता खुश होकर बुद्धि और स्मरण शक्ति बढ़ाती है।

पूर्णिमा मन्त्र

गंगा जी की पूजा पूर्णमासी के दिन करें 108 बार माला जाप कर मनन करें और पूर्णमासी व्रत करने के लिए इस मन्त्र को करें।

शिव की टूटी समाधि
पूर्णमासी हुई अमादि

शिव जी निकले भ्रमण
पहुँचे गंगा तट रमणम
गंगाजी ने चरण किये स्पर्शम
शिव जी कहने लगे गंगा जी को
पूर्णमासी आई जगत के बादल झट गये
नर नारी गंगा जी में नहाये
काया निर्मल करने पूर्णमासी नहायें
गंगा जी की भक्ति शिव की शक्ति कहवावे
जय जय गंगा माई
इति सिद्धम्

एकम

इस एकम का जो भी व्रत करें उसको चन्द्रमा की पूजा करनी है और मनन करना है। इसका व्रत यात्रा के लिए शुभ माना गया है।

एकम दिशा चलें चन्द्रमा
कर्ण भूषणों का लगे भण्डारा
खाये मीठा भोजन कुंवारा
श्रद्धा सुमन हो जाय मगन
जब एकम दिशा आये सुमन
जो चन्द्रमा का हुआ भासा
चन्द्रमा हुआ अन्धकासा
चन्द्रमा का भ्रमण हुआ सत्यकासा
जो चन्द्रमा को धाये हो प्रकाशा
जय जय चन्द्र देव की
जय जय एकम देवी
इति सिद्धम्

एकादशी

गंगा जी की भगीरथ ने की तपस्या
गंगा जी धरती पर उतर आई
भगीरथ ने शिव से लिया वरदान
गंगा को भगीरथ की हुई पहचान
गंगा जी को भा गई भगीरथ की तपस्या
भगति का जब श्रोत चला तपस्या
बहने लगा जब सत्य लोक में
गंगा जी को आना पड़ा पृथ्वी लोक में
आके गंगाजी भगीरथ के पूर्वजों का किया उद्धार
तर्पण करके पूर्वजों का किया कल्याण
जगत को हुआ धर्म का ज्ञान
गंगा करती पूर्वजों का कल्याण
जिसके पूर्वज पित्रगणों का दोष हो

वह मनुष्य इस मन्त्र से तर्पण करे और सवा महीने तक जाप करे और फिर हवन करें पित्रगण शान्त हो जाते हैं। बिगड़े हुए पित्रगण भी शान्त अवस्था को धारण हो जाते हैं।

इति सिद्धम्

दोज द्वितीया

द्वितीया को ध्रुव की पूजा करें और कुएँ के जल से करें पूजा में सफेद तिलों का दान मिठे भोजन का दान करें। दोज का व्रत ध्रुव जी के लिए है।

ध्रुव चले अपने योग
चन्द्रमा का लगा संयोग
पूर्ण हो गई कर्मों की गांठ
खुल गई पखंडी सुधी की हाट

ध्रुव चले अपनी हाट
मोक्ष को हुआ प्रकाश
निर्वाण हो जगत की आस
ध्रुव की लगी जगत में जात
द्वितीया हुई परम विधात
जय जय ध्रुव की जय।
इति सिद्धम्

द्वादशी

द्वादशी का हुआ पर्व सुहाना
देवसुरों ने पहना अपना बाना
कोट पूरम का हुआ दधीचा
पुष्प गिरी का हुआ बगीचा
सुन्दरी चली गंगा जी में नहाने
ग्वाला चला गोकुल बरसाने
पता चला जब हो गये कृष्ण गोपाल
यमुना घाट पर द्वादशी का हुआ पर्व
जिसमें नहावे गोकुल गोपियां भरी सारी
जय जय कृष्ण मुरारी

यह मन्त्र यमुना नदी में नहाने और द्वादशी का व्रत करने के लिए है जो इस व्रत को नर या नारी करेगा वह सुख शान्ति धन धान्य हो जायेगा।

तृतीया

ततीया चली घर कुम्हार
जहाँ बर्तन बनते बारम्बार
नर का हो बेड़ा पार
कुल गुरु देव का हुआ वासा

घर में हो जाय प्रकाशा
तृतीया को जो पूजे
व्रत करे बारम्बार
कुल देव को पूजे हो जाय
बिगड़े काम संवार
जय जय कुल गुरु की वार
तृतीया का त्योहार
इति सिद्धम्

तृतीया को अपने कुल देव की पूजा करे पित्रदेव को शान्त करें। जो तृतीया की पूजा व्रत करें और इस मन्त्र को 108 बार जप करें और मनन करें।

त्रयोदशी

तेरह दिनों का हुआ भण्डारा
जिसमें निकले पित्र तुम्हारा
पूर्वजों का हुआ उद्धार
जब की गंगा जी की पुकार
सिद्धों की जब चली धर्म की नाव
उस पर बैठे शिव के दूत पखार
पूर्व की झड चली फुआंर
त्रियोदशी की नाव में बैठे पित्रपवार
जो भगत पूजे पित्र हो जाय पार
जय जय गंगा जी की फुआर

इस मन्त्र से पित्रगणों का कल्याण गंगा जी के द्वारा होता है जो भी इस मन्त्र को करके रोज सूर्य को जल चढ़ायेगा वह पित्रों को शान्त करेगा और पूर्वजों का उद्धार करेगा।

चतुर्थी मन्त्र

कौशल्या राम की माति
कौशल्या माता की हो गई ख्याति
चतुर्थी को लगा राम दरबार
दुखियों का दुख हरण करे
करुणामयी राम अवतार
जब आये चर्तुथी सत्यवार
गुणों का भण्डार भरे सिद्धी दे उपकार करे
कौशल्या का राम सतकार करे
जय जय राम राम को प्यार करे
जो चतुर्थी का व्रत दान करे
उस घर में राम का दरबार लगे

राम नवमी के दिन इस मन्त्र को सिद्ध करें और चतुर्थी का जो भी व्रत करें वह इस मन्त्र का 108 बार पाठ करें।

इति सिद्धम्

चर्तुदर्शी

चर्तुदर्शी को कृष्ण जी ने किया सतनामा
जिसमें वचन दिया सुदामा
जा सुदामा तू मेरा भगत है पुराना
जब दोनों मिले समय था निराला
भाव भरे कृष्ण सुदामा के आंखों में आया पानी
बिछड़े मिले जब भगत कृष्ण के
व्याकुल हो गये कृष्ण ग्वाला
सुदामा जैसा भगत नहीं पुराना
चर्तुदर्शी को मिले दोनों सखा
जिससे आकाश में छा गई घटा

पानी बरसा प्यार की हो गई लटा
जय जय कृष्ण सुदामा के सखा

इस मन्त्र को वे मनुष्य करें जो किसी प्यारे दोस्त भाई को बिछुड़ जाते हैं या आपस में मनमुटाव हो जाते हैं। इस मन्त्र को करके गाय के बछड़े को भोजन करावे जो दूध पीते हों।

इति सिद्धम्

षष्ठी

जल पर विष्णु का वासा
ब्रह्म लोक में हुआ प्रकाशा
षष्टमी पूजे देव लोकासा
पुण्य की हो गांठ हरी
विष्णु जी का लगा द्वीप
घर घर में हुआ प्रवीण
संस्कारों से धन्य हो गये नर
जो नर से नारायण बने
यह अवतारों की रीत
जय जय षष्टमी के गीत
जय जय विष्णु जी के मीत
जय विष्णु देव

षष्ठी को विष्णु जी की पूजा करनी हो जिस मनुष्य को मानसिक परेशानी हो वह षष्टी का व्रत करें और मीठा भोजन एक बार करे। इस मन्त्र को 108 बार पाठ जप करें।

सप्तमी

सप्त द्वीप नौ खण्ड जागे
सप्तमी दिशा चले आगे आगे

सप्त गुणों का हुआ प्रकाशा
देव लोक से इन्द्र जागा
नर नारी का दुख भागा
जाग उठे भाग्य विधाता
पूर्ण करे कामना इन्द्र की ज्योत जगे
सप्तमी आये हंस चुगे
चांदी सोना प्रसाद युगे युगे
जय जय इन्द्र देव की जय हो।
इति सिद्धम्

इस व्रत को वह मनुष्य करेगा जो भाग्य का कमजोर हो वह महसूस करता हो और कोई भी कार्य न बनता हो वह मनुष्य ही इस व्रत को करें।

अष्टमी

आठों पहर दीप जले
अष्टमी दीपों में जले
कृष्णा जी की चली कलायें
अष्टमी की रीत जगायें
फैले धरती पर धर्म जोत जगायें
अष्टमी की दीप नर के घर जलायें
नर जीवन सफल हो जाय
कृष्णा जी की जो ज्योत जलायें
जन्म की ज्योति बुझने न पाये
जय जय कृष्णा अवतारी आये।
इति सिद्धम्

यह मन्त्र अष्टमी के व्रत के लिए उपयोगी है। इस मन्त्र के करने से आयु दीर्घ होती है। जीवन में अगर मृत्यु का डर है तो यह मन्त्र

करना है। मनन करना है और अष्टमी के दिन हवन करना है।

नवमी

नवमी से महाराम जी का हुआ उदय
सर्व साधारण मनुष्य हुआ अजय
धर्म की जय जयकार हुई
रामचन्द्र की धर्म की यात्रा जय हुई
कौशल्या के घर राम अवतार हुए
विष्णु जी के चरित्र वार हुए
नवमी के दिन सदाचार हुए
जय जय श्री राम अवतार हुए
जय जय राम

जो मनुष्य राम नवमी के इस मन्त्र को करेगा इसको इष्ट देव के दर्शन होंगे और जो हर नवमी का व्रत करेगा और इस मन्त्र का जाप करेगा उसके बिगड़े कार्य बनेंगे और शत्रुओं पर विजय पायेगा।

दशमी

दसवी के दिन कौशल्या माता और
दशरथ के घर राम अवतार हुए
खुशिया मनाई ओर मंगलकार हुए
सत्ययुग की मर्यादा पार हुए
श्री राम से हनुमन्त बलवान हुए
जगत में जब फैली धर्म की आन
सत्ययुग का चढ़ा प्रवान
दशरथ ने किया नव दान
दशों दिशा दशरथ के चले वाहन
अश्वमेघ यज्ञ का दशरथ ने किया दान
कौशल्या माता के हो गये पूर्ण काम

राम की शक्ति हनुमान जी की भगति
जो माने दशवी को वह नर जाये भगति को।

जो भी मनुष्य इस व्रत को करेगा वह सन्तान पायेगा और जिस नारी के बच्चे नहीं होते वह इसको याद करके मनन करे वह पुत्र पायेगी पुत्र भी धर्म का होगा। घी की ज्योत जलायें और हनुमान जी को याद करें और त्याग करके करें।

अमावस्या

गंगा चली गंगोत्री धाम
चली झुमती बिखरी चंचल मुस्कान
गंगा जी चली पर्वतों को चीरती धाम
धन्य हो गये जगत पूर्व जान
जो नर सत्य कर्म करें वह गंगा धाम आये पर
पूजे सन्तों को नहाये गंगा जी पर
पहनाये चीर जब पंडितों को
जब अमावस्या का दिन आये।
करे उद्धार पूर्वजों का और मान बढ़ायें
गंगा जी पर नहाकर सीधा घर आये।
ऐसे नर बेड़ा पार हो जाये
जो गंगा घाट पर नहाये।

अमावस्या के दिन पित्रगणों को शान्त करने और उनका उद्धार करने गंगाजी पर आकर इस मन्त्र से दान कपड़े पंड़ितों को दान करें जो पंडित कर्मकाण्डी हो उसे दान करें।

श्री गुरु पूर्णिमा–व्यास पूजा

ब्रह्म की लगी अगुवाई
शिव लोक में भ्रमण करे पूर्णमासी आई

देवों का सत्य लोक में हुआ मिलन
पूर्णमासी की वेला आंगन में
पूर्ण चन्द्रमा देवों के देख मंगल गाता है
शिवजी शिव लोक से पृथ्वी लोक पर आता है
शिवजी गंगा पर आकर आलोकिक गीत सुनाता है
पार्वती का रूप गंगाजी में समाता है।
क्रीड़ा करने शिव पूर्णमासी को गंगा जी पर आता है
देव खकुंरी बजा आलोकिक क्रीड़ा
पूर्णमासी को शिव की देख आनन्दित हो जाते हैं
हर पूर्णमासी को शिवजी गंगा जी पर आते है
पार्वती का रूप गंगा जी में समाता है।
जय पूर्णिमा जय शिव पूर्णिमा

करवा चौथ

पार्वती का आया त्यौहार
जिसमें बरसे सोने चाँदी के हार
हर नारी पहने पहने पति व्रता नार
पार्वती ओढ़े पीला चीरन हार
शिव के चरणों में बैठी पार्वती
शिव ने दिया आशीर्वाद जगत हुआ पार
नर ने नारी से जब मांगा आशीर्वाद
शिव ने वरदान दिया फूलवार
जगत में जो पतिव्रता नारी हो
शिव पार्वती की तरह सदा सुहागन हो
करवा चौथ जो पूजे शिव पार्वती दे वरदान
पति पत्नी का जोड़ा सदा बना रहे
सदा सुहागन रहे नार

इति सिद्धम्

जो नारी इस मन्त्र को करवा चौथ को करेगी वह सदा सुहागन रहेगी और इस मन्त्र को हर चौथ को जो करेगी उसके पति कभी भी शरीर में दुखी नहीं रहेगा।

अहोई अष्टमी

श्री राम का हुआ स्वयंवर सीता चली बहु बनकर
कौशल्या के चरणों की बनी प्यारी बनकर
दशरथ के घर जाकर सीता ने खुशी मनाई
पड़ोस की नर नारी सीता से मिलने
श्री राम ने अपने राज्य में दान से आई भरी थाली बटाई
दशरथ ने कौशल्या तुरन्तु बुलवाई
जब सीता घर में आई बहु बनकर
सीता की बनों को चली सवारी
रास्ते में मिले हनुमान आज्ञाकारी
श्री हनुमान की भगति श्री राम ने स्वीकारी
जय जय श्री राम अवधधारी

धन तैरस

लक्ष्मी चली विष्णु धाम
परम गति पाने विश्राम
विधा बनी, बनी धनवान
धर तैरस की किया निर्माण
नर भगति करे धर तैरस बिगड़े बन जाय काम
लक्ष्मी दे धन तैरस को वरदान
जाकर पृथ्वी लोक पर कर मनुष्यों को धनवान
धन तैरस तेरा युगों यह काम

धन दे सबको बिगड़े कर दे काम
जय जय धन तैरस तेरे नाम
इति सिद्धम्

कुबेर वशीकरण

कुबेर का कलस चढ़ाओ
गाओ गीत सुरेली मधुर संगीत गाओ
कुबेर को बुलाओ सतनारायण से आज्ञा कराओ
सात द्वीप जलाओ कुबेर को बैठाओ
नव द्वीप बनाओ कुबेर पर खीर चढ़ाओ
सत्य से अर्पण करो सत्यनारायण को चढ़ाओ
सत्य नारायण के वशीकरण हो कुबेर महाराज
धरती पर ले आओ घर में बैठाओ
वशीकरण हो कुबेर जी घी की जोत जलाओ
सतनारायण प्रभु की आज्ञा पाओ कुबेर को घर में बुलाओ
जिसके घर में कुबेर जी बैठे घर सम्पति से भर जाओ
जय जय सतनारायण प्रभु जय जय
कुबेर देव की जय जय के जयकारे लगाओ
इति सिद्धम्

धन लक्ष्मी वशीकरण

धन का भेद खोले लक्ष्मी
गणेश जी को राज की बात बतायें लक्ष्मी
धन का भरे भण्डार लक्ष्मी का लगा दरबार
लक्ष्मी के सतकार गणेश जी करे उपकार
धन लक्ष्मी वशीकरण हो बार बार
गणेश जी का दीपक जलाओ सत के कारण लक्ष्मी जी को बुलाओ
भेद खुले धन का लक्ष्मी गणेश जी को सुनावे

जो नर नारी लक्ष्मी को बुलावे गणेश जी के गीत गावे
धन लक्ष्मी वशीकरण हो घर से कभी न जावे
गणेश जी का वचन अटल हो धन लक्ष्मी मन वांछित देवे
जय जय गणेश जी की
जय जय धन लक्ष्मी जी की
इति सिद्धम्

छोटी दिवाली

राम अवध लौटे अवध की बनी कहानी
सीता राम-की जोड़ी सतयुग ने भी मानी
चली कहानी पृथ्वी लोक पर मीठे गीत सुहानी
खिला द्वीप जब अयोध्या में फूल खिल गये पानी पानी
मोती बने बिखरे अवध सुरीली चली ध्वनि
दीवाली की मनाई महक अवध वासियों ने मानी
धर्म की ज्योत जली खिल उठा गगन वाहनि
सीता राम लौटे अवध सब नर नारियों ने मनाई दीवाली
दीप जले और गीत गाने चली नवी नवेली
सीता राम लौटे अवध खुशी मनाई
दीपक से मनाई दीवाली
जय जय श्री राम
इति सिद्धम्

बड़ी दीवाली

श्री राम राज्य में हुआ सवेरा
अवधपुरी में पहुंचा सीता राम का जोड़ा
लक्ष्मण पहुंचा, पहुंचे सनत कुमारा
दीप जले और सरयू नदी भर आई
देख कर अवध वासियों की खुशी ने समाई

दीप जलाकर चले पूजने सीताराम की फुलवारी
नर नारी गीत गाये साथ में चली कौशलया माई
भरत चले लक्ष्मण के पीछे चले शत्रुघ्न भाई
दीप जले अवधपुरी में नर नारियों ने खुशियां मनाई
द्वीपों से भर गई अवधपुरी दीवाली की रात आई
ऐसा युग कभी न आया यह वेदों ने बताई
जय जय श्री राम की दुहाई
अवधपुरी में दीवाली की रात आई
इति सिद्धम्

गोवर्धन पूजा

श्री कृष्ण जी चले गोकुल गाँव
गोकुल गाँव में मिले नर नारी
जहाँ पर बैठे गोकुल गाँव के सब नर नारी
विनती करे कृष्ण जी की जय हो गोकुल गाँव जी
गोकुल गाँव पर जब पड़ गई भीड़ कृष्ण जी की बंधाई धीर
गोवर्धन पर्वत पहुंचे कृष्णा धीर
अंगुली पर उठाया गोवर्धन पर्वत सतवीर
नीचे बैठे गोकुल नर नारी की भीड;
गोवर्धन को पूजो खाओ सत की खीर
गोकुल वासी चले पूजने गोवर्धन पर्वत
जहाँ पर बैठे कृष्ण जी भगत पीर
जय जय कृष्ण मुरारी
इति सिद्धम्

भैया दूज

श्री कृष्ण जी का नाम गाओ सुबह शाम
गाओ गीत श्री कृष्ण जी के भाई बहन

माई की भगति कृष्ण जी की शक्ति
बहन दे आशीर्वाद भाई बहन का प्यार
श्री कृष्ण को याद करो खाओ प्यार की खीर
भाई बहन का जगत में जोड़ा है सत वीर
जो माने वह खाये सत की खीर
भाई बहन की रक्षा करें कृष्ण रणधीर
खाओ खीर भाई बहन प्यार की धीर
फकीर को खिलाओ सन्तों को दे आओ खीर
श्री कृष्ण जी को याद करो भाई बहन को दे आशीर्वाद
जो भी नर नारी भैया दोज मनावे जग में सुख शान्ति पाये
श्री कृष्ण जी का लगाओ भोग
भाई बहन प्यार से खाओ
जय श्री कृष्ण जी
इति सिद्धम्

ग्रह पीड़ा निवारक शनि यन्त्र

शनि का यन्त्र चला महामण्डल में
किया सन्देश शनि के देश
पहुंचा सन्देश हुआ आदेश
नर नारी पीड़ा सहे शनिदेव का यह नहीं आदेश
शनि देव ग्रहों में महादेव
सत्य से पूजे हर हर देव
ग्रह पीड़ा हरे नर नारी की
शनि की ज्योत लगाओ
तेल का दीपक जलाकर
सिर से पैरों तक लेकर
धरती में चढ़ाओ या पीपल पर ज्योत जलाओ

शनि देव को मनाओ
संसार के नर नारियों आओ आओ
शनिदेव को खुशियों से मनाओ
इति सिद्धम्

सूर्य मन्त्र

सूर्य की किरणे धरती पर उगती
धरती खिल फूल बन जाती
नर नारी धरती पर कर्मों का कड़ी बनाती
भ्रम दूर करती किरणें जग रोशन करती
मतवाली होकर धूप दीप की ज्योत जलाती
सूर्य की किरणें दिन का रूप दिखाती
रोशन होकर धरती माता अपना धरी बंधाती
नर नारी जीवित रहकर सूर्य की किरण जगमगाती
रोशन होकर सूर्य धर्म की सीख सिखाता
सत्य का दीप जलाकर ईश्वर का राज बताता
सूर्य यन्त्र धारण करके नर नारी को रोशन कराता
जय जय सूर्य देव

चन्द्र यन्त्र

शीतल मन्द मन्द सुगन्धि चन्द्र देव बरसा
काली रात को रोशन करके सत्य का दीप जलाते
शान्ति का दूत बनकर संसार को दिखाते
परम गति हो मनुष्य यह सत्य सिखाते
भ्रम दूर करते नर नारी को सत्य समझाते
इस जगत नर नारी आते जाते चन्द्र देव बताते
हर रोज आते छिपकर शान्ति का मार्ग बताते
सत्य युग से लेकर कलयुग तक नियमित रूप दिखाते

चन्द्र यन्त्र धारण कराते सतय धर्म बताते
इति सिद्धम्

मंगल यन्त्र

मंगल की परछाई धर्म की खाई
ओढ़े मनुष्य जाने पीर पराई
मंगल देव है बड़ा सत्यकारी
इससे नारी जाति हो तो बड़ी प्यारी
मंगल का दीप जले उपमंडल में
सत्य का दीप जले शिवजी के गले में
सत्य पुरुष बनकर शिव गले में धारण करते
देव मनुष्य रूप धारण करके पृथ्वी पर तरते
मंगल धर्म का बीज बनकर शिव गले पड़ते
जय जय मंगल देव की

बुध यन्त्र

बध का हुआ स्वर्ग में धाम
मनुष्य सत्य समझ कर करते धर्म के काम
बुध का भाई शुक्र ही यह शिव बताते
पूर्ण करते आकाश मण्डल में ब्रह्म देव बतलाते
विष्णु जी जब भ्रमण करते देवपुरी जाते
बुध की दया पड़ती मनुष्यों पर
विष्णु देव बतलाते
बुध की माया अपरम्पार शिव ही बतलाते
बुध यन्त्र पर लिखा त्रिदेव यह
ब्रह्मा विष्णु महेश बतलाते
जय जय बुध देव

बृहस्पति यन्त्र

गुरु नाम जगत में देव लोक कहे सतगुरु नाम
बृहस्पति सबसे बड़ा देव यह ज्ञान गुरु शिष्य को बतलाते
धर्म में ज्ञान है ज्ञान से बुद्धि यह धर्म बृहस्पति बतलाते
सत्य का बाण बड़ी शक्ति यह शिव बतलाते
ज्ञान हो मनुष्य को बृहस्पति शिष्य को बताते
अज्ञान मनुष्य भ्रम में पड़कर नरक लोक भरमाते
सत्य की जीत हो धरती पर गुरु ज्ञान बतलाते
बृहस्पति देव सबसे बड़ा देव ज्योति जलाते
गुरु मान कर गृह देव सतगुरु बृहस्पति को बतलाते
जय बृहस्पति देवा

शुक्र मन्त्र

शुक्र दो भाई शिव जी बतलाते
शुक्र का यन्त्र बनाकर सत्य की ज्योत जलाते
शुक्र मनुष्य का भाई यज ज्ञान योगी पुरुष बताते
मान करते देव जिसके पद चिन्हों पर चलते
शुक्र पदम चन्द्र को नाती अपना बताते
कोटि कोटि सूर्य को प्रणाम करने स्वर्ग लोक में आते
फिर सूर्य लोक में भ्रमण करके चन्द्र लोक में आते
जिस पर शुक्र की छाया सूर्य लोक पूजवाते
जय जय शुक्र देव
इति सिद्धम्

शनि यन्त्र

शनि का चौक पड़े खड़ा पुराना
जिसको पूजे नर नारी पीपल पुराना

विष्णु का वास है पीपल पर कहते वेद पुराणा
शनि यन्त्र बनावे जल पीपल पर चढ़ावे
शिव का लगा दरबार जिसमें बैठे शनिवार
शनि का वार चले जब किसी देव की चले ना
विष्णु के दरबार में शनि जले ना
विष्णु जी की महिमा शनि गाता फिरता
जो नर नारी शनि को पूजे विष्णु को धावे
मनोकामना पूरी हो सत्य धर्म बतावे
हर शनि तेल की ज्योत पीपल पर लगावे
यन्त्र पहन कर संसार भ्रमण पर जावे
जो यन्त्र बांधकर चले जावे
धन धान्य हो जावे।

शनि के दिन शनि यन्त्र को सिद्ध करें और पीपल का महत्व शनि के लिए बहुत तेज है क्योंकि पीपल पर विष्णु का वास है और विष्णु शनि को प्रिय है। इसलिए इस मन्त्र से 108 बार पढ़कर यन्त्र सिद्ध करें।

राहु यन्त्र

राहु का हुआ साक्षात्कार
ब्रह्मा चले शिव के पास
शिव ने राहु की मति खिंची अपनी ओर
शिव के पास राहु चला आया शिव धाम
शिव की अग्नि राहु को करे शांत
जो नर नारी शिव को धावे
राहु ग्रह शान्त हो जावे
यन्त्र को करे ग्रहण
करे शिव की पूजा रहें शान्त दिन रेन

राहु चढ़े नहीं कड़वे पेड़ पर
यह शब्द याद पेड़ पर
राहु का ध्यान करो बिगड़े काम

राहु यन्त्र को सिद्ध करने के लिए शिव की पूजा करें और इस मन्त्र को 108 बार करें यन्त्र सिद्ध हो जायेगा और अगर यन्त्र न हो तो नीम या बबुल कडुवा पेड़ जो भी हो उस डाली को सिद्ध करना है या फिर जड़ को सिद्ध करके साथ रखें।

केतु यन्त्र

केतु का करो ध्यान
दिखे आलोकिक सुजान
जो केतु को पूजे हो जाय कर्म निधान
गाय की पूजा करो मूत्र की करो पहचान
जो धर्म मानकर गाय को माता समझे
केतु उसी के घर का मेहमान
सम्पूर्ण करो काम धर्म के नाम
जय जय केतु देवा

जो मनुष्य गाय को पूजे या खाना खिलावे और केतु का असर हो उसे गाय की सेवा करनी है और सवा महीने तक मूत्र का सेवन करना है। यन्त्र को जो सिद्ध करे उसे 108 बार इस मन्त्र को करके गाय को मीठा भोजन करावें और मूत्र को पानी में डालकर अपने पास छिड़कें।

गृह पीड़ा निवारक शनि यन्त्र

शनि का यन्त्र चला महामण्डल में
किया संदेश शनि के देश
पहुंचा सन्देश हुआ आदेश
नर नारी पीड़ा सहे शनिदेव का यह नहीं आदेश

शनि देव ग्रहों में महादेव
सत्य से पूजे हर हर देव
गृह पीड़ा हरे नर नारी की
शनि की ज्योत लगाओ
तेल का दीपक जलाकर
सिर से पैरों तक लेकर
धरती में चढ़ाओ या पीपल पर ज्योत जलाओ
शनि देव को मनाओ
संसार के नर नारियों आओ आओ
शनि देव को खुशियों से मनाओ
इति सिद्धम्

शनि की साढ़े साती निवारण के लिए

शिव की आन नव ग्रहों न जानी
शनि करे न दोष जो गावे शिव की वाणी
शनि कहें शिव देव तीनों लोक जाणी
शिव का नाम जपो शनि देव की बाणी
शिव नाम में नवग्रहों की ज्योति
शिव की मेहर फिरे जिस नर नारी पर
साढ़े साति हटे उसी नर नारी पर
शनि हटे शिव धाम जाय शिव के चरणों में पड़ जाय
जो नर नारी शिव नाम रटे साढ़े साति हटे
नवग्रहों की चाल चले शिव की ढाल
शिव चलावें तीनों लोक पुराण
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

साढ़े साति वालों के लिए यह मन्त्र करने मनन करने से शनि दोष समाप्त हो जायेगा।

मंगलवार

मंगल का दीप जंगल का चिराग
जिसको ढूंढे पूरे हाथ
हाथ धोये गांवों की बाठ
उठा मिट्‌टी दायें हाथ
चढ़ा सरसों तेल फूलों का वाट
तभी लगे मंगल की जात
शिव ने पैगाम दिया पार्वती के हाथ
सिद्धों करो जगत की बात
मंगल हो जंगल की ठाठ
जय जय मंगल देवाय: नम:
इति सिद्धम्

बुध ग्रह

बुद्धि का है बुध प्रिय
देवा का है प्रिय बुध
पार्वती का नाति बनकर
बुध ब्रह्म लोक चला
ब्रह्मलोक में सत्कार हुआ
शिवजी ने तुरन्त आशीर्वाद दिया
जाओ बुध तुझे संसार में पूजोगे
केले का भोजन और केलों पर
जलेगी ज्योत तेरी
युग युग तेरी पूजा होगी

बुध को मिला जब वरदान
बैठा केले परन बुध ज्ञान
इति सिद्धम्

केले का आसन लगाओ और केले की पूजा करो और इस मन्त्र को 108 बार पढ़ों केले की जड़ों में फूल जल घी का दिया जलाओ सिद्ध हो जायेगा।

गुरुवार

सन्तन की छाया जब त्रिलोकी में हुई
पच्चनामा जब दिया सन्तों ने
त्रिलोकी नाथ ने गुरुवार बृहस्पति को दिया सुनाने
त्रिलोकी नाथ कहने लगे मैं बृहस्पति वचन देता हूं सन्तों
करो उपकार सन्तों पर सन्तों भीड़ पड़ी है भारी
बृहस्पति गुरु हो कल्याण से बोछारी बोछारी
कहने लगे सन्तों मांगों वचन भारी
जिससे मनोवांछित हो जाय नर नारी
सन्तों कहां ओर सुनाया जब बृहस्पति को
बृहस्पति जब लिखा सन्तों देह धारी
पूर्ण हो काया और सिद्धी मिले जग भरमाया
करो उपकार जगत बृहस्पति ने फरमाया
युग बीते चाहे जग बीते सन्तों दिया वचन
इतना वचन सुनकर सन्त चलें पृथ्वी लोक
सन्तों पृथ्वी का किया भ्रमण
दिया वचन जो बृहस्पति ने दिया था
सम्पूर्ण हो पृथ्वी के सब नर नारी
चली जब सन्तों की छाया त्रिलोकी
पवित्र हो गई पृथ्वी लोका
जय जय बृहस्पति देवाय: नम:

शुक्र ग्रह

सुक्ति धर्म पर शुक्र चला
धीमी चाल ब्रह्म लोक की ओर
रास्ते में मिले शिव ओंकार
शुक्र पढ़ने लगे अपना पत्रकार
मुझे पूजे सर्व संसार
साबुत मूंग पर मेरा परिवार
पूजे और मूंग दान करे बुधवार
मैं नर नारी के घर जाऊं
हर बुधवार जय जय हरी देवार
जय जय बुधवार
इति सिद्धम्

शुक्र का जो मनुष्य साबुत मूंग उबालकर दु:खी मनुष्यों को दान करेगा वही आदमी खुश रहेगा।

शनिवार

शनि का लगा दरबार
भेष बदल कर चला वीरवार
देखन चली सब देवी वार
नवग्रह में जब जला द्वीप
शनि का हुआ पवनित
शनि पहुँचे नवनित पीठ
अष्ट ग्रहों ने किया सत्कार
जिसकी कोठी उसी का वार
पूजे शनि को शनिवार
पीपल की छाया में बैठा शनिवार
पूजों गाओं हरी वार

जय जय हो शनिवार
इति सिद्धम्

रविवार सूर्य देव

सूर्या चला अश्व पर सवार
जिसको पूजे सर्व संसार
शिव की आज्ञा का चमत्कार
जिसमें बैठे सात संसार
सूर्यादेव का ब्रह्म लोक तक वार
सिद्ध कर सम्पूर्ण संसार
पारा चो जब भुज में पार
सूर्या चला अश्व पर सवार
जय जय सूर्या देवाय नमः

सोमवार (चन्द्र) मंत्र

मेष राशि

राशियों का मेल ग्रहों से साधा जाता है।

राशि मेष जुग भेष अति विनय कारी
अंग की पूजा जगत में करें नर नारी
दोष मुक्त हो नर नारी
शिव की चली सवारी
गंगा घाट पर उतारी
मेष राशि ग्रह राशि नर नारी पर हो भारी
उतारें नर नारी भार शिव अधिकारी
गंगा घाट पर चले नर नारी
भारी हो जिस पर मेष राशि
शिव करे पूर्णवासी मेष राशि

पूजो जो कनियर को साथ में रख डाली
बिगड़े काम बने हो सतकारी
जय जय शिव अधिकारी
इति सिद्धम्

मेष राशि वाले इस मन्त्र को मनन करें जो जन्म के कारण मेष राशि हो वह सदैव इस मन्त्र का मनन करें उस पर किसी भी ग्रह का प्रभाव नहीं हो सकता है और कनियर पर जल चढ़ावे और सोमवार के दिन चढ़ावें और 5 सोमवार चढ़ावें और इस मन्त्र को 108 बार करें और इसके बाद मेष राशि वाले जीवन भर मनन करने से जीवन सुन्दर भावपूर्ण सब ग्रह का मिलनसार बन जाता है।

वृष

कोटी कोटी चन्द्रमा घटे
कोटी कोटी चन्द्रमा घटे
मेष राशि घटे बढ़े
जब सन्तों का साथ बढ़े
नर नारी के ऊपर वृष राशि चढ़ें
चन्द्रमा का आशीर्वाद लें बढ़े
वृष राशि जब जन्म पर हों अंकित
पूर्व जन्म के कर्म हो फलकित
जो नर नारी पूजे चन्द्रमा को
वृष राशि उत्तेजित ग्रहों से हटे
पूर्ण करे कार्य जगत सधे
चन्द्रमा की करो पूजा वृष राशि हटे
ग्रहों का सात्विक आन्त्रिक बढ़े
निर्मल हो जाय काया कठिन परिश्रम हटे

चन्द्रमा की करो पूजा वृष राशि हटे
इति सिद्धम्

जो भी नर नारी इस मन्त्र को मनन करेगा जो वृष राशि का हो वह सदैव ग्रहों के प्रभाव से दूर रहेगा। उस पर कोई कठिनाई नहीं आयेगी। वृष राशि वालों के लिए यह जीवन प्राण है। सदैव जीवन इस मन्त्र का मनन करें। सब देव सम्पूर्ण ग्रह उस मनुष्य को प्रभावित नहीं कर सकते।

मिथुन

राम का हुआ वनवास
मिथुन राशि ने की पहचान
मेरे से कोई न बचा जीव धाम
सीता स्वयंबर में मिथुन राशि बैठी राम
स्वयंबर राम का हुआ मिथुन राशि के बन गये काम
परशुराम का उठाया त्रिशूल
श्री राम बन गये नवमी के फूल
परशुराम ने किया क्षमा राम
मिथुन राशि हो जिसकी बन गये बिगड़े काम
जो पूजे दूब को ओर पूजे श्री राम
नर नारी बन जाय सत कर्म कल्याण
श्री राम को जो पूजे ग्रह हो जाय बेजान
नवमी के दिन बिगड़े बन जाय काम।
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को मिथुन राशि वालों को करना है और मिथुन राशि पर किसी भी ग्रह का प्रकोप हो और मिथुन राशि हो वह मनुष्य इस मन्त्र को सदैव मनन करें और सम्पूर्ण प्रभु ही मानकर इसको प्यार करे वह मनुष्य कभी भी ग्रहों के प्रभाव में नहीं फस सकता क्योंकि जन्म

के राशि उसकी शक्ति होती है।

कर्क

कर्क राशि में जन्मा नर नारी
मांगे भिक्षा हो जाय ब्रह्मचारी
छोड़ माया बन जाय सतकारी
जो जागे वह पाये जो सोये वह खोय
जो मन भाये वह खाये और सोये
जग में भरमाये पूर्ण हो कर्माय
कर्क राशि में जो आये जगत में
खाये पिये स्वम्भु जती की जोत जगाये
वह नर नारी सुख पाये निर्भय हो जाय
कर्क राशि में ग्रह शान्त हो जाय
गुग्गल की जो धूनी लगाये
कर्क राशि वालों को फल जाय
इस मन्त्र को गुरु गोरक्षनाथ फरमाये
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को कर्क राशि में जन्म लेने वाला हमेशा मनन करे और प्रभु समझकर इसको भजे तभी मनुष्य के सब ग्रह शान्त हो जायेंगे और सम्पूर्ण जीवन प्रकाशित हो जायेगा।

सिंह

श्री सिंह राशि का हुआ प्रकाशा
नित्य नित्य करे प्रकाशा
नीर भरे सतवासा
कर्म करें सात्विका
पूर्ण हो धर्म विका

धर्म की गाँठ खुले हो जाय सतमास
फूलों की झड़ी लगी करने लगी पुकार
कहाँ गये कृष्णा मुरारी भगवान
कोई योगी कहें कोई कहे भगवान
सिंह राशि जिसकी पड़ती हो जाय काम
जो भी कृष्णा जी को भजे
सिंह राशि से उत्तेजित ग्रह हटे
सत की नाव जिसकी बहे
वह नर अजय अमर हो जाय
पूजा करे श्री कृष्णा की मन्त्र मनन हो जाय
बिगड़े काम सुधरे ग्रह शान्त हो जाय
इति सिद्धम्

इस मन्त्र का मनन करने वाले सिंह राशि वाले होने चाहिए और कृष्णा की पूजा करनी चाहिए सिंह राशि वालों के लिए कृष्णा की पूजा करनी है। वह ही उनके देव हैं। मनन करना है। सब ग्रह शान्त हो जायेंगे। सम्पूर्ण जीवन जो मनन करेगा प्रभु सब प्राप्त करा देगें।

कन्या राशि मन्त्र

धुन लगी जब गिरधारी लाल
कन्या राशि फिरे सत की दास
देव चले स्वर्ग लोक धाम
पृथ्वी लोक पर मिले कृष्ण मुरारी लाल
कन्या राशि जन्मा बालक
पड़े छाया कृष्णा अवतारक
भेष बदलकर आये प्रभु
दें आशीर्वाद कन्या राशि बालक को
हुआ वरदान कन्या राशि बालक का कल्याण

जो पूजे कृष्णा अवतारि धाम
उसके बन जाय बिगड़े काम
जय जय कृष्ण मुरारी धाम
इति सिद्धम्

इस मन्त्र वाले को कृष्णा की पूजा करनी चाहिए और कन्या राशि में जो जन्मा हो उसे कृष्ण भगवान की पूजा करनी चाहिए उसके जन्म के जीवन के कृष्ण भगवान की पूजा अनिवार्य है और इस मन्त्र का मनन अनिवार्य है।

तुला

निर्भय होकर जगत नर जीता है
प्रभु जिसको दे आशीर्वाद वह पार हो जाता है
शिवजी की महिमा अपम्पार
नर नारी को दे आशीर्वाद
हो जाय बेडा पार
तुला में जन्मा मनुष्य युग में भ्रम निसार
लख चौरासी योनी भ्रम गण धार
शिव का आशीर्वाद नर बना
पृथ्वी लोक पर दरबार बना
सत का जीव बने सतवीर
जो धावे प्रभु शिव को
बन जाय रणधीर
तुला राशि में जो जन्मा
उसके लिए प्रभु शिव पढ़े कलमा
पूर्ण हो जाय काम
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

प्रभु शिव की पूजा करे और इस मन्त्र का मनन करें तुला राशि वाले इस मन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर अपने साथ रखे और सम्पूर्ण जीवन मनन करें। यह मन्त्र तुला राशि के लिए जीवन प्राण है और प्रभु शिव तुला राशि के भगवान है।

वृश्चिक

पुण्य की जड़ हो जाय हरी
सत्य की नाव बहे भरी भरी
गंगा जी की फुहार चले ठंडी भरी
उत्तर से आये दक्षिण में चली जाय
वृश्चिक का भ्रम मिटाया जाय
जहा गंगा तट पर बैठ जाय
पुण्य का द्वीप जलकर शान्ति धाम पाये
लगाकर आसन नर नारी बैठे
बिगड़े काम सुधर जाय
वृश्चिक राशि में जन्मा हो बेडा पार हो जाय
गंगा जी पर जाकर गंगा जी में नहाये
गुँऊवे को घास खुवाये
सीधा घर लौट कर आये
इति सिद्धम्

यह मन्त्र गंगा जी का है वृश्चिक राशि वाले नर नारी इस मन्त्र का मनन करें और गंगा जी को देवी शक्ति माने और इस मन्त्र का आजीवन मनन करें। इस ग्रह का लाभ और कोई ग्रह ऊपर हवा या कोई भी जंजाल परेशान नहीं करेगा।

धनु

मनुष्य की काया धर्म का बीज बोया
उगा कर शिव जी धरती पर लाया

मान बढ़ाकर मनुष्य को पृथ्वी लोक में आया
धर्म की लाज रखने धर्म पुत्र आया
परमेश्वर की इच्छा से भरमाया
धनु राशि में जीव आया
शिव राखे लाज धर्म पुत्र के काज
सपुत की राखे लाज धर्म के सुधरे काज
धनु राशि का होआ सन्देशा
मनुष्य बन धर्म का वासा
शिव करे काज धर्म आस
राखे जो नर तर जाये
जो शिवजी की पूजा करे नित्य नित्य घर में आवे।
इति सिद्धम्

यह मन्त्र धनु राशि वालों के लिए है जो भी करेगा वह सम्पूर्ण कार्य होंगे और शिवजी धनु राशि के देव होंगे। इस मन्त्र को सदैव मनन करें। धनु राशि वाला मनुष्य सम्पूर्ण सुख सम्पत्ति से भरपूर हो जाय।

मकर

सत की बांधी से परे न कोय
जगत में मनुष्य बन कर रोये
दुख भोगे कर्मों का दुखा खाये
शिवजी का नाम ले तर जाये
मकर का ध्वज मनुष्य पर पड़ जाय
पूर्णमासी को शिवजी घर पर आये
पूर्ण हो काम मनुष्य तर जाये
धर्म अपना घर धरती लोक पर बनाये
मनुष्य कर्म बन्धन से छुटकारा पाये

इच्छा पूर्ण हो मकर ध्वज बन जाय
जो शिव की पूजा करे धर्म का बन जाय
जय शिव धाम
इति सिद्धम्

मकर राशि वालों के लिए यह मन्त्र अनिवार्य है। यह मन्त्र पूर्णमासी के दिन करना है 108 बार और बाकी सम्पूर्ण जीवन मकर राशि वालों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस मन्त्र के मनन करने से मकर राशि का मनुष्य नर या नारी सम्पूर्ण सुख भोगेंगे। सब कार्य पूर्ण होंगे। इस मन्त्र में शिव, मकर राशि वालों के लिए प्रभु है।

कुम्भ

धर्म की गंगा मन हो जाय सतनाम
नाम गाओ प्रभु शिव का, पूर्ण हो जाय काम
धर्म की नाव जग बहे नर बन जाए सतवान
धरती पर प्रेम की फुआर चले
जैसे गंगा जी की पावन धार चले
नर का कुम्भ हार चले
सत की नाव की बोछार चले
अगम्भ बुद्धि सतवार वार चले
गंगा जी की नाव कुम्भ राशि वार चले
जो गंगा जी शक्ति को ध्याने चले
नर नारी बिछले गंगा जी पर मिल चले
जय जय गंगा जी धाम
पूर्ण हो जाय काम
इति सिद्धम्

कुम्भ राशि वालों को गंगा जी का ध्याना जरुरी है और घी का

चिराग 5 लगाकर इस मन्त्र को 108 बार करने के बाद सम्पूर्ण जीवन कुम्भ राशि वालों को मनन करना है और गंगा जी शक्ति को मानना है। सब कार्य ग्रह दोष सब इस मन्त्र के लिए मनन से सिद्ध होंगे और मनुष्य का जीवन में सुख शान्ति धन धान्य से परिपूर्ण होंगे।

मीन

कौशल्या का बाना सीता जी ने पहना
श्री राम का वनवास हो गया बहना
कैकये का सुगम भाव कौशल्या को कहना
गंगा जी का शक्ति श्रोत उत्तर से दक्षिण को बहना
श्री राम चले बनवास हुआ चितवास
सीता जी साथ चली वनवास
वन में मिले सेवक हनुमान
श्री राम राम राम भजते हनुमान
मीन की चादर थामे चले हनुमान
कौशल्या का प्रेम सागर उमड़ा
चले वनवास श्री राम
दशरथ जी का हुआ अन्त जब
दिन हुआ वीरवार
जय जय हो जय हनुमान
इति सिद्धम्

यह मन्त्र मीन राशि वालों के लिए अति उत्तम है इसमें हनुमान की पूजा करनी है। मीन राशि वालों के लिए यह मन्त्र मनन करने हैं और हनुमान जी का भगत बनकर रहना है। इस मन्त्र को करने से हनुमान जी दर्शन देंगे और ग्रह शान्त होंगे। सम्पूर्ण सांसारिक कार्य सिद्ध होगे।

श्री यन्त्र

पात पात पर प्रभु बैठे यह सत्य की बात
सत पर चीर चढ़ा कृष्ण जी ले अवतार
पूर्ण करे नर नारियों की मनोकार
श्री यन्त्र का बनाकर बाना कृष्ण जी चले
गोकुल में गुऊवे चरावें घर घर जाकर खीर खावे
गोऊवे चरावें श्री यन्त्र बनावे और ग्वालियों को पहनावें
श्री यन्त्र पहनकर ग्वाले भी कृष्ण बन जावे
मति बदल कर ग्वाले भी मौज उड़ावे
श्री यन्त्र कृष्ण जी बनावे गोपियां बांट बांट कर चढ़ावें
जिसके घर में श्री यन्त्र कृष्णा दे आवें
वह घर धन से भर जावे
सभी मनुष्य श्री यन्त्र को बनवावें
जाकर गोकुल श्री कृष्ण से सिद्ध करवावें
जय जय श्री कृष्ण देव।
इति सिद्धम्

महामृत्युन्जय यन्त्र

ॐ शिव ने दिया वरदान
नर जीव मोक्ष का खुला द्वार
जिसमें बैठे शिव पार्वती देवा
नर की भगति शिव की शक्ति
देवों का मिला वरदान
नर नारी का हुआ कल्याण
महामृत्युंजय जपे जो नर नारी
शिव की भगति करे नर नारी

मोक्ष मिले और मिले मुक्ति
नर की भगति शिव की शक्ति
जो माने नर नारी मृत्युंजय हो
जय जय शिव शक्ति
इति सिद्धम्

नव दुर्गा यन्त्र

नौ दुर्गा विष्णु माता शिव पार्वती विधाता
नौ माता सती देवी का रूप बनाता
जग जिता जग बिता सत्य की रीत बनाता
धर्म की शक्ति जीत बनाता अधर्म को श्राप बताता
नौ दुर्गा परम शक्ति धर्म का द्वीप जलाती
संसारी नर नारी का धुन्धला रूप दिखाती
जो भगति करता माता रूप दिखाती
भगति में शक्ति होकर सत्य मार्ग दिखाती
भगति का द्वीप बना नव दुर्गा यन्त्र बनाती
जो नर नारी भगति करे माता की उसके घर
सत्य की ज्योत जलाती
सत्य की भांति भाँति नवीन ज्योति जगाती
जय जय हो माता माती
इति सिद्धम्

दुर्गा अम्बाजी यन्त्र

दुर्गा माता की चली सवारी
जिसमें बैठे बाल ब्रह्मचारी
आगे चले हनुमन्त पीछे चले भैरों सवारी
चन्द्र सा मुकुट धारण करके चली सवारी

दुर्गा अम्बा वैष्णों बन कर एक माता सारी
दुर्गा माता के भगतों को यन्त्र दे सहारा
बिगड़े कार्य बने और हनुमन्त दे हुंकारा
भैरों जी की लगी तेल की ज्योत संसार पूजे सारा
तीनों लोक में जय जयकार हुई माता का लगा दरबारा
आगे चले हनुमन्त पीछे चले भैरो सर्वहारा
जो नर नारी पूजे मनन करें यन्त्र धारण करें
मनावांछित फल मिले सारा
जय दुर्गा अम्बा भवानी गीत गावें संसारा
इति सिद्धम्

गायत्री मन्त्र

ॐ जग जोत है पूर्ण गायत्री की माया
सतयुग से बहती आई कलयुग तक धारा
गायत्री वेदों की माता सर्व सतकारा
बुद्धि दे माता, नर नारी करे पुकारा
देव माता शान्ति दो करो मेरी रखवारा
दुखी न रहूं जग में गायत्री माता दे वरदान
सुख शान्ति दे पुकारूं मैं दिन रैन
गायत्री यन्त्र दे माता जिसके सहारो मैं करूं गुजारा
मेरे बन जाय बिगड़े काम गायत्री यन्त्र तारा
जय गायत्री माता

गायत्री का यन्त्र सिद्ध करने से सम्पूर्ण सांसारिक कार्य बन जाते हैं और शान्ति स्थापित हो जाती है। मनुष्य आरोग्य हो जाता है। इस मन्त्र से यन्त्र को सिद्ध किया जाता है और जो भी इस यन्त्र को धारण करेगा वह मनन भी करें सम्पूर्ण वैभव को प्राप्त होगा।

इति सिद्धम्

महालक्ष्मी यन्त्र

विष्णु भरे भण्डार महालक्ष्मी आवे
महालक्ष्मी बताये विष्णु भेद भावे
विष्णु की चली सवारी संग बैठी महालक्ष्मी प्यारी
यन्त्र बनाकर दिया जगत को धन से भरे भंडार
देवता चले स्वर्ग से इन्द्रदेव बने धनवान
विष्णु जी का लगा दरबार महालक्ष्मी आई बारम्बार
सत का पहिया चले जगत लक्ष्मी यन्त्र बहता रहे
जो नर नारी महालक्ष्मी यन्त्र पहने,
धन धान्य से भरपूर होवे
कल्याण हो जगत का नर नारी धनवान होंवे
जय लक्ष्मी देवी

विष्णु यन्त्र

विष्णु जी का चला चक्र अधर्म की हार हुई
सन्तों की जीत हुई पापियों की हार हुई
विष्णु का अवतार बनकर कृष्ण जी सतकार हुई
जब जब धरती पर पाप बढ़ा जब जब विष्णु अवतार हुए
प्राणियों के रक्षक विष्णु जी के अवतार हुए
श्री कृष्ण जी के नाम से जग में सोलह कला अवतार हुए
नर नारी के रक्षक बनकर भगवान विष्णु अवतार हुए
शेषनाग पर बैठ कर करें सवारी
विष्णु जी बैठे संग में बैठी लक्ष्मी प्यारी
विष्णु यन्त्र चक्र समान जो माने
उसके हो जाय बिगड़े काम

विष्णु जी सत्यनाम नर नारी भजे
हो जाय बिगड़े काम
इति सिद्धम्

महाकाली यन्त्र

माता महाकाली करे जगत की रखवाली
पूजे देव जिसे पूजे तीनों लोक धर्मवाली
सत्य का द्वीप जगाने वाली
पापी दुष्ट को मिटाने वाली
दुर्बल को सहारा देने वाली
धर्म का पुँज द्वीप जलाने वाली
माता महाकाली अधर्म का नाश करने वाली
जो भी नर नारी याद करें
जगत माता है माता बनकर प्यार करें
हर काम में सहारा बनकर संसार का कल्याण करें
जय जय महाकाली माता तेरी
जगत जय जयकार करे।
इति सिद्धम्

बगलामुखी यन्त्र

सिद्धि बन अग्नि फन
देवी का यन्त्र बगलामुखी के संग
महादेवी महाविद्या जब करे प्रचारा
मनुष्य का करे कल्याण स्वर्ग लोक पहुंचाना
बगलामुखी का लगा दरबार
जिसमें बैठे देव बेसुम्मार
बगलामुखी दे वरदान

नर नारी सुखी रहे और खाये जलपान
जल पान सुपारी मीठी हो जुबान
जिस पर बैठकर बगलामुखी दे वरदान
जय जय बगलामुखी देवी।
इति सिद्धम्

इस यन्त्र को सिद्ध करने के लिए तेल का दिया लगाकर पान सुपारी जल का पूजा में रखकर 108 बार करें शनिवार को यन्त्र सिद्ध करें।

चामुण्डा यन्त्र

चामुण्डा चण्ड धाती शिव की अनुभुति
चली चामुण्डा राक्षसों को मिटाने
शिव चले पुण्य कमाने
शिव जी से ले वरदान चण्डी चली धर्म बचाने
शिव का त्रिशूल मिला वरदान में
चामुण्डा चली राक्षसों के मैदान में
राक्षसों को मारा चली चामुण्डा धर्म बचाने
जय जय चण्डी माता
इति सिद्धम्

त्रिपुर भैरव यन्त्र

त्रिपुर सुन्दरी का लगा दरबार
जिसमें बैठी शक्ति परिवार
शिव जी बैठे बैठी सति नार
त्रिलोक की त्रिपुर भैरवी जिसको देखे त्रिलोकनहार
ब्रह्मा विष्णु शिव बैठे शक्ति बैठी पवन दरबार
शिव की जो नर भगति करे शक्ति का हो संचार
त्रिपुर सुन्दरी नर के घर आवे

जो करे शिवजी की पुकार
जय जय शिव, त्रिपुर भैरवी पालनहार
इति सिद्धम्

हनुमान यन्त्र

श्रीराम वनवासी संग चली सीता पूर्णमासी
हनुमान मिले जब राम को शिव का साथ मिला विष्णु को
अमर गाथा जग गाता विष्णु विधाता
चराचर जगत विष्णु गीत गाता
जब तीनों मिल जाते एकम दशा हो जाता
ब्रह्मा शिव को गुरु माने शिव विष्णु को ध्याता
एक दूसरी शक्ति गुरु मान कर जगत को दिखाता
हनुमान का रूप धरके शिवजी पृथ्वी लोक पर आता
जो भी नर नारी हनुमान यन्त्र बनवाता
सहज ही सुख सम्पत्ति पाता
जय जय हनुमन्त देवा
इति सिद्धम्

राम रक्षा यन्त्र

राम का बाण करे रक्षा यन्त्र बनकर
करें कृपा विभीषण पर छत्र बनकर
हनुमान जी को दे आज्ञा सीता जी मिलने की
लक्ष्मण जी ने खिंची रेखा अग्नि की
जिसको पार न कर सके लंकेशी
राम का बाण करे रक्षा यन्त्र बनकर
चक्रव्यूह तोड़ा रावण का राम अवतार बनकर
जय जय श्री राम
इति सिद्धम्

कनकधारा यन्त्र

कनकधारा विष्णु जी का फुआरा
प्रेम का दरिया जिसमें बैठे जग सारा
कनक के सामान जल की किरणें
चमक रही जैसी हिरणी हरणे
जल की धारा मोती बनी झरने
कोमल डाली ले रिझाने
कनक की बैला यन्त्र बनकर चली रिझाने
आगे चलकर नर नारी मिले दुख याने
कनकधारा में नर नारी चले नहाने।
जय जय विष्णु देव
इति सिद्धम्

कुबेर यन्त्र

महालक्ष्मी का लगा दरबार
उसमें बैठे कुबेर महाराज
कुबेर की जब चली सवारी
जाकर रूकी आंख की डारी
जाकर कुबेर ने कृपा बरसाई
जहाँ पर बैठी महालक्ष्मी माई
शीतल जल कुबेर जी ने लक्ष्मी को पिलाया
उसी समय कुबेर जी की बरसने लगी माया
कुबेर यन्त्र जो भी पाये उसके घर धन वर्षा होवे
जय जय कुबेर जी की माया
इति सिद्धम्

इस मन्त्र से कुबेर देव का यन्त्र 108 बार सिद्ध करना है।

बीसा यन्त्र

बीसा यन्त्र फुका जन्त्र
निकला मुख अग्नि मन्त्र
ज्वाला जली सिद्ध किया यन्त्र
जहाँ बैठा जाकर वही पर विजय पाकर
चला बीसा यन्त्र विजय पाकर
अग्नि का तत्व बनकर जय जय अग्नि देव
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को अग्नि देव से सिद्ध किया जायेगा। 108 बार अग्नि देव की पूजा करनी है। इस मन्त्र को 108 बार यन्त्र पर करना है।

सुख समृद्धि यन्त्र

गायत्री माता सुख निधान
जो घर बांचे शान्ति मिले घर बैठे
जहाँ जाओ देखों सन्तों की माया
नर नारियो का गायत्री माता ने सुखी बसाया
देवरिषियों का मनन हुआ गायत्री की छाया
सुख समृद्धि यन्त्र की जो करे सिद्धि
गायत्री निर्मल करे नर नारी की बुद्धि
सुख दे समृद्धि दे करे बुद्धि की सुद्धि
जय जय गायत्री माता
इति सिद्धम्

धनदा यन्त्र

धन की माया विष्णु जी की छाया
करे पुराण व्याख्यान जगत में

नर का करे कल्याण माया में
धन की कोठी विष्णु जी के नाम
आभूषण दे महालक्ष्मी के धाम
सुन्दर वैभव करे सुजान
धन की माया विष्णु जी की छाया
धनदा यन्त्र नर नारी की करे छाया
इति सिद्धम्

वशीकरण यन्त्र

फूंका दिया पच्च मेवा में होम किया
दृष्टि में पहुंचा नीर खाई पवन की खीर
नर नारी वश हो जावे खावे नीर खीर
ललिता देवी को याद करे वशीकरण की
बैल बैठाकर खीर चढ़ाओ ललिता देवी को मनाओ
वश में हो जाय जीव
नर नारी ललिता देवी का याद करे
बन जाय जब खीर खाये जगत नीर
पवन खाये सन्त संसार खाये खीर
जो नर ललिता देवी को याद करे बन जाय धीर
वशीकरण हो जाय जगत का
जहाँ पर बैठी शक्ति पीर
जय जय ललिता देवी
इति सिद्धम्

इस मन्त्र से वशीकरण किया जाता है। जीवधारी शरीर वाले को वशीकरण कर सकते हैं।

शुभ लाभ यन्त्र

जय गणेश देवा घी खाँड मेवा
जो भी माने उसका पार हो खेवा
मोतियों भरी खांड का भोग लगावे
सत्य पुरुष महात्मा पुरुष करे सेवा
प्रथम बार पूजा करे गणेश जी को दे मेवा
प्रसाद चढ़ाओ याद करो गणेषी देवा
देवों के देव जो भी याद करे लाभ करे
जो भी शुभ लाभ यन्त्र को बनावे
गणेश जी को ध्यान करे ज्योत ज़लावे
उसका घर धन से भर जावे
जय जय गणेशाय नमः
इति सिद्धम्

कार्य सिद्धि यन्त्र

माता काली की करो पुकार
ममता करो आंसुओं की करो फुआर
माता भगत की सुन पुकार
पृथ्वी लोक पर आये हजार बार
सत्य का नाम जो भी लेवे हर बार
उस नर नारी के काम बने सात बार
जो भी माता काली को पूजे
कार्य सिद्धि बने हजार बार
जय जय काली माता
इति सिद्धम्

चरण पादुका मन्त्र

चरण पादुका बनकर सतपुरुषों का
जगत में सत्कार हुआ
नर नारायण बनकर जगत का उपकार हुआ
राम राज्य में चरण पादुका से राज्य हुआ
राम के चरणों का सत्कार कर भरत मुक्ति कार हुआ
सन्तों के चरणों का आदर करके
शिष्यों का बेड़ा पार हुआ
चरण पादुका का जो सत्कार
करे सन्तों को मीठा भोजन करावे
ऐसे नर नारी का सदैव कल्याण होता है।
इति सिद्धम्

दुर्वा के प्रयोग मन्त्र

दुर्वा निधि विधि सिद्धि की जड़
जो धरती में उगे पनपे नड
उगे सन्तन की तरह चले बैल की जड
दुर्वा पूजा की जड़ है पूजे बृहस्पति देव
दुर्वा पूजा की जड़ है पूजे पूजा पूर्ण होय
जो पूजा में रखे उसके काम सब बन जाय
दुर्वा से आरोग्य हो मनुष्य इस मन्त्र को पढ़ जाओ
दुर्वा पर बैठ कर करे मनुष्य मन्त्र मनन
रोग काया में हो जाय करे रोग मुक्त
जो भी दुर्वा को लेकर इस मन्त्र का
करे जाप पूर्ण काया होय
मनुष्य रोग मुक्त हो जाय
इति सिद्धम्

विल्व दल प्रयोग और मन्त्र

शिवजी से नर मांगे वरदान
दोनों हाथों में विल्व रखो मांगों वरदान
शिवजी दे हंसकर देव लोक का धाम
संकल्प करके विल्व पर मांगो वरदान
वर मांगों घर माँगो माँगो सदा सुहाग नार
जो माँगे वह मिले कहती शिव पुराण
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

काली तुलसी प्रयोग और मन्त्र

काली तुलसी ताप को उतारे धाम
जय शिव शिव शिव बोले खिला देवे
नर नारी बच्चे को हो जाय ताप
करो शिव की याद पार्वती की आन
इतना मन्त्र पढ़ो सम्पूर्ण हो जाय काम
काली तुलसी जो पढ़कर खिलावे
ताप की गति रुक जावें
जय बात शिव पार्वती सुनावे
नर नारी प्रयोग करे धोखे में न रहने पावे
इति सिद्धम्

श्री हनुमान बजरंग बली

हनुमन्त वीर सन्तों की खीर पसारे धीर हनुमन्त वीर
बाले गोरख खाये
सत्य की टोकरी धरी बावन धाम
हनुमन्त बैठे सत्य लोक विश्राम

शिव की शक्ति हनुमन्त की भगति
पूजे सारा लोक सरोबार
जय हनुमन्त रखवारा।
इति सिद्धम्

कालिका

क्री क्री कालिका सत्य का बीज
सत्य का युग बंधे सन्त अपने जुग
आओ सन्तों माता के संग
चले गोरक्ष ज्वालामाई के संग
कालिका चली आगे आगे
पीछे चले गोरक्ष रखवाले
वावन भेदिनी योगिनि चली
शिव की आन जगत में पली
कालिका देवी की चली सवारी
पीछे बैठे जग के नर नारी
चली कालिका की सवारी
जिसको पूजे नर नारी
जय कालिका देवी की जय
इति सिद्धम्

इस मन्त्र का 7 कुओं के जल सामने रखकर शनिवार के दिन तेल की ज्योत जलाकर सिद्ध करें। ब्रह्मचारी का पालन करें सवा लाख ॐ गोरक्ष योगी का मन्त्र करके यह मन्त्र कर सकते हैं। कालिका देवी दर्शन देगी और मनोकामना पूर्ण करेंगी।

जिस मनुष्य को दूसरा मनुष्य दुख दे रहा है उससे बचने के लिए यह कालिका देवी मन्त्र है।

कार्य सिद्धी

मनुष्य का धाम पृथ्वी लोका
कर्मों से हुआ प्रलोका
कार्य सिद्ध हुए जब लगी शिव की आन
पूर्ण हो गया कार्य शिव ने किया प्रकाश
पूर्ण हो गई आस
जब देवों की लगी आहट
धरती पर फिरे जब सन्तों की आहट
मनुष्य के हो गये सब ठाट
शिव की धरती शिव का त्रिशूल
कार्य सिद्धि करे बिन भूल
कार्य सिद्ध हुए सन्तन के
जब मनुष्य सन्तन बन के
शिव का बन के गुणगान करे
जय जय सिद्ध सन्तों की।
इति सिद्धम्

7 दिये घी के जलाओ गीले गोबर पर उनके सामने 7 मिठाई. धूप दीप ईत्र बगैरा छिड़ककर 108 बार सोमवार के दिन सिद्ध करो। फिर जिस मनुष्य का कार्य सिद्ध करोगे आप गाय के गोबर में इस मन्त्र को भभूति पर 42 बार दोगे फिर वह गोबर में मिला देगा और अपने घर 7 दिन तक ज्योत जलायेगा।

जय भैरो जी

भैरो चले उज्जान चाकरी
गौरक्ष मिले मूल आखरी
हुआ मिलन जब गौरक्ष ने सुध ली सारी
गोरक्ष के बने शिष्य ब्रह्मचारी

भैरो जी ने दिया वचन बहुत भारी
जा गोरक्ष जगत में कर दे वाह वाह न्यारी
कल्याण कर दें नर नारी
भैरो का दिया वचन पूर्ण हुआ
गौरक्ष जी ने सम्पूर्ण किया
जय जय गोरक्ष की आन
भैरो जी की शान
जय जय भैरो जी की
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को शनिवार के दिन गुल्लर के पेड़ से डाली तोड़कर उसे सरसों के तेल में भिगो लो 5 शनिवार उस डाली डड्डे को तेल के चिराग जलाकर 108 बार सिद्ध करें गुरु धारण किया हुआ मनुष्य इस मन्त्र को सिद्ध कर सकता है।

गौ जोगिन

गौकुल चले कृष्ण मुरारी
गोपी मिली अर्पणी प्यारी
मधुर संगीत सुनावती गोपियां सारी
मंगल करत कृष्ण मुरारी
आवती देख गौ जोगिनी सारी
श्री कृष्ण ने बाँह पसारी
व्याकुल हो गई जोगिनी सारी
हुआ मिलन जब श्री कृष्ण मुरारी
जोगिनी हो गई व्याकुल सारी
धर्म की बन गई जोगिनी सारी
श्री कृष्ण चले गोकुल रणधारी
पीछे पीछे चली जोगिनी सारी

मान बढ़ा जोगिनों का
हुआ भंडारा गोकुल सारी
मिलन हुआ कृष्ण मुरारी
पीछे चली ब्याही कुँआरी जोगिनी सारी
जय जय श्री कृष्ण मुरारी
इति सिद्धम्

यह मन्त्र सिद्ध करने के लिए 108 बार मन्त्र बोलते रहो और 108 कन्याओं को मीठा भोजन कराते जाओ और यह मन्त्र उच्चारण करते जाओ। सिद्ध हो जायेगा। सिद्ध करने के बाद किसी भी कन्या की चुन्नी से झाड़ सकते हैं। कन्या छः वर्ष तक की होनी चाहिए।

भैरव जी प्रकट होने का मन्त्र

भेरो जी की जय हुआ हुंकारा
भैरो चले विकराल रूप धर के सारा
रखी भगत की लाज हुआ वनवास भारी
देखने चले सपूत नर नारी
पूजने चली क्वारी जब शनि हो भारी
पूजे शनि को नर नारी
तेल की ज्योत फुलवारी
भैरो चले बनवारी
भगत हुआ कल्याणी
जगत का हुआ कल्याण भारी
सहस्त्रों चले नर नारी
जय जय भैरो बनवारी
इति सिद्धम्

जिस नर नारी पर शनि का ग्रह भारी हो उसको इस मन्त्र को बच्चे शनिवार के दिन इसका जाप करें और पीपल पर तेल की ज्योत जलाये या सिर्फ तेल चढ़ावें।

जल शान्ति

अलील की माया
जिससे निकला जगत पराया
पानी की माया विष्णु की छाया
जिसमें बैठे सन्तों की माया
धरे धीर खुल गई तकदीर
पुण्य में हो गई काया
अलील पुत्र विष्णु की माया
जो सिद्ध पढ़े अलील को
अमर हो गई काया
जय जय विष्णु की माया
इति सिद्धम्

काँसे की कटोरी में शुद्ध जल लेकर इस मन्त्र से 7 बार आमन्त्रित करके रोगी को पिलाये स्वस्थ हो जायेगा।

शंख सिद्ध करने का मन्त्र

शंखनाद उपजी धरती पर मधुर गीत सुनाये
आलोकिक श्रृंखला ध्वनि पर
मुकुट सजा शिव का देख देव मुस्कराय
लीला सारी शंख की ध्वनि में समाये
शिव जी पृथ्वी लोक पर आये
पार्वती का संगीत सुन आये
पृथ्वी लोक के नर नारी शुभम हो जाय
शंख की ध्वनि उपज मधुर गीत सुनाये
धरती माता की मधुर वाणी से गर्भ धारण हो जाय
शंखनाद उपजी धरती मधुर गीत सुनाये।

जिस तरह का भी शंख हो उसे इस मन्त्र से सिद्ध करना है 108 बार इस मन्त्र से सिद्ध करके शंख बजाना है। इसके करने से सम्पूर्ण देव नर या नारी से अनेक प्रकार से धन प्रगति और शान्ति स्थापित होगी।

इति सिद्धम्

श्री यन्त्र सिद्ध करने का मन्त्र

गणेश जी की अनुपम शक्ति
जिसको पूजे नर नारी शक्ति
लक्ष्मी का लगा दरबार
यन्त्र बने सिद्ध हो देवों को स्वीकार
यत्न करो नर नारी बारम्बार
गणेश जी चली सवारी जगत में पहली बार
पहले ध्वनि करो शंख की यन्त्र करो बारम्बार
सिद्ध करो यन्त्र और लक्ष्मी को ध्यावो
पूजा करो गणेश जी की मिट्टी के अन्दर दबाओ
श्री यन्त्र सिद्ध करने गणेश लक्ष्मी पूजा पर आये
सम्पूर्ण विघ्न हटाकर श्री यन्त्र सिद्ध हो जाय।

इति सिद्धम्

श्री यन्त्र को सिद्ध करने के लिए गणेश जी की मिट्टी की मूर्ति बनाकर पूजा घर में रखो और इस मन्त्र को 11 दिन तक 108 बार करो शुक्ल पक्ष में ग्यारह दिन बाद श्री यन्त्र को गणेश जी की मूर्ति के नीचे रखकर 1 दिन रात अखण्ड जोत जलाकर छोड़ दो फिर यन्त्र को प्रयोग करो। सभी नर नारी के लिए यह कार्य करना है और दूसरे दुखी दरिद्रों को भी फायदा पहुंचाना है।

अष्टधातु सिद्ध करने का मन्त्र

अष्ट धातु अष्ट भुजा देवी की ज्योत
जिस पर बैठे ब्रह्मा विष्णु महेश
अष्ट भुजाओं पर दुर्गा माता के अंग पर
सम्पूर्ण देव समा जाय
दुर्गा माता का दीप घी का जलाये
पूर्ण करें कार्य सन्तन के घर जाय
मति करें सिद्धी की शान्ति घर में आये
आख का पेड़ धरे पूजा में दूध से नवाहये
कमण्डल पीतल का ले अष्ट धातु को डुबोये
जब डूब जाय अष्ट धातु सिद्ध हो जाय

अष्ट देवी की पूजा करें घी की ज्योत जलाये और आख का पेड़ का पत्ते और दूध निकाल कर कमण्डल में डाल दें और अष्ट धातु भी कमण्डल में डालें फिर सिद्ध करें। शनिवार से लेकर शनिवार तक 108 बार इस मन्त्र का पाठ करें और शनिवार को इस आख के दूध और पत्ते को चलते पानी में बहा दें।

इति सिद्धम्

पारद शिवलिंग मन्त्र

शिव पार्वती का किया बिछोना
धरती बन गई बिछोने की काया
उन पर बैठे शिव पार्वती सत वाला
नाभि से कुंडलिनि बनकर पार्वती चली नहाने
पारद शिवलिंग मृत्युंजय बनकर लगे बहने
सुर चले पार्वती का शिव चले बहने
सात सुरो मैल हो जब पारद शिवलिंग हो गये मतवाले

भैरो चले चली साथ बनकर योगिनी
दिया साथ जब भैरो जी का बनहने लगी चौसठ योगिनि
पारद शिवलिंग की चढ़ गई बैल
नर नारी पूजे शिव पार्वती बैल
जगत शब्द का खेल सत की बैल
पारद शिवलिंग में अंकुर फूटे शिव
पार्वती का हो गया मैल
इति सिद्धम्

पारद शिवलिंग के स्थापित करने के लिए यह मन्त्र लगातार 5 दिनों तक पूजा करना है और दूध से भरकर नहलाना है फिर गंगाजली में रखकर स्थापित करना है। रोजाना 108 मन्त्रों से सिद्ध करना है जहां सिद्ध करो उसी स्थान पर रखना हे। स्थापना उसी जगह करनी है। यह मन्त्र मृत्युंजय है और पारद भी मृत्युंजय है। मनुष्य इस तरह से पारद शिवलिंग को स्थापित करेगा। वह मनुष्य शरीर के अन्दर कोई भी बीमारी नहीं हो सकती और न अकाल मृत्यु हो सकती है।

एक मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

ॐ शिव का धाम पूर्णमासी का धाम
शिव पार्वती का फल खाये शिव ओंकारानन्द
देवपुरी पर अंकित फल एकम मुखी रुद्राक्षानन्द
स्वर्गपुरी में जाकर लगे वृक्ष के अंग
प्रभु शिव के अंग पार्वती के संग
चले बहने सर्व बैल एकम मुखी रुद्राक्ष के संग
मोती मणि के संग एकम रुद्राक्ष के अंग
भोर हुई जब ओंस मोती बने
बने शिव के अंग एकम मुखी रुद्राक्ष के संग

चारों वेद लटके अंग शिव पार्वती के संग
एकम मुखी रुद्राक्ष जो नर धारण करे
मिले शिव पार्वती का संग
अधिपति के अंग
जय जय शिव पार्वती
इति सिद्धम्

एक मुखी रुद्राक्ष को सिद्ध करने के लिए शिव पार्वती का आसन बनाकर 2 कलश स्थापित करके शिव पार्वती के दोनों तरफ रखो और एक रुद्राक्ष को शिव पार्वती के सामने घी का चिराग लगाओ और रुद्राक्ष को दूब दूध में भिगोकर दुब के ऊपर शिव पार्वती से स्थापित कर दो और सोमवार के दिन सुबह 12 बजे से पहले करना है। मन्त्र का जाप 108 बार करना है और जो भी मनुष्य इस एक मुखी रुद्राक्ष को धारण करे वह इस मन्त्र का मनन करेगा सम्पूर्ण कार्य की सिद्धी होगी।

द्वि मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

द्विमुखी रुद्राक्ष गणेश जी का मुखारविन्दम्
गणेश जी का धर्मभिषेक जगत के अंग
संग.चली लक्ष्मी पुण्य हो जाय मनुष्य कर्म
ज्योति बने गणेश जी की सिद्धी हो जाय अंग
बुद्धि बढ़े और सिद्धी बढ़े जीव के अंग
महात्मा बनकर जो शिव को भजे शिव हो जाय संग
गणेश जी ने द्विमुखी रुद्राक्ष माना अंग
नर नारी दरिद्र हो पहनाओ अंग
द्विमुखी रुद्राक्ष सदैव रहे संग
जो मनुष्य द्विमुखी पहने रहे धर्म के संग
जय जय गणेश जी नर के चले संग
इति सिद्धम्

द्विमुखी रुद्राक्ष प्रेम का सागर है जिस मनुष्य को जीवन में प्यार नहीं मिलता वह मनुष्य इसे रुद्राक्ष को धारण करें और 108 बार गणेश जी की मिट्टी की मूर्ति बनाकर 108 बार पाठ करें और इस रुद्राक्ष को धारण करने के बाद इस मन्त्र को मनन करें। यह मन्त्र शरीर के अन्द शुद्ध प्रवाह धारण करायेगा और गणेश जी का आशीर्वाद सदैव के लिए मनुष्य पर हो जायेगा।

त्रिमुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

त्रिलोक की माया जगह हो जाया पराया
जो जाने बुद्धि से यह जग उसी नर ने जाना
त्रिलोक के स्वामी चले परम धाम
तीनों देव जब चले साथ में चली प्राण
शिव चले शिव लोक विष्णु चले पाताल
ब्रंह्मा चले ज्ञान लोक साथ में ले त्रिमुखी रुद्राक्ष
ब्रह्मा विष्णु शिवम् चले जब पूर्ण हो आस
नर नारी धरती पर हुआ बसेरा शिव लोक में बसेरा
गऊएं चली पुण्य लोक धर्म का हो बसेरा
त्रिलोक में त्रिमुखी चले गले में पड़ गई माला
प्रभु शिव सम्पूर्ण लोकों का रखवाला
धर्म पर विजय कर शिव लोक में
पुण्य पहुंचा ध्याला
इति सिद्धम्

त्रिमुखी रुद्राक्ष ब्रह्मा विष्णु महेश की माया रूप है इसकी पहने और इस मन्त्र से इसे सोमवार के दिन 108 बार पाठ करके और गंगाजल में रुद्राक्ष को नहलाकर पूजन करे और इस मन्त्र का मनन करें। इसके पहनने के बाद कोई भी दशा या ग्रह दोष या ऊपर की हवा का दोष दूर हो जाता है।

चतुर्थ मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

चतुर्थ वेद ब्रह्मा की माया
त्रिलोक से चतुर्थ मुखी आया
पुण्य पृथ्वी पुण्य हो माया
ब्रह्म लोक में झूला बनाया
शिव लोक की है माया
जगत में सत की माया
उल्टा ओढ़े सीधी दिखे काया
भजन करने भगत चले कलयुग की माया
नित्य नित्यम् चतुर्थ मुखी रुद्राक्ष
भजे शुद्ध हो काया
ब्रह्म लोक की माया
जो नर सन्तोष रखे सब कुछ समाया
पूर्ण हो काज शिव की जो जाय माया
त्रिलोक से चतुर्थ मुखी रुद्राक्ष आया
श्री शिव की हो माया
इति सिद्धम्

चतुर्थ मुखी रुद्राक्ष पूर्ण परमेश्वर की गति धारण करने वाली है। इसे शुद्ध करके पहने सोमवार के दिन इस मन्त्र को भजो ओर 108 बार पाठ करके धारण करो और धारण करने के बाद मनन करो।

पंच मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

पंचम ध्वनि प्रज्वलित
मधुर गीत सुनावति
पंच सुरों में कनकल करती

उपवन पंचमुखी रुद्राक्ष प्रणवती
गाती फिरती माला जपती
शिरोमणि की ध्वजा बनती
पंचमुखी रुद्राक्ष बनकर परमेश्वर भजती
पाँच नाम परमेश्वर बनकर पूर्ण पृथ्वी विचरती
पाँच नाम देवों के लेकर ध्वनि करती
ॐ नाम लेकर ॐ नमः शिवाय करती
जय जय शिव ध्वनि करती
इति सिद्धम्

षष्ट मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

षष्ट मुखी देवों का भजन निराला
गावे देव षष्टमुखी रुद्राक्ष पहनकर
वेदों की देव वाणी बनकर
विधा से सरस्वती माता को भजकर
गुणों से भरकर नर नारी गाते फिरते
सतगुणों का दीप जलाकर युग युग भरमण करते
देवताओं का गुणगान करते सिद्धो को नमन करते
षष्टमुखी रुद्राक्ष पहन कर योगी भजन करते
नर नारी गाते फिरते वेदों की बाणी
सिद्धी मिले सहस्त्रों युगों की बाणी
धर्म की कणी धरती का बिछोना बनी
देव लोक में सरस्वती का हुआ निवास
पृथ्वी लोक पर षष्टमुखी रुद्राक्ष पहने नर नारी
वेदों ने मुख से देवों की गाई वाणी
इति सिद्धम्

सप्त मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

सन्तन की छाया में बैठे जगत धारी
पुष्प की बोछार करते देव बारी बारी
शिव की अमर गाथा गाते वेद ब्रह्मचारी
सात समुन्द्रों की गाथा गाते नर नारी
जग में अलख जगाते सिद्ध पुरुष अधिकारी
निर्भय होकर जीते बाल ब्रह्मचारी
देवों का वरदान मिले सिद्ध निरंकारी
पृथ्वी पर वास करे देवी कन्या कुआरी
शीश झुकावें सत्य काम हो बाल ब्रह्मचारी
युगों से चली रीत बहती नर नारी
सप्तमुखी रुद्राक्ष पहन कर पूजने चली देवी सारी
पुण्य की घडी आ गई धर्म की नारी
गांठ खुली सप्त रुद्राक्ष की डारी
धर्म में लीन हुई नर नारी।
इति सिद्धम्

अष्ट मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

अष्ट नाम लें श्रीकृष्ण का
विष्णु के अवतार देव का
जिसने आलोकिक कलाओं से जगत जीता
अधर्म की हार हुई धर्म जीता
अष्ट मुखी रुद्राक्ष पहन कर रण जीता
कुसुमलता सी गोपियों का ह्वदय जीता
नर नारी बने कुण्डल जगत जीता
पूर्ण शक्ति धारण किये रण जीता

पांडवों के साथ मिले धर्म जीता
धर्म की लाज रखी पुण्य जीता
अष्ट नाम धरा के जगत जीता
कुल का किया नाम अमर गीता
धरा पर आके पूर्ण किये काम
गोकुल की मर्यादा बनी श्री बने कृष्ण धाम
श्री कृष्ण नाम धरा के युग जीता
जय जय श्री कृष्ण देव
इति सिद्धम्

अष्ट मुखी रुद्राक्ष श्री कृष्ण जी का है इसे सिद्ध करें और जो भी सिद्ध करें वह सम्पूर्ण फल पावें और इस मन्त्र का मनन करें जो भी इस मन्त्र से अष्टमुखी रुद्राक्ष सिद्ध करके पहनेगा वह सांसारिक परेशानियों से तुरन्त हटेगा। उसके सोचे किये कार्य सम्पूर्ण हो जायेंगे।

नव मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

नव मुखी राम नाम का होये
इससे बड़ा तीनों लोकों में न पावे
मर्यादा पुरुषोत्तम जगत में कहावे
सीता जी राम की हो जावें
गुणगान गावे जगत राम कहावे
सत्य युग से लेकर कलयुग तक अमर फल पावें
कष्ट में पड़े राम हनुमान प्रगट हो जाय
सीता बिछड़ी राम से हनुमान लंका जलावे
सीता जी का राम जी का सन्देशा पहुंचावें
हनुमान जैसा भगत तीनों लोकों में न पावें
सीता ने दिया वरदान हनुमान कुछ न मांगने पावे
मांगने से न मांगे भला सम्पूर्ण कला

हनुमान जी को मिल जावे
इति सिद्धम्

नव मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करे और जो पहने वह इस मन्त्र का मनन करे रुद्राक्ष सिद्ध 108 मन्त्र से दूध में डालकर घी की ज्योत जलाकर सिद्ध करें और हनुमान जी की मूर्ति लगाकर याद करके नवमुखी रुद्राक्ष सिद्ध करें।

दस मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

दश मुखी रुद्राक्ष दस दिशाओं की परछाई
माया मांगे मिले ना मनुष्य को राम राई
सत्य की रीत कलयुग तक कहावाई
जो सत्य बाटे जगत में कोटी कोटी नाम कहावाई
श्री राम का नाम से जग तरे परमेश्वर नाम कहावाई
धरती पर धर्म की जीत हो देव लोक तक गाई
मनु देव ने धरती पर मनुष्य रीत चलाई
चिन्ता मुक्त जब हो जा मनुष्य बांट सके ना जाई
दशमुखी दश दिशाओं में सत्य की विधा गाई
पुरुषत्तम श्री राम जी सीता जी अवध पुरी में आई
श्री राम जी ने आकर राजगद्दी थमवावाई
सत्य के कारण लें नाम राम का विजय सत्य पर पाई
इति सिद्धम्

दश मुखी रुद्राक्ष को इस मन्त्र से सिद्ध करना है और श्री राम की पूजा करनी है। दशमुखी रुद्राक्ष यश और दीर्घ आयु पाने के लिए होता है। जो भी मनुष्य दशमुखी रुद्राक्ष धारण करेगा वह इस मन्त्र को भी धारण करें और मनन करें।

एकादश मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

एकम दिशा वाहिनी धर्म प्रज्वलितम
सहस्त्रों युगों समुन्द्र मन्थन प्राजिकिता
मनुष्य धर्म पर अंकित हो शिव ज्याक्त्ता
पूर्ण मनुष्य धारण करें एकादश मुखीक्त्ता
शुभव वैभव गता सन्तोष मनन गाता
शिव का मनन करे जगत शीश पर जुड़ जटाता
भावगता सत्य हो परमेश्वर गाता
मनुष्य जगत में आता जाता
प्रभु शिवजी के गुण गाता
एकादश मुखी रुद्राक्ष पहन कर मनुष्य मुस्कराता
जय जय शिवजी ज्ञाता
इति सिद्धम्

जो भी मनुष्य इस ग्यारह एकादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करेगा उस मनुष्य को उन्नति का मार्ग इसके धारण करने से हो जायेंगे और इस मन्त्र से रुद्राक्ष सिद्ध करके मनन भी करें यह ही सच्चा शिवजी तक पहुंचने का मार्ग बतायेगा।

द्वादश मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

सर्व प्रथम मनु ने द्वादश मुखी रुद्राक्ष पहनाया
पेड़ शिव ने लगाया फल जगत में आया
मनु ने द्वादश मुखी रुद्राक्ष मनुष्य पहनाया
सत्यम हो वाणी जिसकी वह प्रभु शिव कहलाया
जिसने की जगत की उत्पत्ति धर्म जगत में फैलाया
अगत चली जब मनुष्य की मनु धरती पर आया

सत की बाँधी डोर जगत मनु नाम धराया
परमेश्वर ने जग रचा मनु ने कर्म चलाया
शिवजी ने पेड़ लगाया जगत को पहनाया
मनु ने द्वादश मुखी रुद्राक्ष मनुष्य को पहनाया
जो भी मनुष्य धारण करे विधाओं का पुंज खिले।
इति सिद्धम्

जो भी मनुष्य इस द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करेगा उसे सम्पूर्ण विधाओं का ज्ञान हो और जीवन में शक्ति का पुंज बनकर जगत की भलाई करेगा।

त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

सत्य का बीज बोया धरती पर उग आया
शिव ने दिया वरदान सत्य का पेड़ बलवान
जो नर सत को धारण करें शक्तियों से पूर्ण शक्तिवान
भाग्य का खुले ताला नर की समझ में आये
बुद्धि का प्रकाश नर जगत में फैलावे
जिसके सिर शिव स्वामी वह दुख काहे का पावे
त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष पहन कर पूर्ण बन जावे
सुखी हो काया ज्योति जगत में जल जावे
जो नर नारी शिव जी को धावे
सम्पूर्ण पुण्य का फल पावे
त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष पहन कर नर सिद्धि को पावे।
इति सिद्धम्

चर्तुदशमुखी रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

चैतन्य करे प्रभु नर को भाग्य बदल जाय
शिव का चोला पहनकर नर नारायण बन जाय

भगवा वस्त्र पहनकर नर नारी चतुर्दश मुखी बन जाय
सत्य का भागी बने नर नारी सन्तों की सेवा में जाय
प्रभु शिव करे पूर्ण कार्य जो चर्तुदश रुद्राक्ष पहना जाय
पूर्ण परमेश्वर का नाम शिव है नाम जप करता जाय
खुल जाय धर्म की गांठ नर नारायण बन जाय
चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष पहनकर नर नारी
शिव पार्वती के दर्शन पाये
मुक्ति मिले नर को नारी मोक्ष को पाये
जय शिव पार्वती द्वार खोल मोक्ष के नर नारी दर्शन पावे।
इति सिद्धम्

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष जो भी नर नारी पहने इस मन्त्र से सिद्ध करें और मनन करें जिसका पति पत्नी का प्यार न हो और धन की कमी हो उसे रुद्राक्ष धार करना चाहिए।

गौरीशंकर रुद्राक्ष सिद्ध करने का मन्त्र

पार्वती का रूप सम्पूर्ण शक्तियों का आधारभूत
शक्ति बीज उत्पन्न करे जगत की माता बनकर
शिव के संग चले शिव की पटरानी बनकर
पार्वती सम्पूर्ण शक्तियों का आधार रूप बनकर
जगत का कल्याण करे शिव शक्ति बनकर
गौरी शंकर रुद्राक्ष शिव पार्वती का नाम बनकर
नर नारी गौरी शंकर रुद्राक्ष पहन कर
शिव शंकर का शुभ वरदान मिल नर नारी
को पूर्ण धाम मिले
गौरी शंकर रुद्राक्ष जो नर नारी धारण करें
शिव पार्वती के आशीर्वाद को सरोबार करें
नित्य नित्य भजन करे सदैव मनन हर बार करें।

इति सिद्धम्

यह मन्त्र शिव पार्वती का मन्त्र है। पतिव्रता नारी इस मन्त्र का मनन करें जितना ज्यादा मनन करेंगी पति उतना ही ज्यादा प्यार करेगा और पति भी सुख शान्ति से रहेगा। धन धान्य ग्रह की दशा सब दिशाओं से मनुष्य परिपूर्ण हो जायेगा और नारियों के लिए सदा सुहागन रहने का मन्त्र है। पति को कभी भी अचानक दुर्घटना या आपत्ति नहीं आ सकती।

सन्तान गोपाल यन्त्र

सन्तों की खीर देवों के घाट पर खाई
कृष्ण जी ने दिव्य नगरी बसाई
पीछे चले गाँवों के नर नारी भाई
विष्णु चले ध्यान योग में बहाई
कृष्ण जी की लगी आँख जभाई
विष्णु जी ने कलाओं की वर्षा बरसाई
सन्तान गोपाल के आंगन में खेले गोसांई
सन्तों की खीर देवों ने खाई
जो खावे वही जाने पीड़ पराई
जय जय कृष्ण गुसांई जय जय देव
इति सिद्धम्

श्री गंगा जी धाम

गंगा जी मेरी राखो आन
भगत की राखो लाज
करो सत्य गाई पूर्णमासी आई
गाई गई धर्म की अग्न
परमेश्वर ने किया विश्राम

शिव आये गंगा धाम
भगीरथ की राखी तप की लाज पूर्वजों की आन
सतयुग से द्वापर तक आई आन
त्रेता से कलयुग किया विधान
परम गति हुई पांडवों की
चले स्वर्ग पांडव धर्म की राही
पहले ही मिली कुन्ती माई
जब चले पाँचों भाई
गंगा जी ने कि अगुआई
जब चले धर्म के भाई
गंगा जी सतयुग से कलयुग तक आई
जय जय गंगा माई

घी के चिराग जलाकर गंगाजल रखकर इस मन्त्र को बोलना है घर में गंगाजल का छींटा लगाना है। इससे शान्ति स्थापित होगी।

सिद्धी में सहायक मन्त्र

जहाँ हुआ प्रभु का वासा
सिद्धी ने किया प्रकाशा
मधु द्वीप ने जलकर उगले
मोहन बेला की धुन बनकर
शिव धाम से चले योगी
अपना चिमटा त्रिशूल थामकर
गोरक्षनाथ चले बादलों सा रूप धरकर
पहुंचे उस घर जहाँ सिद्धी का वासा
गोरक्षनाथ ने वहाँ किया प्रकाशा
रखी भगत की लाज किया प्रकाश
अनन्त किरणों का वासा

किया गोरक्षनाथ ने प्रकाशा
जय जय गोरक्षनाथाय नमः
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को वह ही साधक कर सकता है जिसने गुरु धारण किया हो और सात्विक प्रवृत्ति का हो इस मन्त्र को मनन करने से साधक की साधना सम्पूर्ण होगी और सिद्धियां प्राप्त होंगी।

कार्य सिद्धी

मनुष्य का धाम पृथ्वी लोका
कर्मों से हुआ प्रलोका
कार्य सिद्ध हुए जब लगी शिव की आन
पूर्ण हो गया कार्य शिव ने किया प्रकाश
पूर्ण हो गई आस
जब देवों की लगी आहट
धरती पर फिरे जब सन्तों की आहट
मनुष्य के हो गये सब ठाट
शिव की धरती शिव का त्रिशूल
कार्य सिद्धी करें बिन भूल
कार्य सिद्ध हुए सन्तन के
जब मनुष्य सन्तन बन के
शिव का बनके गुणगान करे
जय जय सिद्ध सन्तों की

7 दीये घी के जलाओ गीले गोबर पर उनके सामने 7 मिठाई धूप दीप ईत्र बगैरा छिड़कर 108 बार सोमवार के दिन सिद्ध करो। फिर जिस मनुष्य का कार्य सिद्ध करोगे। आप गाय के गोबर में इस मन्त्र को भभूति पर पढ़कर दोगे फिर वह गोबर में मिला देगा और अपने घर में ज्योत जलायेगा 7 दिन तक।

विजय भाँग का प्रयोग और मन्त्र

भाँग पढ़कर खिला देवे यह सन्तन की रीत
सन्त मन्त्र पढ़ें भाँग का असर हो जाय
पेट में दर्द हो नर नारी ठीक हो जाय
भांग शिव का भोजन महात्माओं की खीर
नाथ खाये योग में यह सन्तन की रीत
जो नर नारी शिवलिंग पर भांग चढ़ावें
इस मन्त्र को योग बनावे जो बोले वह मिल जावे
शिव की ज्योत जलावें शिवलिंग पर भाँग चढ़ावें
वह नर नारी फले फूले धन धान्य बन जावें
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

पीपल पर जल चढ़ाने का मन्त्र

विष्णु का दिया पीपल वनस्पति पर जलाओ
पीपल पर विष्णु करते वास
सत्ययुग से कहते आये व्यास
पीपल पुण्य की बैल जितना पूजे हरी हो
नर नारी पूजे पीपल मिल जाय हरी ॐ
जय जय विष्णु देवम्

केले पर जल चढ़ाने का मन्त्र

केला पूजो करो देवों को सत्कार
जिस पर रहते नव द्वीप आहार
सत्य के कारण केला भजे जय सियाराम जय सियाराम
मनुष्य भजे तो कल्याण होवे

पूजे जल चढ़ावे धन का भरे भण्डार
केले को जो राम जी मान करे पूजे हो जाय बिगड़े काम
हर हर देव श्री सियाराम देव

अनिद्रा दूर करने के लिए

ॐ की ध्वनि शिव का गीत
सुर मिलाओ ध्वनि के मीत
ॐ नाम का जप करो
निद्रा आये प्रभु के मन लगाये
ॐ की धुन मन में समाये
निन्द्रा की अवस्था तुरन्त बन जाये
ॐ शिव, ॐ शिव
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को सोते समय करने से स्वप्न भी खराब नहीं दिखेगा आनन्द से नींद आयेगी। इस मन्त्र का रात को सोते समय मनन करो।

मोहम्मद पीर

जग बाँधू यज्ञ बाँधू
बाँधू सन्त फकीर
जब चले मोहम्मद पीर
बाँध कर बाना चोला सब बन्दनामा
करके फकीरी बाना
मिला गोरक्ष भगवाना
गोरक्ष कहे मोहम्मद पीर
तूं चल आगे ओ ओ सन्त फकीर
पूजे तुझे हिन्दु मुस्लिम सभी धीर

वसूलों से भरा दरबार
जो पाये उसी का भर जाय
सन्तों का बाना नहीं कुछ चाहना
गोरक्ष धरे ज्ञान की धीर
यह जगत परम वीर
जो माने स्वम्भू की खीर
खाये जगत राँधे गोरक्ष धीर
चले मोहम्मद पीर
जय गोरक्ष बाले वीर
जहाँ सन्तों की भीड़
खाओ सभी सन्तों की खीर
जिसमें बैठे मोहम्मद पीर
जय गोरक्ष भगवाना

मुस्लिम ईलम को काटने के बाद शान्ति स्थापित करना और जिस आदमी पर परेशानी हो इसे हर वक्त मनन करना रक्षा स्वयं होगी।

मसान मन्त्र

धतूरा बीज उठा गगन चोटी
परमेश्वर चले होकर बाराती
उठा धुंआ शमशानों में
मसान चला आंखों में तेल डालकर
धुंआ चला बाराती बनकर
उठा ब्हाने मसान को
वापिस चली बारात
मिले गोरक्षनाथ
मैं भी चलुंगा बाराती बनके

संग लूंगा मसान का साथ
तभी ले उड़ गोरक्ष चले
मसान चला गोरक्ष के संग
गोरक्ष ने कुएं में छोड़ा मसान को
औ़र चला गोरक्ष अपने गुरु मच्छेन्द्रनाथ के अंस
जय जय गोरक्षनाथ

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए बबुल के पेड़ के नीचे बैठकर कर सकते हैं। यह मन्त्र भी सिद्ध कर सकते हैं या फिर गोरक्षनाथ का मन्त्र ॐ शिव गोरक्ष का मन्त्र सवा लाख कर सकते हैं। इस मन्त्र से मसान का रोगी ठीक होगा और उस मरीज को बबुल की छाल कूटकर भी रोजाना खिलानी होगी।

डाकिनी मन्त्र

चली अगुआई ब्रह्म की
डाकिनी चली अपने लोक
मनुष्य का हुआ पलड़ा भारी
कलह कलेश की आग पर पड़ गया पानी
जब ब्रह्म की लगी शस्त्र की ओट
डाकिनी हो गई ओट
हुई ब्रह्म देव की झड़ी
मनुष्य की खल गई नली
पूर्ण हो गई काया
जब धर्म का द्वीप जगाया
जय जय धर्म का द्वीप
ब्रह्म लोक की हुई जीत
जय जय ब्रह्म देव।

इस मन्त्र को अमावस्या की रात के दिन करना है। जिस नर नारी पर ऊपर की हवा हो इस मन्त्र को सात्विक प्रवृत्ति का मनुष्य जिसने गुरु धारण कर रखा हो वह इस मन्त्र से झाड़ सकता है। अमावस्या की रात 12 बजे इस मन्त्र का 108 बार जाप करके सिद्ध करें, तेल की ज्योत जलावे।

चुडेल के उतारने का झाड़ा

चण्डी चली शिव के धाम
पूर्ण किया बावनी धाम
सत्य का किया धर्माणा
पूर्ण हुआ कर्माणा
जब शमशान का सवेरा
चुडेलों का हुआ संहार
चण्डी चली शिव के धाम
पूर्ण के शमशान
चुडेलें चली पाताल
जब चण्डी का लगी हुंकार
हुआ भगत का वारावार
जय जय चण्डी माता जी की
इति सिद्धम्

चण्डी माता की पूजा करें और इस मन्त्र को रात के समय सिद्ध करें 108 बार करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा, साधक सिद्ध करने के बाद झाड़ फूंक सकता है।

धरण ठिकाने आने का मन्त्र

चल धर्म की गाँठ
हिलडुल हट: फट: स्वाहा
कुण्डिलिनि ने किया बिछोना

चल नाड़ी रात्रि के धाम
जय जय देवी माँ उद्धार करो माँ

ककराली झाड़ने का मन्त्र

जो काँख में निकलती है
बड़ के पत्ते से झाड़ना और दूध लगाना
साबर धाम चलो गठरांली
बैठ उठ बैठ यति की दुहाई
ककरालि चली माईके जाई
जय जय गोरक्ष की दुहाई

बिच्छु का जहर झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र झाड़ फूंक हट झेड़ि
चले सुदामा कृष्ण धाम
नवमी का लिये पैगाम
गोरक्ष चले लेकर भाल
शिव चले नीला विष बाण
छोड़ कीड़े की सुजान
हट: पीडे जहरीला नाम
जय जय गोरक्ष सुजान

सपेरे की बीन बाँधने का मन्त्र

बन्ध सपेरे योगी हाथ
उज्याड बन्ध गोरक्ष वाद
चले योगी बिना हाथ
लिए बीन मुरली तान
चल सपेरे तेरा क्या काम
गावे गोरक्ष गान

जय जय गोरक्षयोगी जान

सर्प निकालने का मन्त्र

योगी चले बाराती दाल
बन जा शिवजी विकराल
चल सर्प बैठ उड़ाल
धरती छोड़ उड़ज्या पाताल
चल योगी की ढाल
मेरा बनज्या मेरी ढाल
जय जय गोरक्ष विधि काल

हांडी बांधने का मन्त्र

चली मदिरा भांग चढ़ाये
हांडी चली अग्नि में जाये
हांडी हाड मास से भर जाये
हांडी हट पीछे डायन
उलटा पहिया चले शमशान
चले गोरक्ष अपनी बान
जय गोरक्ष की दुहाई की कमान

नजला झाड़ने के लिए

नटखट बोले घघट में
फिरे चक्कर घट घट में
तोड़ी फनी चन्दन से तीन
बैरी की डाली पत्ते तोड़ खाओ
खाँसी जुकाम को दूर भगाओ
चौरंगी नाथ जी की ज्योत जगाम्
नजला ठीक हो जाय बान

नवनाथों को पूजन जाओ
धर्म की ज्योत लगाओ
नाथों को घर से भूखा न जाय
नाथ घर से भूखा जाय सुखा पड़ जाय
नाथ भूखा न जाय धन वर्षा हो जाय।

अग्नि स्तम्भन रोकने के लिए

माता काली का झंकारा
पापी मिटे धर्म ने डाला डेरा
अग्नि स्तम्भन हटे काली माता का पहरा
काली माता की भगति शिवजी की शक्ति
जहाँ बोले नर नारी वहाँ खीर धर्म की खाई
पापी हटे धर्म का बीज बोई
सत्य की हुई सगाई
सती काली माता बनकर शिव धाम आई
जय जय काली माता की दुहाई
इति सिद्धम्

मूठ उच्चाटन दूर तक हटाने के लिए

मूठ चली हवा बनकर
काल भैरो चले ढाल बनकर
अष्ठ हाथ भैरो जी के फैले
काट दी जड़ मूठ की चढ़ा दी आकाश
नीचे काटी ऊपर काटी काट की पाताल में
काल भैरो का नाम ले जो नर नारी
उसके लिए मूठ कभी न पड़े भारी
जय जय काल भैरव देव
इति सिद्धम्

जहाँ पर मनुष्य खड़ा हो और मूठ आती दिखे इस मन्त्र को पढ़ो और मिट्टी उठाओ चारों दिशाओं में फैक दो और इस मन्त्र का मनन करते रहो मूठ हट जायेगी।

शत्रु उच्चाटन मन्त्र

अग्नि पर शत्रु जले जैसे जले नीर
भैरो की दुहाई हो सत्य की खाओ खीर
सन्तों की भगति शिव की शक्ति
फूंको शत्रु पर करे दण्डित वीर
जो नर नारी पाप करें सन्त लिखे तकदीर
सन्तों का ले नाम जगत में खाये खीर
जय जय सन्तों की
इति सिद्धम्

इस मन्त्र से शत्रु का वार काटा जाता है और शत्रु तुम्हें परेशान करें तो इस मन्त्र को भभूत पर पढ़कर खिला देवें या उसके आंगन में फैंक देवें। परन्तु इसे सिद्ध करना है। 10 हजार मन्त्र से यह मन्त्र सिद्ध होगा और यह अधर्मी मनुष्य पर चलेगा, धार्मिक मनुष्य पर नहीं चल सकेगा।

ग्राहक उच्चाटन मन्त्र

भैरो का पानी खूंटे पर दे बांध
सात दिनों तक खूटे पर चढ़ाओ जल
सातवें दिन ले भैरो जी का नाम घर ले आओ
उसी पानी से ग्राहक के पसीने सुखाओ
मारों छींटा देह पर यह भैरो की आन जगाओ
जय जय भैरो जी की

किसी भी जंगल या घेर घर में पशु का खूंटा खाली मिले उसके चारों तरफ गढ़्डा करो रोज 7 दिनों तक पानी चढ़ाओ रात के

समय और सातवें दिन पानी चढ़ाओ उस पानी को इकट्ठा करके ले आओ उस पानी का छींटा ग्राहक पर दो ग्राहक का उच्चाटन हो जायेगा।

स्वप्न में डरना या कोई ऊपर की हवा डरावनी दिखती हो उसे ठीक करने का मंत्र

सति की आई बारात
शिव चले अपने लोकात
शिव के साथ चले भूत पिशाच
यात्रा में मिले पृथ्वी लोकां
जहाँ पर बसते नर नारी झोका
दिया वचन शिव ने जब
भूत पिशाच हट गये जम
किया प्रकाश पृथ्वी लोका
आई बारात सति की ओका
जय जय हो शिव का ओका
इति सिद्धम्

नौ देवियों के चिराग जलाकर इस मन्त्र को 108 बार करना है और मनन करने के बाद लय होने के बाद इस मन्त्र से झाड़ना है और पीपल की जड़ बांधने के लिए देनी है।

नर नारी को परमेश्वर भगति में मन लगाने के लिये

सन्तों की वाणी नर नारियों की पहचानी
सब माने वेदों की बाणी

सत्य पुरुष वही है जो जाने सच्ची कहानी
शिव जी ने जग बनाया यह रित पुरानी
जानकर भी नर नारी न माने यह कर्मों की कहानी
जो माने वह बने सन्तों की बाणी
धर्म में जोत है धर्म नहीं तो जग नाही
शिव का नाम भजो यह सन्तों की बाणी
शिव नाम सत्य है और सब मित्थ्या बाणी
ॐ शिव नाम जप है शिव लोक में आनी
धर्म की जोत लगाओ समझे सत्य कहानी
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को मनन करो ध्यासन लगने लगेगा।

शीघ्र विवाह का मन्त्र

धुर्व गति सिद्धासन
मुनि बैठ कावडी संग
शीघ्र विवाह उत्पन्नम्
जय महाकाली जम:
जय जय गोरक्ष विकराली जम्

नये मकान में जाने (गृह प्रवेश) का मन्त्र

श्री गणेश जी का लगा दरबार
सतियों ने किया श्रृंगार
नर नारी बन क्रीड़ाहार
किया गृह में प्रवेश द्वार

लगा दिया गणेश जी का दरबार
ज्ञान ने लिया अपना हक वार
गणेश जी का लगा दरबार
जय जय गणेश जी

नये मकान में प्रवेश करने से पहले इस मन्त्र से 108 बार गणेश जी का दरबार लगाकर उसके सामने 108 बार हवन करें। नये घर में प्रवेश करें कोई भी परेशानी भविष्य में नहीं हो सकती।

सास ससुर द्वारा बहु पुत्र वधु से प्यार हेतु मन्त्र

धर्म की माता बनकर कैकई ने वरदान लिया
श्री राम को वनवा हुआ
श्री दशरथ को दुख साथ हुआ
सीता जी भी चली वन में
सास ससुर को पछ्तताताप हुआ
सास ससुर करें प्यार बहु से भाव अपार हुआ
बहु चली वन में सास ससुर विभाव दर्द हुआ
सास ससुर जग में बहु से प्यार करें
यह धर्म पुण्य का सार हुआ
जो माने शक्ति राम की पुण्य स्वीकार हुआ
जय श्री राम

इस मन्त्र के करने से बहु सास में प्यार रहेगा, इस मन्त्र से बहु अपने सास ससुर को जीत सकती है, अपनी तरफ खींच सकती है। इस मन्त्र का अपने अन्दर ही मनन करें यह मन्त्र पूर्ण शक्ति देगा। इति सिद्धम्

पुत्र वधु का सास ससुर से स्नेह करने हेतु मन्त्र

पुत्र बने मात पिता की ढाल
पुत्र को लगा प्यार को रोग
ससुराल पहुंचा गाये गुणगान
बहु को ले साथ पहुंचा घर आंगन
सरवण जैसी इच्छा करें पुत्र पुण्य धरे
मात पिता की सेवा करे कहते आये धर्म वेद
यह ही पुण्य जगत में इससे बड़ा न कोई
जो पुत्र वधु माता पिता की सेवा करे
फले फूले धन भरे पुण्य का धर्म करे
सरवण जैसा पुत्र बनकर मात पिता की सेवा करे
जय जय श्री राम को याद करे
जय श्री राम
इति सिद्धम्

जिस महिला का पति पत्नी के विरुद्ध हो ठीक करने के लिए मन्त्र

सती चली जब शिव की हाट
नारी बन गई शिव की साख
नारी को दिया जब शिवजी ने वरदान
नारी ने जब किया शिव जी का फरमान
शिवजी ने भेजा शैतान
नारी को जब दिया वरदान
हो गये सब बिगड़े काम

जय जय हो सती निस्काम
लगा जब शिव का सती को वरदान
जय जय हो शिव धाम
इति सिद्धम्

यह मन्त्र दूध पर पढ़ा जाता है नारी के लिए है। इस मन्त्र को नारी 108 बार कर सकती है और मननकरके लय करके कार्य में ला सकती है। दूध पढ़कर पिलाना है और शिव पार्वती की पूजा करनी है।

पति बात–बात पर गलत बोलता हो ठीक करने के लिए मन्त्र

सती का जब हुआ स्वयंबर
शिव चले अपने पवनें दर
शिवजी ने जब बदला चोला
कहने लगे सब भोला भोला
हुआ जगत में सत्य का बोलबाला
सती का हुआ जग में बोलबाला
शिवजी का हुआ जगरात्मा
सति हुई नारियों की रखवाली
जो जो सती को पूजे
वही नारी बन जागे
जय जय सती को धावे
बिगड़े काम सुधर जावें।
इति सिद्धम्

यह मन्त्र नारी के लिए है। इस मन्त्र को 108 बार करके मनन करना है फिर परिवार के सब शान्ति में हो जायेंगे। नारी पूजा करनी है।

पति पत्नी के मैल मिलाप के लिए

पानी पर पानी बाहें यह बार भारतीय नार कहें
नर नारी का जोड़ा अति शुभवार रहे
पुत्र वधु नारी जग में अति हर्षार रहे
पत्नी पति से करे प्यार शिव पार्वती को कहे
सत्य से पूजे जो शिव पार्वती को सुखी संसार रहे
सोमवार के करे व्रत खाने कसार रहे
शिव पार्वती की ज्योत लगाकर गंगा जल धार रहे
व्रत पूर्ण हो जाय गंगा जल पति पत्नी पीयें
पंच परमेश्वर हो पांच पांच व्रत का संचार रहे
पति पत्नी प्रेम से जिये जग आनन्द सार रहे।
इति सिद्धम्

पुरुष को परनारी से बचाने के लिए

भैरो की करो जात
शनिवार को करो तेल की ज्योत
भैरो को चढ़ाओ लड्डू और भात
नियम से करो पाये शनि मन्त्र दिन रात
ॐ भैरो, ॐ भैरो ॐ भैरो ॐ भैरो ॐ भैरो
जो नारी करे दिन राती पति हटे परनारी जाति।
इति सिद्धम्

परपुरुष से बचाने के लिए

भैरो जी का कड़ा
जग में बना घड़ा
जो पानी पिये वह सत पुरुष पिये
नारी नर के वश हो भैरो जी का जल पिये

शनि को भैरो जी का घड़ा पानी से भरो
जय जय भैरो करके मिट्टी के घड़े में पानी भरे।

11 दिन तक 11 बार इस मन्त्र को पढ़कर उस नारी को पिलाओ जो परपुरुष के वश में हो। मिट्टी का छोटा घड़ा लो और यह मन्त्र बोलकर 11 बार किसी भी बर्तन से पूरा भर दो उसी घड़े से नारी को 11 बार पढ़कर 11 दिन तक पानी पिलाओ बाद में घड़ा उस रास्ते में गाड़ दो जिस तरफ नारी जाती है।

मनुष्य के आलस्य को दूर करने के लिए

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ का करो जाप
ढाई दिन और 13 रात
आलस्य न आये दिन रात
जो नर नारी करे इस मन्त्र को शरीर हो जाय शुद्ध
ॐ का करो जाप हो जाओ शुद्ध
इति सिद्धम्

मनुष्य के लिए जिस पेड़ का फल खाया जा सकता है उसी पेड़ के पत्ते से फल जितना फायदा पहुंचाने के लिए मन्त्र

फल खाये जैसे पढ़े वेदों के शब्द
पत्ते खाये जल पिये, पिये छाल के बल
सत्य करे देवों को स्वाद चढ़े पत्तों का
अमर फल हो जाय जो याद करे सातों जती का
सातों जती हुए जगत में जो फल खाये पत्तों जैसा
इति सिद्धम्

जिस पेड़ पर फल लगे अगर फल प्राप्त न हो तो आप पत्ते या

छाल या पत्तों का रस निकाल कर पी सकते हैं। आपको उसमें भी पूर्ण शक्ति मिलेगी जितनी फल खाने में मिलती है। इस मन्त्र को पढ़ते जाओ और खाते जाओ।

दुष्कर्म करने वाला आदमी की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए मन्त्र

नटखट बैरी नीच घर जा बैठ
कऊए जैसी तेरी चोंच
तेरे हो गये उलटे होंट
जा गिर समुन्द्र पार
जहाँ बैठे लंकेश्वर सार
वही देखे तेरे वार
तू जा नर समुन्द्र पार
लंका में बैठे तेरे घर बार
जय जय लंकेश्वर सार

इस मन्त्र से दुष्कर्मी के लिए कार्य में लाना है। 108 बार करके मनन करें फिर इस मन्त्र को 7 बार करके खाने में खिला देवें। शान्त हो जायेगा फिर वह मनुष्य कभी भी गलत पाप नहीं करेगा।

पुरुष क्रोध को शान्त करने के लिए

शिवजी नर का रूप बनकर भ्रमण करे
नर का भेष भरकर प्यार की बौछार करे
शान्ति हो जग शक्ति की भरमार करे
नर शिवजी की सन्तान जग का भ्रम टलें
शिव भगति करे नर सन्तों की सोहबत करे
शिव का नाम भजो जग के नर प्राणियों
प्यार करो सबसे यह शिवजी का वरदान प्राणियों

शिव नाम है जग में और सब मिथ्या के फल प्राणियो
ॐ शिव का जाप करो नर नारियो
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को नर नारियों को मनन करना है कभी भी गुस्सा नहीं आयेगा।

नारी क्रोध को शान्त करने के लिए

पार्वती बनाये खीर शिव खाये खाये
देखे शिव लोक की माया
धर्म में जग हो यह शिव लोक की माया
पार्वती दे वरदान जग में नारी क्रोध हो शान्त
नारी पार्वती का रूप धर जग में आई
नारी पार्वती की शक्ति धर्म न गाई
पार्वती की शक्ति नर नारियों न गाई
नारी पार्वती का रूप है वेदों न बतलाई
जो नारी धर्म में हो क्रोध कभी न आई
जय जय पार्वती जी माता
इति सिद्धम्

नारी जाति इस मन्त्र का मनन करें क्रोध कभी नहीं आ सकता।

बन्द मासिक धर्म को शुरु करने के लिए

पार्वती का लगा वरदान जग में नारी के बने सब काम
लगा ताला खुले यह पार्वती का वरदान
फूल खिले सधे सम्पूर्ण हो जाय काम
मासिक धर्म खुले यह पार्वती का वरदान

पुण्य की गठरी बाँधों धर्म की नियति
जो माने धर्म को खुल जाय नियति
शिवजी की वाणी जाय न खाली
पार्वती दे वरदान जग में फैली
जय जय पार्वती माता

इस मन्त्र को नारी मनन करे मासिक धर्म शुरु हो जायेगा।

अति मासिक धर्म को नियमित करने के लिए

मृग छाल पहनकर निकले शिव पार्वती का जोड़ा
सत्य धर्म में जोत है अति को तोड़ा
शिवजी की धर्म की नीव
पार्वती उसमें बैठी सब नारी करे धीर
सत के कारण जग भया कहते आये पीर
अति मासिक धर्म न हो पार्वती की लगे आन
शिवजी पार्वती से कहे यह बान
पार्वती का नाम रटो सबके बन जाय काम
जय जय शिव पार्वती धाम
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को करने वाली नारी को मासिक धर्म नियमित रूप से सही और समय के अनुसार होगा।

भिलनी चली कृष्ण जी धाम
पत्थर की बनी मूर्ति मान
भिलनी पूजे कृष्ण कीर्तिमान
मांगे वचन कृष्ण से भिलनी चली मासिक धर्म से
भिलनी का हो गया मासिक पात

न मिल सकी कृष्णा विधात
भिलनी मिलनेको हुई व्याकुल
श्री कृष्ण ने दी बूटी भिलनी हो गई त्रिकुटी
जो नारी श्री कृष्ण को याद करे
हो जाय मासिक धर्म पाक
जो कृष्ण जी का ध्यान करे
जय जय कृष्ण देव
इति सिद्धम्

(नामर्द) पुरुष (निपुंसक) सन्तान प्राप्ति के लिए

शिवजी की सन्तान जगत धाम
परमेश्वर ने बनाई पृथ्वी लोक पुराण
नर नारी शिवजी को पूजे बोले वेद पुराण
मांगे वर जो दे शिव वरदान
कर्मों से मोती मिले जो रखे मान
शिवजी दे वरदान निपुंसक ने हो जाय में नर धाम
पुत्र हो दे वरदान शिवजी दे वरदान
धर्म हो जिसके घर पूजे शिव धाम
पुण्य हो कर्म जिसके नर हो जाय धाम
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

इस मन्त्र का मनन करना है जो शिव का मनन करेगा वह मनुष्य पूर्ण हो जायेगा।

नारी गर्भ धारण करने का मन्त्र

नाडी बंधे नारी की
सत बंधे नीर

शिवजी बाँधे मन्त्र सत्य का
नारी गर्भ धारण होय
ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव का जाप करे
नारी बैल को खिलाये खीर
जो नारी बैल को भोजन कराये
नारी फल पावे, सन्तों का कहाँ पार हो जाय
इति सिद्धम्

जो नारी बैल को सोमवार के दिन मीठा भोजन कराये और मन्त्र का जाप करे वह नारी गर्भवती हो जायेगी जो नारी बच्चे नहीं होने से परेशान है।

जिस महिला के बच्चे बीच में ही खराब हो जाते हो ठीक करने के लिए

सत की घडी सत का पुत
गृहस्थ की तरफ चला अवधूत
जिसके घर में नारी बाँझ
गोरक्ष ठहरा उस घर की सांझ
गोरक्ष ने उठाई भभूति
भागे सब भूत पिशाच
नारी की कौख की बन गई आस
गोरक्ष चल अपने गाँव
गंगा जी में आ बैठे नाव
सम्पूर्ण हो सब के सब गाँव
जो भी गोरक्ष को याद करे
रहे गोरक्ष की छाव
इति सिद्धम्

जिस चूल्हे में खाना पकाया जाता हो उसकी राख इस मन्त्र से पढ़कर सवा महीने तक खिलानी है और ॐ शिव गोरक्ष का जाप करना है। नारी को इस मन्त्र को गुग्गल की धूनी जलाकर चिराग लगाकर 108 बार करके मनन करने के बाद राख पढ़कर खिलानी है।

जिस महिला के बच्चे सूखकर पैदा होता हो या अन्दर ही सूख जाता हो ठीक करने का मन्त्र

पार्वती चली शिव के धाम
त्रिलोक में पहुँचा पैगाम
पृथ्वी लोक पर होने लगा गान
नर नारी बच्चे सब सुख धाम
काया बन गई सुरभियान
नारी को पार्वती ने किया बखान
जा नारी तेरा गर्भ हो धाम
बच्चे तेरे सुखी जन्में पूर्ण हो जाय काम
चली पार्वती शिव के धाम
इति सिद्धम्

देशी सफेद गाय का दूध और गंगाजल पर पढकर पिलाना है सवा महीने सिद्ध करने के लिए सोमवार को शिव पार्वती की घी की ज्योत जलायें। 108 बार माला जाप करे फिर मनन करें जब लय हो जाय झाड करनी है और दूध गंगा जल पढ़कर पिलाना है।

प्रसव पीड़ा को शान्त करने के लिए

बेमाता चली गाँव घाट से
गंगा नदी पर ठहर गई

गंगा ने दिया पुरकारा बेमाता चली बेसुमाता
पहुंची जा नारी के घर जहां प्रसव हो घनेरा
बेमाता उठी पहुंची रात घनेरे
पीड़ा हरी दे प्रेम की जड़ी
प्रसव पीड़ा शान्त हुई नारी हो गई सत्य की कड़ी
जय जय धर्म की घड़ी
जय जय बेमाता जय हो।
इति सिद्धम्

बाँझ नारी के सन्तान प्राप्ति के लिए मन्त्र

शिव की नर में है नारी है पार्वती
जगत माने शिव की शक्ति घनी
पार्वती का मान बढ़े जग में शिव नाम भजे
पार्वती दे वरदान–नारी खुल जाय कोख बाण
पार्वती की शक्ति करे नारी भगति
बाँझ नारी न रहे पार्वती दे वरदान
पुण्य हो जग में काम धर्म जी के नाम
आन रहे पार्वती की बाँझ न रहे कहते वेद पुराण
जय जय पार्वती माता
इति सिद्धम्

जन्म लेने के बाद जो बच्चा न बोलता हो के लिए मन्त्र

कर्ण भेदी कर्ण सरस्वती माता
दो मुझे वरदान तू मेरी माता
तेरे सत्य के कारण में जग में आता
जुबान दे दो माता सत्य कुमारी

जग में तेरा नाम गाते कन्या कुमारी
सरस्वती की आन पूरे हो जाय काम
जय जय धर्म की आन सत्य हो काम
जय जय सरस्वती माता
इति सिद्धम्

इस मन्त्र का मनन करना है जो बच्चा नहीं बोलता इसको पढ़कर जमीन के नीचे का पानी पढ़कर पिलाओ लगातार सवा महीने पिलाना है।

बच्चे की मन्द बुद्धि को तीव्र करने हेतु मन्त्र

बुद्धि दाता शिवजी विधाता
परमेश्वर बनकर जग चलाता
बुद्धि दो मुझको मैं धर्म पर चलता
सत्य को पूजूं धर्म पर चलना मेरा काम
बुद्धि की कणी खोले शिव नारायण
सत्य कर्म करे जो नर नारी जाप
शिव लोक धाम पहुंचाय पैगाम
शिवजी सुने भगति नर नारी जाये शिव धाम
जय जय शिव धाम

मन्द बुद्धि बच्चा हो उसे इस मन्त्र का जाप करवाना है जब याद हो जाय उसे कहकर रोज 1 या 2 घंटे करवाना है बोलने में रुकावट न हो उस बच्चे की बुद्धि तीव्र गति से चलने लगेगी।
इति सिद्धम्

जो बच्चा दूध पीता हो ऊपर की हवा का दोष

गुग्गल की धूप
जाग गये महन्त अवधूत

चले गोरक्ष योगी बाना धरके
गोरक्ष पहुंचे मन्जिल पर
ओझल होगई सब डायन
चौराहे पर जमा जमावडा बनकर
गोरक्ष का डर इतना सुनकर
शमशानों ने भी किया जमाणा
गोरक्ष निकले जब योगी का बाणा
भूतों की पड़ गई शमशानों की राही
गोरक्ष की कील जब झाई
तीनों लोकों की हो गई भरपाई
जय जय गोरक्षनाथ की जय
इति सिद्धम्

गुग्गल जलाकर इस मन्त्र को जिस पर बच्चे की माता और बच्चा हो धूप गुग्गल जलाकर इस मन्त्र को 7 बार बोलकर घर से बाहर रख दें। यह मन्त्र जच्चा के समय के लिए है सवा महीने तक सुरक्षित रखने के लिए मन्त्र।

दूध पिलाने वाली माता के स्तन में दर्द रोकने के लिए

कौशल्या ने प्रण निभाया नारी जाति जिताया
कौशल्या जैसी नार नहीं जो मग माहि
राम जैसा पुत्र नहीं कौशल्या जैसी मात नाही
दूध पिलाने नारी ले कौशल्या माता का नाम
दर्द रुके राम का सत्य रुके कौशल्या की ममता बढ़े
सत्य का नाम राम है माता कौशल्या हुई
जो नारी नाम ले कौशल्या का ध्यान प्रभु का होए
इति सिद्धम्

महिला के दूध में खून को रोकने के लिए

गंगा तेरी ओट जुग जोत
गंगा जी में जो नहाये
दूध हो जाय सवाय
नारी का दूध गंगा जी में जाय
पिता पुत्री को नहाये
एक रात गंगा जी पर ठहराये
दूध की धार गंगा जी में बहाये
गंगा जी में नहाकर पिता पुत्री घर को आये
जो भी गंगा जी को आये
दूधु फले गंगा जी नहाये
जय जय गंगा जी को धाय।
इति सिद्धम्

नारी के पैर बांधने का मन्त्र

नारी चल परिधनाम्
चल चरित्री उफान
चल फन नारी चरण पधांरू
यति जति की लागो दुहाई
चल नारी बन्ध धर खूटे पधारो
जति की बानि न जाय खाली
दुहाई हो जती की।

व्यसन छुड़ाने के लिए

(गुटका, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, ब्राऊन शूगर)

जय भैरो जी की लगी सवारी
उसमें बैठे नर नारी

नशा करे गुटका तम्बाकु खाये
भैरो बाबा घर घर जाये
जिसके घर पर जाये वहां से नशा भाग जाय
शनिवार के दिन भैरो पर फूल चढ़ाये
सत्य के कारण नर नारी से नशा छुड़वाये
जो घर पर भैरो को बुलवाये
नशा छुड़े और धर्म बनकर आये
जय जय भैरो बाबा की
इति सिद्धम्

शनिवार के दिन सवा महीने तक भैरो बाबा की तेल की जोत जलाकर इस मन्त्र को 108 बार जो मनुष्य करेगा उसे नशा छूट जायेगा।

मीठ मच्छी खाने की इच्छा खत्म करने के लिए

ॐ शिव ॐ ॐ शिव का जाप है
घट में बैठे जाय सतपुरुष बन जाय
सत्य की पहचान हो नर बन जाय
शिव नाम में शक्ति जग समा जाय
शिव नाम ले जो नर नारी इच्छा कोई न धारी
शिव नाम सत्य लोक का
अर्पण कर लो नर नारी
जय जय शिव अधिकारी
शिव नाम की रट लगाओ बन जाय सत्य की क्यारी
जय जय शिव लोक धाम
इति सिद्धम्

इस मन्त्र का मनन करो मनुष्य निदोर्ष हो जायेगा।

शराब छुडाने के लिए

महाशिव की जड़ी बताई

परमेश्वर से सिद्ध कराई

सत्य की प्रथा विभिन्न बताई

महाशिव की भांग की जड़ बताई

शराब जो पिये भांग की आन लगाई

शिव धर्म का नाम देव लोक में गाई

शिव की आन लगाकर पृथ्वी पर आई

भांग घिसी पत्थर पर शिव की आन लगाई

शराबी पिये भांग की जड़ पत्थर पर घिस आई

यह लोक बड़ा अन्धा बात शिव लोक में गाई।

जय जय शिव गोसांई

इस मन्त्र को भांग की जड़ को पत्थर पर घिसकर उसका उस पियं और इस मन्त्र का रस पर जाप करें और जो मनुष्य शराब पीता है वह इस मन्त्र का मनन करें शराब तुरन्त छुड़ाई जायेगी या घर को कोई भी सदस्य इस मन्त्र का जाप करे रोजाना और भांग की जड़ घिसकर शराबी को खिलाये।

लिकोरिया (सफेद पानी) को रोकने के लिए

सत्य की बांधी डोर खोट न पावे जोत

नारी फिरे भरमती खुली काली माता की डोर

नारी जाति गाय भाँति दुख सह न पाये

काली माता नारी जाति का दर्द सह न पाये

खाओ पियो ज्योत जगाओ
काली माता बनकर मेरा दुख मिटाओ
मैं तेरी अबला नारी दुख पड़ा बड़ा भारी
मैं माता के चरणों की आभारी
मेरा दुख मिटाओ अति लिकोरी
जय जय माँ काली दुख हरनी माँ प्यारी
जय जय माँ काली
इति सिद्धम्

माता के उत्तरार्ध काल (बुढ़ापा हेतु) में पुत्र–पुत्र वधु द्वारा सेवा होने हेतु

माता की पीड़ जग जाने झीड़
पुत्र मान बचपन की खीर
माता से बड़ी नहीं कोई धीर
पुत्र बन चाहे तकदीर सतवीर
पुण्य धर्म का नाम सत्य करे सब काम
कौशल्या जैसी माँ मिले राम जी जैसा पुत्र मिले
रत्न माँगे माँ धरती पर उपकार करे
सत की खातिर धरती पर अवतार धरे
श्री राम जी कौशल्या को माँ का प्यार करे
नर नारी जगत राम जैसा व्यवहार करे
नारी कौशल्या जैसी हो राम जैसा पुत्र करे
श्री राम जी का नाम लेकर जगत में पैर धरे
जो माता को सत्य माने वह पुत्र बने
श्री राम जी की जय जयकार बने
इति सिद्धम्

चर्म रोग निवारण के लिए

कृष्ण का लगा जग में दिया
पूजने चले नर नारियों का समूह
उनके अन्दर जा रहे थे चर्म रोगी घने
श्री कृष्ण जी मिले प्यार से मिले
गले मिले तभी चरम रोग मिट गया
सत्य के कारण शक्ति है धर्म की बैल
जो गावे कृष्ण जी को काया रहे निर्मल
जय जय कृष्णा देव
इति सिद्धम्

व्यापार वृद्धि यन्त्र

कमण्डल में भभूति रखी
मांगे नर नारी की भगति
सन्त करे पूजा और भगति
जिसको मिले योग और शक्ति
संसारी मनुष्य को मिले भगति
करे कल्याण हो जाय मुक्ति
जो भी मनुष्य मांगे वह मिले
जो भी सन्तों की करे भगति
धन मिले व्यापार चले मिले शक्ति
जो भी सन्तों के चरणों में रहे
ऐसे मनुष्य के दिन फिर जाय
सुखी हो काया धन मिल जाय।

धन बढ़ाने के लिए

त्रिदेव चले लक्ष्मी पुंज धारी
आकाश में मिले मुनि नारद वेषधारी

मन्त्रणा चली जब भई पूर्णमासी
त्रिदेवों को जब नारद ने किया प्रणाम्
त्रिदेवों ने जब नारद जी को दिया वरदान
कहो नारद कैसी भीड़ पड़ी है भारी
कहने लगे नारद धन की भीड़ पड़ी है भारी
त्रिदेवों ने इतना कहना नारद जी का
देवों ने किया भ्रमण देखा दारिद्रता भारी
तभी देव पहुंचे लक्ष्मी पुन्य कुमारी
देवों से मिली लक्ष्मी त्रिलोकी प्यारी
देवों ने जब लक्ष्मी को दिया वरदान
लक्ष्मी हो गई पुन्य को प्रस्थान
चली जब लक्ष्मी पृथ्वी लोक पर जय जयकार हुई
जो नर नारी दरिद्र थे, भण्डार भर गये भारी
जय जय लक्ष्मी त्रिलोकी प्यारी
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को पूर्णमासी या दिवाली पर सिद्ध करना है। लक्ष्मी की पूजा विधान से करनी है और इस मन्त्र को 108 बार लक्ष्मी के चरणों में दूध गाय का और चावल हल्दी मिठाई पूजा में रखनी है और लाल आसन होना चाहिए या भगवा और फिर याद होने पर इस मन्त्र का मनन हमेशा करते रहना चाहिए जैसे जैसे मनन ज्यादा बढ़ेगा मन्त्र की शक्ति बढ़ेगी।

व्यापार उन्नति हेतु मन्त्र

चल गोरक्ष अपने गुरु के पास
जिसकी राखे मच्छेन्द्र आस
धन पर लक्ष्मी माई
चारों पहर नाथों ने बिताई

मिले नाथ जहां लक्ष्मी आई
जहां नाथों ने रात बिताई
उसके ही घर में लक्ष्मी आई
जय जय हो गोरक्ष की दुहाई
इति सिद्धम्

आकस्मिक धन लाभ के लिए

महालक्ष्मी जी का अंग मिला विष्णु जी के संग
सात बार महालक्ष्मी को करो याद विष्णु जी के साथ
महालक्ष्मी विष्णु जी के आई संग ले धन घर आई
नर नारियों ने गीत गाये धुन महालक्ष्मी की लगाई
धन का भरे भण्डार यह वेदों में बतलाई
महालक्ष्मी का करो सतकार धर्म की रीत बतलाई।

पृथ्वी के ऊपर लीप पोत कर गाय के गोबर से 7 दिये बनाओ और दिवों को स्थापित करो। सातों पर जोत जलाओ और बीच में नारियल रखो पानी वाला और तेल की ज्योत जगानी है। शनिवार के दिन सुबह के समय यह पूजा करनी है। फूल मेवा दान यह सब पूजा में रखना है और यह मन्त्र 108 बार बोलना है। हर मन्त्र पर चावल से आवाहन करना है बाद में यह चावल इकट्ठे करके पक्षियों को डालने हैं।

जुआ जीतने का मन्त्र

पांडवों ने खेला जुआ
कौरवों की जीत हुई धर्म की हार हुई
जब धर्म की हार हुई कृष्ण जी की जीत हुई
जो हारे जग में जीत उसी की होय
नाम ले हरि का सत्य का बीज बोय

नाम ले श्री कृष्ण का जीत धर्म की जोय
जो जुआ खेले धर्म का हार कभी न होय
जय जय कृष्ण देव नमः

इस मन्त्र को वह मनुष्य करेगा जो सत का जुआ खेलेगा और इस मन्त्र को हर वक्त मनन करेगा वह जुए में सदैव जितेगा।

रुका हुआ धन पाने के लिए

भैरो जी की ज्योत जलाओ
सात रंग की दाल चढ़ाओ
ज्योत दान के ऊपर रख जाओ
आधी रात को तेल जगाओ
भैरो जी का नाम लेकर ज्योत लगाओ
जिस नर नारी से धन लेना हो उसका नाम लिखाओ
कोरे पन्ने पर लिखकर छत पर जाओ
जाकर सात प्रकार की दान में दबाइो
ऊपर तेल की ज्योत लगाओ
दुहाई हो भैरो बाबा की धन वापिस मंगाओ
जय जय भैरो बाबा की
इति सिद्धम्

नौकरी पाने के लिए

जग में जो नर आये नेकी करे कई बार
सत में वह तरे जिसके बच्चों का हो बेडा पार
भैरों बाबा मेरे बिगड़े काम बनाओ
मैं तुझे पुजूं शनि को ज्योत जगाऊ
काली गाय को भोग लगाऊं
सवा महीना शनि को पुजूं गाय जिमाऊं

कार्य बने मेरा मैं चुरमा चढ़ाऊं
भैरो बाबा मेरी विनती सुनो में गंगा जी नहाने जाऊं।
इति सिद्धम्

सरकारी कार्यों की रुकावट दूर करने के लिए

शिव की चरणों की धूल
फिरे आकाश मंडल पर बनकर फूल
फूल बनकर चढ़े भगतों पर जो शिव नाम जपे
शिव का नाम जगत में प्रथम और अन्त तक जपे
सर्व कार्य बने सर्व बुद्धि होय
जो कार्य रुके धर्म के शिवजी के द्वारा पूर्ण हो जाये
जय जय शिव नारायण

जिस नर नारी के सरकारी कार्य में बाधा हो जब तक कार्य सिद्ध न हो इस मन्त्र का मनन करें मनन करने से शक्ति का संचार होता है फिर कार्य पूर्ण होते हैं।

यात्रा के समय थकान रोकने के लिए

ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव
पूर्ण शरीर श्रद्धा सुमन होय
जग में शक्ति शिव की होय
नर नारी जपे शिव को शरीर पवित्र होय
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

इस मन्त्र के मनन करने से शरीर हृष्ट पुष्ट रहेगा शरीर में कोई भी बीमारी नहीं होगी। थकान बगैरा नहीं होगी।

यात्रा करते समय उल्टी न लगने के लिए

(दुर्घटना से बचने के लिए)

जय शिव योग सिद्धी प्रणय
नाड़ी वशीकरण दे सिद्धी प्रणव
जय शिव योग धरणम्
जय जय शिव ॐ

इस मन्त्र को सफर करते समय मनन करना है। जो मनुष्य ज्यादा से ज्यादा यात्रा करता है उस मनुष्य को यह मन्त्र मनन करे इससे सफर में कोई तकलीफ नहीं होगी और आकस्मिक दुर्घटना भी नहीं हो सकेगी।

वाहन दुर्घटना नाशक यन्त्र

ब्रह्मदेव चले ब्रह्म लोक से
धर्म का व्याख्यान देवों को ले के
प्रवान चढ़ाने चले विष्णु शिव द्वार पर जाके
शिव चले नाथिया को लेके पृथ्वी लोके
नर नारी के घर द्वीप जलाने चले शिव रखवाले
पुण्य का द्वार खुले नर नारी चले वाहन पर चलने
खुशी रहो जगतवासी यह वाणी शिव का वचन सुनाने।
जय जय शिव धाम
इति सिद्धम्

घर से चुहे भगाने का मन्त्र

गणेश जी की लगी ज्योत
घर घर में हुई ओट
गणेश जी की चली सवारी
चुहे चले आसन छोड़ जंगल की ओर

जंगल में लगी गणेश जी की ज्योत
चुहों ने ली शरण ज्योत की ओट
खाने लगे गुड़ चने की जोट
जय जय गणेश जी की ओट

गणेश जी की मिट्टी की मूर्ति बनाकर गुड़ और भुने हुए चने से पूजा करे और यह मन्त्र 108 बार पढ़े सिद्ध हो जायेगा। सिद्ध होने के बाद इस मन्त्र को 21 बार घर में चिराग जलाकर गुड़ चने का प्रसाद चढ़ाकर पक्षियों को बांट दें।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र

भैरो जी की फिरी जगत ज्योत
प्रचारक मिले जग में जले ज्योत
जो नर चोरी करे उसे का नाम खुले
ले नाम भैरो जी का खुल जाय नाम चोरी का
सत्य का नाम धर्म है पाप का नाम नाश
सत्ययुग से लेकर कलयुग तक कहते आये फकीर
जय जय भैरो जी की

इस मन्त्र से चोरी का पता लग जाता है। इस मन्त्र को चोरी होने के बाद घर में तेल का चिराग लगाओ और रात के समय इस मन्त्र को 21 बार बोलो और भैरो बाबा को याद करो। 11 दिन में चोरी का पता चल जायेगा किसी के भी द्वारा लग जायेगा।

श्री गंगा जी धाम

गंगा जी मेरी राखो आन
भगत की राखो लाज
करो सत्यगाई पूर्णमासी आई
गाई गई धर्म की अग्न

परमेश्वर ने किया विश्राम
शिव आये गंगा धाम
भगीरथ की राखी तप की लाज पूर्वजों की आन
सतयुग से द्वापर तक आई आन
त्रेता से कलयुग किया विधान
परम गति हुई पांडवों की
चले स्वर्ग पांडव धर्म की राही
पहले ही मिली कुन्ती माई
जब चले पांचों भाई
गंगा जी ने की अगुआई
जब चले धर्म के भाई
गंगा जी सतयुग से कलयुग तक आई
जय जय गंगा माई

घी के चिराग जलाकर गंगा जल रखकर इस मन्त्र को बोलना है। घर में गंगाजल का छिंटा लगाना है। इससे शान्ति स्थापित होगी।

बेल पत्थर का सेवन करने का मन्त्र

बेल का स्वाद चखा शिव ने
भेजा सत्यलोक न्यौता
बैल चढ़े आकाश में चली कैलास
शिव के चरणों में पहुंची कैलास
धर्म का बीज बेल है सत्य कैलास
शिव का स्वाद बेल ही चखे शिव लोक
बेल चढ़े शिवलिंग पर शिवजी का मान बढ़ाने को
जो फल मांगे वही फल मिले सत्य की खीर खिलाने को
इति सिद्धम्

बैल पत्थर को खाने के लिए इस मन्त्र को करना है और शिवलिंग पर चढ़ाने के लिए भी कर सकते हैं।

तेल की ज्योत जलाकर मन्त्र पढ़े

भाकडी बैल को घर में रख कर साबर मन्त्र से पढ़कर स्थापित करना जो भी ऊपर का किया कराया या कोई ऊपरी हवा हो उसको घर में रखकर स्थापित करने के लिए जब तक यह वनस्पति घर में रहेगी तक तक ऊपरी हवा नहीं आ सकती इसमें ऐसी महत्वपूर्ण खुशबु होती है।

मोहनी शक्ति

चण्ड मुण्ड भैरो साजे धरे धर्म की धीर
पूर्णमासी की सांझ में मिले सत्य वीर
कर्णभूषण सिस जटा चिमटा त्रिशूल
कहे गोरक्ष चले सन्तों का मूल
चले सन्त गांव गांव पीछे चली नर नारी
पूजा करे सन्तों की भीड़ लगी बड़ी भारी
भा गये सन्त मोहित हो गई सब फुलवारी
चहकने लगे पक्षी भंवर सुनहरी
सन्तों ने जब वचन सुनाये
मोहित हो गयी संसार की सब नर नारी
सन्तों ने जब शिव की तरफ बाह पसारी
शिव लोक से जब चलने लगी फुंवारी
मोहित हो गई सब नर नारी
जय जय शिव जी अधिकारी
शिवजी को जिसने याद किया
उसकी हो पूर्ण मनोकामना सारी
जय जय शिव जी अधिकारी
इति सिद्धम्

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए बैल पत्थर को बीचोबीच पूजा में रखे चारों तरफ फूलों की माला चढ़ावे और बैल पत्थर के सामने घी का चिराग जलावें, और इस मन्त्र को 108 बार सात्विक मनुष्य करें और फिर सवा महीने तक इस मन्त्र का मनन करें जितना भी हो सके रात दिन के अन्दर फिर यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। धर्म के अनुसार ही यह मन्त्र पूर्ण होता है। पूर्णमासी सायं के समय।

सुपारी मोहन

शक्ति दे कर्मों की भगति
करे कर्म नर देव लोक के
मिल जाय धर्म में सत लोक के
नारायण का भगत बनके
सत की राही बनके
सुपारी पर पड़े नजर बनके
देव लोक की नजर बनके
सुपारी चली मोहनी बनके
बैठी दाड़ में घुण बनके
नर को करे मोहन सत बनके
जय जय नारायण देव
जय जय सत लोक
इति सिद्धम्

पान मोहनी

काली माता करे भगत के काम
पान मोहनी हो बन बिगड़े काम
सत असत्य को तोड़े कहते वेद पुराण

महाकाली करे भक्षण पानी कर्मन का
भगत करे जो भगति शक्ति मिले कर्मम की
पान मोहन करे नर नारी पर सत की गांठ लगे
काली माता की जय जयकार करे
भगत का अधूरा काम करे
जो भगति करे पान मोहनी
नर बन जाय फूल की टहनी
जय जय काली माता
इति सिद्धम्

लोंग मोहन

काली पर लोंग का जोड़ा
सत बीज बोय धर्म का जोड़ा
पापी बोय कर्म हीण का जोड़ा
दोनों चढ़ाये लोंग का जोड़ा
सत के कारण चढ़े लोंग का जोड़ा
पापी चढ़ावे न चढ़े नाव पर जोड़ा
लोंग मोह करे नर को सत का जोड़ा
भगत करे माता की भगति मिले शक्ति
लोंग मोहन करे नर पर फूंके मन्त्र शक्ति
काली माता की भगति शिव की शक्ति
जय जय काली माता
इति सिद्धम्

इलायची मोहन

श्री कृष्ण गऊंये चरावे
गोकुल जाकर घर दूध पिलावें

ग्वाला दूध पीकर खुश हो जाये
दूध पिलाकर इलायची खिलावें
विष्णु की भगति करके नर तिर जावें
इलायची को ले मुख में चबावें
इलायची मोहन बन जावें
जो नर नारी खावे मोहन हो जावें
जय जय श्री कृष्ण मुरारी
इति सिद्धम्

मिठाई

काली माता की चली सवारी
दैत्य भागे मारी लंकारी
मार दैत्य माता की चली सवारी
लश्कर चले पीछे चले रणधारी
माता को पुत्र प्यारा माता जगत में न हारी
सत्य के पीछे जगत में हुई अवतारी
काली माता की चली सवारी
खाकर मिठाई मीठी बोली बोले नर नारी
सत्य की मीठी बोले नर नारी
काली माता की चली सवारी
जय जय माता की
इति सिद्धम्

गुड मोहन

काल भैरो की चली सवारी
खाय गुड जगत में नर नारी
भोगे वही जगत जो करे पापकारी

जय जय काल भण्डारी
गुड मोहन हो नर पर कहे शब्द काल भण्डारी
सत की आन जगत माने कहें लोकारी
भुनेश्वर पर करे जो भगति शिव लोक जाय जगतारी
गुड मोहन हो नर पर जो बने पापधारी
काल भैरो की चली सवारी
जय जय काल भैरो
इति सिद्धम्

नमक मोहन

जय काली माता तेरी दुहाई
सत का कागज नमक की माला
काली माता करे नमक उजाला
जय जय शिव भोला खोल बन्द ताला
काली माता करे नमक का मोह भला
स्थिर हो जा नमक धोला
कर मोह नमक का शिव भोला
काली माता की भगती पूरा करे शिव शक्ति
जय जय काली माता
इति सिद्धम्

सिन्दूर मोहन

हनुमान का लगा रोट
हनुमान जी धारण करे लंगोट
सिन्दूर का तिलक करे बलवीर
हनुमान जी की भगति करे राम की शक्ति
जो मांगों वह मिले हनुमान जी की करो भगति

सत्य में होती शक्ति कहती आई लोक भगति
सिन्दूर का करो मोहन भगति का करो दोहन
जय जय हनुमान जी
इति सिद्धम्

पुतली मोहनी

आँख फड़के पुतली जले
जले ऐसे जैसे हाथ जले
पुतली करे मोहनी श्री राम जी की कहानी
सत की हवा चले पुतली पर सर्प डसे
श्री सत फुके लंका जड़ से फुके
विधि का विधान जगत में रहे होके
श्री राम जी फूंक मारे पुतली मोहनी हो जावे
जय जय श्री राम
इति सिद्धम्

तेल मोहनी

काल भैरों की लगी चौकी
तेल फूंके दिन राती
तेल का लगा चिराग तेल को हो गया वैराग्य
तेल कहे भैरो जी से कौन बुरा हुआ
भैरो जी कहे तेल से तू जले मैं हस हस रहे
तेल बन कर चढ़ गया नर नारी पर
हो गया तेल मोहनी बनकर
रोया तेल बैठा नर नारी के घर
तेल मोहनी हो गया नर
लगी शक्ति भैरों जी की तेल पर

जय जय भैरों जी

इति सिद्धम्

काजल वशीकरण

धूप में बना काजल सूर्य का तेज लेकर
चुभा जाकर आँखों में काजल बनकर
सूर्यदेव ने काजल को किया वशीकरण
किरणों की धुरी बनकर
काजल का रंग हो गया काला धूप लगकर
काजल का रंग काला हुआ सिद्ध बनकर
काजल को किया वशीकरण सूर्यदेव ने धूप बनकर
जय जय सूर्यदेव
इति सिद्धम्

टीका वशीकरण

हनुमान जी की शक्ति की आन
टीका वशीकरण हो बन जाय काम
भगत करे हनुमान जी की भगति
मिले शक्ति टीका का हो जाय वशीकरण
हनुमान जी का सत हो राम जी शक्ति
माने जगत करे नर भगति
टीका वशीकरण करे कुटुम्भ पक्ति
जय जय हनुमान जी कहें
भगत के वश में नर नारी हो जाय
सत कर्म करे जो भगत
टीका वशीकरण हो जाय
जय जय हनुमान जी
इति सिद्धम्

कुश्ती जीतने का मन्त्र

चजे हनुमन्त वीरां
लंगर चोटी बांध वधीरा:
हाथ धरे गर्दन पीरा:
मार धाड़ पिछाड तीरा
जय जय गोरक्ष वीरा
चले हनुमन्त वीरा
सधे हाथ पैर सधे
कहो गोरक्ष की दुहाई हो सधे

नजला झाड़ने के लिए

नटखट बोले घघंट में
फिरे चक्कर घर घर में
तोडी फनी चन्दन से तनी
बैरी की डाली पत्ते तोड खाओ
खाँसी जुकाम को दूर भगाओ
चोरंगी नाथ जी की ज्योत जगाम्
नजला ठीक हो जाय
नवनाथों को पूजन जाओ
धर्म की ज्योत लगाओ
नाथों को घर से भूखा न जाय
नाथ घर से भूखा जाय सूखा पड़ जाय
नाथ भूखा न जाय धन वर्षा हो जाय।

किसी भी बीमारी में प्रयोग नीम का मन्त्र पत्ते छाल तेल बगैरा

नीम वृक्ष सत्य का फल
नर नारी खाय निकल मल

नीम वृक्ष मनुष्य शरीर फल
कल्प धर्म का प्राकृति निर्भय होय
नर नारी खाये शरीर चेतन होय
शिवजी ने रची सृष्टि कल्प वृक्ष होय
पत्ते खाये छाल खाये शुद्ध शरीर होय
नर नारी नीम फल खाये औषधि दूसरी न खाय
इति सिद्धम्

नीम के पत्ते छाल फल खाने से शरीर की पेट की सभी बीमारियां नष्ट हो जाती हैं। जो भी नर नारी खाये इस मन्त्र को करके खाये। 108 बार मन्त्र औषधि पर करें सम्पूर्ण शरीर को फायदा पहुंचेगा।

चर्म रोग निवारण के लिए

कृष्ण का लगा जग में दिया
पूजने चले नर नारियों का समूह
उनके अन्दर जा रहे थे चर्म रोगी घने
श्री कृष्ण जी मिले प्यार से मिले
गले मिले तभी चरम रोग मिट गया
सत्य के कारण शक्ति है धर्म की बैल
जो गावे कृष्ण जी को काया रहे निर्मल
जय जय कृष्णा देव
इति सिद्धम्

गले में गिल्टी रोग निवारण के लिए

शिव की छाया जो रहे मन माया
गले पर छाया तीन लोक का धाया
परमेश्वर करे अपनी माया गले पर परछाया

शिव जी का गीत गाया निर्मल हो काया
धर्म बीज उत्पन्न होकर शिव लोक में आया
जो शिव लोक में आया निर्मल हो काया
गले में गिल्टी हटे शिव की शक्ति डटे।
इति सिद्धम्

चन्दन पर इस मन्त्र को करते रहो और घिसते रहो और फिर लेप करो गिल्टी समाप्त हो जायेगी।

अण्डकोष वृद्धि रोग

शेषनाग की लगी आन
विष्णु जी करे पूरे काम
धाम पर जाय शेषनाग
विष्णु बैठे धर्मनाथ
नर हो काया निरोग
शेषनाग करे भगति विष्णु दे शक्ति
नर अण्डकोष के लगे ताला
यह शब्द बताये वेद वाला
जय जय शेषनाग पाताल वाला
इति सिद्धम्

मिर्गी का दौरा ठीक करने के लिए

धोबन चली धोबी घाट
करके जोबन सिंगार
रास्ते में मिल गई पतिव्रता नार
नार ने धोबन झांडी
पकड़कर धोबन की उड़ा मारी
मिर्गी चली पाताल में जारी

नाम ले शिव का नार चली वारी वारी
शिव की भक्ति नारी की भक्ति
हुआ मिर्गी सतपात
जय जय शिव जी का साथ

पेशाब (मूत्र) रुक जाने को ठीक करने का मन्त्र

नाड़ी बन्द हो जा बन्द ताला
जिसमें बैठे शिव रखवाला
नाड़ी चढ़े नाड़ीबढ़े शिष पर चढे
मूत्र रुके नाड़ी झुके नीचे छूटे नीर
परमारी के कारने शुद्ध हो जा शरीर
जय शिव धर्म की पीर

तुलसी के पत्ते हींग और प्याज को इस मन्त्र को पढ़कर दे और पानी बार बार पिलाये तुरन्त ठीक हो जायेगा।

पेशाब में खून आने को ठीक करने के लिए

गंगा में जब चलने लगी फुहार
शिव जी बने गंगाजी की हार
सत का नीर चला जब बहने
कुंआरी चली गंगा जी नहाने
सत का दीप चले गंगा जी पर
नर के अन्दर जल गया दीप
हुआ सवेरा गंगा जी पर
नर गंगाजी में नहाया
पारस की बन गई काया
जय जय गंगा की माया
इति सिद्धम्

यह मन्त्र गंगा जी पर सिद्ध किया जायेगा और इस मन्त्र को 108 बार याद करके मनन करना है, जब जय हो जाय तभी मनुष्य को झाड़ा लगाया जायेगा और गंगाजल पिलाया जायेगा।

आधा शीशी का दर्द

उड़द से झाड़ना है एक–एक उड़द डालते रहो और मन्त्र बोलते रहो

चल यम की ढांल
बैठे जाते गोरक्षलाल
गाँठ खोल यति की ढाल
सन्त चले ब्रह्मलोक उड़ान
जय गोरक्ष स्वम्भु आदि की लड़ी उड़ान
जहाँ बैठे गोरक्ष भगवान्
जय गोरक्ष बान
काटों लड़ी कर्म की कड़ी
निमाहों लाज सती की आन
जय जय गोरक्ष जति बान

5100 बार करने से सिद्ध करना है। उड़द की साबुत दाल लेकर एक–एक दाना डालते रहो झाड़ते रहो।

दाड़ के कीड़े का मन्त्र

किल दत: फुंकार
यति जति चले ले हुंकार
मारी दर्द चूंचुकार
किड़े चले यम लोकार
जय यति धर्म की नाल
गोरक्ष चले मार फुंकार

उडज्या दर्द दे मार
जय जय गोरक्ष की दुहाई।
5100 बार सिद्ध करना है।

नेत्र दुख निवारण नींबू की डाली से

पेत्र का बघुवा पान सुपारी चढ़ा
परशुराम का फरसा चला ऊपरी दिशा
नेत्रों का दर्द फसा
चले गोरक्ष अपने धाम
लेकर दुखों का डाम
जय जय गोरक्ष भगवान

पीलिया रोग का मन्त्र

नीला अम्बर पीली बगिया
अभी चढ़े रोगी की बगिया
मानुष चढ़े ऊंची घटिया
पुकारे चंडी की कुटिया
पीला रोग का करे निवारण
जय जय माई चंडी का दुहाई
करे सतलोक में बसाई
जय जय गोरक्ष बाले की आन
जब बोले जय ध्र्मा की बान

बाल गिरने का मन्त्र

(सिर में तरावट, सिर दर्द न होना;

केश खुले बंधे गिरने न पाये
सती की शक्ति बढ़े घटने न पाये
शिव की शक्ति सती की भगति

नर की शक्ति नारी भगति
बालों को मिले शक्ति न गिर सति की शक्ति
जो इस मन्त्र को मनन करे
बालों का गिरना न पड़े
जय जय सती जी की

इस मन्त्र से बालों की रक्षा होती है जो भी नर नारी इस मन्त्र का मनन करेंगे उसी मनुष्य को दिमाग में तरोताजी तरावट आयेगी। सिर में दर्द भी नहीं होगा। दिमाग खुश्क नहीं होगा और बाल नहीं गिरेंगे।

बुखार उतारने का मन्त्र

बुखार का नाम शैतान का
डरे बुखार नाम ले सुलेमान का
खुल जाय नाड़ी डर कर निकल जाय शैतान
नाम लिया करो सुलेमान का
21 बार रोज पढ़ो गुड़ काली मिर्च मुनाका
पकाओ अग्नि पर पिलाओ मिलाकर
हटे बुखार नाम ले सुलेमान का

गुड़ काली मिर्च मुनाका को पकाओ जिसको मरीज पी सके दिन में तीन बार यह मन्त्र 21 बार पढ़कर पिलाओ गुड़ काली मिर्च मुनाका अपने दिमाग के हिसाब से डालो कम ज्यादा से नुकसान नहीं होगा।

आले रोकने के लिए

शिव की झड़ी ओले की लड़ी
फोड़ डली ओले की फली
शिव को ध्यान जगत का कल्याण

शिवजी ने मारी लात झुक गया आसमान
ओले बन्द शान्त हुआ आसमान
बादल चले शिव लोक पृथ्वी पर हो गया शान्त लोक
जय जय शिव लोक
इति सिद्धम्

पेट में दर्द ठीक करने का मन्त्र

बेमाता चली सिर से चली नाड़ी पेट में समा गये
सुषुम्ना नाड़ी चली पेट में धर्म बना गई
रुक रुक कर चले अधर्म करे पीड़ा कर्म
धर्म चले पीछे पीछे अधर्म चले आगे आगे
पहुंचा जब शिव चरणो हाथ जोड़ विनती करी
मैं अधर्म हारा शिव ने विनती सुनी
नर नारी की निर्मल हो गई काया
यह भेद ऋषियों ने बताया शिवजी की यह माया
जय जय शिव जी की

पानी रोकने के लिए, पानी धीमी गति करने के लिए

गंगा जी चली शिव लोक में जाय
शिवजी के दरबार में जाकर
जहाँ लगा देवों का दरबार
गंगा की भगति शिव की शक्ति
जहाँ फुंके सच्चे मन वहां का नर नारी गंगा पार होवे
सत की बाँधी नाव कभी डूबे
असत्य की नाव सदा भंवर में डूबे

जो धावे गंगाजी को वह होवे पानी से पार
जय जय गंगा जी सर्वोकार
इति सिद्धम्

आँख फड़कने को रोकने का मन्त्र

आँख अग्नि रूप बताई
जिसमें जगत समाई
शिव का रूप जगत मन भाई
आँख फड़के जूते से झाड़ लगाई
परमेश्वर के कारने आँख उलटी आई
जय जय शिव धर्म गोसाई
इति सिद्धम्

धात की बीमारी के लिए नीम के पत्तों के ऊपर करके खाना है

जल दे मार कुएं में
बालटी भरी कुएं में
सन्त चले जब पूर्ण हांट
गोरक्ष चले पंजाबी ठाठ
मिले जब पूरन भार
वनस्पति किली किया सत वार
जंगल में हो गये ठाठ बाट
नीम का मंजन बनाया
सफल हो गई काया
जय जय गोरक्ष आया
इति सिद्धम्

नीम की छाल कूटकर इस मन्त्र से पढ़कर सवा महीने खानी है।

बन्दि मोचन मन्त्र

कोई तांत्रिक बगेरा घर में बंधन कर उसको काटने के लिए

तपस्वी धरती सन्तों पूजे
सन्तों की ही माया
जब फिरे सन्तों की झंडी
पवित्र हो जाती धरती की लडी
जहाँ हो सन्तों की पूजा
वह ही स्थान पवित्र हो जा
सन्तों की माय
जय जगत पार न पाय
पूजा करो सन्तों की जितने भी हुए सन्त फकीर
आओ आओ मनुष्यों खालों
बाँटी सन्तों की खीर
जय जय सन्तों की पीर।
इति सिद्धम्

परिवार के अन्दर कोई भी भिक्षा लेने वाले को घर में लाकर यह मन्त्र उसके मुख से 7 बार या 21 बार बुलवा दें और उस सन्त को भगवे वस्त्र खाला खिलाकर दक्षिणा दे दे। घर पवित्र हो जायेगा।

उल्लू का पिंजर किस–किस काम आता है

हड्डी–अगर हड्डी गाड दो तो चरखा उलटा घुमने लगता है

मन्त्र– पराई चुडी यमण भाणयणम पारभावियम

झुआ हाडपिस्था पिन्जरम् व्याकुलम पद्मिनि सुद्धम्
काले कपड़े पर पैगाम लिखकर हड्डी में बांध दो।

दाँत– मसाण का रोग, किसी के घर में रोग उत्पन्न करना

मसाण के रोग के लिए मन्त्र

मसाण के रोगी को यह दाँत पढ़कर बांधना है

मन्त्र–

कार्णानि मुखी दंतझावडियम: प्राविझाणतम:
महाभिमुख प्राजितम: मनुष्या मृदणी मुसकारणियम:
प्राझया निगणम: प्रावितुकम मनिक्षीवियम: अनुजम भाषन:

घर में बीमारी पैदा करने के लिए–

आलायकिकय उत्पन्नम पीड़ावणी हर्षम:
पाकिविर्धि: नुनमायकम: उठ पीड़ा जनकम:
पतझंडम: उठान पटहल पारिकिवितम: परिवारम:

नाखून–

1. जो बच्चा बोलता न हो वह बोलने लगेगा।
2. पेशाब को रोक होने पर बाँधना है।
3. जिसके ऊपर मिर्गी का दौरा पड़ता हो।
4. जिसके पेशाब में खून आता हो।
5. जिस महिला के दूध में खून आता हो।
6. जिस महिला के बच्चे सूख कर पैदा होता हो या पेट में ही सूख जाता हो उसके लिए बाँधना है।
7. जिस महिला के बच्चे बीच में ही खराब हो जाते हो।
8. स्वप्न में डरना या कोई डराता हो बच्चे या महिला या आदमी के लिए।

रात के समय 51 बार पढ़ने हैं–

1. बच्चा बोलने के लिए जो बोलता नहीं है–

मन्त्र–क्रियानिरियरतन : महानिर्णाक्षरियम : प्रानियाणम :

2. पेशाब रुक जाने के लिए बन्द हो गया हो, बच्चा बूढ़ा जवान

फतहतकारियान उदल फिदल

3. मिर्गी का दौर पड़ने का मन्त्र

यथागति ध्वनियम प्रागतिवियम

आभाषुणन पिरिनिक्तियम : आभारिणियम :

सहाराणियम : मनुष्यातम : शरीरम : निर्माणम :

प्रयात्निवियम भूषणम :

4. पेशाब में खून आना–

भूवर्ति विन्ध्या अग्रीहिणम

प्रमदिवियम : आणुक्षणम : विन्धाक्षणम : भूर्णाजम : परिपांक्यतियम

5. महिला के दूध में खून आता हो–

भ्रमणुयम प्राशुहुयम माकाणी वियम :

अन्धा व्याकिणीयम : प्रायाज्ञयम : ध्याज्ञयम :

6. पेट के अन्दर बच्चा सूखना या पैदा होकर सूखना

प्राभिणियणम विकासकिर्णम : परिमरिणावियम

अध्याक्तुथानम : संसारम :

7. महिला के बच्चे बीच में ही खराब हो जाते हैं–

भ्रगुणु विकम अव्यध्या विकिनय आरथीवियम

प्रणीजम प्रीतिकम उपषणम : व्याज्ञयाणीविजय भूत्वम :

8. स्वप्न में डरना–

हर्जियाक्यानमंझीरी

9. भिरूसगमवाकान वाकिन नफिनि

10. पंझावाकिन मकतुरि ईल्लाहयक्तुन

11. नादिरशहियकम मुददाईयकन

12. पखंयानियतान मुकलाईयतन

13. कलमुहियादिनियाकारान

14. वाहकिवाकान तफदिमियाकान

15. करिभियाणीयघंज फरीखतन

16. याकुलताईयभन

17. यालुताईमरूखनयातिकि

18. पदिमिनारकि अफसान

19. याकुकाईमर्धानयासुकाईइमाम:

तृतीय खण्ड

कुदरती टोटके जो मनुष्य पढ़कर खुद करेगा उसी का कार्य पूर्ण होगा और जो दूसरे को पढ़कर बतायेगा जिसको बतायेगा उसका कार्य नहीं होगा, जो पढ़ेगा और बिना किसी को बताये करेगा उसी का कार्य सम्पूर्ण होगा।

सूर्य देव के दोष के लिए

निवारण-सूर्यदेव के दोष के लिए खीर का भोजन बनाओ और रोजाना चींटी के घर पर रख कर आओ और केले को छील कर रखो। केला छिला होना चाहिए और जब वापिस आओ तभी गाय को खीर और केला खिलाओ। जल और गाय के दूध को मिलाओ और सूर्यदेव को चढ़ाओ, जल जब चढ़ाओ जल सिर से ऊपर से चढ़ाओ जो सूर्य की किरणें मस्तिष्क को प्रवाहित कर सके। ऐसा करने से सूर्य दोष शान्त हो जायेगा।

सूर्यदेव

निवारण-सुबह उठकर नहाकर पूजा पाठ करके जल का लोटा भरकर रोजाना सवा महीने तक सूर्यदेव को सिर से ऊपर से जल चढ़ाओ जो कि सूर्य की किरणें शरीर को छू सके और फिर जहाँ पर भी जल चढ़ाया हो वहां पर सवा मुट्ठी साबुत चावल चढ़ा देवें यह विधि करने से सूर्य दोष दूर होगा और भाग्य भी उदय हो जायेगा।

चन्द्रमा ग्रह दोष

निवारण-पूर्णमासी के दिन गोला बुरा और घी मिलाओ और गाय को खिलाओ। 5 पूर्णमासी तक गाय को खिलाना है और शुक्ल पक्ष में हर 15 दिन तक गंगाजल और गाय का दूध चन्द्रमा निकलने

के बाद चढ़ाओ चढ़ाने का तरीका आपका हृदय नीचे रहना चाहिए जिससे चन्द्रमा की किरणें तुम्हें स्पर्श कर सके। चन्द्रमा देव का दोष समाप्त हो जायेगा।

चन्द्रमा देव के दोष

निवारण-जब चाँदनी रात हो तभी पन्द्रह दिनों तक जल के किनारे जल में चन्द्रमा को हाथ जोड़कर दस मिनट तक खड़ा रहे और फिर पानी में मीठा प्रसाद चढ़ा देवें घी का दिया जलाकर यह कार्य विधि पन्द्रह दिन तक लगातार करें यह कार्य विधि घर में भी की जा सकती है। पीतल के बर्तन को पानी से भरकर छत पर रखकर या जहाँ भी चन्द्रमा पानी में दिख सके वहीं पर यह कार्य कर सकते हैं।

शनि ग्रह दोष के लिए

निवारण-जिस मनुष्य पर शनि ग्रह का दोष हो वह मनुष्य तेली के घर बैल को गुड तेल रोटी से सवा महीना जिमाओ सेवा करो, शनि ग्रह का दोष समाप्त हो जायेगा।

शनि की साढ़े साति दोष के लिए

निवारण-सवा महीने तक पीपल पर जड़ों में पीले कपड़े में बाँधों फिर काले कपड़े में बाँधों सवा किलो सरसों का तेल, तेल में सवा सौ ग्राम काले तिल और गुड़ 200 ग्राम किसी डिब्बे में बाँध दो और उसमें छोटा छेद कर दो फिर उसे पीले कपड़े में बाँधो फिर काले कपड़े में बाँधो और बाँध कर पीपल पर ऊपर जाकर बाँधो जिसमें उस डिब्बे से तेल की बून्द पीपल पर पडती रहे ऐसा करने से साढ़े साति शनि दोष नहीं होगा और सवा महीने तक हर शनिवार को पीपल की जड़ों में तेल का दिया जलाओ और तिल चढ़ाओ।

शुक्र ग्रह दोष के लिए

निवारण-शुक्र की दशा में उड़द का पेड़ घर में लगाओ उस पर दूध चढ़ाओ दूध सुबह के समय चढ़ाना है, जिस दिन पेड़ पर दूध चढ़ाना शुरू करो उस दिन संकल्प करो और पेड़ की जड़ में कलावा बाँधो, सवा दो महीने दूध चढ़ाओ और अपने साथ सफेद कपड़े में उतने काले उड़द के दाने रखो जितने सवा 2 महीने में दिन होते हैं उतने ही उड़द के दाने साथ में रखो। शुक्र की दशा शान्त रहेगी।

निवारण-शुक्र के दिन उड़द सवा सौ ग्राम पीपल की खोखर में रख देवें और पाँच गेंदा के फूल चढ़ावें पाँच शुक्रवार तक यह विधि करने से शुक्रदेव की दशा नम्र हो जायेगी।

राहू दोष के लिए

निवारण-राहु की दशा वाले मनुष्य को चन्दन की लकड़ी साथ रखें और रोज सुबह के समय उस चन्दन की लकड़ी को पत्थर पर घिसकर पानी पियें और साबुत मूंग का खाने में अधिक सेवन करें, राहु की दशा समाप्त हो जायेगी।

निवारण-जिस मनुष्य पर राहु की दशा हो वह मनुष्य साबुत गेंहू उबालकर मीठा डालकर कोढी मनुष्यों को खिलावें और जब खिला देवें प्रेम से बोलें और सतकार करके घर वापस आवें इस विधि के करने से राहु की दशा नम्र हो जायेगी और किसी भी कार्य में बाधा नहीं आयेगी।

केतु ग्रह दोष के लिए

निवारण-मिट्टी के घड़े का आधा हिस्सा करो और उसको जमीन में दबा दो घड़े का हिस्सा साफ तौर से सीधा और बराबर होना चाहिए और जहाँ भी घड़े को जमीन में गाड़ों उस जगह में गड्डा करो

और घड़े में नीचे छेद करो और रोजाना सुबह अपने ऊपर सात बार उतार कर दूध चढ़ाओ सवा सौ ग्राम दूध चढ़ाओ और फिर उससे तुरन्त अलग हो जाओ पीछे हट कर न देखो। घड़े में छेद इस तरह होना चाहिए जिससे जो दूध चढ़ाओ वह दूध छेद के द्वारा जमीन में चला जाय। सवा महीना दूध चढ़ाना है, ऐसी जगह घड़े के हिस्से को गाड़ना है जहाँ पर मनुष्य पशु बगैरा न जा सके, ऐसा करने से केतु की दशा समाप्त हो जायेगी।

मंगल ग्रह दोष के लिए

निवारण-चावलों को उबालो और उसमें से जो माँड़ पानी निकले उसको और जल में मिला लो और रोज गाय को खिलाओ उसमें गुड़ 100 ग्राम डालो जिससे मीठा हो जाय और गाय को खिलाने में दिक्कत न हो और साबुत चावल पीले कपड़े में बाँधो। उतने बाँधो जितने सवा महीने में दिन होते हैं, यह चावलों की गांठ अपने साथ रखो और सवा महीना गाय को चावलों का माँड और 100 ग्रम गुड़ खिलाओ इससे मंगल ग्रह शान्त हो जायेगा।

निवारण-मंगल के दिन श्री हनुमान जी के पाँच व्रत करो और बन्दरों को चने और गुड़ खिलाओ और पीपल पर तेल की ज्योत जलाओ। बन्दरों को भोजन कराने से पहले दिन लाल सवा मीटर कपड़ा उस जंगल में बाँध आओ जहाँ पर आपको बन्दरों को भोजन कराना है। इस विधि के करने से मंगल का दोष समाप्त हो जायेगा और हनुमान जी की भी कृपा होगी।

बुध ग्रह के लिए

निवारण-सफेल कपड़ा सवा मीटर लाओ उस कपड़े में हल्दी से 21 जगह ॐ लिखो लिखकर पीपल पर लटका दो उस कपड़े पर ॐ वह मनुष्य लिखेगा जिसके ऊपर बुध ग्रह दोष हो और

सवा महीने तक गोचनी ओर दूध चढ़ाओ थोड़े गेहूं और थोड़े चने दूध में डालकर बुधवार के दिन पीपल पर चढ़ाओ इससे बुध ग्रह दशा समाप्त हो जायेगी।

बुध ग्रह

निवारण-सोमवार से बुधवार तक हर सप्ताह कनियर के पेड़ पर दूध चढ़ायें और जिस दिन शुरूआत करें उस दिन कनियर के पेड़ पर संकल्प करके पेड़ की जड़ों में कलावा बाँध देवें पाँच सप्ताह तक यह कार्य विधि सोमवार से बुधवार तक करें, यह विधि करने से बुधवार की दृष्टि शुभ वातावरण में बदल जायेगी।

बृहस्पति ग्रह के लिए

निवारण-बृहस्पति ग्रह गुरु दशा दोष के लिए साँड को रोजाना 7 अनाज गुड़, सवा किलो अनाज सवा सौ ग्राम गुड़ साँड को सवा महीने तक खिलाओ और हल्दी की पाँच गाँठ पीले कपड़े में बाँध कर पीपल पर बाँध दो और 3 गाँठ अपने साथ पीले कपड़े में बाँधकर रखो अपनी जेब के अन्दर, ऐसा करने से बृहस्पति ग्रह का दोष शान्त हो जायेगा।

बृहस्पतिवार ग्रह

निवारण-बृहस्पतिवार के दिन भुने हुए चने बिना नमक के होने चाहिए ग्यारह मन्दिरों के सामने बांटे कोई भी नर–नारी बच्चे मिले सबको बांटे सुबह उठने के बाद घर से निकलते ही जो भी जीव सामने आये उसे ही खिलावें चाहे चार पैरों का पशु जानवर हो या फिर नर–नारी बच्चे हो जितने भी चने अपने पास लेकर चलोगे उनको जो भी मिले देते चले जायें। यह विधि करने से बृहस्पति देव की दृष्टि शान्त हो जायेगी।

शनि की साढ़े साती

निवारण-जिस मनुष्य पर शनि की साढ़े साती हो वह मनुष्य तम्बाकू बनाकर या बना हुआ खरीद कर लायें तम्बाकू 250 ग्राम होना चाहिए और उस तम्बाकू को पीपल के पेड़ पर बाँधो शनिवार के दिन। तम्बाकू 250 ग्राम, 500 ग्राम तेल को या तो छोटे मिट्टी के बर्तन में डालकर नीचे छोटा छेद कर दें या फिर मोटा ताकतवर कपड़े में छेद करके तम्बाकू बाँध दो ऊपर पीपल के पेड़ पर फिर 500 ग्राम तेल 5 सप्ताह शनि के दिन लगातार डालने से शनि का प्रवाह समाप्त हो जायेगा।

शनि की साढ़े साती

निवारण-जिस पेड़ पर शहद का छत्ता लगा हुआ हो उस पेड़ के नीचे हर शनिवार के दिन तेल का चिराग जलाओ और कच्चे सूत से शहद के छत्ते से बाँधकर वहाँ तक ले आओ जहाँ पर जड़ हो जहाँ पर चिराग लगाना है। इस कार्य को हर शनिवार को करो सात शनिवार तक करने के बाद उस छत्ते को तोड़ डालो और फिर उस छत्ते में जो शहद निकले उसका सेवन प्रतिदिन करो ऐसा करने से शनि की साढ़े साती ढल जायेगी। मनुष्य का जीवन सुखी हो जायेगा।

मेष राशि की साढ़े साती

निवारण-जौ का सवा पाँच किलो आटा पिसवाओ और उस आटे से रोजाना सवा सौ ग्राम आटा चीटियों के घर पर चढ़ाओ और सबसे पहले जिस दिन चालू करो उस दिन तेल का दिया चिटियों के घर पर जलाओ और जब आखिरी दिन चढ़ाओ तभी भी तेल का चिराग जलाओ, ऐसा करने से मेष राशि पर साढ़े साती का प्रभाव समाप्त हो जायेगा।

वृष राशि की साढ़े साती

निवारण-पूर्णमासी के दिन सवा 5 किलो चावल का आटा बनवाओ प्रतिदिन उस आटे के सवा सौ ग्राम गाय को दूध के साथ खिलाओ और हर रोज पीपल के पत्ते पर या पीपल पर किसी भी चीज से नाम लिखो जब तक गाय को खिलाओ तक तक पीपल पर भी जाना पड़ेगा, पीपल पर नाम लिखना जरूरी है ऐसा करने के बाद आखिरी दिन पीपल पर घी की ज्योत लगाकर मीठा प्रसाद चढ़ाओ। ऐसा करने में वृष राशि पर से साढ़े साती हट जायेगी और मनुष्य सुखी रहेगा।

मिथुन राशि की साढ़े साती

निवारण-गाय का सींग अपने घर पर रखो प्रतिदिन उस सींग को अपने माथे से लगाओ और गाय को बाजरा चौलाई और मीठा मिलाकर गाय को रोजाना सवा महीने तक खिलाओ ऐसा करने से मिथुन राशि से साढ़े साती शान्त हो जायेगी।

कर्क राशि की साढ़े साती

निवारण-हर इतवार के दिन सात छः वर्ष तक की कन्याओं को हलवा पूरी से भोजन कराओ और उन्हें सवा रुपया भेंट करो और किसी कन्या की शादी हो रही हो तो उसमें कन्यादान करो और जो बारातियों के लिए खाना बनाया जाता है उसमें जो भी धन मिला सकते हो मिला दो ऐसा पुण्य करने से कर्क राशि से साढ़े साती शान्त हो जायेगी।

सिंह राशि की साढ़े साती

निवारण-जो मनुष्य भूखा हो कपड़े न हो गरीब कन्याओं को भोजन कपड़े पहनाओ और हर मंगलवार को भूखे को रोटी कपड़ा दो

और मंगलवार के दिन पीपल पर तेल की ज्योत लगाओ ऐसा करने से सिंह राशि वालों को शान्ति मिलेगी और साढ़े साती शान्त हो जायेगी।

कन्या राशि की साढ़े साती

निवारण-जो मनुष्य पागल की स्थिति में हो जिसको सांसारिक विषयों का ज्ञान न हो उसे अपने हाथों से खाना खिलाओ और अपने हाथों से नहलाओ और नये कपड़े पहनाओ और यह कार्य करने के बाद किसी अन्जान जगह शनिवार के दिन तेल का चिराग जलाकर दो हल्दी की गाँठ रख कर आ जाना, यह कार्य पाँच शनिवार करना है ऐसा करने से कन्या राशि वालों से साढ़े साती शान्ति में हो जायेगी।

तुला राशि की साढ़े साती

निवारण-बारह वर्ष के लड़कों को भोजन कराओ और सरसों के तेल में हलवा बनाओ और पूरी उतारो और तेल में ही सब्जी बनाओ सवा किलो तेल लेकर पीपल के पाँच चक्कर इतवार के दिन लगाओ और इतवार को इस तेल से भोजन बनाकर कम से कम दो लड़कों को खिलाओ।

वृश्चिक राशि की साढ़े साती

निवारण-साठ वर्ष के ऊपर के मनुष्यों को खीर खिलाओ और खीर में गुलाब के पाँच फूल शिवलिंग पर चढ़ाकर वापस ले आओ और उस खीर में तोड़कर डाल दो और बूढ़ों को खिला दो। साठ वर्ष से कम से कम पाँच बूढ़े होने चाहिए। गरीब अमीर कोई भी हो सकता है ऐसा करने से वृश्चिक राशि में साढ़े साती शान्ति में आ जायेगी।

धनुराशि की साढ़े साती

निवारण-अपने माता–पितजा को अपने हाथों से नये कपड़े अपनी मेहनत की कमाई से खरीदों और पाँच सोमवार अपने हाथों से

नहलाओ फिर कपड़े पहनाओ। यह कार्य प्रथम सोमवार के दिन करना है चार सोमवार को घर में ज्योत जलानी है घी की ज्योत होनी चाहिए और हर सोमवार जो चार बचे हैं उनमें माता–पिता को अपने हाथों से नहलाओ और उनके साथ पाँच सप्ताह कोई भी ऐसा शब्द न बोलो जिससे उन्हें दुख पहुंचे, पिछली बातों के लिए पहले सोमवार को क्षमा याचना कर लें क्योंकि अगर पहले की कोई नाराजगी हो वह न रहे। अगर किसी के माता–पिता न हो तो दूसरे किसी प्यारे दोस्त के माता–पिता की सेवा कर सकते हैं, ऐसा करने से धनुराशि से साढ़े साती शान्ति में परिवर्तित हो जायेगी।

मकर राशि की साढ़े साती

निवारण-हर इतवार के दिन छोटे बच्चों के स्कूल के सामने रात के समय पाँच गाँठ हल्दी की रखो। सरसों के तेल में भिगोकर जो किसी को न दिखे किसी भारी वस्तु के नीचे दबा देवें। ऐसा इतवार को करने के बाद सोमवार से लेकर अगले सोमवार तक स्कूल मे जाकर काले चने उबाल कर स्कूल में बांट दें। अगर स्कूल में नहीं कर सको तो कहीं बच्चों का समूह हो उन्हें बांट सकते हैं। ऐसा करने से मकर राशि से साढ़े साती शान्ति में आ जायेगी।

कुम्भ राशि की साढ़े साती

निवारण-कुम्भ राशि वाले मनुष्य शिवलिंग के सुबह के समय सोमवार से अगले सोमवार तक शिवलिंग पर घी की ज्योत लगाकर 21 इक्कीस चक्कर लगाओ गंगाजल हाथ में लेकर जब चक्कर पूर्ण हो जाय, शिवलिंग पर चढ़ा दो माथा टेकों और अपनी शान्ति के लिए प्रभु शिव से वरदान मांगों अवशय मिलेगा और कुम्भ राशि वालों को सफलता मिलेगी और साढ़े साती का भार भी हट जायेगा।

मीन राशि की साढ़े साती

निवारण-सतनजा बनाकर इक्कीस दिन लगातार चलते दरिया में रोज एक मुट्ठी डालों और प्रतिदिन एक तेल का दिया नदी के किनारे जलाये और एक मुट्ठी सतनजा चढ़ा देवें। ऐसा करने से मीन राशि से साढ़े साती शान्ति में बदल जायेगी।

शनि की ढइया

निवारण-नदी के किनारे पीपल का पेड़ पर जाओ जाकर जमीन साफ करके पाँच जड़ों में पाँच काले धागे बांधो और प्रति शनिवार को पीपल पर जाओ और उन पाँचों जड़ों पर तेल चढ़ाओ और चार बत्ती का चिराग जलाओ और थोड़ा तेल अपने ऊपर सात बार उतार कर दरिया में बहा दों पाँच शनिवार इस कार्य को करो तुम्हारी उन्नति होगी और शनि की साढ़े साती शान्ति में बदल जायेगी।

मेष राशि की ढइया

निवारण-सोमवार के दिन कहीं जंगल में जाकर सवा किलो गेहूं लेकर जाओ और चलते-चलते गेहूं के दाने जमीन पर छोड़ते जाओ जहां पर समाप्त हो जाय वहीं पर तेल का चिराग जला दें। वापिस आये परन्तु उस रास्ते से न आये दूसरे रास्ते से आयें। पाँच सोमवार यह कार्य करना है। शान्ति मिलेगी, धन बढ़ेगा, बिगड़क कार्य बनेंगे।

वृष राशि की ढइया

निवारण-विधवा नारी को दान में इकत्तहर रु0 दान करो इतवार के दिन और मनुष्य जिसकी पत्नी न हो उसे भोजन कराओ और दक्षिणा दे दो पाँच इतवार तक ऐसा करना है इससे वृष राशि से जो आपत्ति है वह समाप्त हो जायेगी। वृष राशि से ढइया समाप्त हो जायेगी।

मिथुन राशि की ढइया

निवारण-जो घास जमीन पर दूब के नाम से जानी जाती है उस घास को जड़ों से उखाड़कर हर इतवार के दिन गाय को खिलाओ खिलाने के बाद पानी पिलाओ जब पानी पिलाओ उसमें थोड़ा मीठा मिला दो। ऐसा करने से मिथुन राशि पर ढइया शान्त हो जायेगी।

कर्क राशि की ढइया

निवारण-रेशमी लाल कपड़े को हर वक्त रुमाल के लिए प्रयोग करें और हर इतवार के दिन सवा महीने तक माता दुर्गा की पूजा करो जिस दिन से पूजा करें उस दिन से माता की लाल चुन्नी चढ़ावें और हर इतवार के दिन मन्दिर में जाकर घी का दीपक लगावें और जो लाल रुमाल जिसको प्रयोग करते हैं उसमें माता की चुन्नी से कुछ धागे सातवें दिन निकाल कर अपने रुमाल में सिल लें और अपने साथ रखें, मुंह हाथ पोछें जैसे आप रुमाल प्रयोग करते हैं, ऐसे ही प्रयोग करें सवा महीना तक यह कार्य करें ऐसा करने से कर्क राशि से ढइया समाप्त हो जायेगी।

सिंह राशि की ढइया

निवारण-पूर्णमासी के दिन पूरब की दिशा में जाओ एक कोस की दूरी में जितने भी चीटियों के घर मिलें सब घरों पर केला गुढ़ चढ़ावें हर पूर्णमासी को घर से चलने से पहले घी का चिराग लगाकर जावें, पाँच पूर्णमासी ऐसा प्रयोग करने से सिंह राशि से ढइया समाप्त हो जायेगी।

कन्या राशि की ढइया

निवारण-मध्य रात्रि में सवा महीने तक एक बार रोज जागो या फिर मध्य रात्रि के बाद सौ जाओ, जब मध्य रात्रि का समय आवे

एक तेल का चिराग लगाओ पानी की कटोरी भरकर रख दो और उसके अन्दर इस दिये को रोज रखो और सुबह होने पर उस जल को पीयो ऐसा सवा महीने तक लगातार करने से कन्या राशि पर ढइया शान्त हो जायेगी और ज्यादा फायदा होगा।

वृश्चिक राशि की ढइया

निवारण-पान–सुपारी मंगलवार के दिन हनुमान पर चढाओ और जिस मन्दिर में हनुमान जी की मूर्ति हो और उसी मन्दिर में पेड़ हो, पेड़ किसी भी प्रकार का हो उसी के नीचे जड़ों में तेल का दीया जलाओ और हनुमान जी को पान चढ़ाओ, सात मंगलवार करने से वृश्चिक राशि पर ढइया समाप्त हो जायेगी।

धनु राशि की ढइया

निवारण-सवा पाँच किलो मीठा प्रसाद घर में रखें और जिसके माता हो सवा महीने तक सुबह के समय लगातार अपनी माता के चरण स्पर्श करो और जो प्रसाद घर में रखा हुआ है उसमें से माता रोज प्रसाद देगी उसको तुरन्त खा जाओ सवा महीने तक ऐसा करने से और रोज घर में घी का दीपक जलाने से धनु राशि से ढइया समाप्त हो जायेगी।

मकर राशि की ढइया

निवारण-तुलसी को माता समझ कर सुबह के समय तुलसी की जड़ों को स्पर्श करें और रोज सवा महीने तक घी का दिया लगातार जलाते रहें और जब सवा महीने बीत जाय अन्तिम दिन तुलसी की जड़ों को स्पर्श करो और जल चढ़ाओ फिर खीर का भोजन खिलाओ चढ़ाओ ऐसा सवा महीना करने से मकर राशि पर ढइया समाप्त हो जायेगी।

मकर राशि की जिस पर ढइया हो उसे पाँच मन्दिरों में तुलसी

का पेड़ लगाओ लगातार पाँच दिन तक यह कार्य विधि करनी है एक दिन में एक पेड़ लगाना है और फिर पाँच दिनों तक तुलसी की जड़ों में जल–फूल चढ़ाने हैं यह कार्य विधि करने से मकर राशि की ढइया नम्र हो जायेगी।

कुम्भ राशि की ढइया

निवारण-सवा पाँच किलो जौ और चालीस किलो गेहूं इन दोनों को मिला दो बीस ग्राम गुड रोजाना के लिए यह सामान घर में रखों और रोजाना के हिसाब सवा महीने तक बीस ग्राम गुड के साथ गेहूं और जौ जो मिले हुए हैं उन्हें गऊशाला में गाय को सवा महीने तक खिलाओ और जब अपने स्थान से दूर जाना हो और गऊशाला में न जा सके तो उस दिन के लिए गऊशाला में दे आओ जिससे तुम्हारे नाम से उस दिन गाय को खिला सकें और अन्तिम दिन सवा पाँच किला का गेहूं और जौ गुड़ इनको पकाकर खिला देवें ओर सवा 5 रु0 गऊशाला में दान दे देवें। ऐसा करने से कुम्भ राशि से ढइया समाप्त हो जायेगी।

मीन राशि की ढइया

निवारण-नदी के प्रवाह के किनारे जाओ और आटे की गोली बनाकर ले जाओ 108 बार पानी के अन्दर फैंको जिस दिन पहली बार जाओ उस दिन सबसे पहले तेल का दिया जलाओ फिर गोली पानी में फैंको सवा महीने तक ऐसा ही करना है और अन्तिम दिन को दिया जलाकर आना है अगर किसी कारण आप जाने में असमर्थ हो तो अपने खून के किसी भी सदस्य को भेज सकते हो। अपने हाथ लगाकर ऐसा सवा महीने करने से मीन राशि की ढइया समाप्त हो जायेगी।

राशियों में मंगली दोष–टोटके

मेष लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-सात धान के खेत में जाओ और जाकर तेल का दिया खेत के अन्दर जलाओ पूर्णमासी की रात को यह कार्य करना है और चावल एक मुट्ठी गणेश जी पर चढ़ाने हैं, चावल साबुत होने चाहिए और गणेश जी पर घी की ज्योत जलानी है। अगर कोई बच्चा या बीमार हो तो संकल्प करके उसके खून का सदस्य भी चढ़ा सकता है करने वाले के हाथ लगवाकर ले जाय ऐसा पाँच पूर्णमासी करने से मेष राशि दोष मुक्त हो जायेगी।

मिथुन राशि में मांगलिक दोष

निवारण-भैरों बाबा के मन्दिर में मिथुन राशि वाला मनुष्य चाँदी की मूर्ति भैरों बाबा की बनवायें कम से कम सवा तोले की बनवायें और उस मूर्ति को हर इतवार के दिन भैरो बाबा के मन्दिर में ले जाय और उस मूर्ति को भैरो बाबा के यहाँ जो तेल चढ़े उसमें उस मूर्ति को डूबो कर वापिस लेकर आये। शनि के दिन भी जा सकते हैं। उस मूर्ति को लकड़ी में स्थापित करें जिससे वह सीधी प्रकार से ले और लायी जा सके जैसे कोई मूर्ति नियम से सीधी ले जाई जाती है ऐसे ही ले जानी है और वापिस आकर मूर्ति के आगे तेल की ज्योत लगा देवें। ऐसा करने से भाग्य हो तो सिद्धि भी प्राप्त हो सकती है।

कर्क लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-जिस क्षेत्र में कुआं दूर हो और पनिहारी कुएं से पीने का पानी सिर पर लाती हैं पनिहारी का पानी ग्यारह दिन या 21 दिन लगातार खुद भरें पनिहारी का भरने में सहायता न लें ऐसा करने से कर्क लग्न वालों को मांगलिक दोष हट जायेगा।

सिंह लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-सोमवार के दिन 6 वर्ष की कन्याओं को भोजन करावें ग्यारह कन्याओं को पाँच सोमवार भोजन कराना है और सोमवार के दिन सुबह शिवलिंग पर घी की ज्योत जलानी है और शिवलिंग के चारों तरफ फूलों की माला चढ़ानी है। ऐसा करने से सिंह राशि पर मांगलिक दोष हट जायेगा।

कन्या लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-पाँच पूरी, सात आटे की गोली, एक गोला नदी के किनारे जाकर तेल की ज्योत जलाओ पाँच इतवार यह कार्य करना है, पाँचवे इतवार को जो भी नदी के किनारे मिले उसे भोजन कराके सवा पाँच रुपये दक्षिणा देनी है। ऐसा करने से कन्या राशि पर मांगलिक दोष शान्त हो जायेगा।

तुला लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-तुला राशि वालों के लिए गरीब बूढ़ा आदमी जो अपने कर्मों का बोझ सिर पर ढो रहा हो बुढ़ापे में मजबर हो अपने परिवार का पेट भरना पड़ रहा हो उसकी इक्कीस दिन तक सहायता करनी है उसके परिवार को पूर्ण भोजन कराना है और अन्तिम दिन उस बूढ़े व्यक्ति को कपड़े पहनाने और दक्षिणा देनी है ऐसा करने से तुला राशि पर मांगलिक दोष शान्त हो जायेगा।

वृश्चिक लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-गंगा नदी पर पूर्णमासी के दिन जाकर ग्यारह गाय को आटे और गुड़ का भोजन कराना है और उस भोजन से पीपल के ग्यारह पत्तों पर भोजन परोसकर नम्बर वार एक–एक पत्ता गंगा जी में छोड़ना है, फिर गाय को भोजन कराना है पाँच पूर्णिमा तक लगातार

यह कार्य करने के बाद अन्तिम दिन गंगाजी पर घी की ज्योत जलाकर एक गरीब आदमी को भोजन कराना है साथ के साथ गाय को भी उसी तरह से कराना है जैसे हर पूर्णिमा को कराया जाता रहा है। ऐसा करने से वृश्चिक राशि पर मांगलिक दोष शान्त हो जायेगा।

धनु लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-काले उड़द तेल शनिवार के दिन पीपल पर चढ़ाओ और तेल की ज्योत लगाओ जिस दिन यह कार्य चालू करें उस दिन पीपल पर ढाई सौ ग्राम उड़द तेल में भिगोकर काले कपड़े में बाँध कर पीपल के ऊपरी हिस्से में बाँधने हैं और पाँच शनिवार तक यह विधि करनी है, अन्तिम दिन मन्दिर के पंडित को भोजन कराना है, यह विधि करने से धनु राशि पर मांगलिक दोष समाप्त हो जायेगा।

मकर लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-इक्तालिस दिन तक मन्दिर में झाड़ू लगाकर शिवलिंग पर ज्योत लगाकर जल चढ़ाना है, प्रतिदिन यह विधि करनी है और अगर किसी वजह से पत्नी पर दोष हो, पति कर सकता है और यदि पति पर दोष हो पत्नी कर सकती है परन्तु यह करना मजबूरी के कारण है वरना जिस पर मांगलिक दोष हो उसी को करना अनिवार्य है। यह विधि मकर राशि वालों पर मांगलिक दोष शान्त करेगी।

कुम्भ लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-कुम्भ राशि वालों पर 21 इक्कीस दिन तक लगातार गंगाजी या यमुना जी में स्नान करना है और किनारे पर घी की ज्योत लगानी है और अन्तिम दिन इक्कीस पत्ते पीपल के लेकर खीर रखकर नम्बरवार जल में प्रवाहित करनी है। कुम्भ राशि वालों पर मांगलिक दोष शान्त हो जायेगा।

मीन लग्न में मांगलिक दोष

निवारण-गणेश जी की मिट्टी की मूर्ति बनाओ कम से कम आठ अंगुल की होनी चाहिए इससे बड़ी चाहे कितनी भी हो सकती है, सुबह के समय उस मूर्ति पर दूब की घास ग्यारह चढ़ाओ फिर दूध चढ़ाओ, घास के ऊपर मूर्ति धर के अपने मन्दिर में स्थापित करनी है यह विधि 40 दिन तक लगातार करनी है, जिस पर भी यह दोष हो उसे ही करनी है, परन्तु अगर वह नर–नारी, बच्चा किसी मजबूरी के कारण मजबूर होता है तो घर का पत्नी, बच्चा, पति इनमें से एक दूसरे का कार्य मजबूरी में कर सकता है यह विधि करने से मीन राशि से मांगलिक दोष समाप्त हो जायेगा।

सिद्धि में सहायक मन्त्र

टोटका-गंगा जी पर चालीस दिन तक जिसकी देवी–देवता की सिद्धि करो, गंगा जी पर जाओ और रोज लगातार घी का एक दीपक जलाओ और शुरु के दिन पाँच पतासे और एक दीपक जलाओ संकल्प करो कि गंगामाई मैं आपकी शरण में आया हूं मुझे सिद्धि प्रगट कराओ यह संकल्प करके पीपल का पत्ता साथ रखकर उस देवी देवता का स्मरण्या करो जिसकी सिद्धि करनी है और जब पूर्ण चालीस दिन हो जाय तब चालीस नर–नारियों को भोजन कराना है। पीपल का एक पत्ता मन्त्र जाप करते हुए अपने हाथों में रखना है और जब मन्त्र समाप्त हो जाये पीपल का पत्ता पाँच पतासे गंगा जी में रोजाना छोड़ने हैं। यह विधि जो भी भगत करेगा उसको सिद्धि अवश्य मिलेगी और जिस देवी–देवता की साधना करेगा उसके दर्शन भी होंगे।

शनि ग्रह शान्ति के लिए

निवारण-बरगद–बड़ के पेड़ पर शनिवार के दिन दूर किसी जंगल में बरगद का पेड़ होना चाहिए उस पेड़ पर तेल में काले उड़द

साबुत भिगोकर बरगद की खोकर में रखो पाँच शनिवास करके हर शनिवार को करो और साथ के साथ तेल का चिराग उस खोकर में जला दो। सवा पाँच मुट्ठी काले उड़द हो। यह विधि करने से शनि ग्रह शान्त हो जायेगा।

शनि ग्रह की रेखा सीधी धन का प्रवाह करने हेतु

निवारण-नाव की कील लेकर सवा फुट लम्बी पीपल की लकड़ी छः इंच चौड़ी लकड़ी को नदी के प्रवाह में कील गाड़कर शनिवार के दिन तेल में भिगोकर प्रवाहित करनी है और हर शनिवार को पीपल पर काले तिल और तेल का दिया जलाना है।

दुर्गा माताजी की भगति करने के लिए

दुर्गा माता की भगति करने के लिए सबसे पहले पाँच पूर्णमासी गंगाजी में स्नान करके और गाय को जिमाओ गंगा जी पर फिर उसके बाद नियम से तीन माला बीच मन्त्र का जाप करो इक्कीस दिन तक माला करने के बाद पाँच–पाँच माला प्रतिदिन करो फिर इक्कीस दिन तक करो उसके बाद आपका ध्यान लगने लगे फिर रात दिन मनन करो फिर आपको दुर्गा माता दर्शन देंगी और आगे का रास्ता बतायेंगी। संस्कार के हिसाब से आगे की साधना चलेगी, जिस देवी के आप भगत हैं वह उन्हें देखना है कि सिद्धि देगी या फिर उससे ऊपर पहुंचायेगी इस विधि के करने से आप योग्य साधक बन सकते हैं।

भैरो बाबा की भगति करने के लिए

भैरो बाबा की साधना करने के लिए चालीस दिन शनिवार के व्रत करने होंगे या फिर नौ करके उसका उद्यापन करके फिर नौ करें इस तरह से चार बार नौ–नौ करके उद्यापन करो और जो भी दुखी

भूखा कपड़े नहीं हो ऐसे मनुष्य की सेवा करो क्योंकि भैरो बाबा इन्हीं मनुष्यों में वास करते हैं और बीज मन्त्र का नियम से 3 तीन माला करो फिर पाँच करो और फिर मनन करो उसके बाद भैरो बाबा अपने आप मार्गदर्शन करेंगे।

कालका माई की भगति के लिए

कालका माई की भगति करने के लिए नियम करना बहुत जरूरी है। जहाँ पर काली माता का सिद्ध मन्दिर हो वहाँ पर जाकर तीन मालायें करो, बीज मन्त्र से और उसके बाद पॉच मालायें करें और जोत लगाये जब आप इसे निमयपूर्वक करोगे तो आपको अपना मार्गदर्शन अपने आप ही होने लगेगा आप भगति में अपने आप ही लीन हो जाओगे जो माता की भगति करता है माता उसी की हो जाती है स्नेह करने लगती है।

गंगा जी पर जाने से पहले

गंगा जी पर स्नान करने जाने से पहले पाँच दिन पहले ॐ शिव: गंगे नम: का मनन करना शुरू कर दो या फिर एक माला सुबह करना शुरू कर दो अगर आप सत्य में गंगा स्नान करना चाहते हो और उसका फल भी चाहते हो तो सात्विकता धारण करके पाँच दिन पहले से तैयारी करनी शुरू कर दो उसके बाद गंगा स्नान करो और घी की दो ज्योत गंगा के किनारे जलाओ और वापिस आने तक मन्त्र का मनन करते रहो, वापिस आने के बाद पाँच कन्याओं को भोजन खिलाओ, ऐसा करने से यात्रा पूर्ण होगी और जिस फल की इच्छा करके जाओगे वह भी पूर्ण होगी।

पूर्णमासी पर्व पर गंगा जी पर जाने से पहले

पूर्णमासी के दिन गंगाजी पर जाने से पहले घर में पाँच दिन फल की इच्छा करके घी की ज्योत जलाओ और फिर गंगाजी के तट

पर जाकर पाँच ज्योत घी की जलाओ और जिस फल की इच्छा लेकर गंगा तट पर गये हो वह इच्छा मन में धारण करके पाँच गाय को भोजन कराओ और गाय के पैर छुओ यह विधि करने के बाद घर पर आकर पाँच गाय को गुड़ और रोटी खिलाओ ऐसा करने ये यात्रा पूर्ण और फलदायक होगी।

गंगाजी पर नहाने से पहले लाभ हेतु

गंगाजी पर जाते समय गाय को मीठा प्रसाद खिलाना है और गंगाजी की ओर चलना है जब आप गंगाजी पर पहुंचे वहाँ जाकर नहाते समय घी का दीया जलाना है और फिर भूखों को खाना खिलाना है। गाय को मीठा भोजन कराना है और चलते समय किसी दुखी दरिद्र मनुष्य या स्त्री से कुछ न कुछ चीज लानी है चाहे आपको उसके लिए कुछ भी करना पड़े खुश करने के लिए फिर उस चीज को हमेशा कपड़े की गांठ बनाकर अपने साथ रखना है, इस विधि के करने से सब कार्य सम्पूर्ण होंगे।

साधना में लग्न लगाने से पहले

साधन में मनुष्य प्रवीण होना चाहे तो उसे माँ भगवती की शरण में प्रथम बार से जाना होगा माता भगवती के बीज मन्त्र की सबसे पहले एक माला जाप करें फिर तीन माला जाप करें और फिर पाँच माला जाप करें और उसके बाद मनन करें रात दिन मनन करें फिर भगवती माता भगत को अपने अन्दर अपने आप ढाल लेगी जिधर भी माता को साधक को ले जाना है उसी प्रकार भगत को जाना होगा सब कुछ माता पर छोड़कर जो मनुष्य चलेगा वह ही मनुष्य साधना के क्षेत्र में बढ़ सकता है।

सूर्य की नरम दृष्टि हेतु

कमल के फूल पर रोजाना दूध के छींटे लगाओ और कमल

की पखंडी अपने पास घर में ही रखें नौ दिन तक यह कार्य करने के बाद सूर्य देव के सामने जल चढ़ावें और जिस समय सूर्य निकले उस समय जौ 21 ग्राम किसी भी कच्ची जमीन में डालकर पानी का छींटा लगा देवें इस विधि के करने से सूर्यदेव की दृष्टि मनुष्य पर नर्म हो जायेगी।

चन्द्रमा की नरम दृष्टि हेतु

जिस मनुष्य पर चन्द्रमा की दृष्टि कम है उसको पूर्णमासी के दिन पाँच घी के दिये जलाओ और पॉच बार चन्द्रमा की आरती उतारो पहले पाँच बार अपने ऊपर उतारो पाँच पूर्णमासी यह कार्य विधि करनी है और छत पर फूल के बर्तन में दूध रखकर सुबह पीना है दूध कच्चा होना चाहिए और पूर्णमासी शाम को रखना है ऐसा करने से उन्नति होगी और भाग्य में बदलाव आयेगा।

मंगल ग्रह की नरम दृष्टि हेतु

मंगलवार के दिन गौशाला में जाओ और मक्का बाजरा मिलाकर ले जाओ सवा–सवा किलो दोनों चीज होनी चाहिए, गाय को खिलाकर थोड़ा–थोड़ा गुड़ दे दो खिला दो उसके बाद गाय के दूध से पानी में डालकर नहाओ यह विधि करने से मंगलवार की दृष्टि शान्त हो जायेगी यह कार्य विधि पाँच मंगलवार करनी है।

बुधदेव की दृष्टि नरम हेतु

सात दिनों तक गंगाजी पर रहो और ब्रह्मकुण्ड के अन्दर नहावो और नारियल को अपने ऊपर उतारकर गंगाजी में प्रवाहित करो और जय ब्रह्मदेव जय ब्रह्मदेव जय ब्रह्मदेव कहो और नारियल को प्रवाहित कर दो ओर आंठवें दिन अपने घर आ जाओ और घर आकर पाँच कन्याओं को मीठा भोजन कराओ, यह विधि करने से बुध देवां का दोष समाप्त हो जायेगा।

गुरु बृहस्पति की दृष्टि नरम होने हेतु

गुरुवार के दिन सवा किलो चले उबालकर पाँच ऐसे पंडितों को खिलावें जो कर्मकाण्डी पंडित हों और भोजन भी चने का ही करनाहै यह कार्य विधि सात बृहस्पतिवार तक करनी है गुरुवार की दृष्टि शान्त हो जायेगी, नरम हो जायेगी।

शुक्र की दृष्टि नरम होने हेतु

सात शुक्रवार सात अलग–अलग जगह केले के पेड़ लगाओ और फिर जब सात पेड़ अलग–अलग जगह लगा देवें उसके बाद दो गांठे और पाँच–पाँच जौ के दाने हर शुक्रवार को उन केलों की जड़ में चढ़ाओ इस तरह से चौदह शुक्रवार की कार्य विधि करने से शुक्र ग्रह की कृपा दृष्टि होगी।

शनि की दृष्टि नरम होने हेतु

शनि की दृष्टि ठीक और नरम करने के लिए शनि के दिन तेल का दीपक जलाकर अपने ऊपर उतार कर पीपल की जड़ों में रखकर तिलों को चढ़ाओ काले तिल होने चाहिए, इस विधि को सात शनिवार करना है और सात शनिवार करने के बाद सवा मीटर काला कपड़ा उड़द तेल किसी जवान बालक को दान कर दो इस विधि के करने से शनि की दृष्टि नरम हो जायेगी।

मनुष्य के घर में ग्रहों की परेशानी हो

निवारण-सरसों के तेल के 7 दिये जलाकर 7 बार अपने ऊपर से उतार कर शनि के दिन चलते दरिया में बहा देवें 7 शनिवार करना है।

मनुष्य को अपना धन लेने के लिये

निवारण-पूर्णमासी को अपने ही घर में मिट्टी का दिया

बनाकर उस दिये को चावलों के ऊपर रखों चावल 1 मुट्ठी होने चाहिए फिर उस दिये में तेल डाल दो जला दो और जिस आदमी से धन लेना है उसका नाम पता डाल दें, फिर सुबह उन चावलों को लाल कपड़े में बाँध लो जब भी धन लेने जाओ चावलों को साथ लेकर जाओ धन तुरन्त प्राप्त होगा।

पितृगणों को शान्ति स्थापित करना

निवारण-अमावस्या के दिन जो भी भूखा और दुखी आदमी हो उसे खाना और कपड़ा पहना दो। शान्ति स्थापित हो जायेगी।

नौकरी लगाने के लिए और कोई भी रोजगार के लिए

निवारण-शनिवार को गाय के गोबर के गीले 7 दिये बनाओ उन पर 7 बत्ती लगाकर जला दो सरसों का तेल डालकर 7 शनिवार चलते जल में प्रवाहित करो रोजगार लग जायेगा।

घर के अन्दर शान्ति स्थापना करना

निवारण-घर के चूल्हें की मिट्टी थोड़ी उतारकर सब परिवार के सदस्यों पर उतार कर लगातार 7 दिन तक दरिया में बहा दो सभी परिवार में शान्ति स्थापित होगी।

परिवार में छोटे-बड़ों का आदर न करें

निवारण-सुपारी में छिद्र करो और उस मनुष्य या बच्चा या औरत जो नहीं मानता हो उसका कपड़ा उस सुपारी में डाल दो और उसको पीपल की जड़ में बांध दो। 5 सोमवार पीपल पर जल चढ़ाओ, तुरन्त कहना मानने लगेगा।

बिजनैस में लगातार घाटा होता रहे ठीक अवस्था पर लाने के लिए

निवारण-(शनिवार से चालू करना है) पीपल की जड़ काले घोड़े की नाल में ठुकवा लें और रोजाना सरसों के तेल में डूबोकर निकाले और जो तेल नाल पर लगे उसको सिर पर लगाये नाल को सदैव अपने पास रखें, इसी समय से 5 शनि पीपल पर सरसों के तेल की ज्योत जलायें। पूर्ण रूप से बिजनैस चलेगा।

लोहे के बिजनैस के लिए

निवारण-काली चिड़िया का पंख मोमबत्ती पर बाँध कर उसे उसी जगह में रख दो जहाँ कार्य करते हैं और मोमबत्ती को रोज सुबह 2 मिनट के लिए जला दो फिर बुझा दो। जब समाप्त हो जाय तो दूसरी मोमबत्ती में लगा दो। बिजनैस पूर्ण रफ्तार से चलेगा।

मनुष्य जिसके घर में रहता हो और मालिक उससे खाली करवाना चाहता हो और तुम खाली करने में मजबूर हो सत्यता के आधार पर तुम्हें खाली करना हो।

निवारण-जिस आदमी का मकान हो उसी घर से सरसों का तेल बृहस्पतिवार को लेकर बबुल की जड़ों में चढ़ा दो।

बड़ा अफसर छोटे अफसर या और छोटे आदमी को परेशान करें

निवारण-पाँच गेंदे के फूल और सुपारी दोनों को बाँध कर जो आदमी परेशान करता हो उसके हाथ से 1 गिलास पानी लेकर अपने पास रखों फिर फूल सुपारी और पानी तीनों को इतवार के दिन पीपल पर चढ़ा दो।

पुत्र–पुत्री की शादी के लिए

निवारण-कच्चे अनार में छिद्र करके उसमें धागा पहना दो और वह धागा सफेद रंग का हो उसे पीपल की जड़ में बाँध दो और अनार को ऊपर पीपल पर स्थापित कर दो जिस दिन करोगे उस दिन से 11 दिन तक पीपल पर साबुत मूंग चढ़ावे।

पुत्री–पुत्र मुलिया हो शान्त करने के लिए

निवारण-अनार की जड़ के ग्यारह टुकड़े करो और जिस पर मूल हो वह उन जड़ों को 1–1 करके रोज दूध और जड़ पीपल पर चढ़ावे यह कार्य हर वर्ष जब जन्मदिन से 11 दिन पहले शुरू करना है कभी भी असर नहीं रहेगा।

मनुष्य या बच्चा रात को डरें

निवारण-बबूल की जड़ अपने तकिया के नीचे रखें या अपने बायें पैर से बाँध लें।

नर–नारी या बच्चा सफर करें घटना न हो

निवारण-जिस दिन सफर करने लगे उसी दिन से घर का कूड़ा घर से बाहर न फेंके अपनी चारदीवारी में रखें जब तक वापिस न आयें और उस कूड़े की धूल अपने साथ ले जावें वापिस आकर वह धूल कूड़े में मिला देवें और हाथ–पैर धोकर फिर कूड़ा बाहर फेंक देवें।

बिल्ली रास्ता काटना

निवारण-मनुष्य के सामने से सफर करते या चलते समय निकल जाये उसी समय रुक जाओ और मिट्टी उठाओ और तुरन्त चारों दिशाओं में फेंक दो।

मनुष्य घर से निकले पडोसी टोक दें

निवारण-जब घर से चलो अगर कोई औरत या मर्द, बच्चा टोक दें उसी समय मिट्टी उठाओ और 5 बार सिर के चारों तरफ घुमाओ और ऊपर की तरफ उड़ा दो।

जिस मनुष्य का धन का हाथ भगतों या स्याने द्वारा बाँध दिया गया हो उसे रोकने के लिए

निवारण-पाँच शनिवार डाभ जड़ से उखाड़ कर और सवा सौ ग्राम गुड़ पीपल के पेड़ पर रख दें हर शनिवार पाँच शनिवार यह कार्य करना है। धन आने लगेगा।

पंचायत या फैसला या अंड़गे में जाना हो सफल होने के लिए

निवारण-पाँच प्रकार की दाल साथ रखों जहाँ जाओ उसके आसपास उसमें से छोड़ दो बाकी अपने साथ रखो घर आने के बाद पानी में डाल दो।

पति शराब पीता हो झगड़ा करता हो

निवारण-पत्नी, पति जब सो जाय तभी पत्नी अपने पति की चारपाई के पाँच चक्कर पानी का गिलास लेकर लगाये और उस पानी को तुरन्त पी जाय। पति को चारपाई के दायें से चक्कर लगाने हैं और अगर पत्नी का करना हो तो बांये से चक्कर लगावे।

मित्र धोखेबाज होने के लिए ठीक करना है

निवारण-जो मित्र धोखा देना चाहता हो और मित्र को पता

चलने लगे तभी मित्र के घर का कूड़े की धूल लाकर अपने घर में अग्नि में फूंक दें।

सिर में दर्द हर वक्त रहता हो

निवारण-1 मुट्ठी काली सरसों सिर के ऊपर 5 बार उतार कर किसी भी दिशा में फैंक देवें। 21 दिन तक करना है।

नजर उतारने के लिए

निवारण-7 मिर्च साबुत दायें पैर के नीचे को उतार कर अग्नि में फूंक दो। दो दिन सुबह और शाम।

परिवार के अन्दर घर के अन्दर ऊपरी हवा छोड़ रखी हो पता चल गया हो

निवारण-शनिवार से 3 दिन तक 7 पूड़े मीठे, 7 पतासे चौराहे पर रात के अंधेरे में रखें और मंगल, बुध, बृहस्पतिवार तक तालाब में आटे का हलवा और पतासे या लड्डू रखें। दिन वीरवार (बृहस्पतिवार) को मीठे चावल पीर पर चढ़ायें।

परिवार का मनुष्य घर से चला जाता है बुलाने के लिए

निवारण-चक्की के पाठ के नीचे घी का चिराग 7 दिन तक लगातार जलाओ स्वप्न में दिखेगा जिन्दा है या मर गया या फिर घर के लिए चल दिया है। अगर जिन्दा है तो तुरन्त घर के लिए उतावला हो उठेगा।

कर्ज से मुक्ति हेतु

निवारण-उल्टे हाथ से अपने घर से मिट्टी उठाओ और

कर्ज लेने वाले के घर के दरवाजे पर फैंक दो।

पति–पत्नी का गुलाम हो

निवारण-परिवार का कोई भी सदस्य जो गुलाम हो उसके सोने के बाद उसकी चारपाई के 5 चक्कर काटकर हाथ में 1 जायफल और 1 मुट्ठी गेहूं लेकर किसी भी पेड़ पर रख दो।

जिस आदमी की भाग्य या धन की रेखा सही दिशा में न जा रही हो

निवारण-बहते पानी में पीपल की जड़ दिखती हो उस जड़ को निकाल कर लाल या पीले कपड़े में बाँधकर अपने पास रखें मनुष्य की दिशा बदल जायेगी और 5 बृहस्पतिवार केले के ऊपर जल और पीली दाल चढ़ावें।

पुत्र प्राप्ति के लिए

निवारण-गणेश जी की मिट्टी की मूर्ति बनाओ, मूर्ति को स्थापित कराओ जहाँ पर घर में मन्दिर बनाया हुआ हो, मूर्ति पर रोजाना गुड़ और चना चढ़ाओ फिर उस चने गुड़ को छः वर्ष के लड़कों को बांट दो लड़की दो देना मना है इस कार्य को जब तक करो जब तक गणेश जी वरदान न दें जब महिला गर्भवती हो जाय तब लड़कों को गुड़ चना देना बन्द कर दें और गणेश जी की पूजा करें जब तक पुत्र का जन्म न हो, जन्म होने के बाद उस मिट्टी की मूर्ति को गंगा जी ले जाओ साथ में पुत्र को ले जाओ और ले जाकर पुत्र के बाल कटवाओ ये दोनों कार्य एक साथ ही होंगे। मूर्ति को विसर्जित गंगा में करना है और बाल कटवाने हैं गंगाजी में चढ़ाने हैं। ऐसा करने से पुत्र की प्राप्ति जरूर होगी।

जिस नारी के बच्चा नहीं होता बाँझ कहलाती हो

निवारण-कुदरती तौर से नारी कोई भी बाँझ नहीं होती, सांसारिक मनुष्य ही नारी बाँझ का दोष लगा देते हैं। जिस नारी के बच्चा नहीं होता वह नारी सूर्य देव की पूजा करें और अपने ऊपर सात बार जल और दूध उतार कर सूर्यदेव को चढ़ाये सिर से ऊपर को चढ़ायें जिससे जब तुम चढ़ाओ वह पानी सिर से पैरों तक तुम्हारे सामने से गुज़र कर जमीन पर आ जाय, जहाँ पर नारी जल चढ़ाये कम्बल या कपड़ा बिछा लें उस पर खड़ी होकर जल चढ़ावें अगर ऐसा नहीं करोंगे तो जो आपको वरदान मिलेगा वह पृथ्वी में चला जायेगा और सांड को गुड़ और गेहूं खिलाये रोज खिलावें या इतवार के दिन खिलावें जल रोज चढ़ावे और खाने में मैथी की सब्जी बनाकर खावें और अशोक की छाल दूध में पकाकर सेवन करें दूध को सम्पूर्ण उबाल लें रंग बदलने पर आग से उतारें फिर रोजाना पियें। ऐसा करने से बाँझ नारी को पुत्र वरदान मिलेगा।

नारी के साथ घर में कलेश रहना

निवारण-सतनजा सात अनाज अपने पति से उतार कर सात बार गाय और सांड को खिलाओ सवा महीने तक हर रोज पाँच पतासे गंगाज में मिलाकर अपने माथे पर तेल मलकर गंगा जल में माथा भिगोओ और संकल्प करो भिगोते–भिगोते अपनी चेतना के अन्दर सोचो कि हमारा परिवार शान्ति में रहे कोई भी कलेश न रहे जब यह शब्द माथा टेके–टेके सोचोगे तभी माथा हटा लो और गंगाजल में पतासे डालकर पूरे परिवार को पिला दो। शान्ति स्थापित हो जायेगी।

नारी के साथ घर में कलेश रहना

निवारण-जिस नारी के साथ घर में झगड़ा रहता हो वह नारी अपनी सास को ग्यारह दिन तक सास के पैर छुए और अपने हाथों से नहलावे और भोजन करावे परप्तु पहले संकल्प करे कि मेरा संकल्प पूरा हो और मेरे घर का कलेश का अन्त हो अगर सास का नहीं कर सकते तो इसी विधि को गाय पर करो यह विधि करने से कलेश का निवारण हो जायेगा।

नर–नारी की आपस में झगड़ा रहना

निवारण-चरखे को घर में लाओ और कच्चा सूत लेकर आओ पति पत्नी में झगड़ा हो और पति प्रेम चाहता हो पत्नी से करना तो कच्चे सूत से 108 चक्कर सोते हुए पति या पत्नी के लगाओ और उस सूत को चरखे पर लपेट दो और फिर उस सूत को चलते दरिया में बहा दो, इसके लिए पति–पत्नी के लिए पत्नी पति के लिए कर सकती है।

जिस नारी के साथ झगड़ा रहता है उसके लिए

निवारण-कच्चे दूध को शाम के समय अपने ऊपर उतार कर आटे के पेड़े इस दूध के अन्दर बनाओ और सांड को खिला दो यह कार्य पाँच शनिवार के दिन करना है और जब पाँच शनिवार यह कार्य विधि कर दो उसके बाद सांड को वह सब कुद खिला दो जो दाल चावल आटा जो अनाज आपके घर के अन्दर है। यह कार्य विधि करने से झगड़ा समाप्त हो जायेगा और नारी की घर में इज्जत अधिक होगी।

आपस में पूरा परिवार में झगड़ा हो

निवारण-रूई सवा सौ ग्राम लो उस रूई को 7 बार जो झगड़ा करता है उसके ऊपर उतारो और तेल को अपने पास रखो जब रूई पूरे परिवार पर उतर जाये उस रूई की बत्ती बनाओ जितनी भी बने उतनी बनाओ और उन बत्तियों को शनिवार के दिन मिट्टी के बड़े दिये में डालकर और तेल भरकर सिर्फ एक बत्ती जला दो किसी पवित्र स्थान पीपल के नीचे और उस तेल पर सबके हाथ लगवा दो। 5 शनिवार यह कार्य करें घर में शान्ति स्थापित हो जायेगी।

निवारण-पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा के सामने ग्यारह लोटे मीठा और जौ के दाने डालकर चढ़ावे और दिन के समय सूर्यदेव को रोटी के टुकड़े पर लौटा सिर से ऊपर करके चढ़ावें इस विधि के करने से घर में शान्ति स्थापित हो जायेगी।

भाई–भाई में झगड़ा शान्त कराने के लिए

निवारण-दोनों भाईयों के पैर की मिट्टी उठाकर लाल कपड़े में बाँध दो और शनिवार को काले कुत्तों को तेल से चुपड़ी रोटी खिलाओ और वह मिट्टी उन कुत्तों को सुंघाओ ऐसा 5 शनिवार करना है और फिर वह मिट्टी रोटी में लगाकर कुत्ते को खिला दो मिट्टी थोड़ी–थोड़ी होनी चाहिए जिससे रोटी में डालने के बाद कुत्ता खा सके। ऐसा करने से भाई–भाई में प्रेम हो जायेगा।

भाई–भाई में झगड़ा हो जाये और जो भाई झगड़े को शान्ति में बदलना चाहता हो उसे ग्यारह दिन तक दो सांड को मीठा रोट गुड और रोटी और घी में बनाकर दो पिण्ड बनाकर दो सांड को अलग–अलग खिलाना चाहिए यह विधि करने से झगड़ा शान्त हो जायेगा।

कर्जदार हो जाना

निवारण-शनिवार के दिन किसी मन्दिर से चढ़ा हुआ तेल घर पर लेकर आओ उस तेल से अपने घर पर चिराग जलाओ पहले दिन आमंत्रित करके आओ अपने मन में कहो कि दे देव मैं बहुत कर्जदार हो गया हूं मेरे घर चलिए और मुझे कर्ज से मुक्त कर दीजिए फिर शनिवार के दिन पति–पत्नी दोनों जाकर तेल ले आओ और उस तेल से 5 शनिवार घर में चिराग लगाओ तुम कर्ज से मुक्त भी हो जाओगे और तुम्हें कर्ज लेने वाले भी परेशान नहीं करेंगे।

जो मनुष्य कर्जदार हो

निवारण-जो भी मनुष्य कर्जदार हो उस मनुष्य को ग्यारह दिन तक लगातार कोढी को पति–पत्नी या नर–नारी कोई भी हो उसे खीर खिलाओ दिन शनिवार का होना चाहिए और मुख में मीठा खाना ज्यादा ग्रहण करना चाहिए इस विधि के करने से कर्ज उतरने का कारण अपने आप बन जायेगा।

कर्ज लेने वाला परेशान करे अति परेशान करे

निवारण-जो मनुष्य कर्जदार को अति परेशान करें वह मनुष्य रूई से उस मनुष्य का नाम रूई से बनाये पाँच नाम बनाये और उन नामों को शनिवार के दिन पीपल के नीचे 1 नाम को बिछाओ और उस आदमी के घर की मिट्टी उस नाम में डालो और तेल डालो नाम के अगले हिस्से में एक बत्ती जला दो और 10 मिनट वहाँ पर बैठो ध्यान से संकल्प करो कि मुझे इस आदमी ने परेशान कर रखा है वह मनुष्य आपसे पीछे हट जायेगा तुम्हें परेशान नहीं करेगा।

कर्ज लेने वाला परेशान करे

निवारण-जो मनुष्य कर्ज लेने वाला परेशान करे उसके लिए संकल्प करके पीपल पर एक कलावा बाँध देवे कि हे विष्णु देव मुझे कर्ज के कारण बहुत दुख होता है कर्ज लेने वाला परेशान करता है इसका निवारण कीजिए ग्यारह दिन तक मैं आपके चरणों में आकर शीश नवाऊँगा और जल चढ़ाऊँगा यह संकल्प करके कहना है।

मित्र–मित्र से धोखा करता हो

निवारण-जो मित्र अपनी अच्छाई पर चलता रहे और मित्र उसके साथा धोखा करता रहे उस धोखेबाज मित्र के बाये पैर की मिट्टी उठाओ और उसकी मिट्टी की छोटी से मटकी में डालो और शनिवार को किसी अनजान जगह गाड़ दो उसके अन्दर छेद कर दो और उसके अन्दर तेल भर दो और मिट्टी जो धोखेबाज मित्र की हो उसे वह भी तेल में डालकर गाड़ दो जमीन नीचे से थोथी होनी चाहिए छेद से तेल जमीन में जाना जरूरी है जैसे–जैसे तेल जमीन में जायेगा ऐसे–ऐसे ही उस धोखेबाज का पर्दाफाश हो जायेगा।

मित्र–मित्र को धोखा करे

निवारण-जो मित्र मित्र के धोखे से परेशान हो उसे चलते जल के किनारे बैठकर इक्कीस आटा की गोली बनाकर हर गोली जल में फैंकता रहे और कहता रहे कि मेरा मित्र धोखा न करे उसकी बुद्धि ठीक शुद्ध कीजिए यह कार्य लगातार पाँच दिनों तक करना है। ऐसी विधि करने से मित्र पूर्ण रूप से शुद्ध विचारों का बन जायेगा।

बिजनेस में परेशानी

निवारण-गाय के पूंछ के पाँच बाल लेकर दाहिने हाथ की बड़ी अंगुली में किसी चाँदी की अंगुठी में लपेट कर बाँध लो और हर

शनिवार को गाय को घास खिलाओ और सींगों पर सरसों के तेल से मालिश करो और जब हाथों से तेल सींगों पर लगाओ तुरन्त वह हाथ अपने सिर में मलो चेहरे पर मलो फिर हाथ धो लो।

बिजनैस (व्यापार) में परेशानी दूर करने के लिए

निवारण-जिस मनुष्य को व्यापार में परेशानी हो उसे शनि के दिन पाँच पतासे अपने हाथों में लेकर चलते जल में छोड़ता जाय और यह कहता जाय कि मेरे व्यापार में फायदा हो यह कार्य पहले दिन करना है दूसरे दिन सवा किलो गेहूं ग्यारह मुट्ठी जल के किनारे उसी तरह बोलकर छोड़ो फिर तीसरे दिन आटे की गोली बनाकर बोलकर छोड़ो चौथे दिन दूध छोडो पाँचवें दिन इस सब चीजों को ले जाकर साथ में सवा मुट्ठी चावल जमीन पर रखकर उसके सामने बाकी सामान चढ़ा दो और एक दिया बनाकर तेल डालकर चावलों के ऊपर रख दो।

दुकान कम चलना

निवारण-घर के कूड़े को 41 दिन तक झाड़ू लगाकर घर में इक्ट्ठा करते रहो, 41वें दिन कूड़े को अग्नि में जलाओ और जो राख बने उस राख को अपने पास रखो, रोजाना उस राख को पानी में डालकर छींटा लगाओ, दुकान फैक्ट्री सब कुछ अच्छी प्रकार चलने लगेगा।

दुकान पर किसी के कराने का डर

निवारण-बबूल के पेड़ की छाल गुग्गल शहद गाय का दूध पीपल की लकड़ी इन पाँचों चीजों को लाकर दुकान के अन्दर गायत्री माता का हवन कराने से ऊपर की गई वह सब हट जायेगी।

मुँह पर दाद या सफेद सीप

निवारण-इतवार के दिन 5 मीठे चिल्ले बनाओ और जिसके मुख पर दाद या सफेद सीप हो गये हो वह मीठे चिल्ले यमुना या गंगा नदी पर चढ़ावे चेहरा साफ सुथरा हो जायेगा।

आँख फड़कना

निवारण-धोबी घाट की मिट्टी उस आँख पर लगाओ जो फड़कती हो वह आँख शान्त हो जायेगी। आँख फड़कने से कोई हादसा नहीं होता यह बहम है ऐसा कुछ भी नहीं है यह आँख फड़कना शारीरिक क्रिया है जो शरीर से उत्पन्न होती है बल्कि किसी खतरे को जन्म नहीं देती। अगर बहम हो जाय तो जो ऊपर निवारण लिखा हुआ है वह प्रयोग करो शान्त हो जायेगी।

शरीर के किसी भी हिस्से पर काला निशान

निवारण-कभी–कभी नर–नारी के किसी भी हिस्से पर काला दाग बन जाता है बिना चोट बगैरा लगे बन जाता है, मनुष्य उसे अशुभ मानते हैं। उसका निवारण चुल्हें की मिट्टी जिस चुल्हें पर खाना पकाया जाता है और दोनों तरफ से मिट्टी फूंक जाती है वह मिट्टी काले दाग पर लगाओ गर्म–गर्म लगानी है यह दाग अशुभकारी होता है रिश्तेदारी घर बाहर जो भी अपना सम्बन्ध रखता हो उस पर पीड़ा आ सकती है इसका निवारण ऊपर दे दिया है।

शरीर के अन्दर काला दाग

निवारण-जिस नारी या बच्चे पर फुन्सी होकर या कटने का दाग पड़ जाता है उसके लिए सरसों के तेल को मिट्टी के बर्तन में डालों और उसमें ग्यारह लौंग और बबूल के फूल अपनी बुद्धि के

अनुसार डालों और जमीन में गाड़ दो ग्यारह दिन तक गड़ा रहने दें ग्यारह दिन बाद निकालकर रोजाना उस निशान पर मालिस करें।

जब आप घर से निकले कोई टोक दे

निवारण-अपने रूमाल से भिगोकर निचोड़ों और अपने पैरों से लेकर मुख तक उस रूमाल को फिरा दो रास्ते में चलता हुआ मनुष्य भी इस कार्य को कर सकता है, पानी तो हर जगह मिल जाता है और एक गिलास पानी पियें इससे निवारण तुरन्त हो जायेगा।

मनुष्य जब किसी मनुष्य की मौत देख लेता है या जाना पड़ जाता है घबराना

निवारण-जब मनुष्य किसी रास्ते या अड़ोस पड़ोस में ऐसा हादसा देख ले और उस मनुष्य को सहन न होता हो, आदमी जब यह देखने के बाद जहाँ कही भी स्नानघर रिश्तेदारी में जा रहा हो और अचानक ऐसा देख ले तभी पहुंचकर किसी बर्तन में पानी भरो भरकर सूर्य की रोशनी में रखों और अपना चेहरा 2 या 3 बार देखो फिर गीला कपड़ा उस पानी में करो और सिर पर बाँधकर लेट जाओ थोड़ी देर तक लेटे रहो सब कुछ शान्त हो जायेगा।

मनुष्य कभी-कभी हादसा होने से बाल-बाल बच जाता है घर पर आकर उसका निवारण करना चाहिए

निवारण-मनुष्य जब यात्रा करता है या घर पर अचानक कोई दुर्घटना होने से बच जाता है ईश्वर की कृपा समझिये और उसका निवारण कीजिए, ग्यारह दिन तक केले को छीलकर उस पर चीनी लगाकर चींटियों के घर पर जाकर बैठ जाईये और टुकड़े करके

रख दीजिए जब चींटी उस पर न आ जाय उठिये मत बैठे रहिये जब चींटी केले के टुकड़ों पर खाने के लिए आ जाय तक घर आईये।

जिस दिन मनुष्य दुर्घटना होने से बच जाये उस घर पर आकर अगले दिन सुबह पाँच कन्याओं को भोजन करायें और उनके चरणों को स्पर्श करें यह विधि ऐसी दुर्घटना होने से जरूर करनी चाहिए इसके करने से निवारण हो जाता है।

कभी–कभी बच्चा बहुत रोता है माता–पिता परेशान हो जाते हैं

निवारण-जो बच्चा अधिक रोता है सबसे पहले उसका पेट चैक करवाईये क्योंकि अधिकतर छोटे बच्चे जो माता का दूध पीते हैं पेट में कीड़े होने के कारण रोते हैं क्योंकि पेट में दर्द होता है। माता–पिता को पता नहीं चल पाता है और अगर ऐसा नहीं है तब उस बच्चे पर पाँच चिराग जलाकर पाँच बार उसके ऊपर को उतार कर केले या पीपल के पेड़ पर रख दो या बच्चा साथ लेकर जाओ और वहींपर जलाओ तेल डालो और उतार दो तुरन्त ठीक हो जायेगा।

छोटे शिशु पर नजर भी लगती है

निवारण-शिशु की माता सुबह के समय सोने से उठे तभी उस बच्चे के मुख में अंगुली से बच्चे का थूक निकाले और उसके माथे पेट पैर पर लगा देवें ऐसा करने से नजर नहीं लगेगा।

शिशु के ऊपर पाँच बार आटा उतार कर सरसों के तेल में रोज पाँच दिन तक डाल दें और फिर उस तेल और आटे को कुत्ते को खिला दें इस विधि के होने से शिशु पर नजर नहीं लगेगी।

खून का दोर कम होना

निवारण-सिर से नीचे को करके पैर ऊपर को करें और ऐसा पाँच बार करें पहले बार से लेकर आखिरी बार तक एक–एक लौंग

चबाये जब लौंग पूरी तरह चबा ली जायेगी तभी आसन से वापिस हो ऐसा करने से खून का दोर ठीक हो जायेगा। सवा महीने तक लगातार करने से खून का दोर कभी भी कम नहीं हो सकेगा एक दिया तेल का सिर के पास जला देवें और आँखों के तारे लौ पर लगावें।

खून का दोर ज्यादा होना

निवारण-घी का दीपक जलाओ और आसन लगाकर बैठ जाओ जमीन पर आसन लगाओ और निगाहें उस दिये की लौ पर लगाये रखो और श्वांस को ऊपर नीचे रोक–रोक कर छोड़ें जितनी देर लो पर निगाहे रखें पलक न झपकायें देखते रहे और श्वांस को रोके रखें बार–बार ऐसा करने से खून का दोर कभी भी ज्यादा नहीं होगा। सवा महीना लगातार करे और अगर बीच में कभी ऐसा हो जाय तभी सवा महीना फिर दोबारा करे अगर दो बार करने की जरूरत पड़ी तो समझों कि जो पहली बार किया था उसको ठीक प्रकार से नहीं किया क्योंकि सही नियम से सवा महीना किया जाय तो पूरे जीवन दोबारा खून का दौर ज्यादा नहीं हो सकता।

पेशाब में सफेदा आना

निवारण-आग में जमान ढाई ग्राम भुनो उसको केले के छिलके से सवा महीना तक खाओ सुबह के समय और गुड़ चले सोमवार के दिन केले पर चढ़ाओ और तेल का दीया जलाओ सवा महीना लगातार करने से यह बीमारी समाप्त हो जायेगी।

सुबह के समय पाँच गिलास पानी पीयो उसके बाद और कार्य करो और बीसों अंगुलियों को सुबह के समय जमीन पर पंजों के बले खड़े हो जाओ और फिर दसों अंगुलियों पर खड़े रहना है और हाथों की अंगुलियों को दीवार से लगाना है फिर पानी पीना है। इक्कीस दिन तक लगातार करने से आन्तरिक रोग समाप्त हो जायेगा।

घर के बाहर टोटका किया हो

निवारण-दो जोड़े पान के बावन लौंग के जोड़े सात मिठाई, बाबन चूड़ी, सिन्दूर के मिठाई पर सात टीके लगाकर चलते जल में शनिवार की रात को जल में प्रवाहित कर दो और चार बत्ती का तेल का दिया नदी के किनारे जला दो जब इस सामान को छोड़ने जाओ तभी यह दिया जलाकर आना है पीछे की तरफ मत देखो। ऐसा करने से सदैव के लिए टोटका काने वाले से छुटकारा मिल जायेगा।

जब कोई अधर्मी मनुष्य रोज–रोज घर के सामने टोटका करे तो उसके लिए रात के समय तीन लड्डू और साबुत उड़द ढाई सौ ग्राम उबाल कर तीन दिन तक चौराहे पर रखें और तीन दिन तक गतवाडे और तालाब पर मीठे पूड़े चढ़ावे और पास के पीर पर वीरवार के दिन मीठे चावल चढ़ावे, अगर किसी भी मनुष्य के साथ ऐसा व्यवहार होता है तो वह उसी समय यह कार्य करे इससे करने वाले अधर्मी को भी दण्ड मिलगा।

नारी के स्तन में गांठ होना

निवारण-ओखली हो या मोमजस्ता हो उसके अन्दर स्तनों पर सात मिर्च लाल और तेल का दिया दोनों उतार कर सात दिन तक ओखली में रखना है या ओखली न हो तो मोमजस्ता जो लोहे पत्थर का होता है उसमें रखो सात दिन तक ऐसा करने से नारी के स्तनों की गांठ समाप्त हो जायेगी।

नारी के स्तनों में दूध बढ़ने के कारण गांठ हो गई हो

निवारण-नारी के स्तनों में गांठ हो जाय तो पाँच बत्ती तेल की बनाकर ऊपर से नीचे तक उतारो और एक रुपया सिक्के वाला बत्तियों के साथ उतारो और उतार कर मिट्टी के बर्तन में डालो ग्यारह

दिन तक ऐसा करने से स्तनों की गांठ घुल जायेगी।

भैंस का दूध सुखने का रोकने के लिए

निवारण-मंगलवार के दिन भैंस के खूटे पर तेल का चिराग जलाओ पाँच मंगलवार और इस कार्य को शाम के अन्धेरे में मंगलवार के दिन करना है और चिराग के सामने दूध रख दो 50 ग्राम और उस दूध को कुत्तों को पिला दो ऐसा करने से भैंस अच्छी प्रकार दूध देने लगेगी।

भवन निर्माण सम्बन्धी टोटके से उपाय

निवारण-सवा फुट जमीन खुदाई करो जहाँ पर भवन निर्माण करना हो शनिवार के दिन उस गड्डे में सरसों का तेल भर दो और हर शनिवार उस गड्डे में पाँच गेंदा के फूल और सवा सौ ग्राम दूध डालो और हाथ जोड़ दो पाँच शनिवार ऐसा करने के बाद भवन निर्माण करो सम्पूर्ण हो जायेगा और बिजनेस या घर कुछ भी बनाओगे सम्पूर्ण चलेगा और कभी भी कोई रूकावट या किसी ऊपरी अघोर हवा का असर नहीं होगा वह जगह हरी भरी रहेगी।

रोग मुक्ति के लिए

निवारण-शनिवार के दिन काले तिल और तेल किसी कपड़े में डालो कपड़े का रंग काला होना चाहिए सवा सौ ग्राम काले तिल कपड़े में बाँधो और उसे पीपल पर टांग दो हर शनिवार को उसमें तेल डालो रोगी के हाथों से लगा हुआ होना चाहिए सात बार वह तेल पीपल के शरीर पर टपका कर आ जायें और हर शनिवार तेल का उसी पीपल के नीचे चिराग जलाओ ऐसा करने से रोगी रोग से मुक्त हो जायेगा।

सन्तान सम्बन्धी

निवारण-जिस नर-नारी की आयु जितनी हो उतने ही पेड़ों के पत्ते तोड़ कर घर पर लावें और उन्हें सरसों के तेल में डूबो देवें बर्तन

मिट्टी का बड़ा होना चाहिए और रोज एक पत्ता और थोड़ा तेल उस बर्तन में से नारी निकाल कर गाय के सींगों पर लगाये और एक पत्ता रोजाना गाय को खिलाये और साथ के साथ आटे का पेड़ा दूध चीनी तीनों मिलाकर गाय को खिलाये ऐसा करने से सन्तान प्राप्ति होगी। जब यह कार्य सम्पूर्ण हो जाय उसके बाद साड़ और गाय दोनों को खीर पूरी खिलायें और पूरी उस तेल में बनाये जो बरतन में पत्तों के साथ डाला हुआ है। वह इतना होना चाहिए कि उसमें पूरी उतारी जा सकें।

कार्य सिद्धि

निवारण-पीपल के पेड़ पर कलावे की चारों तरफ इक्कीस दिन तक गांठ लगावें और हर रोज संकल्प करके कहें कि हे पीपल वनस्पति मेरा कार्य सिद्ध कर दे, मैं आपकी शरण में आया हूँ यह गांठ लगाकर पीपल पर जल चढ़ा देवें इक्कीस दिन के अन्दर-अन्दर कार्य सिद्ध हो जायेगा।

दूरी से उधार गया माल के बदले धन मंगाने हेतु

निवारण-पीपल की जड़ में कलावे की चारों तरफ पाँच गांठ लगा दो और हर शनिवार को धन मंगाने का भाव नाम लेकर एक जायफल एक गांठ पर बांधना है। यह कार्य विधि पाँच शनिवार करनी है। इस विधि के करते समय के अन्दर जिस मनुष्य पर धन चाहिए वह भिजवा देगा।

दृष्टि दोष

निवारण-जिस पर दृष्टि दोष हो बहुत ज्यादा हो तो किसी अनजान जगह जमीन में 8 अंगुल का गड्डा करो और जिस पर दृष्टि दोष हो उसके ऊपर को तीन दिन लगातार पाँच नमक की डली, पाँच

लौंग और पाँच साबुत लाल मिर्च सात बार उतार कर उस गड्डे में डालकर फूंक दें। तीसरे दिन जब अन्तिम बार करो करने के बाद उस गड्डे को जो मिट्टी निकली हो उसी से भर दें। इस विधि के करने से बीमार आदमी भी ठीक हो सकता है और नजर कितनी भी बुरी लगी हो वह तीन दिन में पूर्ण रूप से उतर जायेगी।

चुडेल के उतारने का टोटका

निवारण-पाँच तेल की बत्ती जलाओ और गुग्गल की धुनी जलाओ, पाँच मिर्च उस बीमार पर से उतार कर एक-एक बत्ती पर एक-एक मिर्च फूंकों और यह कार्य करने के बाद मीठा चावल बनाकर वीरवार के दिन शाम अन्धेरे में पीर पर चढ़ाओ और शनि से शनि तक तीन लड्डू और एक पाव उड़द उबाल का साबुत चौराहे पर रखो इसी के बीच में एक दिन मीठे चावल किसी तालाब पर चढ़ाओ शाम के समय यह कार्य करने से चुडेल सिर से उतर जायेगी। बीमार करे तो बहुत अच्छा होगा अगर दूसरा आदमी करे तो बीमार से सात बार उतार कर ले जाय यह विधि करने से चुड़ेल उतर जायेगी फिर सवा महीने तक गुग्गल की धुनी घर में जलाओ और गंगाजल का छींटा लगाओ।

बालक के रोना बन्द करने के लिए

निवारण-कोंवा के पंख या किसी काले पक्षी के पंख बच्चे की जेब में रख दो या फिर बच्चे की तकिया के नीचे रख दें और तेल का चिराग जलाकर उस पंख से रोजाना बच्चे को सात बार झाड़ा लगावें। यह विधि करने से बालक रोना बन्द कर देगा।

बालक पर मसान रोग के लिए

निवारण-जिस बालक पर मसान रोग हो, बबूल के पेड़ के नीचे 40 दिन तक दिया जलायें दीया तेल का होना चाहिए, खुद बालक को साथ लेकर जायें और उसी बबूल की छाल को घर पर

लाकर कूटकर बारीक बना लें और उसका सेवन प्रतिदिन शहद से करें, जब चालीस दिन पूरे हो जाय उस बबूल के पेड़ के चारों तरफ पाँच तेल के दीपक बच्चे पर से पाँच बार उतार कर रख दें और बेसन का हलवा चढ़ा देवें। यह विधि करने से बच्चा ठीक हो जायेगा।

स्वयं रक्षा करने का टोटका

निवारण-जिस मनुष्य को शरीर रक्षा कवच की जरूरत हो वह मनुष्य पीपल की जड़ ग्यारह दिन पीपल की जड़ों में तेल की ज्योत लगायें शनिवार से चालू करें फिर ग्यारह दिन तक यह कहकर ज्योत जलावें कि पीपल देव मुझे शरीर रक्षा कवच दो मैं आपकी सेवा पूजूंगा यह वाक्य रोज दोहरा देवें और ग्यारहवें दिन फूल और मीठा प्रसाद चढ़ाकर जड़ों में से एक छोटी जड़ काट कर ले आयें। उसको लाल कपड़े में बांधकर साथ रखें यह विधि करने से मनुष्य के ऊपर किसी प्रकार का किया–कराया का असर नहीं हो सकता है।

टोने–टोटके पर टोटका

निवारण-अपने घर में कोई मनुष्य टोटका करे उसको रोकने के लिए लकड़ी की हांड़ी बनाओ उसमें ग्यारह मिठाई साबुत उड़द एक मुट्ठी मीठे चावल पकाकर एक मुट्ठी पाँच पूडे मीठे तीन लड्डू उसमें रखकर और अपने घर की मिट्टी और घर के चारों तरफ की मिट्टी सब कुछ उस लकड़ी की हांडी में डालकर जमीन में गाड़ दो। ग्यारह दिन बाद उस हांडी को निकालकर ले आओ और जो सामान हो उसे वहीं पर छोड़ दो और हांडी को फिर धोकर अपने घर में स्थापित कर दो और कभी–कभी शनिवार के दिन उसके आगे तेल का चिराग जला दो, उस घड़ी में पाँच मुट्ठी चावल डाल दो। यह विधि करने से किसी प्रकार का टोना टोटका असर नहीं करेगा कोई कुछ भी करे उस हांडी पर भरोसा रखना है।

जिस मनुष्य को किसी के किये–कराये दोष होने का शक हो

निवारण-जिस मनुष्य पर ऊपरी दोष होने का डर हो उस मनुष्य को बरगद के पेड़ पर पाँच चूड़ी लाल माता, काली माता का नाम लेकर और प्रत्येक चूड़ी पर उस मनुष्य का नाम लो जिसने तुम्हारे घर में कराया हो और उन चूड़ियों को बरगद की डाली में टांग दे।

भैंस का दूध बढ़ाने के लिए

निवारण-साबुत कच्चा आंवला पाँच पीस, इक्कीस साबुत इलायची, पाँच सौ ग्राम गुड़ इस सामान को बड़े कपड़े में बाँधकर पाँच दिन तक किसी ऐसी जगह पेड़ पर बाँध दो जहाँ पर कोई न जाता हो क्योंकि यह सामान दिखना नहीं चाहिए, वह सामान जो पेड़ पर बांधा है उस सामान को रोज हाथ जोड़कर आओ। यह कार्य पाँच दिन तक करना है फिर उस सामान को पाँचवें दिन घर ले आओ और उसे पकाकर रोज पाँच दिन तक एक बार किसी बर्तन या नाली से भैंस को पिलाओ जब तक भैंस का दूध देने का पूरा समय होगा पूर्ण रूप से दूध देगी।

भैंस की नजर उतारने के लिए

निवारण-भैंस की नजर उतारने के लिए पाँच मिर्च गुग्गल की धुमनी जलाओ अलग से और पाँच मिर्च तेल में भिगोकर भैंस के सिर से पीछे तक उतारो जब तक यह कार्य करें गुग्गल की धुमनी जलती रहे और जब मिर्च उतार पाँच बार उनको गड्डे में डालो और भैंस के नीचे की मिट्टी डालो फिर उसमें आग लगा दो। यह विधि करने से भैंस पर नजर नहीं लगेगी।

घर के सामने टोटका काटने के लिए

निवारण-घर से जो चौराहा पास में पड़ता हो उस चौराहे पर या दूर के चौराहे पर शनिवार से शनिवार तक 300 ग्राम साबुत उड़द उबाल कर तीन लड्डू रोज अंधेरा होते ही रख दो और वीरवार के दिन मीठे चावल ढाई सौ ग्राम बनाकर पास वाले पीर पर चढ़ा दो ऐसी विधि करने से उन आदमी पर जो इस कार्य को करता है उसी को नुकसान पहुंचेगा और जब नुकसान पहुंचेगा करने वाला बन्द कर देगा।

पुत्री की शादी होने के लिए

निवारण-मंगलवार के दिन गऊ माता को गुड़ और बिना नमक की रोटी खिलाओ और सवा मुट्ठी चीनी, सवा मुट्ठी चावल और सवा पाँच रुपये एक सवा मीटर सफेद कपड़े में बाँधकर किसी एकान्त स्थान में घर के अन्दर रख दो और हर इतवार को दो घी के चिराग लगाओ सवा महीना लगातार लगाओ और सवा महीने के बाद हर अमावस्या को चिराग जलाओ जब पुत्री की शादी हो जाय यह सामान गंगा जी ले जाकर प्रवाहित करना है।

पुत्र की शादी कराने के लिए

निवारण-इतवार के दिन साँड को गुड बिना नमक की रोटी खिलाओ और सवा मुट्ठी चावल सवा मुट्ठी चीनी और सवा पाँच रुपये सफेद कपड़े में बाँधकर रख दो हर अमावस्या को घर में दो चिराग लगाओ और गाय और सांड दोनों को बिना नमक की रोटी खिलाओ, शादी होने के बाद जो सामान रखा गया था, वह गंगा जी में जाकर प्रवाहित करना है।

पिता-पुत्र में प्यार होने के लिए

निवारण-साबुत दाल उड़द की पिता के हाथों हर शनिवार को काले कौए को खिलायें उड़दों को भिगो देवें और कूट लेवें कूटने

के बाद गुड़ और सरसों का तेल मिला देवें फिर मिलाने के बाद कुत्तों को डाल देवें और कोए को खिला देवें पाँच शनिवार तक करने से पिता–पुत्र में प्यार हो जायेगा।

यदि किसी मनुष्य के घर में झगड़ा होता हो ऊपरी किया कराया हो

निवारण-पाँच तेल के दिये जलाओ और प्रतिदिन शनिवार को शाम रात होने पर पीपल पर ले जाकर जलाओ इतवार से लेकर शनिवार तक सात दिन यह विधि करो फिर सात दिन सबके ऊपर तेल में उतारी हुई पाँच पूरी अपने ऊपर उतार कर और पाँच मिठाई कुत्तों को सात दिन खिलाओ यदि घर में किसी का कुछ किया कराया होगा सब समाप्त हो जायेगा।

पुत्र पिता का कहने में चलाने के लिए

निवारण-सरसों के दाने मुट्ठी में लेकर पाँच बार पुत्र की चारपाई के चक्कर लगाओ दिन पूर्णमासी की रात हो जब चन्द्रमा पूर्ण दिखता हो चलते जल में प्रवाहित करना है। यह कार्य पढ़े परन्तु किसी को अपनी जुबान से मत बताओ कि मैंने ऐसा किया है अगर ऐसा करोगे तो फायदा नहीं होगा, पाँच पूर्णमासी करना है।

बहु–सास में शान्ति कराने के लिए

निवारण-बहु सास की चारपाई में सोने के बाद पाँच बार मुट्ठी में चावल लेकर चक्कर लगाये दिन शनिवार का होना चाहिए और वह चावल हर शनिवार के दिन काले कौएं को डाल देवें। यह कार्य पाँच शनिवार करना है, बहु सास के लिए करे या सास बहु के लिए करे दोनों कर सकती हैं।

ससुराल में विवाद होने के कारण पुत्री मायके से ससुराल भिजवाने के लिए

निवारण-चार नींबू काटकर और लड़की के ससुराल की उस सदस्यों की मिट्टी जिसके कारण झगड़ा होने से पुत्री पिता के घर हो। उसके पैर की मिट्टी उठाकर लाओ और चारों नींबू को काटकर उस मिट्टी को नींबू में भरकर चूल्हें की जो गर्म राख हो उसमें दबा दो। यह कार्य हर शनिवार को करना है मिट्टी सिर्फ एक बार ही लानी है। वह मिट्टी की हर शनिवार को चलेगी। ऐसा करने से पुत्री ससुराल चली जायेगी, सब परिवार सुख शान्ति में हो जायेंगे।

शराब छोड़ने का टोटका

निवारण-जो मनुष्य शराब पीता है और शराब पीनी छोड़ना चाहता है उसे रोज अपने आंगन में शाम को अंधेरे में चालीस दिन लगातार तेल का दिया जलाये और यह कहकर जलाये कि हे धरती माता में आपकी शरण में हूँ और मैं शराब पीने की बुराई छोड़ना चाहता हूँ यह वाक्य कहे और फिर अपने घर में आकर 108 बार ॐ का मनन करे ऐसा करने से शराब छूट जायेगी, जो मनुष्य इस विधि को सही तरीके से प्रतिदिन चालीस दिन करेगा वह शराब के पास भी नहीं जायेगा।

नशीले पदार्थ छुड़ाने के लिए

निवारण-गाय को चालीस दिन तक रोटी और गुड़ लगातार खिलाओ और गाय मूत्र का शाम के समय सेवन करो पाँच ग्राम या 10 ग्राम अगर आप ऐसा करोगे तो नशीले पदार्थों से तुरन्त छुटकारा मिल जायेगा, पीने खाने के लिए दिल नहीं करेगा।

पढ़ाई में मन लगाने के लिए

निवारण-सुबह या शाम के समय घी की ज्योत जलाकर उसके सामने आसन लगाकर सिर्फ आधा घंटा बैठो और उस ज्योत पर एकटक देखते रहो और श्वासं को ऊपर नीचे अपने आप मस्त होकर चलते रहने दें और ओम का मनन करते रहो चालीस दिन तक ऐसा करने से तुम्हारा मन माता–पिता–परिवार और पढ़ाई में लग जायेगा।

मिर्गी के लिए

निवारण-मिर्गी के दौरे के लिए सिर की क्रिया का कार्य है, दीवार के साथ चालीस दिन तक सिर नीचे और पैर ऊपर करके सात बार करो और घी का दिया जलाकर जिधर मुख आये उधर रखो और जब दीवार पर यह आसन करो तभी आंखों से दिये की लौ को देखते रहो और इक्कीस बार ओम का नाम लो शुरू में कम लिया जाय परन्तु बाद में इक्कीस बार पूरा नाम आसन करते हुए करो और गायत्री महामन्त्र की माला रोज करो यह विधि करने से मिर्गी का दौरा कभी नहीं पड़ेगा।

आग से जल जाने के बाद तुरन्त टोटका

निवारण-जल जाने के बाद इक्कीस दिन तक शिवलिंग पर जल चढ़ाओ और घी का दिया जलाओ और जो पानी बहकर नीचे गिरता है शिवलिंग से उसे ओट कर घर ले आओ रोजाना उस जल का सेवन करो और सुबह उठकर अपना थूक और देशी घी दोनों को मिलाकर लगाओ थूक सुबह का शुरू वाला होना चाहिए दोनों को मिलाकर लगाओ जहाँ से जला हो ऐसी विधि करने से निशान भी समाप्त हो जायेगा।

आधा शीशी दर्द

निवारण-चालीस दिनों तक एक घी की ज्योत लगाकर अपने सिर के चारों तरफ घुमायें और उस ज्योत को बाहर आंगन में किसी गमले में रख दें और फिर चावलों को भुन कर दस चावल खायें चबायें और दस कच्चे चावल अपने ऊपर पाँच बार उतार कर ज्योत में डाल दें यह विधि करने से आधा शीशी का दर्द समाप्त हो जायेगा।

बायसुल का दर्द

निवारण-नमक का पानी उबाल कर उसमें ढ़ाई सौ ग्राम सरसों डालें पानी उबालें और पेट को कपड़े से धीरे आराम से गर्म पानी से झाड़ें और ऊपर से नीचे तक तेल का दिया जलाकर आंगन में रख दो। यह विधि करने से बायसुल का दर्द ठीक हो जायेगा।

कण्ठमाला ठीक करने के लिए

निवारण-बबुल की डाली तोड़ कर उसके ग्यारह टुकड़े करो और उसको पीले धागे में पिरों कर गले में डाल देवें और रोजाना ग्यारह दिन तक बबूल के पेड़ के नीचे जड़ों में तेल का चिराग अपने हाथों से जलायें यह विधि करने से कण्ठमाला ठीक हो जायेगी।

कोढी के दर्द के लिए

निवारण-सीधे धरती पर लेटकर नाभि (सूंडी) के ऊपर मिट्टी तेल का दिया पाँच दिन सुबह के समय जलायें पाँच मिनट तक जलाते रहे और बाद में वह तेल जो दिये में हो उसे नाभि के ऊपर लगा देवें। इस विधि के करने से कोढी डिगी हुई ठीक हो जायेगा।

खसरा ठीक करने के लिए

निवारण-खसरा ठीक करने के लिए हींग सवा सौ ग्राम लाल कपड़े में बाँधों और गले में बाँध दो और रात के समय पचास ग्राम

आटा उस पर उतार कर हथेली पर लेकर होंठों से बाहर की तरफ फूंक मार दो इस विधि के करने से खसरा ठीक हो जायेगा।

गर्भ रोधक

निवारण-जिस नारी को गर्भ नहीं रुकता उसके लिए विध अपने पैरों की मिट्टी की गांठ काले कपड़े में बाँधों और मिट्टी का बड़ा दिया लो उसमें तेल भरो और जलाओ और वह मिट्टी उस दिये में गांठ सहित डाल दो और फिर सात बार ऊपर से नीचे तक उतारो फिर उस दिये को बाहर आंगन में गमले में रख दो गमला किसी पौधे का जरूर लेना है। जब ग्यारह दिन बीत जायें फिर उस दिये को और गमले को बहते जल में छोड़ दें यह विधि करने से गर्भ धारण हो जायेगा।

गर्भ स्थापक

निवारण-जिस दिन गाय बछड़ा देवें उस दिन उस गाय के नीचे की मिट्टी उठा लेवें और गाय के घी के ग्यारह दिन तक दिया जलावें और उस मिट्टी को पीले कपड़े में बाँधकर अपने पेट से बाँध देवें तगड़ी की तरह तब तक न खोले जब तक गर्भ स्थापित नहीं होता और जब स्थापित हो जाये उस मिट्टी को नौ महीने तक मिट्टी के छोटे बर्तन में रख दें और उसके सामने गाय के घी का दिया जलाते रहें घर का कोई भी दिया जला सकता है। इस विधि के करने से गर्भ धारण भी हो जायेगा और सुरक्षित भी रहेगा, जब बच्चा जन्म ले ले फिर उस मिट्टी के बर्तन को जिसमें मिट्टी रखी है मिट्टी सहित गंगा या यमुना में प्रवाहित कर देवें।

गूंगापन ठीक करने के लिए

निवारण-कछुवे की खोपड़ी में पाँच बादाम पानी डालकर रोजाना भिगो देंवे शाम को भिगोवे और सुबह के समय उस पानी को

पीवें और जिस दिन करना शुरू करें उसी दिन पीपल के पेड़ की खोखर में घी का दिया जलाकर आवें और जिस दिन चालीस दिन हो जावें उस दिन फिर पीपल की खोखर में दिया जलावें बाकि दिन खोपड़ी में बादाम भिगो देवे और पानी पीते रहें जब पीपल पर दिया जलावें संकल्प करें कि यह बच्चा चालीस दिन में बोलेगा तो मैं प्रसाद और दिया जलाने आऊँगा। इस विधि के करने से बच्चा बोलेगा।

किसी अघोरी भगत से मनुष्य डरता हो उसके लिए

निवारण-ग्यारह दिन तक पीपल पर दूब की जड़ पर उस अघोरी भगत का नाम लेकर कि वह मुझे तंग न करें और जो भी करे वह खुद भरे कहकर तेल की ज्योत जलाओ और दूब पर कलावे की पाँच गांठ लगाओ पाँच बार ही पीपल पर दूब रखते समय भगत के बारे में यह वाक्य बोलो, ग्यारह दिन तक रोजाना इसी तरह से करो कोई भी भगत कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह विधि लगातार करनी है बीच में छूटनी नहीं चाहिए।

घाव गले सड़े को ठीक करने के लिए

निवारण-बबूल की कोमल पत्ती रोजाना चबाओ और बबूल की छाल को कूटकर कपड़छान करके उसमें शहद मिलाओ रोजाना अपने घावों पर लगाओ और एक दिनया अपने ऊपर तेल का जलाकर उतारो पाँच बार उतार कर अपने आंगन में रख दो इस विधि को करने से घाव ठीक हो जायेंगे।

चुहें भगाने के लिए

निवारण-ग्यारह दिन पीपल पर गुड़ और चने चढ़ाओ और जिस दिन जलाओ उस दिन अपने घर की धूल पीपल की जड़ों में

रखकर बोलो कि मेरे घर से चुहें चले जावें मैं ग्यारह दिन तक पीपल देव दिया जलाऊँगा और गुड़ चना चढ़ाऊँगा। इस विधि से चुहें चले जायेंगे इसके बीच में अशब्द न बोलों।

जुँए निकालने–भगाने के लिए

निवारण-पाँच बत्ती नीम के तेल से जलाओ और सिर के ऊपर से उतारो और उतार कर नीम के पेड़ के नीचे रख दो और बोलो कि जुएं उतार कर अपने पास ले आओ, पाँच दिन तक यह विधि करनी है। फिर नीम का तेल बालों के अन्दर लगाओ।

चेहरे का दाग–झाईया ठीक करने के लिए

निवारण-मौसमी के हरे छिलके शाम को पानी में भिगो देवे और सुबह के समय उसको पिये और चेहरा उसी पानी से धोवें और एक दिया गाय के घी का लगावें जब घी दिये में गर्म हो जावे उसको रात के समय चेहरे पर मलें इस विधि से चेहरे के दाग ठीक हो जायेंगे झाईयां भी ठीक हो जायेंगी।

जिगर रोग को ठीक करने के लिए

निवारण-गन्ने का रस और मूली को दोनों को सुबह शाम खावें और अपने ऊपर से तेल का दिया जलाकर रोजाना सीधा लेटकर पेट पर खें जितनी देर रख सकते हो फिर उस दिये को मिट्टी में दबा देवें ग्यारह दिन तक यह विधि करें जिगर ठीक हो जायेगा।

तृतीया चतुर्थी या ज्वर उतारने के लिए

निवारण-आँख का पेड जो घर से कुछ दूरी पर हो उसके नीचे शनिवार से शनिवार तक तेल की ज्योत जलाओ और पाँच पूड़े मीठे और पाँच पतासे, पाँच लौंग अपने ऊपर से उतार कर रोज आँख पर चढ़ाओ और जब बुखार उतर जाय मीठा प्रसाद बांट दो खाने में

लौंग पानी में उबाल कर पिलाओ।

खुजली दाद ठीक करने के लिए

निवारण-बबूल की जड़ों को तेल सरसों का हो में उबालो और नीम की छाल भी तेल में डाल दो दोनों जड़ों और छाल को साथ-साथ उबालों और वह तेल शीशी में डालकर रखो रोजाना मालिस करो और अपने ऊपर से पाँच चीले मीठी रोटी उतार कर और पाँच पतासे उतार कर इतवार के दिन नदी में प्रवाहित कर दो इस विधि के करने से खुजली दाद ठीक हो जायेगा।

दिल का रोग ठीक करने के लिए

निवारण-गाय का घी में लहसुन भूनकर सुबह के समय एक पोथी लहसुन की और आधी पोथी शाम रात को शहद से सेवन करें और आग जलाकर लहसुन की धुमनी धुआ निकाल कर सूंघे चालीस दिन ऐसा करने से दिल का रोग समाप्त हो जायेगा। सबसे पहले दिन छः वर्ष की कन्या से अपने ऊपर को उतार कर घी का दिया घर के आंगन में लगवा दें। यह विधि करने से दिल की तकलीफ दिल घबराना ठीक हो जायेगा।

पागलपन ठीक करने के लिए

निवारण-शुक्ल पक्ष से लेकर पाँच पूर्णिमा तक उपले जलाकर शहद और गाय का घी गुग्गल मिलाकर हवन करें और रात के समय पाँच दिये अपने आंगन में तेल के जलाकर साठ वर्ष के बूढ़े के हाथों से पागल बीमार के ऊपर से नीचे तक पाँच बार उतारकर रख दें और जिस दिन शुरू करें गंगाजल का छींटा लगावें और जब पूर्ण रूप से ठीक हो जाय गंगाजी में नहला दें। इस विधि के करने से किसी प्रकार से पागल हुआ हो वह ठीक हो जायेगा।

पीलिया रोग के लिए

निवारण-बबूल की जड़ों में ग्यारह दिन तक दिया जलावे और बबूल के नीचे जाकर बैठें और बबूल की कोमल कलियां चबाते रहे ऐसा करने से पीलिया रोगी ठीक हो जायेगा या फिर बबूल की छाल को कूटकर कपड़छान करके शहद में मिलाकर खायें दो प्रकार की विधि करने से पीलिया रोगी ठीक हो जायेगा।

पुत्रदा योग

निवारण-गाय जहाँ पर बांधी जाती है उसके खूटे पर पाँच दिन तक अपने पेट के नाम का कलावा बांध आयें और सबसे पहले दिन घी की ज्योत जला देवें और फिर रोजाना यह कार्य करें और सूर्यदेव के सामने लोटा सिर ऊपर करके जल चढ़ावें यह कार्य शुक्ल पक्ष से शुरू करें। पुत्र का योग सिद्ध होगा।

प्रसव वेदना

निवारण-प्रसव के समय नारी को परेशानी हो उसके लिए अपने घर के चूल्हें में तेल का दीया जला देवें चूल्हा मिट्‌टी और ईंटों का होना चाहिए जब भी पीड़ा हो तुरन्त ऐसी विधि करनी चाहिए जिससे प्रसव में परेशानी न हो सके।

बांझपन दूर करने के लिए

निवारण-चूल्हें पर पाँच रोटी सेकों पाँच दिनों के लिए और प्रत्येक रोटी को फिर अग्नि में पूर्ण जला दो जब एक रोटी अपने हाथों से रोज बनाओ और फिर जलाओ यह कार्य पाँच दिनों तक चलेगा फिर पाँच दिनों तक एक रोटी को गाय के घी में भूनो रोज एक–एक रोटी पाँच दिन तक भूनो फिर उस जली हुई रोटी को खाँड में मिला दो फिर पाँच दिन तक अपने ऊपर तेल की पाँच ज्योत जलाकर पाँच बार

अपने पति या सास से उतरवाकर आंगन में रख दो जहाँ से रास्ता बाहर की तरफ जाता है। उस विधि के करने से बाँझपन समाप्त हो जायेगा।

शहद की मक्खी भगाना

निवारण-शहद की मक्खी को भगाने के लिए कपूर जलाकर प्याज के रस का छींटा लगा दो। मक्खी अपनी जगह से उठ कर दूसरी जगह पर चली जायेगी। पाँच दिनों तक यह विधि करनी है।

मस्तिक के रोग के लिए

निवारण-संगमरमर का ढाई सौ ग्राम का टुकड़ा लो और उस पर पैगाम लिखों कि हे सत्यलोक के पत्थर जिसके द्वारा देव पूजे जाते हैं मेरा दुख हरो यह शब्द जब कहने हैं जब उस पत्थर को माथे पर रखकर सीधा लेटकर उस पर इक्तालिस दिन तक रोज घी की ज्योत जलावें और जितनी देर तक सहन कर सकें उतनी देर तक माथे से ज्योत न हटायें और उसी पत्थर को शाम के समय पानी में डाल देवें और सुबह उस पानी को पीवें इस विधि को इकतालिस दिन तक रोज करें मस्तिक पूर्ण रूप से ठीक हो जायेगा।

मस्से ठीक करने के लिए

निवारण-ज्वार का बीज अग्नि में भून लेवें या फिर तवे पर भून लेवें और फिर बीज को पीस लें फिर उसे कच्चे मिट्टी के बर्तन में डाल दें ग्यारह दिन तक उसी बर्तन में सवा सौ ग्राम शहद डाल दें यह कार्य एक दिन करके उसे मिट्टी से बन्द कर दें ग्यारहवें दिन तक उसके सामने तेल की ज्योत लगावें और ग्यारहवें दिन उस बर्तन को खोलें फिर मस्से पर रोज लगावें।

मासिक धर्म खोलने के लिए

निवारण-पीपल के पेड़ के नीचे इक्कीस दिन तक लगातार

नहाना है और शिव पर जल चढ़ाकर जब जल चढ़ावे उस जल को किसी बरतन में ओट कर पी जाओ इक्कीस दिन तक यह विधि करने से मासिक धर्म खुल जायेगा।

मुख में बदबू ठीक करने के लिए

निवारण-देशी शहद को रात को पानी में किसी बरतन में दस बूंद डाल दो और सुबह उठकर पानी को पीयों और शहद से अंगूली या ब्रुश से मुख के अन्दर मंजन की तरह से ग्यारह दिन तक करो। इस विधि के करने से मुख के अन्दर बदबू समाप्त हो जायेगी।

मोती झारा ठीक करने का टोटका

निवारण-साबुत उड़द सवा सौ ग्राम गले में बाँध दो और हिंग को दिन में रात तक पाँच बार सुघों और अपने ऊपर सवा सौ ग्राम कागणी के दाने पाँच बार उतार कर उसके ऊपर घी का दिया जलाओ अपने आंगन के अन्दर कोई पेड़ हो या गमला हो उसके नीचे रख दो इस विधि के करने से मोती झारा ठीक हो जायेगा।

लकवा ठीक करने का टोटका

निवारण-बड़े बर्तन मिट्टी का बना हुआ लाओ और उसमें सरसों का तेल भरो सरसों का तेल भरने के बाद उसके अन्दर रूई की लम्बी बत्ती बनाओ और उस बत्ती को जला दो और जिस पर लकवा हो वह उस बर्तन में पैर रखकर बैठ जाय या फिर उलटा लेट जाय चारपाई की पातों की तरफ वह दीया रख दें, दीये दो होने चाहिए और उन दियों के अन्दर दोनों पैर अलग–अलग रखें और पीछे सिरहाने की तरफ को लेट जाए दूसरा आदमी उसकी देखरेख में रहें जितनी ज्यादा से ज्यादा देर तक रह सके उतनी ही देर तक रहें उतना ही ज्यादा फायदा होगा। इसके साथ–साथ उसी तेल के दीये में से तेल लेकर सिर की मालिस करें और साथ के साथ गायत्री का मनन 24

घंटे लगातार करता रहे यह विधि करने से लकवा ठीक हो जायेगा यह कार्य प्रतिदिन करना है जैसे जैसे फायदा होने लगे उतना ही ज्यादा करना है।

सिरदर्द ठीक करने का टोटका

निवारण-मुनक्का को रात को पानी में भिगो दो और सुबह पानी पियों इक्कीस दिन तक इसी कार्य विधि को करो और अपने सिर के ऊपर पाँच बार उतार कर पीपल के नीचे रखे इस विधि के करने से सिर का दर्द ठीक हो जायेगा।

स्मरण शक्ति बढ़ाने का टोटका

निवारण-सिर को दीवार से लगाकर ऊपर की तरफ करे और पैर नीचे की तरफ करे और जहाँ पर तुम्हारे पैर हो वहाँ पर चोमका चार दीपक तेल के जलाये और सावधान खड़े होकर पाँच मिनट तक दीये की लौ की तरफ निहारते रहें फिर दूसरी कार्य विधि साथ के साथ करे नीचे को सिर करे और पैर ऊपर को करें ओर उस दीये की लौ को निहारते रहे दोनों कार्य कम से कम पाँच बार करना है और सवा महीने तक लगातार करना है बुद्धि बहुत तीव्र हो जायेगी स्मरण शक्ति बहुत ज्यादा हो जायेगी।

हिचकी ठीक करने का टोटका

निवारण-पानी का बर्तन पूर्ण भरकर उसको हथेली पर रखो और दूसरे हाथ से पकड़े रखों पाँच मिटन तक उस पानी को निहारते रहो और उस पानी में एक रुपया का सिक्का डाल दो जिससे निहारने में परेशानी न हो सके फिर वह पानी पी जाओ और दूसरे गिलास को भरकर सूर्य को जल चढ़ा दो। इस विधि के करने से हिचकी तुरन्त ठीक हो जायेगी।

सास–बहु में प्यार कराने हेतु टोटका

निवारण-सवा मीटर काला कपड़ा व पाँच मिठाई रखो और उस पर सिन्दुर के टीके लगाओ और दूसरा कार्य काले कुत्ते के नीचे की मिट्टी लाओ जहाँ पर कुत्ता बैठता हो उसी के नीचे से उठाओ फिर मिठाई और मिट्टी दोनों को मिलाओ फिर जिसको वश में करना हो वह खुद सोते हुए की चारपाई के पाँच चक्कर यह कहकर लगाओ कि यह मेरे वश में रहे और मेरे से प्यार करे और इस सामान को ले जाकर किसी चलते हुए पानी के किनारे रख दें। फिर इसके बाद बन्दर की टट्टी को लाकर उसको पानी में घोलकर शीशी में डाल दो फिर उससे हर मंगलवार को छींटे लगाओ शरीर के ऊपर और जहाँ पर वह रहती हो वहाँ पर।

दुकान कम चलना और किया हुआ ऊपरी क्रिया को दूर करने के लिए

निवारण-गाय की मिट्टी जहाँ पर गाय का खूटा हो गाय एक जगह बाँधने वाली होनी चाहिए। जहाँ पर गाय बाँधी जाती हो उसी जगह की मिट्टी उठाओ फिर मिट्टी का बर्तन लो उसमें आग जलाओ और मिट्टी और गुग्गल को मिलाओ और मिलाकर दुकान के अन्दर सात दिन तक लगातार धूनी से धुआं करो और फिर हर मंगलवार और शनिवार के दिन शाम के समय धूनी जलाओ जो भी परेशानी होगी समाप्त हो जायेगी।

किसी सांसारिक व्यापार को खोलने के लिए जगह पर हवन करना है

निवारण-पीपल की लकड़ी गुग्गल गाय जहाँ बाँधी जाती हो उस जगह की मिट्टी इन तीनों चीजों को मिलाकर सात दिन तक

हवन करो घी का चिराग सात दिन तक जलाओ और सोमवार से सोमवार तक व्यापार करने का सामान रखो व्यापार बहुत अच्छी प्रकार चलेगा कभी–कभी इस जगह हवन करते रहो।

बाप से बेटों की न बनती हो और हिस्सा देने में आनाकानी करता हो

निवारण-शनिवार के दिन अपनी मुट्ठी में चावल लेकर उन सदस्यों के हाथ चावलों में लगवाओ जो हिस्सा देने में मना करता हो और उन चावलों को किसी ऐसे गरीब आदमी को दो जिससे उन चावलों को खा सके और वह चावल पककर एक दूसरा खा सके दूसरा कार्य काले कुत्ते को शनिवार के दिन सवा सौ ग्राम घी देशी गाय का लेकर कुत्ते से झूठा करवाओ और उसे किसी बर्तन में डाल कर रख दो जिससे कोई कार्य करवाना हो या वश में करना हो उस घी को उस आदमी के शरीर को लगा दो वश में हो जायेगा।

छींक रोकने के लिए जभांई आने का टोटका

निवारण-सैतीस बार गर्म पानी में रूई भिगोकर अपने मुख पर फेर कर माथे पर लगाओ लगाने के बाद सुखाकर कपड़ा बाँध दो तुरन्त छींक जभांई आनी बन्द हो जायेगी।

दूसरा टोटका-लौंग का तेल गर्म करके कान में दोनों तरफ रूई में भरकर लगा दो इससे जभांई और छींक आनी बन्द हो जायेगी।

पेट में दर्द रहना दूर करने के लिए टोटका

निवारण-अपने पेट के भार के द्वारा बोझ आंककर चावल तोल कर पाँच बार पेट पर उताओ और शनिवार के दिन कोय को खिला दो पाँच शनिवार इस कार्य को करना है दर्द बन्द हो जायेगा।

मासिक धर्म में ज्यादा और रुक न रहा हो रोकने का टोटका

निवारण-जिस दिन मासिक धर्म चालू हो उस कच्चा आटा पेट पर लागा दो और 10 या 15 मिनट तक उसको चिपका रहने दें फिर उसको उतार कर शनिवार के दिन आटा को इक्ट्ठा करके जमीन में दबा दो उस परेशानी को धरती उतार लेगी।

गैस होने से रोकने का टोटका

निवारण-हर शनिवार के दिन हल्दी डालकर सवा किलो पानी गर्म करो उसको उबालो और उबालकर पियो और फिर साथ के साथ उल्टा निकालो किसी बड़े बर्तन में उसे इक्ट्ठा करके उसमें सरसों का तेल मिलाओ और चीटिंयों के बिल पर डाल दो जिससे चींटी उस पर लग जाय उसमें मीठे का कुछ अंश डाल दो हर शनिवार। 5 शनिवार करने से गैस बननी बन्द हो जायेगी।

जो मनुष्य किराये पर रहता हो और मकान मालिक निकालने का प्रयत्न करता हो न्याय के लिए टोटका

निवारण-बृहस्पतिवार के दिन सरसों का तेल मकान मालिक के घर से लो और वहाँ की मिट्टी उस तेल में डालो और उस तेल को 5 बृहस्पतिवार बबूल टीकर की जड़ में डालो ऐसा करने से मालिक मकान खाली करने को नहीं कहेगा परन्तु न्यायपूर्ण होना चाहिए कब्जा जमाने के लिए नहीं होना चाहिए जो हक बनता हो उसके अनुसार यह टोटका चलेगा।

मनुष्य कभी–कभी ऐसी बीमारी का शिकार हो जाता है जिसका इलाज डाक्टर भगतों से भी नहीं हो पाता–टोटका

निवारण-बीमार मनुष्य की चारपाई ज्योत वाले कमरे में रहे पूर्णमासी की पूर्ण रात को पाँच तेल की ज्योत जलाओ और उसके बगल में बबुल की छाल कूटकर किसी बर्तन में रख दो ज्योत के सामने फिर सुबह होने पर बबूल की छाल को उठा लो और जाकर बबूल की जड़ में एक तेल का दीया जला दो जो आदमी बीमार हो उसके हाथ लगवाकर ले जाओ या फिर वह खुद लगा सकता हो तो बहुत ही अच्छा है। फिर हर इतवार के दिन 40 दिन तक बबूल की जड़ में तेल का दिया जलाओ और जो छाल कूटकर रखी है उसका शहद के साथ सुबह शाम रात को सेवन करो ओपरा पराया शारीरिक कोई भी बीमारी हो सबके लिए यह टोटका है।

स्वप्न में डरना और जाकर दूसरी जगह उठ कर चल देना–किसी किसी मनुष्य के साथ ऐसा भी हो जाता है

निवारण-जो आदमी रात को डरे और कोई ऊपरी उठाकर ले जाय नींद नींद में कभी–कभी आदमी जहाँ सोया होता है वहाँ से उठकर चल पड़ता है। उसको रोकने के लिए मन्दिर की सीढ़ियों पर हर शनिवार को अपने ऊपर उतार कर तेल का दीया जला दो पाँच शनिवार करने से यह डरना चलना बन्द हो जायेगा।

मनुष्य के बाल झड़ना रोकने का टोटका

निवारण-कुम्हार के घर शनिवार के दिन जाओ और जब

कुम्हार बर्तन बना रहा हो उससे वह मिट्टी ले लो जिससे बर्तन बना रहा हो थोड़ी–थोड़ी मिट्टी लेकर जाना है और घर ले जाकर थोड़ी मिट्टी का दीया बनाओ और उस दीये को आंगन में रख दो और तेल डालकर उसे जला दो, हर शनिवार को यह कार्य करना है। पाँच शनिवार करना है इसके बाद साथ के साथ वह मिट्टी जो बची हुई हो उसे सिर में लगानी है पानी डालकर सिर पर लगा दो जब सूख जाये धो डालो ऐसा करने से बाल झड़ना बन्द हो जायेगा और बाल अधिक हो जायेंगे।

नारी के बाल झड़ना घने करने का टोटका

निवारण-कुमारी जाति कुम्हारी के हाथ से चाख की मिट्टी लाओ और उस मिट्टी के शनिवार के दिन अपने घर दीया बनाओ और उसी मिट्टी का चकोर एक ऐसा दीया बनाओ जो दीया उसी कुम्हार की मिट्टी पर रखा जा सके और तेल से जला दो जब शनिवार की रात को दीया जले और सुबह के समय उस दीये और नीचे की मिट्टी उठाओ और पानी में घोलकर अपने सिर में लेप करो पाँच शनिवार ऐसा करने से बाल सुन्दर और झड़ना बन्द हो जायेगा।

बाल सफेद को रोकने का टोटका

निवारण-नीम की छाल व इक्कीस लोंग एक जगह कूटकर मिट्टी के बड़े बर्तन में डालो और शनिवार के दिन मेज के सामने बैठकर मिट्टी के बर्तन में तेल का चिराग जलाओ और नीम की छाल और इक्कसी लोंग एक जगह पीसकर चिराग में डाल दो और रात को उसे तेल से भर दो और एकटक उस बत्ती की लौ को देखते रहो जब तक देख सकते हो इस तरह से हर शनिवार पाँच शनिवार करो और जो नीम की छाल और इक्कीस लोंग उस दीये में डाली हैं उसे निकाल कर किसी अच्छे बर्तन में डालो और रोज सिर के बालों में लगाओ।

जब तेल की ज्योत जलाओ वह बर्तन बड़ा मिट्टी का हो और जो वे दोनों चीज उसमें डाल सको और वह सब तेल में मिल जाय और तेल इतना हो कि बाद में दिये में नीम की छाल और लोंग भीग सकें फिर इस तेल को सिर पर हर रोज लगाओ।

मकान, दुकान, प्लाट जमीन बोने वाली को बेचने के लिए टोटका

निवारण-सफेद पाँच कोढी लाकर उनके अन्दर छेद करो प्रत्येक को काले डोरे से बाँध दो फिर उन पाँचों कोड़ियों को एक जगह बाँध दो और वीरवार के दिन उनको बबूल टीकर के जड़ों में बाँध दो और उसमें उस जगह की मिट्टी डाल दो जिसको बेचना है फिर उस बबूल की जड़ों में वीरवार से लेकर अगले वीरवार तक पचास ग्राम तेल चढ़ाओ जमीन तुरन्त बिक जायेगी।

नौकरी रोजगार पाने के लिए

पीपल की जड़ एक अंगुल लम्बी–चौड़ी हो और पाँच दिन तक उस जड़ को ढूंढ कर उस पर तेल का दीपक जलाओ शनिवार से दीपक जलाना शुरू करो उसके पाँचवे दिन काट कर ले आओ और पहले दिन जब दीपक जलाओ संकल्प करके कहो कि मैं आपकी जड़ अपने घर ले जाना चाहता हूँ पीपल वनस्पति देव पॉच दिन तक पूजा करूंगा जिस दिन पूजा समाप्त हो उस दिन फिर यह ही वाक्या बोलना है और जड़ को ले आना और उसे लाल कपड़े में बांधकर रखना अपने साथ रखना है या फिर नौकरी रोजगार के लिए जाये तो साथ लेकर जाना है।

बिजनेस में ग्राहक अधिक आये और दूर तक आने के लिए

घिया जो सब्जी'वाला होता है उसका बना हुआ कमण्डल

लेकर उस कमण्डल में पैंतिस छेद करो और उसके अन्दर गेहूं और चने बराबर मिलाकर डाल दो फिर उसको दुकान के दरवाजे के सामने टांग दो और फिर उसके अन्दर सवा मीटर भगवा कपड़ा चीलक तम्बाकु कुण्डल और खडाऊं रख कर टांग दो और रोज गंगाजल का छींटा लगाओ और धूप दीप दो और भोग लगाओ खाना उसके आगे को हिलाकर घुमा दो यह विधि महात्मा सिद्ध पुरुष के लिए हैं इसके करने से जो मन में धारण करोगे वह ही मिलेगा।

आलस्य नाश हेतु

सुबह पाँच बजे अपने मन मन में श्री गणेशाय नमः का उच्चारण करो और पाँच बार श्वांस को ऊपर नीचे पर रोक रोक कर छोडों जब भी आलस्य आ जाय उसी समय यह विधि करो और शनिवार को एक कोड़ी सिर में बाँधकर सो जाओ पाँच शनिवार ऐसा करने से शरीर का आलस्य सदैव के लिए समाप्त हो जायेगा।

कार्य सफल हो

सतनजा सात दिन रोज गाय को खिलाओ सात मुट्ठी एक मुट्ठी एक अनाज होना चाहिए और जिस दिन सबसे पहली बार शुरू करे गाय को खिलाते हुए संकल्प कर ले कि हे गाय माता मेरा कार्य रूका हुआ है उसे पूर्ण करो मैं सात दिन तक पाँच आटे के पेड़े और गुड़ खिलाऊंगा जब कार्य पूरा हो जाय फिर सात दिन तक गुड और आटे के पेड़े बनाकर खिलाना है पेडा दो हो और गुड सवा सौ ग्राम होना चाहिए। यह विधि करने से कार्य सम्पूर्ण होगा।

कार्य सफल होना

धर्मस्थल पर जो दुखी और भूखा मनुष्य मिल जाय उस मनुष्य को खाना खिलाओ और कपड़े पहनाओ और जिस दिन मिल जाय उसी दिन जिस धार्मिक स्थल पर मिले उसी स्थल पर एक तेल का

दीया जला देवें और सात मेवा चढ़ा देवें यह विधि सिर्फ एक दिन करनी है किसी दिन भी कर सकते हो इस विधि के करने से कार्य सम्पूर्ण होगा।

अनिच्छा से कार्य करना

जब किसी मनुष्य को कार्य करना पड़े करना जरूरी हो और इच्छा न करती हो उसके लिए सवा सौ ग्राम सुपारी लेकर पाँच दिन तक पाँच हिस्से करके अग्नि में अपने ऊपर से पाँच बार उतार कर फूंकते रहो और अन्तिम दिन एक तेल का दीया जलाकर अपने ऊपर से उतार कर किसी पेड़ के नीचे रख दो इस विधि के करने से कार्य करने की इच्छा उत्पन्न होगी।

बच्चा इम्तहान में पास होने के लिए

जो बच्चा पढ़ाई में कमजोर हो और ऊपर से इम्तहान आ गये हो उसे तुलसी पर जब तक इम्तहाना हो रोज घीर का दीया जलाओ तुलसी की जड़ों में लगाओ और सबसे पहले दिन अपने हाथों से कलावा बाँध दो और जब इम्तहान पूर्ण हो जाय फिर प्रसाद बाँट दो और जो कलावा तुलसी पर बाँधा है उसे पास होने के बाद खोलो ओर फिर प्रसाद बाँटों इस विधि के करने से इम्तहान में जरूर पास हो जायेगा।

किसी कार्य से हटना मन न लगना

जब मनुष्य का किसी कार्य में मन न लगे यह मानसिक तनाव होता है मानसिक तनाव दो प्रकार का होता है एक तो घर में परेशानी हो लड़ाई झगड़ा हो जाता है दूसरा धन की परेशानी होती है इसको दूर करने के लिए पूर्णमासी के दिन घर में पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण की कथा पाठ करवाकर करने वाले पंडित को भोजन खिला दो और हवन करा दो इस विधि के करने से सब कार्य ठीक हो जायेंगे और मन

खुश रहने लगेगा और पति या पत्नी पाँच पूर्णमासी व्रत करें बिना नमक के ऐसा करने से सम्पूर्ण परिवार में शान्ति और सबका सब कार्यों में मन लगने लगेगा।

चारों तरफ भागने से भी रोजगार न मिलने पर

गाय के खूटे पर शनिवार के दिन संकल्प करके कलावा बाँधों और कहो कि मैं गाय माता को इक्कीस दिन तक गऊशाला में आकर आटे के पाँच पेड़े खिलाऊंगा और गऊशाला के अन्दर जहाँ पर गाय बांधी जाती है वहाँ पर घी के दीये जलाऊंगा ऐसा करने से रोजगार मिल जायेगा रोजगार का कारण अपने आप ही बन जायेगा इस विधि के करने से रोजगार मिल जायेगा।

सामान बेचने के लिए

दुकान के अन्दर पाँच जायफल और गोला जायफल गोले के अन्दर डालकर उसे लाल कपड़े से बाँध दो और उसे दुकान के दरवाजे पर टांग दो शनिवार से शनिवार तक बँधा रहने दे उसके बाद उसे शनिवार के ही दिन शाम के समय अपने ऊपर से उतार कर आग में जला देवें यह कार्य पाँच शनिवार तक इस तरह बारी बारी से करनी है जो जलाने के बाद राख हुई है उसे अन्तिम दिन चलते पानी में बहा दें और पीपल की जड़ उस जगह लाल कपड़े में बाँध कर टांग दें और रोज सुबह जब दुकान खोलें धूप देवें। इस विधि के करने से जो सामान आप बेचते हों बहुत बिकेगा।

मनुष्य किसी कार्य बिजनैस के लिए यात्रा पर जाने के लिए

जब भी मनुष्य अपने व्यापार के अनुकूल यात्रा पर जाय अपने

साथ इक्कीस ग्राम गुग्गल और दो जायफल ले जाय और इतना ही अपने घर में रख जाय जब यात्रा से वापिस घर पर आये आने के बाद जो सामान घर में रखा था वह और जो साथ लेकर गया था वह दोनों को पाँच बार अपने ऊपर उतार कर आग में जला दें इस विधि के करने से यात्रा सफल होगी और जिस कार्य के लिए यात्रा करनी है वह कार्य सम्पूर्ण होगा।

बिजनैस स्थिर होने के लिए

जिस मनुष्य का बिजनैस व्यापार स्थिर न होता हो उसके लिए इक्कीस दिन तक वह मनुष्य अपने ऊपर से शनिवार को जमीन में सवा एक फुट का गड्डा करके उसमें तेल छोड़ें तेल का वजन सवा सौ ग्राम हो और अपने ऊपर इक्कीस बार ही उतारे सिर से पैरों तक उतारने के बाद जमीन में गड्डे के अन्दर डाल देवें और ऊपर से झाड़ी बगैरा ढक देवें यह कार्य शनिवार से शुरू करके इक्कीस दिन लगातार करनी है। इस विधि के करने से व्यापार स्थिर होकर चलेगा।

दुकान में हानि होने पर

काले कुत्ते को रोजाना सात दिन तक तेल में चुपड़कर खिलायें और फिर सात शनिवार तक खिलाये और शनिवार को काले दिन पीपल की जड़ों में दबा देवें काले कपड़े में बांधकर सवा सौ ग्राम काले तिल और उस पर तेल डाल दे जब दुकान चल जाय और लाभ होने लगे काले तिलों को उखाड़कर काले कुत्तों को गुड में डालकर खिला देवें। इस विधि के करने से दुकान में हानि कभी नहीं हो सकती।

धन उधार हो उसे मंगाने के लिए माल उधार देने के बदले धन लेने हेतु

धन जिस मनुष्य पर उधार हो उससे मंगवाने के लिए जो वह खुद देकर जाय या पता भिजवाये सवा फुट की लकड़ी की नाव

बनवाकर और सात जायफल पर उन मनुष्यों के नाम अंकित करने हैं जिससे धन लेना है और एक काला झंडा उस नाम में खड़ा करना है तेल की ज्योत जलाकर चलते जल में छोड़ना है और सबसे पीछे नाव में कुत्ते के मुख से तेल एक जायफल झूठा करवाकर रखना है बाकी जायफल आग में रखने हैं शनिवार को यह विधि करनी है।

फैक्ट्री जहाँ सामान बनता हो की उन्नति हेतु

जहाँ पर फैक्ट्री लगी हो उसी फैक्ट्री में सवा फुट का गड्डा करो और शनिवार के दिन उसमें सवा सौ ग्राम काले तिल सवा सौ ग्राम तेल छोड़ दो और सात शनिवार तक मिट्‌टी का बड़ा दीया तेल का जलाकर रख दो जब सात शनिवार पूर्ण हो जाय उस दिन उस गड्डे को दीये सहित बन्द कर दो और फिर किसी मंगलवार या शनिवार को पीपल पर प्रसाद और तेल का दीया जलाओ इस विधि के करने से फैक्ट्री में उन्नति होगी और जो मशीनें लगी हुई हैं उनमें बिगाड़ भी नहीं होगा।

किसी अकेले मनुष्य पर माल भेजने पर रूका धन वापिस मंगाने हेतु

पाँच मुट्‌ठी चावल पक्षियों का समूह जहाँ पर मिले वहाँ पर मुट्‌ठी भर और धन लेने वाले मनुष्य का नाम लेकर फैंकनी है शनिवार के दिन करना है। इस विधि के करने से पाँच शनिवार के अन्दर अन्दर धन वह मनुष्य भिजवा देगा।

सांझी में समझौता होने के लिए

किसी बिजनैन में दो साझी हो और दोनों में प्रेम न हो उसके लिए काले उड़द सवा सौ ग्राम सवा सौ ग्राम गुड़ पाँच पतासे पाँच गांठ

हल्दी की यह सामान लेकर जहाँ पर बिजनैस हो उसी जगह पर बाँध कर रख दो या फिर गाड़ दो अगर कच्ची जगह हो तो गाड दो यदि पक्की जगह हो तो रख दो काले कपड़े में बाँध कर रखना हे और जब दोनों साझियों में प्रेम हो जाय वह सामान उठाकर चलते जल में प्रवाहित कर दो दोनों साझियों में से जो अच्छा समझता हो जिसे परेशानी हो वह कर सकता है।

साझी से सदैव प्रेम रहे एक दूसरा बात माने

बिजनैस फैक्ट्री में दोनों साझियों में देन लेन पर कभी भी झगड़ा मन मुटाव न हो उसके लिए पीतल का कमण्डल लेकर उसके अन्दर सवा सौ ग्राम साबुत चावल सवा मीटर भगवा कपड़ा सवा पाँच रुपये और एक चीलम तम्बाकू यह सामान कमण्डल में रख दो और उसे अपने किसी भी साझी के घर में टांग दो और हर पूर्णमासी को उस पर गंगाजल का छींटा लगाओ और उसके सामने नीचे उतार कर आदर के साथ घी की ज्योत लगाओ और फिर ऊपर उसी जगह रख दो इस विधि के करने से दोनों साझियों में प्रेम रहेगा।

धन लेकर यात्रा करे सुरक्षा हेतु

मनुष्य अगर धन लेकर जाय यात्रा करे उसको अपने साथ घर की धूल और पीपल पर कलावा बाँधकर जाना चाहिए जिससे मनुष्य सुरक्षित भी रहे और धन भी सुरक्षित पहुंचा सके और वापिस आने के बाद धूल तो धूल में डाल दे और जो कलावा पीपल पर बाँधा है उसको खोलकर प्रसाद बाँट दे स्वाभाविक स्थिति में तो मनुष्य कुछ करना नहीं चाहता परन्तु कुछ हो जाता है तो सब कुछ समाप्त भी हो जाता है कोई न कोई कार्यवाही करके ही मनुष्य को यात्रा करनी चाहिए जिससे मनुष्य भी शान्ति से वापिस आये और उसका संसार भी ठीक से पाये।

लक्ष्मी बढ़ाने हेतु

जिस मनुष्य को अपनी मेहनत की कमाई में भी बचत न हो और बहुत दुखी हो उसके लिए सरल विधि लक्ष्मी की मिट्टी की बनी हुई मूर्ति घर पर लाकर स्थापित करो साथ में गणेश जी की भी मूर्ति लाओ दोनों को स्थापित कर दो और रोज सुबह के समय रोज दूब की जड़ लेकर गणेश लक्ष्मी की मूर्ति के चरणों में दूध में भिगोकर दूध चढ़ायें इक्कीस दिन तक यह कार्य विधि करें जब लक्ष्मी का प्रवाह घर में हो जाए फिर उसे मूर्तियों को चलते जल गंगा जी–यमुना जी में प्रवाहित कर सके।

अचानक धन प्राप्ति के लिए

जिस मनुष्य को अचानक धन प्राप्त करना हो उस मनुष्य को इक्कीस दिन तक गाय को रोटी गुड़ संकल्प करके खिलाना है उसमें से एक दिन में भी मनाही नहीं करनी है नहीं तो फिर दुबारा करना पड़ेगा और उसके साथ ही साथ आख के पेड़ को शुक्रवार को आमन्त्रित करना होगा हल्दी और चावल चढ़ाने हैं और कहना है कि हे कुबेर देव मैं कल सुबह दिन शनिवार को घर पर लेने के लिए आऊँगा चलो और हमारे घर धन से भर दो। फिर शनिवार को जाकर आदर से उसे ऊपर से उखाड़ कर फैक दो और आखे की जड़ ले आओ और उसे लाल कपड़े में बाँध कर वहाँ रख दो जहाँ धन रखा जाता है।

अचल सम्पत्ति के लिए

जिस मनुष्य को अचल सम्पत्ति बनानी हो जो सदैव बनी रहे उस मनुष्य को पाँच ईंट के अन्दर पाँच बीचोंबीच छेद करें या पत्थर में छेद करें और उन छेदों में चाँदी की लक्ष्मी बनवाकर लगा दें और सबसे ऊपर गणेश जी की लगवा दें और किसी दिवार या अपने घर

के सुरक्षित स्थान में ऊपर नीचे करके लगवा दें पक्की कर दें जहाँ भी लगवायें उसके ऊपर घर के पूजा करने का मन्दिर बनवा दें अधिक से अधिक विष्णु जी की पूजा करें या फिर सूर्यनारायण जी की पूजा करें।

लाभ हेतु

पति पत्नी दोनों सुबह के समय केले की पूजा करें केले के चारों तरफ पाँच बार कच्चे सूत से केले के चारों तरफ घुमा दो बाँध दो और पाँच–पाँच लोंग दोनों पति पत्नी चढ़ाओ और घी का दीया जलाओ यह कार्य ग्यारह दिन तक लगातार करना है और फिर जब ग्यारह दिन पूर्ण हो जाय काले चले उबाल कर बाँटने हैं। यह विधि करने से धन का लाभ होने लगेगा।

जो शत्रु हो उसे दण्ड देने के लिए

जिसके शत्रु ज्यादा हो उस मनुष्य को शनिवार के दिन दूब घास की जड़ लेकर उस पर पाँच गांठ लगाओ और पाँच जायफल यह कह कर पीपल पर चढ़ाओ कि जो भी मेरा शत्रु हो उसे दण्ड दो उसको उसकी कर्म का फल दो यह विधि पाँच शनिवार करनी है बीच में दिन खाली नहीं जाना चाहिए ऐसा करने से शत्रु पर विजय पाई जायेगी यह कार्य उसी को फलेगा जो मनुष्य धर्मी सात्विक प्रवृत्ति का होगा उसी पर फायदा पहुँचेगा।

मोटापा दूर करने के लिए

मोटापा दूर करने के लिए शहद को और पानी को उबालो सौ ग्राम शहद और दो किलो पानी को आग पर उबालो। उबाल कर सुबह के समय खाना चाय पीने से पहले 250 ग्राम पीयो। यह विधि सवा महीने तक करते रहो और निर्धारित समय पर दो बार खाना खाओ जिस दिन शुरू वाले दिन खाओ उसी समय रोजाना खाना खाओ

आगे पीछे और तला हुआ भोजन मत करो और शनिवार को अपने ऊपर पानी का लोटा उतारकर जमीन में एक फुट का गड्डा करके पाँच बार अपने ऊपर से पानी का लोटा उतार कर जमीन में गड्डे के अन्दर डाले ऐसा करने से मोटापा घटता चला जायेगा जितना घटाना हो उतने ही सवा महीने करने पड़ेंगे।

भूख कम लगती हो

सुबह उठकर एक किलो जल पियो चाय का सेवन बिल्कुल मत करो सुबह के समय बाद में कर सकते हैं। गायत्री महामन्त्र का मनन करों सुबह सुबह दस बजे तक और ज्यादा पके हुए केले नमक के साथ खाओ और शाम के समय एक गिलास दूध खाना खाने के बाद पियो इस विधि के करने से भूख लगने लगेगी।

भूख कम लगनी ठीक करने के लिए

भूख ज्यादा और ठीक प्रकार से लगने के लिए आवला सूखा कुटकर कपड़ छान करके उसमें लोंग और हींग का अंश डालो और तीनों चीजों को एक जगह मिलाओ और रोज सुबह ग्यारह दिन तक बिना खाये पिये सेवन करो बड़ी एक चम्मच का सेवन करें।

दस्त को रोकना

जहाँ पर पानी बहता रहता है वहाँ पर दूधि की खास को उखाड़ो और उसे पत्थर पर पिटो उसमें से जल निकाल कर पियो और कच्चे आंवले का सेवन करो और सीधा लेकर अपनी नाभि के ऊपर सवा किलो का पत्थर रखकर उस तेल का चार बत्तियों का दीया जलाओ जितनी देर सहन कर सकते हो करो फिर ऊपर से उतार दो। यह सब विधि करने और ऊपर बताई चीज खाने से दस्त बन्द हो जायेंगे।

दस्त को रोकने के लिए

कलावे की पाँच गाँठ लगाकर तगड़ी की जगह बाँध दो कस कर बाँध कर छुआरे की दो गुठली कुटकर उसको पानी के द्वारा खाओ दिन में तीन बार यह कार्य विधि करनी है इसके करने से दस्त बन्द हो जायेगें।

वायसिर का गोला को हटाने के लिए

जिस मनुष्य पर वायसिर का गोला उठता हो उसे केले का छिलका नमक के साथ खायें जितने भी खाये जा सकें और अपने ऊपर से मिट्‌टी के छोटे बर्तन में तेल और उसमें एक रुपये का सिक्का डालें और उसे अपने ऊपर को उतार कर पीपल की जड़ों में रख दें इस विधि के करने पर वायसिर का गोला बन्द हो जायेगा।

बायसिर का गोला रोकने के लिए

भुने हुए गेहूं शहद में मिलाओ अपने दिमाग के अनुसार उसका सेवन करो और सौंफ को घी के अन्दर भुन कर उसमें अंगूर की बुरा मिलाओ और फिर इसका दिन में कम से कम पाँच बार सेवन करो।

नींद आने के लिए

जब रात के समय मनुष्य परेशान रहे और नींद न आये वह चारपाई या पलंग पर सीधा सिरहाना लगाकर लेटे इस तरह लेटे जो लेटने के बाद अपने पंजे दिख रहे हों और पाँच बार गायत्री का जाप पैरों पर करें फिर घुटनों पर करें जाँघों पर करें फिर छाती पर करें फिर गले पर करें और फिर सिर पर करता हुआ सो जाय इस विधि के करने से नींद अवश्य आ जायेगी यह कार्य हमेशा ही करें।

नींद न आने की परेशानी दूर करने के लिए

जब मनुष्य को नींद न आवे वह अपने ईष्टदेव का स्मरण करें

और दायें करवट पर लेटें और धरती माता को तीन बार हाथ लगाकर हथेली की तरफ से पुरी हथेली पृथ्वी पर रखें और माथे पर लगाये यह विधि करने से नींद तुरन्त आ जायेगी।

पेट में पथरी को निकालने के लिए

जिस मनुष्य के पेट में पथरी हो वह मनुष्य अपने पेट पर सीधे लेकर मिट्टी के बरतन में दीया जलावे और दीये में सुपारी पीस कर डाल दें सुपारी पाँच होनी चाहिए और फिर वह तेल सुपारी से बेसन का हलवा बनावें और खाये यह विधि 40 दिन तक लगातार करने से पथरी पेशाब के द्वारा समाप्त हो जायेगी।

बवासीर ठीक करने के लिए

सवा किलो तेल पीपल की जड़ों में किसी बर्तन में दबा दो और ऐसी जगह दबाओ जो मनुष्यों के पैर न पड़े ग्यारह दिन तक दबा रहने दें और फिर उसे बाहर निकाल कर घर ले आयें और उस तेल में खाण्ड मिलाकर खायें जितनी भी खाई जा सके इस विधि के करने से वायसिर समाप्त हो जायेगी। चालीस दिन तक यह कार्य करना है।

बायसिर ठीक करने के लिए

सुबह उठने के बाद पेट भरकर पानी पीयें और श्री गणेशाय नम: का मनन करें और गौशाला में से ग्यारह गाय का गोबर लाकर सूखा देवें और जब सूख जाय उसको अग्नि में जला देवें और फिर उसकी भभूति बना देवें और गणेश जी के मन्त्र से सवा लाख जाप करके सिद्ध करे और रोज सेवन करें यह विधि करने से बायसिर का मरीज ठीक हो जायेगा।

नेत्र दोष निवारण

जिस नर नारी बच्चे पर नेत्र दोष हो उसे तेल की बत्ती बना कर अपने ऊपर पाँच बार उतारकर आंगन में रख दो पाँच दिन तक

ऐसा करने से नजर दोष समाप्त हो जायेगा और रात को बच्चे पर हथेली में आटा लेकर बच्चे पर उतार कर बाहर की तरफ उड़ा दो। यह विधि करने से नजर दोष समाप्त हो जायेगा।

नर नारी बच्चे पर नजर लग जाय तभी जिस कपड़े पहनकर नजर लगी हो उसे जब तक न पहनो तक तक ठीक न हो जाय और उन कपड़ों को बाँध कर और पाँच मिर्च उतार कर उन कपड़ों में रख दो तीन दिन रखने के बाद चौथे दिन उन कपड़ों को धो दो और मिर्चों को अग्नि में जला दो ऐसा करने से नजर समाप्त हो जायेगी।

बालों का अधिक उड़ना

जिस मनुष्य के बाल अधिक उड़ते हो उसको मिट्टी का बड़ा दीया लाकर उसमें प्याज का पानी छोड़ दो और उसे आग पर उबालो फिर किसी छोटे बर्तन में डाल दो और रोजाना सिर की मालिस करो इस विधि के करने से बाल नहीं उड़ेंगे और नये बाल उग आयेंगे।

कमजोरी दूर करने के लिए

नर नारी बच्चे के अन्दर कमजोरी है उसको दूर करने के लिए अशोक के पेड़ पर जाकर पाँच बार धागे के चक्कर लगाकर बाँध दो और फिर अशोक की छाल को दूध में उबाल कर प्रतिदिन सर्दियों के अन्दर पीयो। यह विधि के करने और पीने से शरीर की कमजोरी दूर हो जायेगी।

पसली कमर दर्द

शनिवार के दिन सवा सौ ग्राम सरसों का तेल लेकर नहाने से पहले किसी बड़े बर्तन में खड़े होकर वह तेल सिर पर डालो जिससे वह तेल बर्तन में आ जाय शरीर को छूता हुआ फिर उस तेल को पीपल पर चढ़ा देवें पाँच शनिवार ऐसा करने से कमर पसलियों का दर्द समाप्त हो जायेगा।

सफेद दाग

गुग्गल जलाकर उसके पास बैठ जाओ और सुपारी को जला दो पचास ग्राम सुपारी सौ ग्राम गुग्गल इन दोनों को आग में जलाकर फूंक दो फिर उसे एक बर्तन में डाल दो और सफेद दाग को सबसे पहले गुलाब के फूल की पंखडियों से रगड़ों फिर उस पर जली हुई राख नींबू में से रस निकाल कर राख में मिलाकर लगाओ और शनिवार के दिन पीपल के पास मन्दिर में जाओ और वहाँ पर जो ज्योत जली रहती है उनमें से रूई में तेल निकाल कर लाओ वह तेल भी उस राख में मिलाओ और रोजाना लगाओ यह विधि करने से सफेद दाग समाप्त हो जायेगें।

कान की पीड़ा ठीक करने के लिए

आखें के पेड़ को किसी भी दिन न्यौता देकर आओ कि कल मैं आपको लेने आऊंगा और अगले दिन उसे आख के पेड़ की जड़ ले और शनिवार के दिन उसको सवा सौ ग्राम सरसों के तेल में उबालो। उबालने के बाद किसी बर्तन में डालो कान में पीड़ा पकना मवाद आनी सबके लिए यह तेल कानों में डालों पाँच बूंद सुबह के समय डालो ऐसी विधि करने से कान की बीमारी ठीक हो जायेगी।

बदहजमी ठीक करने के लिए

गन्ने के रस को आग पर उबाल कर दिन में दो बार सवा सौ ग्राम पियो और आंवले को कुट छान कर उसमें काला नमक मिलाकर सुबह शाम सेवन करो शाम को नीम के पाँच चक्कर लगाओ और पाँच पत्ते तोड़कर पानी का गिलास भर कर उसमें डाल दो और सुबह उठते ही पियो फिर बाथरुम बगैरा जाओ इस विधि के करने से बदहजमी दूर हो जायेगी।

कभी–कभी मनुष्य काँप जाता है रोकने के लिए

कभी–कभी मनुष्य का शरीर अपने आप में काँपने की स्थिति बना लेता है ऐसे मनुष्य को पाँच बार सुबह शाम गायत्री माता का पाँच बार पढ़कर एक गिलास पानी अपने ऊपर से नीचे तक उतार कर पियो। सवा महीने तक लगातार पियो मनुष्य का शरीर कभी भी नही काँपेगा और गाय का मूत्र एक बूंद रोज सेवन करो और किसी चलती फिरती गाय के पैर में अपने ऊपर से कलावा पाँच लोंग रख दो यह विधि करने से शरीर बिल्कुल ठीक हो जायेगा।

स्वप्नदोष को रोकने के लिए

मूंग की दाल शाम को सवा सौ ग्राम सवा गिलास पानी में भिगो दो और सुबह के समय उसे चबा कर खाओ और जब सोवों उससे पहले एक गिलास पानी लेकर और दो जायफल जमीन में अपने ऊपर से पाँच बार उतारकर चढ़ा दो ऐसा सवा हाथ का गड्डा करो जिसमें रोजाना ग्यारह दिन तक यह कार्यवाही कर सको ग्यारह दिन बार गड्डे को मिट्टी से ढक दो स्वप्न दोष की बीमारी समाप्त हो जायेगी।

बार–बार गर्भपात होने पर

जिस नारी को बार–बार गर्भपात होता है वह नारी एक कलावा अपने गले में सात दिन तक बाँधे रखे फिर सातवें दिन कलावा और सतनजा साथ लेकर गाय के खूटे में कलावा बाँध दें और गाय को सतनजा खिला देवें और अगर खूटे में बाँधने में परेशानी हो तो गाया के बाये अगले पैर में बांध दे। यह विधि पैंतिस दिन करनी है सात सप्ताह और हर सात दिन बाद गाय वाला कार्य करना है। इस विधि के करने से बार–बार गर्भपात नहीं होगा।

हृष्ट–पुष्ट सन्तान हेतु के लिए

सन्तान धार्मिक अध्यात्मिक बुद्धिमान होने के लिए सोते समय गायत्री का मनन करो परहेज कोई नहीं करना है और हर मंगलवार और शनिवार को हवन करो आम की लकड़ी और हवन सामग्री गाय का घी और जब हवन करो घी का दीया जला दो फिर हवन करो गर्भ धारण होने के तुरन्त बाद यह कार्य नौ महीने तक हर हफ्ते करो उत्तम सन्तान पैदा होगी।

बालक के बीमार रहने पर

जब बच्चा अन्दरुनी बीमार रहे और दवाई न लगे उस बच्चे को सूती कपड़े का कुर्ता पहनाओ और सात दिन तक लगातार पहने रहने दें फिर सांतवे दिन उस कपड़े में से धागे निकालो और बत्ती बनाओ और मिट्टी के दीये में चार बत्ती लगाकर जला दो जलाकर उस बच्चे पर सात बार ऊपर से नीचे तक उतारो और फिर उतार कर बाहर किसी अनजान जगह पर रख दो शनिवार और मंगलवार के दिन करना है यह कार्यवाही प्रथम सप्ताह में दो बार करनी है और फिर सप्ताह में एक बार करनी है सवा महीना करने के पश्चात माता दुर्गा या शिव मन्दिर में ज्योत जलानी है और शिवलिंग पर जल चढ़ाना है और सूर्य देव को रोज शिवलिंग पर जल चढ़ाने के बाद सूर्य देव को सिर से ऊपर से जल छोड़कर जल देना है नर नारी बच्चा कितना भी ज्यादा बीमारा हो यह कार्य विधि करने से ठीक हो जायेगा।

बालक अधिक रोये ठीक करने के लिए

यदि बच्चा ज्यादा रोता है गाय का दूध बच्चे पर उतार कर शिवलिंग पर चढ़ाये और एक ज्योत जलाकर शिवलिंग के पास रख दें और जो जल शिवलिंग पर चढ़ावें वही जल आगे से गिरता हुआ उसी बर्तन में ले आवे जितना भी मिल सके उतना ले आये और बच्चे

को पिला देवें। यह विधि करने से बच्चा रोना बन्द हो जायेगा।

पेट से कीड़े नष्ट करने के लिए

आडु की छाल और बबूल की छाल को कूट छान कर किसी बर्तन में रख दो और उन्हें गर्म पानी से सुबह शाम एक–एक चम्मच प्रयोग करो और नाभि पर एक शनिवार के दिन तेल का दिया जलाओ और ऐसी स्थिति में जलाओ जो जलकर कुछ न कुछ तेल रह सके और पीपल के नीचे अपने ऊपर से उतार कर रख आओ और सुबह जो कुछ भी तेल बचे उसे वापिस ले आओ और रोज नाभि पर लगाओ। यह विधि करने से कीड़े किसी भी किस्म के होंगे समाप्त हो जायेंगे।

सोता हुआ बच्चा ज्यादा पेशाब करे रोकने के लिए

जो बच्चा चारपाई में पेशाब करता है रोजाना पाँच नमक की डली और दो सुपारी और एक नारियल पानी वाला पाँच शनिवार को पाँच बार ऊपर से नीचे तक उतार कर चलते जल में प्रवाहित कर दो यह विधि पाँच शनिवार लगातार करो बच्चा पेशाब करना बन्द कर देगा।

पढ़ता हुआ बच्चा प्रश्न याद हो का टोटका

जो बच्चा पढ़ता हो और पढ़ने के बाद भी प्रश्न याद न हो उसके लिए सतनजा हर इतवार गाय को खिलावें और अपने पास गाय जहाँ घास खाती है और गाय के मुख लगता है वह मिट्टी अपने साथ किसी कपड़े में बाँधकर रखें यह विधि करने से पढ़ता हुआ बच्चा बहुत ही तेज हो जायेगा और इम्तहान में पास जरूर हो जायेगा।

भूमि में इमारत बनाने के लिए

भूमि में इमारत बनाने से पहले सवा फुट गड्डा बीचोंबीच

खोदों इतवार से शनिवार तक उस गड्डे में तेल का दीया जलाओ और सबसे पहले दिन जब दीया जलाओ उसके सामने पाँच मिठाई सवा मुट्ठी आटा सवा मुट्ठी चावल चढ़ाओ और चाँदी का एक त्रिशूल सातवें दिन चढ़ाकर ऊपर से जो मिट्टी निकाली हो उसी से ढ़क दो यह विधि करने के बाद इमारत बनाओ कभी भी वह भूमि नुकसान नहीं देगी।

भूमि पूजन

भूमि पूजन जहाँ भी जिस जगह करना हो उस जगह पर सवा हाथ का चकौरा चबुतरा रेत से बनाओ। सवा हाथ लम्बा सवा हाथ चौड़ा बनाकर उसके चारों कोनों पर दो–दो हल्दी की गांठ और सवा मुट्ठी आटा और डाभ की जड़ रख दो गंगा जल का छिड़काव करके हवन बगैरा करो और फिर उस जगह पर गाय के पैरों की मिट्टी गाड दो इस विधि से भूमि पूजन पूर्ण होता है कोई भी कभी दोष नहीं हो सकता।

भैंस ब्याना (प्रसूति) सावधानी

जब किसी परिवार के अन्दर पशु या भैंस या गाय की प्रसूति हो उसी समय सवा पाँच मुट्ठी अनाज गेहूं सवा पाँच रु0 उतार कर पीपल के पेड़ पर बाँध दें और जब प्रसूति हो जाय उस गेहूं की गांठ को खोलकर पक्षियों को डाल देवें और सबसे पहला दूध पीपल पर चढ़ा देवें यह विधि करने से गाय भैंस को कोई परेशानी नहीं होगी और न ही कोई दोष लगेगा सही प्रकार दूध देगी।

गाय ब्याना प्रसूति

गाय जब प्रसूति पर हो सतनजा गाय पर उतार गाय के खूटे पर चढ़ा देवें और ब्याति समय उस खूटे से अलग बाँध देवे और बाये पैर में कलावा बाँध देवें और जब गाय की प्रसूति हो जावें उसके बाद

पहला दूध और सतनजा किसी बैल या साँड़ को खिला देवें इस विधि के करने से गाय सुरक्षित और दूध अच्छी प्रकार से देगी पूरे समय में कभी भी परेशानी नहीं आयेगी।

भैस जेर जल्दी डाले

ज्वार का बीज और बाजरा भैंस को ब्याने के तुरन्त बाद खिलावें और गुड़ को पानी में खुद पकाकर खिलावे सुबह शाम दो बार इस विधि को करना है इस विधि के करने से भैंस तुरन्त सुरक्षित हो जायेगी।

भैंस को नजर से बचाने के लिए

जब भैंस ब्यावे उसकी जेर का एक टुकड़ा अपने पास उठाकर रख लें सुखाकर जब भी भैंस को किसी की नजर लगे उसी समय भैंस के सिर से पैरों तक सात बार उतारें और उतारने के बाद राख में साफ करके रख दें जब भी नजर लग जाय यह विधि करनी है। इस विधि से मनुष्य बच्चे को भी नजर झाड़ सकते हैं।

पशु खरीदने से पहले

जब भी आप कोई पशु खरीदना चाहे खरीदने से पहले सोलह पान के जोड़े पशु के घर के किसी खूटे पर बाँध दें और जब पशु लेकर आयें तभी उस पशु पर उतारकर चलते जल में प्रवाहित कर दें जो भी पशु आप खरीदोगे उससे आपकी बहुत उन्नति होगी और न ही कोई अचानक दुर्घटना पशु के साथ होगी।

पशु की बीमारी हेतु

पशु बीमार हो जाय उसको आंवला सुखा लाओ और उसे कूट कपड़छान करके उसे गर्म पानी में पकाकर पिलाओ कोई भी बीमारी हो और दूसरी विधि पाँच तेल के दीपक जलाकर वहाँ पर रखो जहाँ

पशु मरने के बाद जाते हैं उस जगह पर रख आओ और अगर दीपक नहीं जे जा सके तो सवा सौ ग्राम तेल और सवा किलो अनाज उस जगह पर रख आओ ऐसा करने से पशु की बीमारी ठीक हो जायेगी।

खेत की उपज हेतु

सवा फुट के खेत के अन्दर पाँच गड्डे करो प्रत्येक गड्डे में सवा–सवा किलो गेहूं और उतना ही नमक उतना ही मीठा और सात दिन तक उसी गड्डे में तेल का दीपक जलाओ सामान पहले दिन ही चढ़ाओ और पच्चीस किलो मिट्टी गाय के नीचे से गऊशाला में से ले जाकर पूरे खेत में बिखेर दो सात दिन दीपक की विधि करने के बाद यह कार्य करना है और जिस दिन गऊशाला से मिट्टी उठाओ उस दिन सवा ग्यारह किलो अनाज गऊशाला में दे आओ यह विधि करने से खेत की उपज दुगुनी बढ़ जायेगी।

नाव में बैठकर सावधानी के लिए

जब मनुष्य नाव में बैठकर दरियाव पार करना हो उस समय जाने से पहले अपने घर का कूड़े की धूल साथ में ले जाओ और वापिस आकर उस धूल को कूड़े मे मिला दो यह विधि करने से कभी भी खतरा नहीं होगा।

दूसरी विधि–जाने से पहले गाय के पैरों की मिट्टी साथ ले जाओ और वापिस आने के बाद वहीं पर डाल दो और अगले दिन रो रोटी और गुड़ गाय को खिला दो इस विधि के करने से कोई परेशानी नहीं होगी और यात्रा भी सफल होगी।

बस में यात्रा करने के लिए

अगर पति यात्रा करे तो एक मुट्ठी साबुत चावल दो हल्दी की

गांठ अपने पूरे परिवार के हाथ लगवाकर ले जाय और एक घर के अन्दर दीपक जला देवे जाने से पहले दीपक जलने के तुरन्त बाद घर से प्रस्थान करे जो कि वह दीपक चलने के बाद तक जलता रहे यह विधि करने से कभी कोई दुर्घटना या असफलता नहीं मिलेगी।

स्कूटर, मोटरसाईकिल पर यात्रा करने के लिए

पाँच सुपारी में छेद करके अपने साथ रखो और हर शनिवार को एक पान सुपारी पीपल के पेड़ की जड़ों में चढ़ाओ यह कार्य मोटर साईकिल स्कूटर को सदैव करनी है जिससे मनुष्य को कोई दुर्घटना न हो सके और सुबह उठकर पृथ्वी को तीन बार नमस्कार करें यह विधि करने से कभी भी अचानक दुर्घटना नहीं होगी।

काली आँधी को रोकने के लिए

काली आँधी को रोकने के लिए पैतिस चावल के साबुत सात काली मिर्च पाँच लोंग और चूल्हे पर रोटी पकाने वाले तवे को इन सब चीजों पर उलटा रखकर ऊपर से पानी का गोला फोड़ो (नारियल पानी वाला फोड़ दो) और फिर वहाँ से तुरन्त हट जाओ फिर जब आँधी बन्द हो जाय उस तवे को उठा लो बाकि सामान वहीं पर रहने दे। इस विधि के करने से काली आँधी रुक जायेगी।

ओले रोकने के लिए

ओले रोकने के लिए नारियल और तेल का दीया जलाओ उस दीये पर पाँच लोंग चढ़ाओ यह कार्य चूल्हे के अन्दर करनी है चूल्हा साफ करके करना है और दीया चूल्हे में जलाकर पूजा का सामान रखना है और नारियल फोड़ना है। यह विधि करने से ओले बन्द हो जायेंगे।

अन्न पैदा हो जाय सुरक्षित घर पर लाने के लिए

अन्न पैदा हो जाय और बरसात ओले प्राकृतिक आपत्तियों से बचाने के लिए जहाँ पर अन्न पड़ा हो वहाँ पर सवा हाथ का गड्डा करो गड्डे के अन्दर सवा पाव तेल गोला मेहन्दी चुन्दडी लाल और इतर की शीशी एक पान का जोड़ा सात चूड़ी यह सामान तेल के साथ रखो गड्डे के अन्दर रखकर तेल का दीया जला दो ऐसा करने से फसल सुरक्षित घर पर आ जायेगी।

बुढ़ापे में खुश रहने के लिए

बुढ़ापे में खुश रहने के लिए गायत्री मन्त्र का मनन करो सुबह पाँच बजे उठकर अपने बिस्तर में ही गायत्री का मनन करो जो शरीर उठने में परेशानी हो और सुबह एक कोस पैदल चलो और जहाँ रुको एक कोस करे मनुष्य बुढ़ापे में खुश रहेगा और शरीर भी ठीक रहेगा और पुत्र या पुत्र वधु की बात सहन न हो तो अपनी चारपाई के नीचे एक रुपये का सिक्का सात दिन तक पावें के नीचे दबा दो सातवें दिन शनिवार को उसे निकाल कर बहु बेटे के कमरे में रख दो या दरवाजे में लगा दो या फिर अपने आंगन में गाड़ दो जो दिखाई न दे।

मानसिक परेशानी दूर करने के लिए

जीवन में जो मिले तब भी ठीक और न मिले तब भी ठीक क्योंकि मनुष्य को जीवन में सब कुछ मिलकर भी कुछ नहीं मिलता इसलिए पशु का स्मरण करो उसी से मनुष्य को लाभ और जीवन की कमाई होती है। सुबह के समय श्वास को बाहर और भीतर रोक रोक कर छोड़े और ओम का नाम श्वास के द्वारा ले जैसे–जैसे श्वास ज्यादा समय तक रोकोगे उतना ही ज्यादा फायदा होगा जो ऊर्जा

आपके अन्दर शक्ति बनकर आयेगी उससे सांसारिक कार्य सम्पन्न होगे और अगर आप सांसारिक कार्य नहीं चाहते तो प्रभु की तरफ अग्रसर होगे। यह विधि बहुत महत्वपूर्ण और मानसिक तनाव को दूर करने के लिए है।

टीबी की बीमारी के लिए

बबूल के पेड का गूंद तीन सौ ग्राम पन्द्रह दिन तक और गाय का मूत्र पाँच बूंद सेवन करें यह वस्तु खाते हुए पशु का स्मरण करो शिवलिंग पल जल चढ़ाओ और चढ़ाने के बाद वह पानी जो गिरे शिवलिंग पर जब चढ़ाओ उसे अपने घर पर ले आओ और पूरे दिन के अन्दर पी जाओ ओम शिवाय नमः का जाप करो इतना करो कि आपके श्वास में मिल जाय आप नहीं करो तब भी चलता रहे महसूस हो जाय।

स्त्री ने पुरुष को टोने-टोटके के द्वारा गुलाम बना रखा हो

पुरुष अपने बचाव में पाँच मिठाई रास्ते की मिट्टी गतवाडे की मिट्टी तालाब की मिट्टी और चौराहे की मिट्टी पाँच चूड़ी लाल चुन्नी सिन्दूर अपने ऊपर उतरवाकर या फिर अपने आप उतारकर चलते जल में प्रवाहित कर दे शनिवार के दिन यह कार्य शाम के समय प्रवाहित करना है। इस विधि के करने से पुरुष स्त्री गुलामी से मुक्त हो जायेगा।

नकसीर को रोकने के लिए

जिस मनुष्य के नकसीर नाकों में खून आता हो वह मंगलवार के दिन सीधा लेटकर नाक के अन्दर सरसों के तेल की दो बूंदे डाले और दीवार के नीचे सहारे नीचे को सिर ऊपर को पैर करके तीन चार

बार इस विधि को करे और शनिवार के दिन एक दीया तेल का जलाकर उस तेल में से रूई लेकर धीरे–धीरे गर्म–गर्म माथे पर लगावे पाँच शनिवार यह विधि करें नकसीर ठीक हो जायेगी।

फलों के बाग में फल ज्यादा आने के लिए

फलों के बाग में चारों कोनों पर और एक बीचोबीच में सवा हाथ का गड्डा करें उस गड्डे में हर पेड़ के पाँच पाँच पत्ते डालें और नमक सवा किलो डालें सवा किलो सरसों का तेल डालें सात शनिवार उस जगह पर तेल का दीया जलावें उसके बाद उस सामान को निकाल लें नमक ऐसी वस्तु में रखें जो मिट्टी में न घुले साबुत मिल जाय फिर इस सामान की छोटी–छोटी पुड़िया बना लें और पुड़िया बनाकर कपड़े की उतनी गांठ बना दें जो कि बाग के अन्दर जितने भी पेड़ हो सब पर बाँधी जा सके ज्यादा बड़ा बाग हो तो सामान उतना ही अधिक कर ले इस विधि से बाग में फल अधिक आयेंगे।

धार्मिक स्थल पर जाने से पहले यात्रा शुभ और लाभकारी होने के लिए

धार्मिक स्थल पर जाने से पहले गुड़ और चना बन्दरों को खिलावें दिन चाहे कोई भी हो जितनी सामर्थ हो उतना खिलावें और अपने चूल्हे की राख साथ ले जाय और धार्मिक स्थल पर छोड़ दे या फिर राख न मिलें तो बरतन के तले की राख ले जावें और सब बच्चों सब परिवार के सदस्यों से एक–एक मुट्ठी गेहूं ले जावे और जाने के बाद स्थल पर छोड़ दें जहाँ के लिए यात्रा पर गया हो यदि गंगा जी पर जाये तो नहा धोकर गंगा में प्रवाहित कर दें। ऐसा करने से पूरे परिवार की यात्रा पूर्ण हो जाती है। एक सदस्य के जाने से ही यह कार्य पूर्ण हो जाता है।

माता–पिता का आशीर्वाद पाने के लिए

माता–पिता का आशीर्वाद पाने के लिए हर अमावस्या को अपने माता–पिता कोजल से नहलाओ और पूर्णमासी को खीर खिलाओ और अपने हाथों से खर्चा करके पित्रगणों को गंगाजल को छींटा माता–पिता के हाथों से लगवाओ यह कार्य अपने हाथों से करवाओ अमावस्या को घी के दो दीये जलवाओ और साल के अन्दर अमावस्या के दिन माता–पिता को गंगाजी पर नहावाओ या वहाँ से जल लाकर नहलाओ यह विधि करने से माता–पिता का आशीर्वाद मिलेगा।

सदा सुहागन रहने के लिए

सदा सुहागन रहने के लिए सुबह पृथ्वी को तीन बार नमस्कार करें और पूर्णमासी को शिव पार्वती का व्रत करें और शिवलिंग पर ज्योत जलावें दूध जल चढ़ावें पूर्णमासी को सत्यव्रत करें सात्विक प्रवृत्ति रखें कोई भी जुवान से अपशब्द न बोले सात्विक भोजन करें गाय को भोजन करायें सास–ससुर का आदर करें और उन्हें नमन करके खाना खिलायें यह विधि करने से नारी सदा सुहागन रहेगी।

जानवर जिसमें मनुष्य डरता हो दूर भगाने के लिए

ॐ प्रणव: कहकर चारों दिशाओं में पाँच पाँच तेल के दीये जलाओ यह कार्य समूह के समूह मनुष्यों के लिए करो जिससे जानवर का सबको आने का डर हो सवा–सवा हाथ के चारों दिशाओं में गड्ढे खोदों उन पर लाल चुन्नी टांग दो। किसी सवा आठ फुट के डण्डे के अन्दर बाँध दो और फिर ॐ प्रणव: कहकर आ जाओ इस विधि को करने से कोई भी जानवर नहीं आयेगा जिससे मनुष्यों को डर लगता हो।

अचानक पंचायत में फैसले के लिए

अचानक मनुष्य को पंचायती फैसले में जान पड़े और वहाँ पर फैसले में बैठना पड़े उसके लिए पीपल की जड़ों में जोत जलाकर कोय को दाना डाल दीजिए जो कोया खा सके और चले जाइये जो मनुष्य ऐसा करके जायेगा उसी का फैसला सुना जायेगा इज्जत मिलेगी फैसला करके ही आयेगा।

पुत्री के लिए ससुराल वाले दहेज न माँगे

जब भी ससुराल वाले दहेज का तगाजा करें तभी कोय को दाना डालो और कोय का पंख अपने पास रखो, पंख का असर इतना ज्यादा होगा कि ससुराल वाले कभी भी दहेज के लिए पुत्री को तंग नहीं करेंगे एक पंख पुत्री के पास रख दो और शनिवार को एक तेल का दीया जलाकर उस पंख को पाँच बार उस पर फिरा ले किसी को दिखने न दें और न किसी को बताये अगर बता दिया तो उसका असर खत्म हो जायेगा या फिर किसी ने देख लिया पति को भी नहीं बताना है।

चोरी को रोकने के लिए

अपने घर के सामने दो सवा-सवा हाथ के डण्डे गाड़ो ऐसे पेड़ से लाओ जो पेड शमसाण के पास खड़ा हो और पाँच दिन तेल का दीया जलायें और कहें कि हमारी रक्षा करें वह रक्षा अवश्य करेगा चोरी कभी भी नहीं होगी और जब चोरी का डर न रहे तो उन डण्डों को झाड़कर जमीन से जल में प्रवाहित कर दें। इस विधि के करने से चोरी कभी नहीं होगी।

खेतों में चोरी रोकने के लिए

यदि खेत में चोरी होने का डर हो उसके लिए जमीन के चारों दिशाओं में चार गड्डे करें और एक गड्डा बीच में सवा हाथ का कर

उसमें सवा पाँच हाथ का डंडा बबूल के पेड़ का गाड़ें उस पर चुन्नी पाँच लौंग दो हल्दी की गांठ और गुड़ पाँचों डंडों पर सवा किलो अलग–अलग बाँध दें और उनके सामने शनिवार के दिन एक–एक तेल का दीया जला देवें। इस विधि के करने के बाद चोरी नहीं होगी।

खेतों को पशुओं से बचाने के लिए

खेतों को पशुओं से बचाने के लिए जहाँ पर पशु की हड्‌डी पड़ी हो उसे उठाकर ले आओ और अपने खेत के उस कोने पर गाड़ दो जहाँ पर से पशु घुसते हैं ऐसा करने से पशु खेत को नहीं खायेंगे, आयेंगे परन्तु खायेंगे नहीं वापिस चले जायेंगे।

अधर्मी मनुष्य से बचने के लिए

सवा मुट्‌ठी साबुत उड़द काले कपड़े में बाँधकर और उस मनुष्य का नाम कपड़े पर लिखकर काले कोय का पंख भी बाँध दो और हर शनिवार उसके सामने अधर्मी का बचने का भाव रखकर तेल का दीया जलाओ पाँच शनिवार जलाओ और फिर उस गठरी को अपने दरवाजे के पास टांग दो सदैव के लिए अधर्मी हट जायेंगे।

गन्ने की फसल अधिक होने के लिए

गन्ने का रस जब निकलता हो उस रस में से एक मिट्‌टी का बना हुआ मटका भर लो और उसी जमीन में गाड़ दो जिसमें गन्ना खड़ा हुआ है और जब गन्ने में दूसरी बार बढ़ोत्तरी होने लगे गन्ने में कोई–कोई आंख दिखने लगे तभी उस मटके के ऊपर सात दिन तेल चढाओ सवा सौ ग्राम और काले तिल चढ़ाओ और एक दीया तेल का जलाओ उसके बाद जब सात दिन हो जाय उसको उखाड़ कर पूरे खेत में मशीन के द्वारा छिड़काव करा दो अपने दिमाग के मुताबिक यह कार्य करना है ज्यादा या कम जितना खेत हो उसी के हिसाब से रस रखना है।

कोयले का व्यापार करने के लिए

कोयले का व्यापार करने वालों के लिए अपने हाथ का कड़ा बनवाओ कड़ा लोहे का होना चाहिए और सात शनिवार के लिए कड़े का पीपल के ऊपर रख दो और उसके अन्दर उड़द रख दो उड़द सवा सौ ग्राम होने चाहिए काले कपड़े में उड़द बांधो और कड़ा बांधो पीपल पर टांग दो और उस पीपल पर सात शनिवार तेल का दीया और काले तिल चढ़ाओ जब सात शनि पूर्ण हो जाय पहले पीपल पर ज्योत जलाओ फिर प्रसाद चढ़ाओ और कहो कि पीपल देव मैं कड़े को लेने आया हूँ आप मुझे इसे लेने की आज्ञा दे और वरदान दे कि मैं इसको पहनकर कोयले का कार्य करूं और धन धान्य हो जाऊं यह विधि करने से और कड़ा पहनने से बहुत लाभ होगा कड़ा दाये हाथ में पहनना है।

लोहे का व्यापार करने के लिए

लोहे का व्यापार करने के लिए जमीन के अन्दर सवा हाथ का गड्डा खोदो और उस गड्डे में नाव की बड़ी कील पाँच दबा दो इक्कीस दिन तक तेल छोड़ो पच्चीस ग्राम रोजाना और पाँच लोंग चढ़ा चढ़ाकर तेल का दीपक जला दो जब इक्कीस दिन पूर्ण हो जाय उसे उखाड़ने निकालने से पहले कहो कि हे धरती माता मुझे वरदान दो और ये कील ले जाने की आज्ञा दो और वरदान दो कि मैं लोहे के कार्य में तैर सकूं और धन धान्य हो सकूं ऐसा कहकर कील ले आओ और उनकी अंगूठी बनवाकर पहनों और बाकि घर में रख दो दाये हाथ की बड़ी अंगूली में अंगूठी पहनो और एक कड़ा कड़े में धागे में बाँध कर टांग लो कपड़ों के अन्दर रहनी चाहिए।

भट्टा ईंटों का व्यापार करने के लिए

भट्टे के कार्य के करने के लिए जब भट्टे का कार्य करो नौ–नौ ईंट नौ मन्दिरों में दान करो और जहाँ भी दान करो वहाँ पर

पाँच मिठाई पाँच फूल चढाओं और एक दीया जलाओ जब वहाँ से चलो तभी वहाँ की मिट्टी उठाओ और अपने साथ ले आओ और जब मिट्टी लेकर आ जाय भट्टे पर सवा हाथ का गड्डा करो भट्टे की उत्तरी दिशा में और उस गड्डे में उस मिट्टी को डाल दो और फिर उसे चारों तरफ से नौ ईंटों से पक्का करवा दो फिर उसमें हर शनिवार तेल की ज्योत जलाओ और उस मिट्टी पर पच्चीस ग्राम तेल छोड़ो जिससे उस मिट्टी में जा सके अगर किसी शनिवार को मजबूरी में रह भी जाय तो कोई बात नहीं उस पर एक लाल झंडा भी लगवा दो इस विधि के करने से भट्टे पर कभी भी हानि नहीं हो सकती बढ़ोत्तरी अवश्य होगी धन–धान्य पूर्ण हो जायेगा।

पशुओं को मरने से रोकने के लिए

पशुओं के अचानक मरने से मनुष्य दुखी हो जाता है इसलिए मिट्टी के चार छोटे बर्तन लेकर जिसमें सवा सौ ग्राम तेल आ जाय ऐसा बर्तन होना चाहिए और उस बर्तन को हटवारे में चारों कोनों पर रख दें जहाँ पर पशु दबाये जाते हैं और चारों दिये जला देवें और सीधे घर आ जावे, और अपने पशुओं के सिंगों पर तेल लगावें जब तुम्हें खतरा हो जब खतरा समाप्त हो जाय तब जहाँ पर आपने दिये जलाये थे वहाँ पर सवा किलो गुड़ रख आईये। यह विधि करने से पशु अचानक नहीं मरेंगे।

पुत्री की शादी से पहले

पुत्री की शादी से सवा महीने पहले सवा मुट्ठी चावल सवा मुट्ठी चीनी सवा पाँच रुपये और हर इतवार को दो घी के दीये जलाने हैं और लड़की के हाथों से माता पार्वती के पाँच सोमवार के व्रत करने हैं और अपने हाथों से शिवलिंग की पूजा करनी है ऐसा करने से लड़की को ससुराल में इज्जत मिलेगी।

पुत्र की शादी से पहले

पुत्र की शादी के लिए शनिवार के दिन पाँच जायफल अपने ऊपर सात बार उतार कर पीपल पर चढ़ावें और सोमवार के पाँच व्रत प्रभु शिव के करें ऐसा करने से पत्नी अच्छे स्वभाव की मिलेगी और ससुराल भी अच्छी मिलेगी।

पुत्र की शादी करने हेतु

गंगा जी में सबसे पहले दिन लड़के या लड़की से सवा रुपया और सवा मुट्ठी आटा चीनी यह सामान गंगा या यमुना में चढ़ावें और पाँच दिन तक रोज नहावें यह विधि करने से शादी का कार्य पूर्ण सम्पन्न हो जायेगा।

बैराग्य होने पर महात्मा बनने से पहले

सोमवार के इक्कीस व्रत करें और ॐ नम: शिवाय का मनन करें और अपने घर में एकान्त में बैठकर ध्यान करें मन को अपने वश में करने का प्रयास करें जब साधक को यह महसूस हो जाय कि मैं मन वश में कर सकता हूँ और दूसरी साधना साधक को रात को एक घी का दीया जलाकर अन्धेरा करके उसके सामने एकटक देखता रहे उससे मन एकल होने का आभास होगा और साधना में मन लगने लगेगा।

मानसिक तनाव में घर छोड़ने से पहले भटक न सकें

मनुष्य जब घर छोड़ना चाहे सब कुछ से नफरत आ जाय बरबाद होने से और धक्के खाने से अच्छा बैराग्य ले ले उससे अच्छा जगत में और सब मित्थ्या है और कहीं धार्मिक स्थल पर जा पहुँचे और साधना करे अगर ऐसा करे तो अच्छा है वरना अगर धन की वासना

में घर से निकलना चा!हे तो व्यर्थ है क्योंकि मनुष्य को भाग्य और समय से पहले कभी कुछ नहीं मिलता अगर मिलना हो तो घर से ही कारण अपने आप बन जाता है। इसलिए अगर परिवार रहने का सबसे पहला मार्ग और दूसरा मार्ग प्रभु की शरण में जाने का है तीसरा मार्ग घर से निकल कर बरबाद होने का है।

ससुराल में झगड़ा हो जाने से पहले

अगर ससुराल में झगड़ा हो गया हो और आपको जाना पड़े तो अपने घर की कूड़े की मिट्टी उठाकर ले जाओ और पाँच लोंग जेब के अन्दर डालकर ले जाओ जब ससुराल पहुँच जाओ घर के बाहर छोड़ दो और कूड़े की धूल को अपने पास रखो बाद में साथ ले आओ और उसी धूल में मिला दो। यह विधि करने से झगड़ा का निपटारा हो जायेगा और आपकी इज्जत भी रह जायेगी।

गाँव में झगड़ा न हो का निवारण

गाँव के अन्दर आपके साथ कभी भी किसी के साथ झगड़ा न हो इसके लिए गाँव के भुमिया पर एक वर्ष में लगातार सात दिन दूध और पेड़े चढ़ाओ कोई साल वर्ष का समय हो एक वर्ष के अन्दर कभी भी इस विधि को कर सकते हैं और एक दीया घी का भी जलाना है और सात दिन तक साँड को भी मीठा भोजन कराना है जितने दिन भूमिया पर दूध और पेड़े चढ़ाओ उतने ही दिन साँड को भी खिलाओ यह विधि करने से गाँव के अन्दर शान्तिपूर्वक रहो आपको सब प्यार करेंगे।

गाँव में तालाब का टोटका

मनुष्य के परिवार में कभी–कभी अचानक बड़ों बच्चों में बीमारी हो जाती हे और डाक्टर या कोई भगवान का भगत भी न हो उस समय आप बीमार पर एक मिट्टी का बड़ा दीया तेल का उतार

कर और आटे का हलवा बनाकर तालाब पर रख दो तुरन्त ठीक हो जायेगा। यह विधि कोई भी शारीरिक बीमारी होने के लिए भी कर सकते हैं जो बीमारी अचानक होती है और कोई रास्ता न मिले।

गतवाडे का टोटका

मनुष्य के परिवार में कोई अचानक बीमारी हो जाय बच्चे बूढ़े जवान के शरीर में, तभी तुरन्त गोबर पर बीमार के शरीर के ऊपर सात बार उतार पर दिया तेल का रखो और दीये के चारों तरफ आटे से लाईन बना दो यह विधि करने से ऊपरी दोष दर्द अचानक हो जाय निवारण करो।

चौराहे का टोटका

मनुष्य जब बीमार हो जाय और ऊपरी हवा ऊपरी आत्मा का डर हो या शक हो कि ऐसा ही है तभी सात दिन तक चौराहे पर ढाई सौ ग्राम उड़द उबाल कर और तीन लड्डू और पाँच मीठे पूड़े रखो यह सात्विक विधि है इसके करने से कोई बुराई नहीं है करोगे तो सुख पाओगे बीमार आदमी सात दिन के अन्दर ठीक हो जायेगा और करने वाला परेशान हो जायेगा परन्तु बदले की भावना मनुष्य को कभी नहीं रखनी चाहिए क्यों जो जगत में आया है जो जैसा करेगा उसे उसका फल अवश्य मिलेगा यह सत्य वाणी है।

चलते-चलते रात हो जाय सुरक्षित जगह रुकने के लिए

जब मनुष्य यात्रा में जा रहा हो और रात हो गई है और आपके दिमाग में रुकने की अनजान जगह रात काटने की बात उठे उसी समय अपने पैरों के नीचे से मिट्टी उठाओ और अपने किसी भी कपड़े के कोने में रखकर गांठ मार दो और फिर किसी के भी घर में जाओंगे

वहाँ पर ही इज्जत मिलेगी निराश न हो।

बोझा ढोने वाली मजदूरी करे शरीर ठीक प्रकार से रहने के लिए

जो मनुष्य रात दिन मजदूरी करता है रिक्शा चलाता है उसका शरीर टूट जाता है और सम्पूर्ण जवानी बुढ़ापे में बदल जाती है क्योंकि इस तरह का मनुष्य भाग्य से दरिद्र होता है परन्तु दुख इस बात का है कि पूर्व जन्म में उसने ऐसे ही कर्म किये हैं इसका भुगतान तो सुखीमन से ही चुकाना होगा इसमें कुछ तबदिली आ भी सकती है अगर वह मनुष्य अपने पूर्व के कारण जो दुख झेल रहा है उससे डर कर प्रभु शिव का मनन करे और बहत्तर फुट जमीन के नीचे का निकला हुआ जल पिये क्योंकि उस जल में वे सब कुछ पाया जाता है जो मनुष्य को स्वस्थ शरीर रखने बीमार न होने के लिए चाहिए। यह विधि करने से स्वस्थ भी रहोगे और पूर्व के घटित कर्मों का भी भुगतान होगा और आगे कर्म सुधरेंगे।

पूरब दिशा में यात्रा करने के लिए

पूर्व दिशा में यात्रा करने के लिए जिस दिन यात्रा करें उसी दिन सुबह तुलसी की पूजा करें पूजा में पाँच पताशे और जल चढ़ावें और पाँच पत्ते तुलसी के साथ लेकर यात्रा करें और वापिस आकर पाँचों पत्ते वापिस तुलसी पर चढ़ा देवें। इस विधि के करने से पूर्व दिशा में यात्रा करनी शुभ रहेगी।

पश्चिम दिशा में यात्रा करने के लिए

पश्चिम दिशा में यात्रा करने के लिए अपने नजदीक पीर के दर्शन करो और उसके नाम के पाव चावल चीनी सवा पाँच रुपये अपने हाथों से रखों और यात्रा करने के बाद वीरवार के दिन मीठे

चावल बनाकर पीर के दरबार में चढ़ावे इस विधि के करने से पश्चिम दिशा की यात्रा शुभ और लाभकारी रहेगी।

उत्तर दिशा में यात्रा करने के लिए

उत्तर दिशा में यात्रा करने के लिए गंगाजल में सवा पाँच रुपये डालकर अपने हाथों से अपने घर में रख दो, रखने के बाद अपने मुख से बोलो कि हमारी यात्रा पूर्ण होगी तो मैं आने के बाद इस जल को शिवलिंग पर चढ़ा दूँगा, यह वाक्य बोलने के बाद उस गंगाजल को सुरक्षित रख दो, इस विधि के करने से उत्तर दिशा की यात्रा शुभ और लाभकारी रहेगी।

दक्षिण दिशा में यात्रा करने के लिए

दक्षिण दिशा में यात्रा करने के लिए पाँच सुपारी पीपल पर चढ़ावे और साथ में जल चढ़ावें और संकल्प करके कहें कि हे पीपल देव मैं दक्षिण की यात्रा पर जा रहा हूँ मेरी यात्रा सफल बनाना मैं आने के बाद पाँच लड्डू चढ़ाऊंगा इस प्रकार पीपल पर कहकर आप यात्रा करो यात्रा शुभ और लाभकारी रहेगी।

पत्नी से झगड़ा हो जाय शान्ति करने के लिए

जब पत्नी से किसी कारण झगड़ा हो जाय तभी अपने घर के चूल्हे में गाय का सवा 25 ग्राम दूध पत्नी का हाथ लगवाकर जलती अग्नि में चूल्हे के अन्दर प्रवाहित कर देवें झगड़ा तुरन्त शान्त हो जायेगा गृहस्थी जीवन में ऐसी परिस्थिति आती जाती रहती है, इस विधि के करने से झगड़ा तुरन्त रुक जायेगा और पत्नी के अन्दर शान्ति प्रवाह बहने लगेगा।

माता–पिता से झगड़ा हो जाय तुरन्त शान्ति करने के लिए

अगर माता पिता से झगड़ा हो जाय तो अपने हाथों से सवा किलो गेहूँ अपने घर से लेकर और अपने माता–पिता के हाथ लगवाकर और यदि हाथ न लगवा सकें तो उसके आगे को ले जाकर और सवा सौ ग्राम गुड़ इन दोनों को आधा–आधा करके गाय को आधा खिलावे और आधा सांड को खिलावें इस विधि के करने से झगड़ा तुरन्त बन्द हो जायेगा।

दूसरे देशों में जाने से पहले

दूसरे देश में जाने से पहले कम से कम ग्यारह दिन पहले सवा किलो जौ और सवा किलो गौचनी गुड़ और चना मिलाकर गाय और सांड को प्रतिदिन खिला देवें ग्यारह दिन तक सुबह एक बार खिलावें और जो को जमीन या गमने के अन्दर बो देवें ग्यारहदिन तक उन्हें जल देते रहें ग्यारह दिन में जब ग्यारहवां दिन आवे उन्हें गाय और सांड को खिला देवें उसके बाद सवा सौ ग्राम गुड खिला देवें। इस विधि के करने से दूसरे देश में जाकर इज्जत और धन दोनों मिलेंगे।

पुत्री की ससुराल जाने से पहले

पुत्री की ससुराल जाने से पहले पाँच दिन गाय को दो रोटी और गुड़ प्रतिदिन खिलाओ और जाते समय एक दिन का गाय का भोजन रख जाओ जो वापिस आने के बाद खिलाना है इस विधि के करने से पुत्री भी खुश मिलेगी और आपकी बात अगर आपकी अपनी पुत्री के हक में बोलनी हो वह भी बोलने से पूर्ण होगी जिससे पुत्री को कोई परेशानी और दुख न हो सके।

पुत्र की ससुराल जाने से पहले

पिता को पुत्र की ससुराल जाने से पहले (गौचनी) गुड और चना दोनों को आपस में मिला लेवें कम से कम दो सौ पचास ग्राम के बराबर होना चाहिए इसको साथ लेकर जाओ और जब गाँव या शहर से बाहर निकले भूमिया पर चढ़ा देवें। इस विधि के करने से ससुराल में इज्जत मिलेगी और कोई बात करनी है वह बात स्पष्ट शब्दों में कही जा सकेगी परन्तु न्याय धर्म के अनुसार ही बात मानी जा सकेगी।

इम्तहान देने से पहले

लड़के–लड़की बड़ी कक्षा में पढ़ते हैं और उन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ती है परन्तु सफलता नहीं मिलती है उसके लिए निवारण, पाँच गेंदे के फूल लेकर अपने माथे से छुआ कर पाँच बार अपने माथे से लगाओ और वह फूल शिवलिंग पर प्रतिदिन रखकर आओ ऐसा करने से लड़का या लड़की इम्तहान में जरुर पास होंगे और यदि इस कार्य विधि को सदैव करें तो कभी भी फैल नहीं होंगे और पढ़ाई में अपने आप मन लगेगा।

बड़े अफसर का इम्तहान देने से पहले

जब लड़का पढ़कर पूर्ण हो जाता है तभी वह अपनी पढ़ाई की महत्वपूर्णता हासिल करने के लिए दौड़ने लगता है परन्तु जो इम्तहान होता है उसमें पास होने में कठिनाई होती है इसलिए इम्तहान देने से पहले छः वर्ष की कन्याओं को ग्यारह दिन पहले पाँच कन्याओं को मीठा भोजन कराओ ग्यारह दिन तक। जाने से पहले अगर दूरी पर जाना है तो उसी हिसाब से ग्यारह दिन तक करा कर जाओ और जब भोजन कराओ तभी उन कन्याओं के पैरों को चरणों को स्पर्श जरूर करें और अपने मन में भाव रखे कि मेरा कार्य इम्तहान उत्तीर्ण हो और मैं सदैव इसी प्रकार कन्याओं को भोजन कराऊँ। यह कार्य विधि करने

के बाद तुरन्त चले जाओ प्रभु तुम्हारी रक्षा करेंगे।

सेना में भर्ती होने हेतु

सेना में भर्ती होने के लिए छः वर्ष की पाँच कन्याओं को भोजन कराओ जाने से पाँच दिन पहले यह दान शुरू कर दो और भोजन कराकर सवा रुपया दक्षिणा दें जिससे कन्यादान पूर्ण हो सके फिर बाद में कन्याओं के पैर स्पर्श करें और उन कन्याओं के हाथ से एक–एक मुट्ठी चावल ले लें अपने रुपये से खरीद कर लाने हैं। कन्यायें उन्हें अपने हाथों से दें पाँच मुट्ठी अन्तिम दिन लेकर लाल कपड़े में गांठ बांध दें और अपने साथ ले जाय भर्ती होने के बाद उन चावलों को पक्षियों को खिला दें इस विधि के करने से सेना में भर्ती जरूर हो जायेगी।

पुलिस में भर्ती होने हेतु

पुलिस में भर्ती होने के लिए हर मंगलवार के दिन काले चले उबालकर सवा किलो और हलवा दोनों को एक जगह करके भूखे मनुष्य को खिलाने हैं जब भर्ती होने में पाँच सप्ताह रह जाय तभी मंगलवार से शुरू कर दें भर्ती होने से पहले पाँच मंगलवार पूरे होने चाहिए और जिस दिन पाँचवां मंगलवार हो उस दिन किसी भी भूखे मनुष्य से खाना खिलाने के बाद कहो कि मुझे अपने हाथों से कोई भी चीज दे दो कुछ भी नहीं हो देने के लिए मिट्टी भी उठा कर दे दें वह ही ले लेनी चाहिए और उसे अपने साथ सफेद कपड़े में बाँध कर रखो और उसे अपने साथ सफेद कपड़े में बाँधकर रखो और भर्ती के द्वारा जो भी कार्य हो उसे साथ रखना और जब भर्ती हो जाय उस चीज को चलते पानी में प्रवाहित कर देना चाहिए। इस विधि के करने से पुलिस में भर्ती अवश्य होगी।

मृत्यु पर शमशान जाने से पहले

जब किसी नर–नारी की मृत्यु हो जाये और आपको शमशान भूमि में जाना पड़े तभी से आप महामन्त्र का मनन करते हुए जाना है और चिता के चारों तरफ पाँच बार घुमकर पाँच गायत्री मन्त्र बोलने हैं और कहना है कि हे प्रभु इस मनुष्य को जन्म लेना पड़े तो इसे ज्ञान जरूर देना जो कि यह मनुष्य जीवन का गूढ़ रहस्य जान सके जिससे इसे बार–बार इस मृत्यु लोक में न आना पड़े ये शब्द कहकर हाथ जोड़कर नमस्कार करो और आकर नहा–धोकर अपने परिवार में रहो।

भैंस गर्भ धारण न करती हो

भैंस के ऊपर से सात गुड़ की डली सात बार उतार कर सात कोस दूर जाकर भैंस को खिला दो और वापिस घर आकर जहाँ आपने भैंस को गुड़ खिलाया है उसके नीचे की मिट्टी लाकर भैंस के नीचे डाल दो यह विधि करने से भैंस गर्भ धारण हो जायेगा।

भैंस गर्भ धारण होने के लिए सवा किलो आंवला कच्चा ख्लिाओ और तालाब के ऊपर पाँच ज्योत जलाकर तालाब पर रख दो यह विधि करने से भैंस गर्भ धारण हो जायेगी।

गाय गर्भ धारण न करती हो

गाय गर्भ धारण होने के लिए गौशाीला में जाकर सांड को गाय के ऊपर से उतार सवा सौ ग्राम सरसों का तेल और सवा सौ ग्राम चीनी खिला दो और जिस जगह सांड का खूंटा हो उस जगह की मिट्टी ले आओ या फिर कही पर सांड खड़ा हुआ हो उसे खिलाकर उसके नीचे की मिट्टी ले आओ। इस विधि के करने से गाय गर्भ धारण हो जायेगी।

मनुष्य कोई भी परेशानी हो दूर करने के लिए

सुबह या शाम के समय श्वांस को ऊपर खींचो और सांसारिक सोच को अलग कर दो एकान्त हो जाओ और श्वांस पर ध्यान रखो जब श्वांस आये तब भी ध्यान रखा जाय जब भी ध्यान रखो आते जाते रहने दें कुछ मत सोचों आप फिर अपने अन्दर आन्त्रिक संकल्प करो जो हे ईश्वर हे सर्वशक्तिमान मुझे शक्ति दो और मेरे सांसारिक कार्य करो इस अवधि में आपके अन्दर जो ऊर्जा का श्रोत बढ़ेगा उसी से आपके रूके हुए कार्य बन जायेंगे।

सफर करते हुए उल्टी रोकने के लिए

सफर करते समय उल्टी न लगे कोयले को पीसकर उसे मूली से सेवन करो यात्रा पर चलने से एक घंटे पहले यह कार्य करना है और जामुन की लकड़ी का कोयला होना चाहिए और उसे पीसकर रखे और उसे यात्रा में साथ रखें कच्चा दिल हो तुरन्त इसे मुंह के अन्दर डाल दें इस विधि के करने से उल्टी नहीं लगेगी।

एलरजी छींक न आना

जिस नर–नारी को एलर्जी और धूल से छींक आती हो उसे हींग का सेवन ज्यादा मात्रा में करें और नहाने से पहले कान में रूई डालें फिर रूई को निकाल दें और हींग सरसों के तेल में पकाकर कान और नाक के अन्दर दो दो बूंद डालें यह विधि करने से एलर्जी छींक आनी बन्द हो जायेगी। यह विधि लगातार तीन दिन करनी है और फिर एक सप्ताह में दो बार डालिए।

बाल झड़ने का टोटका

बाल झड़ने के उपाय बालों का झड़ना शरीर के अन्दर पेट की

कमी और मानसिक तनाव के कारण होती है बालों के लिए शहद और प्याज का पानी मिलाओ और पूरे बाल कटवाकर सिर की मालिस करो इस विधि के सवा महीने करने से बालों का गिरना बन्द हो जायेगा और बाल नये निकल आयेंगे और घने हो जायेंगे। नारी भी इस कार्य विधि को कर सकती हैं। दूसरी नारी से हाथ की अंगूलियों के द्वारा सिर में मालिस करायें।

जड़ी–बूटी मनुष्य की बीमारियों के इलाज के लिए प्रभु के द्वारा प्रगट होना

नर के अन्दर बच्चा पैदा करने के लिए शुक्राणु जीवित करना-

वट वृक्ष के फलों को सूखाकर कूटनी है, चमेली की जड़, डाभ घास की जड़ इन तीनों चीजों को मिलाकर कूट छान कर गाय के दूध या घी के साथ इकहत्तर दिन तक सुबह शाम सेवन करें।

बवासीर के लिए-अमरूद भुना हुआ पका हुआ केला दोनों को मिलाकर शहद से खायें।

दवा की मात्रा-खूनी बवासीर–भांग की जड़ शहतूत का रस या पत्ते दूधि जो जमीन में फैली हुई पानी के किनारे मिलती है इन सबाके सूखाकर दूध के साथ खानी है।

बुखार-तुलसा के पत्ते जामुन की गिरी पानी में उबालो दोनों समय पिलाओ।

सिर में दर्द-नीम की निंवबोली और शकरकन्द की जड़ सुखाकर एक जगह कूट हो, शहद से सेवन करो।

पीलिया रोग-देशी बबूल की छाल को कूटकर कपड़ छान करके शहद के साथ एक चम्मच सुबह शाम खाओ।

लीवर कमजोर होने के लिए-बबूल की छाल कूटकर कपड़छान

कर शहद के साथ खाओ दिन में दो बार।

नींद न आना-साबुत देशी काले चने उबालकर सुबह शाम में सेवन करें और ॐ नाम का जाप करें।

नींद ज्यादा आना-गौमूत्र का सेवन करो, मीठा कम खाओ।

मोटापा कम करना-गौमूत्र को पानी में उबालकर सुबह खाली पेट सेवन करो।

पेट के अन्दर कीड़े-नीम की छाल और सुखा आंवला कूटकर कपड़छान करके सुबह शाम सेवन करो।

सिर में दर्द-नीम की निंबोली और शकरकन्द की जड़ को सुखाकर एक जगह कूट छान कर सेवन करो, सुबह बिना खाये पिये और सोते समय सेवन करें।

पीलिया रोग-देशी बबूल की छाल को कूटकर कपड़छान करके शहद के द्वारा प्रयोग करो।

पेट में दर्द-ज्वासर का बीज भुना हुआ जौ इन दोनों को एक जगह कूटकर काला नमक मिलाकर सुबह शाम सेवन करें एक एक चम्मच।

याददाश्त कम हो जाना-जामुन की गिरि और मूली सुखाकर एक जगह कूटकर आंवले के मुरब्बे से सेवन करें।

मसान रोग-बबूल की छाल और बाड़ी कपास के पेड़ के पत्ते सुखाकर दोनों को कूटकर उसको एक जगह मिला दो और सुबह शाम रात को तीनों समय सेवन करें और बबूल के पेड़ के नीचे ग्यारह दिन तक तेल का चिराग जलायें।

टीबी-बबूल पाँच ग्राम छाल मैथी पचास ग्राम ज्वार पचास ग्राम चना पचास ग्राम पीपल की छाल इन सब छालों को एक जगह कूटकर शहद को पका कर शहद के द्वारा तीन समय सेवन करें।

स्वप्न दोष-नीम की निबोंली पीपल का पत्ता दोनों को एक जगह कूटकर कपड़छान करें और गाय के घी के साथ सेवन करें खाना नमक का होना चाहिए।

पेट में गैस बनना-हींग, आंवला, लहसुन, इन तीनों चीजों को कूटकर एक जगह मिलाकर काले नमक के साथ सेवन करें।

हाई बल्ड प्रेशर-मौसमी का छिलका चुकन्दर दोनों को सुखाकर दोनों को पीसकर कपड़े में बाँध कर गर्म पानी चढ़ाकर उसमें कपड़े वाली गांठ डूबो दो और उस पानी का सेवन करो और उस गांठ को माथे पर बार–बार लगाओ। इस कार्य विधि के करने से हाई बल्ड प्रेशर नहीं होगा।

चेहरे या आँखों पर काले दाग या चेहरा आँखों पर छाई होने के लिए निवारण-मौसमी के छिलके कूटकर उसमें अदरक और शहद मिलाओ और सुबह शाम सेवन करो और शहद और अदरक का पानी (रस) चेहरे पर रात को लगाकर सो जाओ।

पित्त ज्यादा बनना-कम खाना और सुबह पाँच गिलास पानी पीना और नीम की दातुन करके उसका रस अन्दर ले जाना उसे थूकना नहीं चाहिए। इस विधि के करने से पित्त नहीं बनेगा।

खून की कमी होना-हरी सब्जियों का अधिक सेवन करना, दूध का सेवन अनिवार्य करना, आंवला और शहद का सेवन रोजाना दो–दो चम्मच करें।

जोड़ों का दर्द-हींग और धनिया के तेल को एक जगह मिलाकर मालिस करें ऐसा करने से दर्द बन्द हो जायेगा।

दमा सास फूलना-बड़ी इलायची के बीज रोजाना सेवन करो।

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

पुस्तक प्राप्ति स्थान-

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड) फोन : 01334-226583

www.yogigorakshnath.org e-mail : media@yogigorakshnath.org

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह॰ जिला-रोहतक (हरियाणा)

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	180/-
2. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	250/-
3. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	400/-
4. श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	65/-
5. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
6. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	125/-
7. श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	35/-
8. श्री प्राचीन भर्तृहरी गुफा महात्म्य (देश-विदेश के नाथ सिद्धों के तीर्थ स्थलों के पते/ विवरण)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	30/-
9. श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	6/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
10. श्री गोरक्ष तंत्रम् (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	70/-
11. श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि (उपासना एवं साधना)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	30/-
12. श्री नाथ सम्प्रदाय आरती-भजन संग्रह	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
13. श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके (गुरु योगी विलासनाथ जी पुजारी)	महावीर सैनी	120/-
14. योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	30/-
15. गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	12/-
16. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
17. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	10/-
18. गुरु गोरक्षनाथ शब्दावली (भजन)	महन्त सेवानाथ जी	15/-
19. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	10/-
20. भर्तृहरि निर्वेदनाटकम्	महाकवि हरिहर रचित	5/-
21. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	70/-
22. सिद्ध प्रयोग चिकित्सा	योगी वीरनाथ जी	8/-
23. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	20/-
24. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
25. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	15/-
26. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
27. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
28. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
29. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
30. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
31. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
32. गोरखबाणी	रामलाल श्रीवास्तव	50/-
33. गोरख चरित्र	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
34. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी)	अक्षय कुमार बेनर्जी	90/-
35. गोरख दर्शन	विजय पाल	50/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
36. श्री नाथ सिद्ध चरितामृत	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
37. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य	डा. दिवाकर पाण्डेय	40/-
38. आदर्श योगी	अक्षय कुमार बेनर्जी	25/-
39. योगासन	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
40. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
41. गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह	रामलाल श्रीवास्तव	40/-
42. हटयोग प्रदीपिका	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
43. योग बीज	रामलाल श्रीवास्तव	15/-
44. नाथ योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	15/-
45. अमनस्क योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	20/-
46. गोरक्ष पद्धति	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
47. गोरक्ष शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
48. वैराग्य शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
49. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत	वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी	20/-
50. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा)	योगी आदित्यनाथ	20/-
51. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)	मनोहर द्विवेदी	15/-
52. योगवाणी अंक (गोरखबाणी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
53. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
54. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)	गोरखनाथ मन्दिर	40/-
55. योगवाणी (शिव संहिता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
56. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
57. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
58. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
59. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
60. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
61. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
62. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
63. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
64. योगवाणी (विशेषांक 1994)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र
(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3× 3 इंच	40/-	50/-
5×5 इंच	60/-	70/-
7×7 इंच	85/-	100/-
9×9 इंच	250/-	265/-
12×12 इंच	290/-	310/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ, भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रनुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P / C = 5 " X 3.5"	5/-	–
बड़े फोटो B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB / C = 10 " X 5"	25/-	
बड़ा फोटो B,B,B / C = 10 " X 8"	35/-	–

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DVD VCD
अमृतांजलि (भाग-1) गोरक्ष चालीसा, भजन इत्यादि	गायक-सोमनाथ शर्मा	35/-	50/-
अमृतांजलि (भाग-2) चौरासी सिद्ध चालीसा, भजन इ०	भजन रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्रीनाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी) कम्प्यूटर फ्लॉपी	रचना-योगी विलासनाथ	45/-	

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	–
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5"X3.5"	3/-	–

यन्त्र- (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	5/-	65/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	5/-	65/-
उपरोक्त चारों यन्त्रों का सैट	20/-	250/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

विवरण	मूल्य
लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	3/-, 5/-, 6/-, 20/-, 15/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के	5/-, 8/-, 10/-, 12/-, 20/-, 30/-
फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट (नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	25/-, 10/-, 40/-, 40/-, 20/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

मूर्तियाँ (धातु में)

	नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्रास (पीतल की पालिश)
1.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9 "	2 Kg	1100/-	800/-
2.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6 "	1 Kg.	800/-	700/-
3	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10 "	1.300gm.	1100/-	800/-
4.	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6 "	600gm.	500/-	
5.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9 "	2 Kg.	1100/-	800/-
6.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6 "	1 Kg.	800/-	700/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

विवरण	मूल्य
गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	20/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 220/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट - मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम D. D. भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा V.P. L., V.P.P. से भेजा जायेगा।
अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

सम्पर्क - योगी विलासनाथ-मो.: 09412072703

पावन तीर्थ नगरी हरिद्वार में आने वाले भक्तजनों

हरिद्वार में हरकी पैड़ी के निकट श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर में योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य भर्तृहरिनाथ जी की प्राचीन गुफा के दर्शन कर पुण्य के भागी बनें। इसी गुफा में 2500 वर्ष पूर्व भर्तृहरिनाथ जी ने नीति, वैराग्य एवं श्रृंगार की रचना की थी।

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर तथा श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

राजा भर्तृहरि नीति, वैराग्य, श्रृंगार तीनों के रचियता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। उज्जैन-मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण करके यहां तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहां विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हरकी पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

पुस्तक प्राप्ति स्थान-**अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा, गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) अपर रोड, हरिद्वार**

प्रकाशक-**श्री बाबा मस्तनाथ मठ, मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक, हरियाणा**